श्रीजिनदत्तसूरिप्राचीनपुस्तकोद्धारफण्ड (सुरत) ग्रन्थाङ्क— ४१

॥ अर्हम् ॥

श्रीखरतरगच्छगगनावभासक-यवनसम्राड्सुलतानमहम्मदप्रतिबोधक-
महाप्रभावक श्रीमज्जिनप्रभसूरिकृता

वि धि मा र्ग प्र पा

नाम

सुविहित सामाचारी ।
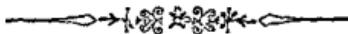
श्री'सिंघीजैनग्रन्थमाला'-'जैनसाहित्यसंशोधकग्रन्थमाला'-'पुरातत्त्वमन्दिरग्रन्थावलि'-'भारतीयविद्याग्रन्थावलि'-इत्यादिनानाग्रन्थश्रेण्यन्तर्गत प्राकृत-संस्कृत-पाली अपभ्रंश हिन्दी-गुजरातीभाषाभूषितानेकानेकग्रन्थसमूहसंशोधन संपादनकार्यनिष्ठेन तथैव भाण्डारकरप्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर (पूना)-गुजरातसाहित्यसभा (अमदावाद)-सम्प्राप्तसम्मान्यसदस्यपद-द्वादशगुजरातीसाहित्यसम्मेलनायोजित इतिहास पुरातत्त्वविभागप्राप्ताध्यक्षस्थान प्रथमराजस्थानहिन्दीसाहित्यसम्मेलन (उदयपुर) समधिष्ठितप्रधानसभापतित्वादिनानाविधवाङ्मयप्रवृत्त्या विद्वन्मण्डलसुप्रतिष्ठेन

मुनिजनविनेयेन

श्री जि न वि ज ये न

विविधपाठान्तर-परिशिष्टादिभिः समलङ्कृत्य

संपादिता

सा च

खरतरगच्छाचार्यवर्य्यश्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरशिष्यरत्न-उपाध्यायपदालङ्कृत
श्रीमत्-सुखसागरजीमुनिवरकृतोपदेशात्
श्रेष्ठिवर्य्य-रायबहादुर-केशरिसिंह-बुद्धिसिंह,-जेठाभाई-कसलचन्द,-हरजीवन-गोपालजी
इत्यादिश्राद्धवर्यैर्विहितेन द्रव्यसाहाय्येन

भगतोपाह्व-जव्हेरी-मूलचन्द्र-हीराचन्द्रेण

मुम्बय्यां निर्णसागराख्यमुद्रणयन्त्रालये मुद्रापयित्वा प्रकाशिता ।

विक्रमसंवत् १९९७ [प्रतय ५०० वितीर्णाकृता] ई सन् १९४१

विधिप्रपाके द्रव्यसाहाय्यक महाशयोंकी शुभ नामावली-

३५१) रायबहादुर, दिवानबहादुर, केशरीसिंहजी बुद्धिसिंहजी, रतलाम

२५१) सेठ जेठाभाई पसलचंद, जामनगर (काठियावाड)

२०१) सेठ हरजीवन गोपालजी, जामनगर (काठियावाड)

१००) सेठ लधुरामजी आसकरण, लोहावट (मारवाड)

६१) सेठ हजारीमल कँवरलाल, लोहावट (मारवाड)

६१) सेठ जीतराज अगरचन्द, फलोधी (,,)

५१) सेठ लक्ष्मीचंद सुगलेचा, जावद (मालवा)

*

Published by Jaweri Mulchand Hirachand Bhagat,
Mahavir Swami's Temple Pydhuni Bombay

Printed by Ramchandra Yesu Shedge at the Nirnaya-
sagar Press 26-28 Kolbhat street, Bombay

*

पुस्तक मिलनेका पता-

श्रीजिनदत्तसूरिज्ञानभण्डार

ठि० ओसवाळ मोहल्ला, गोपीपुरा

सुरत (द० गुजरात)

निवेदन

भारतीय साहित्य क्षेत्र मे जैन साहित्य का स्थान सर्वोपरि है। जैन साहित्य में विविधता है, मधुरता है और अनेक दृष्टियों से महत्त्व पूर्ण है। अपूर्णता इस बात की है कि जैन साहित्य चाहिए वैसे अच्छे ढंगसे बहुत ही कम प्रकाशित हुआ है। आज के इस परिवर्तन-शील युग में यह बात बताने की आवश्यता नहीं है कि मानव जीवन में साहित्य का स्थान कितना ऊंचा है। धार्मिक इत्यादि उन्नति एक मात्र साहित्य पर निर्भर है। साहित्य मानव जीवन के महत्त्वपूर्ण अगों मे से है।

जैनधर्म के विधि विधान के प्राचीन ग्रथों मे विधि-मार्ग प्रपा का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह जान कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि श्रीखरतरगच्छालकार अनेक ग्रथ निर्माताश्री जिनप्रभ सूरि जी जैसे अद्वितीय विद्वान् महापुरुष की प्रस्तुत कृति पुज्यगुरुवर्य्य उ० सुखसागरजी मा० की शुभेच्छानुसार भारतीय इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान्, विविधवाङ्मयोपासक एव विविध ग्रथमालाओं के सम्पादक, साक्षरवर्य श्रीमान् जिनविजयजी द्वारा सुसम्पादित हो कर प्रकाशित हो रही है जो सचमुच प्रत्येक साहित्यप्रेमि के लिये हर्षका विषय है। साथ ही मे बीकानेर-निवासी श्रीयुत अगरचंदजी और भंवरलालजी नाहटा लिखित प्रस्तुत कृति के निर्माता का जीवनवृत्त सयोजित होनेसे ग्रथ की महत्ता और भी बढ गई है। उक्त तीनों महाशयों को हृदय पूर्वक धन्यवाद देते है और इस कृति के प्रकाशन मे जिनजिन महानुभावोंने द्रव्य विषयक सहायता पहुचा कर जो प्रशसनीय कार्य किया है वह आदरणीय नहीं अनुकरणीय है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे से हसक्षीर न्यायानुसार सार ग्रहण कर सम्पादक महाशय के महान् परिश्रम को सफल करेंगे यही शुभेच्छा।

वि सं. १९९८, अक्षय तृतीया
सियनी (सी पी)

शुभेच्छक,
मुनि मगल सागर

विधिप्रपागतविषयानुक्रमणिका।

संपादकीय प्रस्तावना ।

सिंघी जैन ग्रन्थमालामें प्रकाशित श्रीजिनप्रभसूरिकृत विविधतीर्थकल्प नामक अद्वितीय ग्रन्थका संपादन करते समय ही हमारे मनमें इनके बनाये हुए ऐसे ही महत्त्वके इस विधिप्रपा नामक ग्रन्थका सपादन करनेका भी सकल्प हुआ था और इसके लिये हमने इस ग्रन्थकी हस्तलिखित प्रतियां भी इकट्ठी करनेका प्रयत्न करना प्रारंभ किया था। इतनेमें, सवत् १९९५ में, बबईके महावीर स्वामीके मन्दिरमें चातुर्मासार्थ रहे हुए सौम्यमूर्ति उपाध्यायवर्य श्रीसुखसागरजी महाराज व उनके साहित्यप्रकाशनप्रेमी शिष्यवर श्रीमुनि मगलसागरजीसे साक्षात्कार हुआ, और प्रासङ्गिक वार्तालाप करते हुए हमने इनके पास विधिप्रपाकी कोइ अच्छी प्रतिके होनेकी पृच्छा की। इस पर उपाध्यायजी महाराजने इच्छा प्रकट की कि-"इस ग्रन्थको प्रकाशित करनेकी तो हमारी भी बहुत समयसे प्रबल इच्छा हो रही है और यदि आप इस कामको हाथमें लें तो हमारे लिये बहुत ही आनन्द और अभिमानकी बात होगी, और हम श्रीजिनदत्तसूरि-प्राचीन-पुस्तकोद्धार फण्ड की ओरसे इसके प्रकाशित करनेका बडे प्रमोदसे प्रबन्ध करेंगे"-इत्यादि। चू कि यह ग्रन्थ खरतर गच्छके एक बहुत बडे प्रभाविक आचार्यकी प्रमाणभूत कृति है और इसमें खास करके इस गच्छकी सामाचारीके सम्मत विधि विधानोंका ही गुम्फन किया हुआ है इसलिये यदि यह श्रीजिनदत्तसूरि-प्राचीन-पुस्तकोद्धार-ग्रन्थावलिमें गुम्फित हो कर प्रकाशित हो तो और भी विशेष उचित और प्रशस्त होगा-ऐसा सोच कर हमने उपाध्यायजी महाराजकी आदरणीय इच्छाका सहर्ष स्वीकार कर लिया और इनके सौजन्यपूर्ण सौहार्दभावके वशीभूत हो कर हमने, इस ग्रन्थका यह प्रस्तुत सपादन कर, इनकी स्नेहाङ्कित आज्ञाका, इस प्रकार यथाशक्ति सादर पालन किया।

उपाध्यायजीकी यह प्रबल उत्कठा थी कि इनके बबइके वर्षानिवास दरम्यान ही इस ग्रन्थका प्रकाशन हो जाय तो बहुत ही अच्छा हो, पर हम इसको इतना शीघ्र पूरा न कर सके। क्यों कि हमारे हाथमें सिंघी जैन ग्रन्थमालाके अनेकानेक ग्रन्थोंका समकालीन सपादनकार्य भरपूर होनेके अतिरिक्त, बम्बईमें नवीन प्रस्थापित भारतीय विद्या भवनकी ग्रन्थावलि और 'भारतीय विद्या' नामक सशोधन विषयक प्रतिष्ठित त्रैमासिक पत्रिकाका विशिष्ट सपादन-कार्य भी हमारे ऊपर निर्भर है, इसलिये प्रस्तुत ग्रन्थके सपादनमें कुछ विलब होना अनिवार्य था।

*

ग्रन्थका नामाभिधान।

इस ग्रन्थका सपूर्ण नाम, जैसा कि ग्रन्थकी सबसे अन्तकी गाथामें सूचित किया गया है, विधिमार्गप्रपा नाम सामाचारी (विहिमग्गपवा नामं सामायारी, देखो पृ० १२०, गाथा १६) ऐसा है। पर इसकी पुरानी सब प्रतियोंमें तथा अन्यान्य उल्लेखोंमें भी सक्षेपमें इसका नाम 'विधिप्रपा' ऐसा ही प्राय लिखा हुआ मिलता है, इसलिये हमने भी मूल ग्रन्थमें इसका यही नाम सर्वत्र मुद्रित किया है, पर वास्तवमें ग्रन्थकारका निजका किया हुआ पूर्ण नामाभिधान अधिक अन्वर्थक और सगत मालूम देता है, इसलिये पुस्तकके मुखपृष्ठ पर यह नाम मुद्रित करना अधिक उचित समझा है। इस 'विधिमार्ग' शब्दसे ग्रन्थकारका खास विशिष्ट अभिप्राय उद्दिष्ट है। सामान्य अर्थमें तो 'विधिमार्ग'का 'क्रियामार्ग' ऐसा ही अर्थ विवक्षित होता है, पर यहापर विशेष अर्थमें खरतरगच्छीय विधि-क्रिया-मार्ग ऐसा भी अर्थ अभिप्रेत है। क्यों कि खरतर गच्छका दूसरा नाम विधिमार्ग है और इस सामाचारीमें जो विधि विधान प्रतिपादित किये गये हैं वे प्रधानतया खरतर गच्छके पूर्व आचार्यों द्वारा स्वीकृत और सम्मत हैं। इन विधि-विधानोंकी प्रक्रियामें और और गच्छके आचार्योंका कहीं कुछ मतभेद हो सकता है और है भी सही। अतएव ग्रन्थकारने स्पष्ट रूपसे इसके नाममें किसीको कुछ भ्रान्ति न हो इसलिये इसका 'विधिमार्गप्रपा' ऐसा अन्वर्थक नामकरण किया है। तदुपरान्त, ग्रन्थकारने, ग्रन्थकी प्रशस्तिकी प्रथम गाथामें, यह भी सूचित किया है कि-'भिन्न भिन्न गच्छोंमें प्रवर्तित अनेकविध सामाचारियोंको देख कर शिष्योंको किसी प्रकारका मतिभ्रम न हो इसलिये अपने गच्छकी प्रतिबद्ध ऐसी यह सामाचारी हमने लिखी है।' इसलिये इसका यह 'विधिमार्ग प्रपा' नाम सर्वथा सुन्दर, सुसगत और वस्तुसूचक है ऐसा कहनेमें कोइ अत्युक्ति नहीं होगी।

*

इस ग्रन्थकी विशिष्टता।

यों तो श्रीजिनप्रभ सूरिकी–जैसा कि इसके साथमें दिये हुए उनके चरित्रात्मक निबन्धसे ज्ञात होता है–साहित्यिक कृतियां बहुत अधिक संख्यामें उपलब्ध होती हैं; पर उन सबमें, इनकी ये दो कृतियां सबसे अधिक महत्त्वकी और मौलिक हैं–एक तो 'विविध तीर्थ कल्प'; और दूसरी यह 'विधिमार्गप्रपा सामाचारी'। 'विविधतीर्थ कल्प' नामक ग्रन्थके महत्त्वके विषयमें, संक्षेपमें पर सारभूत रूपसे, हमने अपनी संपादित आवृत्तिकी प्रस्तावनामें लिखा है, इसलिये उसकी यहांपर पुनरुक्ति करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। यह विधिप्रपा ग्रन्थ कैसा महत्त्वका शास्त्र है इसका परिचय तो जो इस विषयके जिज्ञासु और मर्मज्ञ हैं उनको इसका अवलोकन और अध्ययन करनेहीसे ठीक ज्ञात हो सकता है। स्व० जर्मन विद्वान् प्रो० वेबरने जो 'सेक्रेड बुक्स् ऑफ दी जैनस्' इस नामका सुप्रसिद्ध और सुपरिचित ऐसा जैनागमोंका परिचायक मौलिक निबन्ध लिखा है उसमें मुख्य आधार इसी ग्रन्थका लिया है।

*

ग्रन्थका रचना-समय।

जिनप्रभ सूरिने इस ग्रन्थकी रचना समाप्ति वि० सं० १३६३ के विजयादशमीके दिन, कोशला अर्थात् अयोध्या नगरीमें की है। इसकी प्रथम प्रति उनके प्रधान शिष्य वाचनाचार्य उदयाकर गणिने अपने हाथसे लिखी थी।

यह कृति उनकी प्रौढावस्थामें बनी हुई प्रतीत होती है। जैसा कि उनके जीवनचरित्रविषयक उल्लेखोंसे ज्ञात होता है, उन्होंने वि० सं० १३२६ में दीक्षा ली थी, अतः इस ग्रन्थके बनानेके समय उनका दीक्षापर्याय प्रायः ३७ वर्ष जितना हो चुका था। इस दीर्घ दीक्षाकालमें उन्होंने अनेक प्रकारके विधि–विधान स्वयं अनुष्ठित किये होंगे और सैंकडों ही साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओंको कराये होंगे, इसलिये उनका यह ग्रन्थसन्दर्भ, स्वयं अनुभूत एवं शास्त्र और सम्प्रदायगत विशिष्ट परंपरासे परिज्ञात ऐसे विधानोंका एक प्रमाणभूत प्रणयन है। इसमें उन्होंने जगह जगह पर कई पूर्वाचार्योंके कथनोंको उल्लिखित किया है और प्रसङ्गवश कुछ तो पूरे के पूरे पूर्वरचित प्रकरण ही उद्धृत कर दिये हैं। उदाहरणके लिये–उपधानविधिमें, मानदेवसूरिकृत पूरा 'उवहाणविही' नामक प्रकरण, जिसकी ५४ गाथायें हैं, उद्धृत किया गया है। उपधानप्रतिष्ठा प्रकरणमें, किसी पूर्वाचार्यका बनाया हुआ 'उवहाण पइट्ठापञ्चासय' नामक प्रकरण अवतारित है, जिसकी ५१ गाथायें हैं। पौषधविधि प्रकरणमें, जिनवल्लभसूरिकृत विस्तृत 'पोसहविहिपयरण'का, १५ गाथाओंमें पूरा सार दे दिया है। नन्दिरचनाविधिमें, ३६ गाथाका 'अरिहाणादिथुत्त' उद्धृत किया है। योगविधिमें, उत्तराध्ययनसूत्रका 'असंखय' नाम १३ पद्योंवाला ४ था अध्ययन उद्धृत कर दिया है। प्रतिष्ठाविधिमें, चन्द्रसूरिकृत ७ प्रतिष्ठा संग्रहकाव्य, तथा कथारत्नकोश नामक ग्रन्थमेंसे ५० गाथावाला 'ध्वजारोपणविधि' नामक प्रकरण उद्धृत किया गया है। और ग्रन्थके अन्तमें जो अंगविद्यासिद्धिविधि नामक प्रकरण है वह सैद्धान्तिक विनयचन्द्रसूरिके उपदेशसे लिखा गया है। इस प्रकार, इस ग्रन्थमें जो विधि विधान प्रतिपादित किये गये हैं वे पूर्वाचार्योंके सम्प्रदायानुसार ही लिखे गये हैं, न कि केवल स्वमनिकल्पनानुसार–ऐसा ग्रन्थकारका इसमें स्पष्ट सूचन है। जिनको जैन सम्प्रदायगत गण–गच्छादिके भेदोपभेदोंके इतिहासका अच्छा ज्ञान है उनको ज्ञात है कि, जैन मतमें जो इतने गच्छ और सम्प्रदाय उत्पन्न हुए हैं और जिनमें परस्पर बडा तीव्र विरोधभाव व्याप्त हुआ ज्ञात होता है, उसमें मुख्य कारण ऐसे विधि विधानोंकी प्रक्रियामें मतभेद का होना ही है। केवल सैद्धान्तिक या तात्त्विक मतभेदके कारण वैसा बहुत ही कम हुआ है।

*

ग्रन्थगत विषयोंका संक्षिप्त परिचय।

जैसा कि इसके नामसे ही सूचित होता है–यह ग्रन्थ, साधु और श्रावक जीवनमें कर्तव्य ऐसी नित्य और नैमित्तिक दोनों ही प्रकारकी क्रिया विधियोंके मार्गमें संचरण करनेवाले मोक्षार्थी जनोंकी जिज्ञासारूप तृष्णाकी तृप्तिके लिये एक सुन्दर 'प्रपा' समान है। इसमें सब मिला कर मुख्य ४१ द्वार यानि प्रकरण हैं। इन द्वारोंके नाम, ग्रन्थके अन्तमें, स्वयं शास्त्रकारने १ से ६ तककी गाथाओंमें सूचित किये हैं। इन मुख्य द्वारोंमें कहीं कहीं कितनेक अवान्तर द्वार भी सम्मिलित हैं जो यथास्थान उल्लिखित किये गये हैं। इन अवान्तर द्वारोंका नामनिर्देश, हमने विषयानुक्रमणिकामें कर दिया है। उदाहरणके तौर पर, २४ वें 'जोगविही' नामक प्रकरणमें, दशवैकालिक आदि सब सूत्रोंकी योगोद्वहन

क्रियाका वर्णन करनेवाले भिन्न भिन्न विधान प्रकरण हैं, और ३४ वं 'आलोयणविही' संज्ञक प्रकरणमें ज्ञानातिचार, दर्शनातिचार आदि आलोचना विषयक अनेक भिन्न भिन्न अन्तर्गत प्रकरण हैं। इसी तरह ३५ वं 'पइट्ठाविही' नामक प्रकरणमें जलानयनविधि, कलशारोपणविधि, ध्वजारोपणविधि–आदि कई एक आनुषंगिक विधियोंके स्वतंत्र प्रकरण सन्निविष्ट हैं।

इन ४१ द्वारों–प्रकरणोंमेंसे प्रथमके १२ द्वारोंका विषय, मुख्य करके श्रावक जीवनके साथ संबंध रखनेवाली क्रिया विधियोंका विधायक है, १३ वें द्वारसे लेकर २९ वं द्वार तकमें विहित क्रिया विधियां प्रायः करके साधु जीवनके साथ संबंध रखती हैं और आगेके ३० वं द्वारसे लेकर अन्तके ४१ वें द्वार तकमें वर्णित क्रिया विधान, साधु और श्रावक दोनोंके जीवनके साथ संबंध रखनेवाली कर्तव्यरूप विधियोंके संग्राहक हैं।

यहां पर संक्षेपमें इन ४१ ही द्वारोंका कुछ परिचय देना उपयुक्त होगा।

१ पहले द्वारमें, सबसे प्रथम, श्रावकको किस तरह सम्यक्त्वव्रत ग्रहण करना चाहिये–इसकी विधि बतलाई गई है। इस सम्यक्त्वव्रतग्रहणके समय श्रावकके लिये जीवनमें किन किन नित्य और नैमित्तिक धर्मकृत्योंका करना आवश्यक है और किन किन धर्मप्रतिकूल कृत्योंका निषेध करना उचित है, यह संक्षेपमें अच्छी तरह बतलाया गया है।

२ दूसरे द्वारमें, सम्यक्त्वव्रतका ग्रहण किये बाद, जब श्रावकको देशविरति व्रतके अर्थात् श्रावकधर्मके परिचायक ऐसे १२ व्रतोंके ग्रहण करनेकी इच्छा हो, तब उनका ग्रहण कैसे किया जाय–इसकी क्रिया विधि बतलाई है। इसका नाम 'परिग्रहपरिमाणविधि' है–क्यों कि इसमें मुख्य करके श्रावकको अपने परिग्रह यानि स्थावर और जंगम ऐसी संपत्तिकी मर्यादाका विशेषरूपसे नियम लेना आवश्यक होता है और इसीलिये इसका दूसरा प्रधान नाम परिग्रहपरिमाणविधि रखा गया है। इसमें यह भी कहा गया है कि इस प्रकारका परिग्रहपरिमाणव्रत लेनेवाले श्रावक या श्राविकाको अपने नियमकी सूचिवाली एक टिप्पणी (यादी–सूचि) बना लेनी चाहिये और उसमें नियमोंकी सूचिके साथ यह लिखा रहना चाहिये कि यह व्रत मैंने अमुक आचार्यके पास अमुक संवत्के अमुक मास और तिथिके दिन ग्रहण किया है–इत्यादि।

३ तीसरे द्वारमें, इस प्रकार देशविरति यानि श्रावकधर्मव्रत लेनेके बाद श्रावकको कमी छ महिनेका सामायिक व्रत भी लेना चाहिये, यह कहा गया है और इसकी ग्रहणविधि बतलाई गई है।

४ चौथे द्वारमें, सामायिकव्रतके ग्रहण और पारणकी विधि कही गई है। यह विधि प्रायः सबको सुज्ञात ही है।

५ पांचवें द्वारमें, उपधान विषयक क्रियाका विस्तृत वर्णन और विधान है। इसके प्रारंभमें कहा गया है कि–कोई कोई आचार्य इस प्रसंगमें, श्रावककी जो १२ प्रतिमायें शास्त्रोंमें प्रतिपादित की हुई हैं, उनमेंसे प्रथमकी ४ प्रतिमाओंका ग्रहण करना भी विधान करते हैं, परंतु, वह हमारे गुरुओंको सम्मत नहीं है। क्यों कि शास्त्रकारोंने ऐसा कहा है कि वर्तमान कालमें प्रतिमाग्रहणरूप श्रावकधर्म व्युच्छिन्नप्राय हो गया है, इसलिये इसका विधान करना उचित नहीं है।

६ उक्त उपधान विधिमें, मुख्य रूपसे पंचमंगलका उपधान वर्णित किया गया है, इसलिये ६ ठे द्वारमें उसकी सामाचारी बतलाई गई है।

७ उपधान तपकी समाप्तिके उद्यापनरूपमें मालारोपणकी क्रिया होनी चाहिये, इसलिये ७ वें द्वारमें, विस्तारके साथ मालारोपणकी विधि बतलाई गई है। इस विधिमें मानदेवसूरिरचित ५४ गाथाका 'उवहाणविही' नामका पूरा प्राकृत प्रकरण, जो महानिशीथ नामक आगमभूत सिद्धान्तके आधार परसे रचा गया है, उद्धृत किया गया है।

८ इस महानिशीथ सिद्धान्तकी प्रामाणिकताके विषयमें प्राचीन कालसे कुछ आचार्योंका विशिष्ट मतभेद चला आ रहा है, और वे इस उपधानविधिको अनागमिक कहा करते हैं, इसलिये ८ वें द्वारमें, इस विधिके समर्थनरूप 'उवहाणपइट्ठापंचासय' (उपधानप्रतिष्ठापंचाशक) नामका ५१ गाथाका एक संपूर्ण प्रकरण, जो किसी पूर्वाचार्यका बनाया हुआ है, उद्धृत कर दिया है। इस प्रकरणमें महानिशीथ सूत्रकी प्रामाणिकताका यथेष्ट प्रतिपादन किया गया है।

९ वें द्वारमें, श्रावकको पर्वादिके दिन पौषध व्रत लेना चाहिये, इसका विधान है और इस व्रतके ग्रहण पारणकी विधि बतलाई गई है। इसके अन्तकी गाथामें कहा है कि श्रीजिनवल्लभसूरिने जो पौषधविधि प्रकरण बनाया है उसीके आधार पर यहांपर यह विधि लिखी गई है। जिनको विशेष कुछ जाननेकी इच्छा हो वे उक्त प्रकरण देखें।

१० वें प्रकरणमें, प्रतिक्रमणसामाचारीका वर्णन दिया गया है, जिसमें दैवसिक, रात्रिक और पाक्षिक (इसीमें चातुर्मासिक और सांवत्सरिक भी सम्मिलित है) इन तीनों प्रतिक्रमणोंकी विधियोंका यथाक्रम वर्णन ग्रथित है।

११ वें द्वारमें, तपोविधिका विधान है। इसमें कल्याणक तप, सर्वांगसुन्दर तप, परमभूषण, आयतिजनक, सौभाग्यकल्पवृक्ष, इन्द्रियजय, कषायमथन, योगशुद्धि, अष्टकर्मसूदन, रोहिणी, अंबा, ज्ञानपंचमी, नन्दीश्वर, सत्यसुखसंपत्ति, पुण्डरीक, मातृ, समवसरण, अक्षयनिधि, वर्द्धमान, दवदन्ती, चान्द्रायण, भद्र, महाभद्र, भद्रोत्तर, सर्वतोभद्र, एकादशांग-द्वादशांग आराधन, अष्टापद, वीशस्थानक, सांवत्सरिक, अष्टमासिक, षाण्मासिक – इत्यादि अनेक प्रकारके तपोंकी विधिका विस्तृत वर्णन दिया गया है। इसके अन्तमें कहा गया है कि इन तपोंके अतिरिक्त कई लोक, माणिक्यप्रस्तारिका, मुकुटसप्तमी, अमृताष्टमी, अविधवादशमी, गौतमपडिग्गह, मोक्षदण्डक, अदुःखदर्शिका, अखण्डदशमी – इत्यादि नामके तपोंका भी आचरण करते दिखाई देते हैं; परंतु वे तप आगमविहित न होनेसे हमने उनका यहांपर वर्णन नहीं दिया है। इसी तरह एकावली, कनकावली, रत्नावली, मुक्तावली, गुणरत्नसंवत्सर, क्षुल्लकसिंहनिष्क्रीडित आदि जो तप हैं उनका आचरण करना, अभी इस कालमें, दुष्कर होनेसे उनका भी कोई वर्णन नहीं किया गया है।

१२ तप आदिकी उक्त सब क्रियायें नन्दीरचनापूर्वक की जाती हैं, इसलिये १२ वें द्वारमें, बहुत विस्तारके साथ नन्दीरचनाविधि वर्णित की गई है। इसमें अनेक स्तुति स्तोत्र आदि भी दिये गये हैं।

१३ वें द्वारमें, प्रव्रज्याविधि अर्थात् साधुधर्मकी दीक्षाविधिका विशिष्ट विधान बतलाया गया है।

१४ प्रव्रज्या लिये बाद साधुको यथासमय लोच (केशोत्पाटन) करना चाहिये, इसलिये १४ वें द्वारमें, लोचकरणकी विधि बतलाई गई है।

१५ प्रव्रजितको 'उपयोगविधि' पूर्वक ही पात्रोंमें भक्त पानका ग्रहण करना विहित है, इसलिये १५ वें द्वारमें यह 'उपयोगविधि' बतलाई गई है।

१६ इस तरह उपयोगविधि करनेके बाद, नवदीक्षित साधुको, सबसे प्रथम भिक्षा ग्रहण करनेके लिये जाना हो, तब कैसे और किस शुभ दिनको जाना चाहिये इसकी विधिके लिये, १६ वें द्वारमें, 'आदिम-अटन-विधि'का वर्णन दिया गया है।

१७-१८ नवदीक्षित साधुको आवश्यक तप और दशवैकालिक तप करा कर फिर उसे उपस्थापना (बडी दीक्षा) दी जाती है, और उसे मण्डलीमें स्थान दिया जाता है, इसलिये, इसके बादके दो प्रकरणोंमें, इस मण्डली तप और उपस्थापना विधिका विधान बतलाया गया है।

१९ उपस्थापना होनेके बाद, साधुको सूत्रोंका अध्ययन करना चाहिये, और यह सूत्राध्ययन विना योगोद्वहनके नहीं किया जाता, इसलिये १९ वें द्वारमें, *योगोद्वहन* विधिका सविस्तर वर्णन दिया गया है। यह योगविधि द्वार बहुत बडा है। इसमें पहले स्वाध्याय करनेकी विधि बतलाई गई है; और यह स्वाध्याय कालग्रहणपूर्वक करना विहित है, अतः उसके साथ कालग्रहण करनेकी विधि भी कही गई है। इसके बाद, आवश्यकादि प्रत्येक सूत्रका पृथक् पृथक् तपोविधान बतलाया गया है। इस विधानमें प्रायः सब ही सूत्रोंका संक्षेपमें अध्ययनादिका निर्देश कर दिया गया है। इसके अन्तमें, इस समग्र योगविधिका सूत्ररूपसे विवेचन करनेवाला ९८ गाथाका पूरा 'जोगविहाण' नामका प्रकरण दिया गया है, जो शायद ग्रन्थकारकी निजकी ही एक स्वतन्त्र रचना है।

२० यह योगोद्वहन 'कप्पतिप्प' सामाचारीकी क्रियापूर्वक किया जाता है, इसलिये २० व द्वारमें, यह 'कप्पतिप्प' सामाचारी बतलाइ गई है।

२१ इस प्रकार कप्पतिप्पविधिपूर्वक योगोद्वहन किये बाद, साधुको मूल ग्रन्थ, नन्दी, अनुयोगद्वार, उत्तराध्ययन, ऋषिभाषित, अंग, उपांग, प्रकीर्णक और छेद ग्रन्थ आदि आगम शास्त्रोंकी वाचना करनी चाहिये, इसलिये २१ व द्वारमें, इस आगमवाचनाकी विधि बतलाइ गई है।

२२–२६ इस तरह आगमादिका पूर्ण ज्ञाता हो कर शिष्य जब यथायोग्य गुणवान् बन जाता है, तो उसे फिर वाचनाचार्य, उपाध्याय एव आचार्य आदिकी योग्य पदवी प्रदान करनी चाहिये, और साध्वीको प्रवर्तिनी अथवा महत्तराकी पदवी देनी चाहिये। इसलिये अनन्तरके द्वारोंमेसे क्रमश – २२वें द्वारमें वाचनाचार्य, २३ वेंमें उपाध्याय, २४ वेंमें आचार्य, २५ वेंमें महत्तरा और २६ वेंमें प्रवर्तिनी पदके देनेकी क्रियाविधि बतलाइ गइ है। इस विधिके प्रारभमे यह भी स्पष्ट रूपसे कह दिया गया है कि किस योग्यतावाले साधुको वाचनाचार्य अथवा उपाध्याय एव आचार्य आदिका पद देना उचित है। वाचनाचार्य अथवा उपाध्याय उसीको बनाना चाहिये, जो समग्र सूत्रार्थके ग्रहण, धारण और व्याख्यान करनेमें समर्थ हो; सूत्रवाचनामें जो पूरा परिश्रमी हो, प्रशान्त हो और आचार्य स्थानके योग्य हो। इस पदके धारकको, एक मात्र आचार्यके सिवाय अन्य सब साधु साध्वी – चाहे वे दीक्षापर्यायमें छोटे हों या बडे – वन्दन करें।

इस आचार्य पदके योग्य व्यक्तिका विधान करते हुए कहा है कि – जो साधु आचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, मतिप्रयोग, मतिसग्रह और परिज्ञा रूप इन आठ गणिपदसे युक्त हो, देश, कुल, जाति और रूप आदि गुणोंसे अलकृत हो, बारह वर्षतक जिसने सूत्रोंका अध्ययन किया हो, बारह वर्षतक जिसने शास्त्रोंके अर्थका सार प्राप्त किया हो और बारह वर्षतक अपनी शक्तिकी परीक्षाके निमित्त जिसने देशपर्यटन किया हो – वह आचार्य बननें योग्य है और ऐसे योग्य व्यक्तिको आचार्यपद देना चाहिये। नन्दीरचना आदि विहित क्रियाविधिके साथ, निर्णीत लग्नमें, मूलाचार्य इस नव्य आचार्यको सूरिमन्त्र प्रदान करें। यह सूरिमन्त्र मूलमें भगवान् महावीर स्वामीने २१०० अक्षरप्रमाण ऐसा गौतमस्वामीको दिया था और उन्होंने उसे ३२ श्लोकके परिमाणमें गुम्फित किया था। इसका कालक्रमके प्रभावसे ह्रास हो रहा है और अन्तिम आचार्य दु प्रसहके समयमें यह २॥ श्लोक परिमित रह जायगा। यह गुरुमुखसे ही पढा जाता है – पुस्तकमें नहीं लिखा जाता। ग्रन्थकार कहते हैं कि इस सूरिमन्त्रकी साधनाविधि देखना हो उसे हमारा बनाया हुआ 'सूरिमन्त्रकल्प' नामक प्रकरण देखना चाहिये।

यह आचार्यपद प्रदानविधि बडा भावपूर्ण है। इसमें कहा गया है, कि जब इस प्रकार शिष्यको आचार्य पद देनेकी विधि समाप्तपर होती है तब खुद मूल आचार्य अपने आसन परसे उठ कर शिष्यकी जगह बैठें और शिष्य – नवीन पद धारक आचार्य – अपने गुरुके आसन पर जा कर बैठे। फिर गुरु अपने शिष्य – आचार्यको, द्वादशावर्तविधिसे वन्दन करें – यह बतलानेके लिये कि तुम भी मेरे ही समान आचार्यपदके धारक हो गये हो और इसलिये अन्य सभीके साथ मेरे भी तुम वन्दनीय हो। ऐसा कह कर गुरु उससे कहे कि, कुछ व्याख्यान करो – जिसके उत्तरमें नवीन आचार्य परिषद्के योग्य कुछ व्याख्यान करे और उसकी समाप्तिमें फिर सब साधु उसे वन्दन करें। फिर वह शिष्य उस गुरुके आसन परसे उठ कर अपने आसन पर जा कर बैठे, और गुरु अपने मूल आसन पर। बादमें गुरु, नवीन आचार्यको शिक्षारूप कुछ उपदेशवचन सुनाये जिसको 'अनुशिष्टि' कहते हैं। इस अनुशिष्टिमें, गुरु नवीन आचार्यको किन किन बातोंकी शिक्षा देता है, इसका प्रतिपादन करनेके लिये जिनप्रभ सूरिने ५५ गाथाका एक स्वतन्त्र प्रकरण दिया है जो बहुत ही भाववाही और सारगर्भित है। आचार्यको अपने समुदायके साथ कैसा व्यवहार रखना चाहिये और किस तरह गच्छकी प्रतिपालना करनी चाहिये – इसका बडा मार्मिक उपदेश इसमें दिया गया है। आचार्यको अपने चारित्रमें सदैव सावधान रहना चाहिये और अपने अनुवर्त्तियोंकी चारित्ररक्षाका भी पूरा खयाल रखना चाहिये। सब को समदृष्टिसे देखना चाहिये। किसी पर किसी प्रकारका पक्षपात न करना चाहिये। अपने और दूसरेके पक्षमें किसी प्रकारका विरोधभाव पैदा करे वैसा वचन कभी न बोलना चाहिये। असमाधिकारक कोइ व्यवहार नहीं करना चाहिये। स्वय कषायोंसे मुक्त होनेके लिये सतत प्रयत्नवान् रहना चाहिये – इत्यादि प्रकारके बहुत ही सुन्दर उपदेश वचन कहे गये हैं जो वर्तमानके नामधारी आचार्योंके मनन करने योग्य हैं।

इसी तरहका सुन्दर शिक्षावचनपूर्ण उपदेश महत्तरा और प्रवर्तिनी पद प्राप्त करनेवाली साध्वीके लिये भी कहा गया है। प्रवर्तिनीको अनुशिष्टि देते हुए आचार्य कहते हैं कि – तुमने जो यह महत्तर पद ग्रहण किया है इसकी साथकता तभी होगी जब तुम अपनी शिष्याओंको और अनुगामिनी साध्वियोंको ज्ञानादि सद्गुणोंमें प्रवृत्त करा कर, उनके कल्याण पथकी मार्गदर्शिका बनोगी। तुम्हें न केवल उन्हीं साध्वियोंके हितकी प्रवृत्ति करनेमें प्रवर्तित होना चाहिये जो विदुषियां हैं, जिनका बड़ा खानदान है, जिनका बहुत बड़ा स्वजनवर्ग है, एवं जो सेठ, साहुकार आदि धनिकोंकी पुत्रियां हैं, परन्तु तुम्हें उन साध्वियोंकी हित प्रवृत्तिमें भी वैसे ही प्रवर्तित होना कर्तव्य है जो दीन और दुःस्थित दशामें हों, जो अज्ञान हों, शक्तिहीन हों, शरीरसे विकल हों, निःसहाय हों, बन्धुवर्गरहित हों, वृद्धावस्थासे जर्जरित हों और दुरवस्थामें पड जानेके कारण भ्रष्ट और पतित भी हों। इन सबकी मुग्ध गुरुकी तरह, अंगधारी धारिकाकी तरह, धायकी तरह, प्रियसखीकी तरह, भगिनी–जननी–मातामही एवं पितामही आदिकी तरह, वात्सल्य भाव हो कर प्रतिपालना करनी होगी।

२७ इसके बाद, २७ वें द्वारमें, गणानुज्ञाविधि बतलाई गई है। गणानुज्ञाका अर्थ है गणकी अर्थात् समुदायकी अनुज्ञा यानि निजकी आज्ञामें प्रवर्तन करानेका संपूर्ण अधिकार प्राप्त करना। यह अधिकार, मुख्याचार्यके कालप्राप्त होने पर अथवा अन्य किसी तरह असमर्थ हो जाने पर प्राप्त किया जाता है। इस विधिमें भी प्रायः वैसा ही भाव और उपदेशादि गर्भित है। इस गणानुज्ञापदवी प्राप्ति होने पर, फीर वही नवीन आचार्य गच्छका संपूर्ण अधिनायक बनता है और उसीकी आज्ञामें सारे संघको विचरण करना पडता है।

२८ इसके बादके २८ वें द्वारमें, वृद्ध होने पर और जीवितका अन्त समीप दिखाई देने पर, साधुको पर्यन्ताराधना कैसे करनी चाहिये और अन्तमें कैसे अनशन व्रत लेना चाहिये, इसका विधान बतलाया गया है। इसी विधिके अन्तमें, श्रावकको भी यह अन्तिम आराधना करनी बतलाई गई है।

२९ इस प्रकारकी अन्तिम आराधनाके बाद, जब साधु कालधर्म प्राप्त हो जाय तब फिर उसके शरीरका अन्तिम सत्कार कैसे किया जाय, इसकी विधिका वर्णन २९ वें महापारिट्ठावणिया नामक प्रकरणमें दिया गया है।

३० तदनन्तर, ३० वें द्वारमें, साधु और श्रावक दोनोंके व्रतोंमें लगनेवाले प्रायश्चित्तोंका बहुत विस्तृत वर्णन दिया गया है। इस प्रायश्चित्तविधानमें एक तरहसे प्रायः यति और श्राद्ध दोनों प्रकारके जीतकल्प मर्यादाका पूरा सार आ गया है। इसमें श्रावकके सम्यक्त्व-मूल १२ व्रतोंका प्रायश्चित्त विधान पूर्ण रूपसे दिया गया है और इसी तरह साधुके मूल गुण और उत्तर गुण आदि आचारोंमें लगनेवाले छोटे बडे सभी प्रायश्चित्तोंका यथेष्ट वर्णन किया गया है। साधुके भिक्षाविषयक दोषोंका विधान करनेवाला 'पिंडालोयणविहाण' नामक ७१ गाथाका एक बडा स्वतन्त्र प्रकरण भी, नया बना कर, ग्रन्थकारने इसमें सन्निविष्ट कर दिया है; और इसी तरह एक दूसरा ६५ गाथाका 'आलोयणाविही' नामका भी स्वतन्त्र प्रकरण इस द्वारके अन्तभागमें ग्रथित किया है।

३१–३६ इसके बाद 'प्रतिष्ठाविधि' नामक बडा प्रकरण आता है जिसमें जिनबिम्बप्रतिष्ठा, कलशप्रतिष्ठा, ध्वजारोप, कूर्मप्रतिष्ठा, यन्त्रप्रतिष्ठा और स्थापनाचार्यप्रतिष्ठा – इस प्रकार ३१ से ले कर ३६ तकके ६ द्वारोंका समावेश होता है। इसीके अन्तर्गत अधिवासना अधिकार, नन्द्यावर्तस्थापना, जलानयनविधि – आदि भी प्रसंगोचित कई विधि विधानोंका समावेश किया गया है। इसमें प्रतिष्ठोपयोगी सामग्रीका भी प्रमाणभूत निर्देश है और मन्त्र तथा स्तुति आदि वचनोंका भी उत्तम संग्रह है। प्रतिष्ठाविधिके लिये यह प्रकरण बहुत ही आधारभूत और सुविदित समझा जाने योग्य है।

३७ प्रतिष्ठा और अन्य बहुतसी क्रियाओंमें 'मुद्राकरण आवश्यक' होता है, इसलिये ३७ वें द्वारमें, भिन्न भिन्न प्रकारकी मुद्राओंका वर्णन लिखा गया है।

३८ मन्त्राराधना और प्रतिष्ठाविषयक क्रियाओंमें ६४ योगिनियोंके यन्त्रादिका आलेखन किया जाता है, इसलिये ३८ वें द्वारमें, इन योगिनियोंके नाम बतलाये गये हैं।

३९ वें द्वारमें, 'तीर्थयात्रा' करने वालेको किस तरह यात्राविधि करना चाहिये और जो यात्रानिमित्त सघ नीकालना चाहे उसे किस विधिसे प्रस्थानादि कृत्य करने चाहिये – इस विषयका उपयुक्त विधान किया गया है। इसमें सघ नीकालने वालेको किस किस प्रकारकी सामग्रीका सग्रह करना चाहिये और यात्रार्थियोंको किस किस प्रकारकी सहायता पहुचाना चाहिये – इत्यादि बातोंका भी सक्षेपमें पर सारभूत रूपमें ज्ञातव्य उल्लेख किया गया है।

४० वें द्वारमें, पर्वादि तिथियोंका पालन किस नियमसे करना चाहिये, इसका विधान, ग्रन्थकारने अपनी सामाचारीके अनुसार, प्रतिपादित किया है। इस तिथिव्यवहारके विषयमें, जुदा जुदा गच्छके अनुयायियोंकी जुदी जुदी मान्यता है। कोइ उदय तिथिको प्रमाण मानता है, तो कोई बहुभुक्त तिथिको ग्राह्य कहता है। पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक पर्वके पालनके विषयमें भी इसी तरहका गच्छवासियोंका पारस्परिक बडा मतभेद है। इस मतभेदको ले कर प्राचीन कालसे जैन सप्रदायोंमें परस्पर कितनाक विरोधभावपूर्ण व्यवहार चला आता दिखाइ देता है। श्रीजिनप्रभ सूरिने अपने इस ग्रन्थमें, उसी सामाचारीका प्रतिपादन किया है जो खरतर गच्छमें सामान्यतया मान्य है।

४१ वें द्वारमें, अगविद्यासिद्धिकी विधि कही गई है। यह 'अगविद्या' नामक एक शास्त्र है जो आगममें नहीं गिना जाता, पर इसका स्थान आगमके जितना ही प्रधान माना जाता है। इसलिये इसकी साधनाविधि यहापर स्वतत्र रूपसे बतलाइ गई है। यह विधि ग्रन्थकारने, सैद्धान्तिक विनयचन्द्रसूरिके उपदेशसे ग्रथित की है, ऐसा इसके अतिम उल्लेखमें कहा है।

इस प्रकार, विधिप्रपामें प्रतिपादित मुख्य ४१ द्वारोंका, यह सक्षिप्त विषयनिर्देश है। इस निर्देशके वाचनसे, जिज्ञासु जनोंको कुछ कल्पना आ सकेगी कि यह ग्रन्थ कितने महत्त्वका और अलभ्य सामग्रीपूर्ण है। इस प्रकारके अन्य अन्य आचार्योंके बनाये हुए और भी कितनेक विधि-विधानके ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, पर वे इस ग्रन्थके जैसे क्रमबद्ध और विशद रूपसे बनाये हुए नहीं ज्ञात होते। इस प्रकारके ग्रन्थोंमे यह 'शिरोमणि' जैसा है ऐसा कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं होती।

*

ग्रन्थकार जिनप्रभ सूरि कैसे बडे भारी विद्वान् और अपने समयमे एक अद्वितीय प्रभावशाली पुरुष हो गये हैं इसका पूरा परिचय तो इसके साथ दिये हुए उनके जीवनचरित्रके पढनेसे होगा, जो हमारे स्नेहास्पद धर्मबन्धु बीकानेरनिवासी इतिहासप्रेमी श्रीयुत अगरचन्दजी और भवरलालजी नाहटाका लिखा हुआ है। इसलिये इस विषयमें और कुछ अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है।

*

सपादनमें उपयुक्त प्रतियोंका परिचय।

इस ग्रन्थका सपादन करनेमें हमें तीन हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हुइ थीं – जिनमें मुख्य प्रति पूनाके भाण्डारकर प्राच्यविद्यासशोधन मन्दिरमें सरक्षित राजकीय ग्रन्थसग्रहकी थी। यह प्रति बहुत प्राचीन और शुद्धप्राय है। इसके अन्तमें लिखनेवालेका नामनिर्देश और सवतादि नहीं दिया गया, इसलिये यह ठीक ठीक तो नहीं कहा जा सकता कि यह कबकी लिखी हुइ है, पर पत्रादिकी स्थिति देखते हुए प्राय सवत् १५०० के आसपासकी यह लिखी हुइ होगी ऐसा सभवित अनुमान किया जा सकता है। इस प्रतिका पीछेसे किसी तज्ज्ञ विद्वान् यतिजनने खुब अच्छी तरह सशोधन भी किया है और इसलिये यह प्रति शुद्धप्राय है, ऐसा कहना चाहिये।

दूसरी प्रति श्रीमान् उपाध्यायवर्य श्रीसुखसागरजी महाराजके निजी सग्रहकी मिली थी। पर यह नइ ही लिखी हुइ है और शुद्धिकी दृष्टिसे कुछ विशेष उल्लेखयोग्य नहीं है।

तीसरी प्रति बीकानेरके भंडारकी थी जो श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा द्वारा प्राप्त हुई थी। यह प्रति भी नई ही लिखी हुई है पर कुछ शुद्ध है* । इसके अन्त भागमें, जिनप्रभसूरिकृत 'देवपूजाविधि' नामक स्वतन्त्र प्रकरण लिखा हुआ मिला, जिसे उपयोगी समझ कर हमने इस ग्रन्थके परिशिष्टके रूपमें मुद्रित कर दिया है। असलमें यह पूजाविधि भी इसी ग्रन्थका एक अवान्तर प्रकरण होना चाहिये । परंतु न मालूम क्यों ग्रन्थकारने इसको इस ग्रन्थमें सन्निविष्ट न कर जुदा ही प्रकरण रूपसे ग्रथित किया है । संभव है कि यह देवपूजाविधि प्रत्येक गृहस्थ जैनके लिये अवश्य और नित्य कर्तव्य होनेसे इसकी रचना स्वतन्त्र रूपसे करना आवश्यक प्रतीत हुआ हो, ता कि सब कोई इसका अध्ययन और लेखन आदि सुलभताके साथ कर सकें । इस देवपूजाविधिमें गृहप्रतिमापूजनविधि, चैत्यवन्दनविधि, स्नपनविधि, छत्रभ्रमणविधि, पञ्चामृतस्नात्रविधि और शान्तिपर्वविधि आदि और भी आनुषङ्गिक कई विधियोंका समावेश कर इस विषयको संपूर्णतया प्रतिपादित किया गया है ।

*

उक्त प्रकारसे, प्रस्तुत ग्रन्थके संपादनकी प्रेरणा कर, उपाध्याय श्रीसुखसागरजी महाराजने इस प्रकार क्रिया-विधिके अमूल्य निधिरूप प्रस्तुत ग्रन्थरत्नके विशिष्ट स्वाध्यायका जो प्रशस्त प्रसंग हमारे लिये उपस्थित किया, तदर्थ हम, अन्तमें, आपके प्रति अपना कृतज्ञभाव प्रदर्शित कर; और जो कोई जिज्ञासु जन, इस ग्रन्थके पठन-पाठनसे अपनी ज्ञानवृद्धि करके विधिमार्गके प्रवासमें प्रगतिगामी बनेंगे, तो हम अपना यह परिश्रम सफल समझेंगे-ऐसी आशा प्रकट कर, इस प्रस्तावनाकी यहांपर पूर्णता की जाती है । इत्यलम् ।

फाल्गुन पूर्णिमा
विक्रम संवत् १९९७
बंबई

जिन विजय

---

* यह प्रति बीकानेरके श्रीपूज्यजीके भण्डारकी है और इसके अंतमें लिपिकर्ताने अपना समय और नामादि बतलानेवाली इस प्रकारकी पुष्पिका लिखी है–

"संवत् १८५२ वर्षे मिती ज्येष्ठ शुक्ल ५ तिथ्यां बुधवारे श्रीहमीरगढ नयरे चतुर्मासी स्थिता प० विवेकसार लिखित । श्रीमद्बृहत् खरतर गच्छे श्रीकीर्तिरत्नसूरि संतानीया । श्रीफलवर्द्धीनयरे लिखितं ॥"

शासनप्रभावक श्रीजिनप्रभसूरि ।

[संक्षिप्त जीवन चरित्र]

लेखक — श्रीयुत अगरचन्दजी और भँवरलालजी नाहटा, बीकानेर ।

जैनशासनमें प्रभावक आचार्योंका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्यों कि धर्मकी व्यावहारिक उन्नति उन्हीं पर निर्भर है। आत्मार्थी साधु केवल स्व-कल्याण ही कर सकता है, किन्तु प्रभावक आचार्य स्व-कल्याणके साथ साथ पर-कल्याण भी विशेष रूपसे करते हैं, इसी दृष्टिसे उनका महत्त्व बढ जाना स्वाभाविक है। प्रभावक आचार्य प्रधानतया आठ प्रकारके बतलाये हैं यथा —

पावयणी धम्मकही वाई नेमित्तिओ तवस्सी य ।
विज्जासिद्धा य कवी अट्ठे य पभावगा भणिया ॥

अर्थात् — प्रावचनिक, धर्मकथाप्ररूपक, वादी, नैमित्तिक, तपस्वी, विद्याधारक, सिद्ध और कवि ये आठ प्रकार के प्रभावक होते हैं।

समय समय पर ऐसे अनेक प्रभावकोंने जैन शासनकी सुरक्षा की है, उसे लाञ्छित और अपमानित होनेसे बचाया है, अपने असाधारण प्रभावद्वारा लोकमानस एव राजा, बादशाह, मन्त्री, सेनापति आदि प्रधान पुरुषोंको प्रभावित किया है। उन सब आचार्योंके प्रति बहुत आदरभाव व्यक्त किया गया है और उनकी जीवनियां अनेक विद्वानोंने लिख कर उनके यशको अमर बनाया है। प्रभावक चरित्रादि ग्रन्थोंमें ऐसे ही आचार्योंका जीवन वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ —

इस विधिप्रपाके कर्ता श्रीजिनप्रभ सूरि अपने समयके एक बडे भारी प्रभावक आचार्य थे। उन्होंने दिल्लीके सुल्तान महमद बादशाह पर जो प्रभाव डाला वह अद्वितीय और असाधारण है। उसके कारण मुसल्मानोंसे होने वाले उपद्रवोंसे संघ एव तीर्थोंकी विशेष रक्षा हुई और जैन शासनका प्रभाव बढा। उन्होंने विद्वत्तापूर्ण और विविध दृष्टियोंसे अत्यन्त उपयोगी, अनेक कृतियां रच कर साहित्य भंडारको समृद्ध बनाया। पं० लालचंद भगवानदास गांधीने उनके सम्बन्धमें **"जिनप्रभसूरि अने सुलतान महमद"** नामक गुजराती भाषामें एक अच्छी पुस्तक लिखी है। पर उसमें ज्यों ज्यों सामग्री उपलब्ध होती रही त्यों त्यों वे जोडते गये अत शृंखला नहीं रही ? हम उस पुस्तकके मुख्य आधारसे, पर स्वतंत्र शैलीसे, नवीन अन्वेषणमें उपलब्ध ग्रन्थोंके साथ सूरिजीका जीवन चरित्र इस निबन्ध में संकलित करते हैं।

जिनप्रभ सूरिकी गुरु परम्परा —

खरतर गच्छके सुप्रसिद्ध वादी-प्रभावक श्रीजिनपति सूरिजीके शिष्य श्रीजिनेश्वर सूरिजीके शिष्य श्रीजिनप्रबोध सूरि हुए। इनके गुरुभ्राता श्रीमाठगोत्रीय श्रीजिनसिंह सूरिजीसे खरतरगच्छकी लघु शाखा प्रसिद्ध हुई। इसका मुख्य कारण प्राकृत प्रबन्धावलीमें यह बतलाया गया है कि—एक बार श्रीजिनेश्वर सूरि जी पल्हूपुर (पालणपुर) के उपाश्रयमें विराजते थे, उस समय उनके दण्डके अकस्मात् तडतड शब्द करते हुए दो टुकडे हो गए। सूरिजीने शिष्योंसे पूछा कि—'यह तडतडाट कैसे हुआ ?' शिष्योंने कहा — 'भगवन् ! आपके दण्डेके दो टुकडे हो गए'। यह सुन कर सूरिजीने उसके फलका विचार करते हुए निश्चय किया कि मेरे पश्चात् मेरी शिष्य-सन्ततिमेंसे दो शाखाएं निकलेंगीं। अत. अच्छा हो, यदि मैं

य ही ऐसी व्यवस्था कर दू ताकि भविष्यमें संघमें किसी प्रकारका कलह न हो और धर्म प्रचारका कार्य चारु रूपसे चलता रहे।

इसी अवसर पर (दिल्लीकी ओरके) श्रीमाल संघने आ कर आचार्यश्रीसे विज्ञप्ति की—'भगवन्! मारी तरफ आजकल मुनियोंका विहार बहुत कम हो रहा है, अत हमारे धर्मसाधनके लिये आप किसी योग्य मुनिको भेजें'। सूरिजीने पूर्वोक्त निमित्तका विचार कर श्रीमाल कुलोत्पन्न जिनसिंह गणिको सं० १२८०में (?) आचार्य पद और पद्मावती मन्त्र दे कर कहा—'यह श्रीमाल संघ तुम्हारे सुपुर्द है, संघके साथ जाओ और उनके प्रान्तोंमें विहार कर अधिकाधिक धर्मप्रचार करो'। गुरुदेवकी आज्ञाको शिरोधार्य कर श्रीजिनसिंह सूरि श्रावकोंके साथ श्रीमाल ज्ञातीय लोगोंके निवास स्थलोंमें विहार करने लगे। उपकारीके नाते समस्त श्रीमाल संघने श्रीजिनसिंह सूरिजीको अपने प्रमुख धर्माचार्य रूपमें माना।

जिनप्रभ सूरिकी दीक्षा—

श्रीजिनसिंह सूरिजीने गुरुप्रदत्त पद्मावती मन्त्रकी, छ मासके आयंबिल तप द्वारा साधना प्रारम्भ की। तत्परताके साथ नित्य ध्यान करने लगे। देवीने प्रगट हो कर कहा—'आपकी अब आयु बहुत थोड़ी रही है, अत विशेष लाभकी संभावना कम है'। आचार्यश्रीने कहा—'अच्छा, यदि ऐसा है तो मेरे पट्टयोग्य शिष्य कौन होगा सो बतलावें, और उसे ही शासनप्रभावनामें प्रत्यक्ष व परोक्ष रूपसे सहायता दें'। पद्मावती देवीने कहा—'सोहिलवाड़ी नगरीमें श्रीमाल जातिके ताबी गोत्रीय महर्द्धिक श्रावक महाधर रहता है। उसके पुत्र रत्नपालकी भार्या खेतलदेवीकी कुक्षिसे उत्पन्न सुभटपाल नामक सल्लक्षणसम्पन्न पुत्र है, वही आपके पट्टका प्रभावक सूरि[1] होगा'। देवीके इन वचनोंको सुन कर आचार्यश्री सोहिलवाड़ी नगरीमें पधारे। श्रावकोंने समारोह पूर्वक उनका स्वागत किया। एक बार आचार्यश्री श्रेष्ठिवर्य्य महाधरके यहा पधारे। श्रेष्ठिवर्य्यने भक्ति-गद्-गद् हो कर कहा—'भगवन्! आपने मुझ पर बड़ी कृपा की, आपके शुभागमनसे मैं और मेरा गृह पावन हो गया, मेरे योग्य सेवा फरमावें!' आचार्यश्रीने कहा—'महानुभाव! तुम्हारा धर्मप्रेम प्रशसनीय है, भावी शासन-प्रभावनाके निमित्त तुम्हारे बालकोंमेंसे सुभटपालकी भिक्षा चाहता हू। ससारमें अनेक प्राणी अनेक बार मनुष्य जन्म धारण करते हैं लेकिन साधनाभावसे अपनी प्रतिभाको विकसित करनेके पूर्व ही परलोकवासी हो जाते हैं। मानव जन्मकी सफलताके लिये त्याग ही सर्वोत्तम साधन है जिसके द्वारा धर्मका अधिकाधिक प्रचार और आत्माका कल्याण हो सकता है। आशा है तुम्हें मेरी याचना स्वीकृत होगी। इससे तुम्हारा यह बालक केवल तुम्हारे वंशको ही नहीं बल्कि सारे देश और धर्मको दीपाने वाला उज्ज्वल रत्न होगा।

---

१ इस प्रबन्धावलीकी एक पुरानी प्रति श्रीजिनविजयजीके पास है उससे नकल करके जिनप्रभसूरि प्रबन्धको हमने 'जैन सत्यप्रकाश' मासिकमें प्रकाशित किया। जिसका गुजराती अनुवाद प० लालचद भगवानदासने अपने '**जिनप्रभसूरि अने सुल्तान महम्मद**' नामक पुस्तकमें प्रकाशित किया है। प्रबन्धावलीकी एक और प्रति श्रीहरिसागरसूरिजीके पास भी देखी थी। वह प्रति स० १६२२ आश्विन सुदि १५ को लिखी हुई थी। श्रीजिनविजयजी वाली प्रति भी लगभग इसके समकालीन लिखित प्रतीत होती है।

२ खरतर गच्छ पट्टावली संग्रहमें प्रकाशित १७ वीं शताब्दीकी पट्टावली न० ३ में लिखा है कि—इनका जन्म झुझनूके ताबी श्रीमालके यहां हुआ था। ये रत्नके पाच पुत्रोंमेंसे तृतीय पुत्र थे। बीकानेरके जयचदजीके भण्डारकी पट्टावलीमें लिखा है कि बागड़ देशके वड़ादा नामक किसी श्रावकके छोटे पुत्र थे। इन्हें ११ वर्षकी छोटी उम्रमें आचार्य पद मिला। श्रीजिनप्रभ सूरिजीके जन्म संवत्का उल्लेख कहीं देखने में नहीं आया पर स १३५२ में इन्होंने कातन्त्र विभ्रमवृत्तिकी की थी। उस समय इनकी आयु २०-२५ वर्षकी अवश्य होगी अत जन्म स० १३२५ के लगभग होना सभव है। दीक्षा का समय स० १३२६ लिखा है पर वह शकित मालूम देता है।

महाधर सेठने आचार्यश्रीकी आज्ञाको सहर्ष स्वीकार की और अच्छे मुहूर्तमें सुभटपालको समारोह पूर्वक सं० १३२६ (?) में दीक्षा दिलाई । आचार्यश्रीने नवदीक्षित मुनिको खूब तत्परतासे शास्त्रोंका अध्ययन कराया एवं साम्नाय पद्मावती मंत्र समर्पित किया-जिससे थोड़े समयमें मुनिवर्य प्रतिभाशाली गीतार्थ हो गये । सं० १३४१ मे किढ़िवाणा नगरमें श्रीजिनसिंह सूरिजीने उन्हें सर्वथा योग्य जान कर अपने पट्टपर स्थापित कर **श्रीजिनप्रभसूरि** नामसे प्रसिद्ध किया । इसके कुछ समय पश्चात् श्रीजिनसिंह सूरिजी स्वर्गगामी हुए ।

श्रीजिनप्रभ सूरिजीके पुण्यप्रभाव और गुरुकृपासे पद्मावती देवी प्रत्यक्ष हुई । एक वार इन्होंने देवीसे पूछा कि-'हमारी किस नगरमें उन्नति होगी ?' पद्मावतीने कहा-'आप योगिनी-पीठ दिल्लीकी ओर विहार कीजिये । उधर आपको पूर्ण सफलता मिलेगी' । सूरिजी देवीके संकेतानुसार दिल्ली प्रान्तमें विचरने लगे[1] ।

ग्रन्थ रचना-

सं० १३५२ मे योगिनीपुर (दिल्ली) में माथुरवंशीय ठक्कुर खेतल कायस्थकी अभ्यर्थनासे 'कातन्त्र विभ्रम' पर २६१ श्लोक प्रमाणकी वृत्ति बनाई । सूरिजी के उपलब्ध ग्रन्थोंमें यह सर्वप्रथम कृति है ।

सं० १३५६ में श्रेणिकचरित्र-द्व्याश्रय काव्यकी रचना की ।

सं० १३६३ का चातुर्मास अयोध्यामें किया । वहा साधु और श्रावकोंके आचारोंका विशदसंग्रह रूप इसी **विधिप्रपा ग्रन्थ**को विजयादशमीके दिन रच कर पूर्ण किया । सं० १३६४ में वैभारगिरिकी यात्रा करके वैभारगिरिकल्प निर्माण किया और कल्पसूत्र पर 'सन्देह विषौषधि' नामक वृत्ति बनाई ।

सं० १३६५ के पौषमें अयोध्यामें (१) अजितशान्तिकी बोधदीपिका वृत्ति, (२) पौष कृष्णा ९ को उपसर्गहरकी अर्थकल्पलता वृत्ति, (३) पोष सुदि ९ के दिन भयहर स्तोत्रकी अभिप्रायचन्द्रिका वृत्ति बनाई । इन कुछ वर्षोंमें सूरिजीने पूर्व देशके प्राय समस्त तीर्थोंकी यात्रा कर, कई कल्प, स्तोत्र इत्यादि रचे ।

संवत् १३६९ में मारवाड देशकी ओर विचरते हुए फलौधी तीर्थकी यात्रा कर वहाका स्तोत्र बनाया । कहा जाता है कि सूरिमहाराज प्रतिदिन एकाध नवीन स्तोत्रकी रचना करनेके पश्चात् आहार ग्रहण करते थे । इसके फल स्वरूप आपने ७०० स्तोत्र[2] जितने विशाल स्तोत्र-साहित्यकी रचना कर जैन मुनियोंके सामने एक उत्तम आदर्श उपस्थित किया । आपके निर्माण किये हुए स्तोत्रोंकी सूची पीछे दी गई है ।

इस विशाल स्तोत्र-साहित्यमेंसे अब केवल ७५ के लगभग ही उपलब्ध हैं । इनमे कई यमकमय, चित्रकाव्य, आदि अनेक वैशिष्ट्यको लिये हुए हैं, जिससे सूरिजीके असाधारण पाण्डित्यका परिचय मिलता है ।

सूरिजीने संस्कृत, प्राकृत और देश्य भाषामें इस प्रकार सैकडो ही स्तोत्रोंकी रचना की, और उसके साथ फारशी भाषामें भी उन्होंने कई स्तोत्र बनाये जो जैन साहित्यमें एकदम नवीन और अपूर्व वस्तु है[3]।

---

१ यहां तकका यह वृत्तान्त 'प्राकृत प्रबन्धावली' अन्तर्गत श्रीजिनप्रभसूरि प्रबन्धसे लिया गया है ।

२ उपदेशसप्तति (सं० १५०३ सोमधर्मगणिकृत) एवं सिद्धान्तस्तवावचूरि । अवचूरिकारने इन स्तोत्रोंको, तपागच्छीय सोमतिलकसूरिको, श्रीजिनप्रभसूरिने पद्मावतीके संकेतसे तपागच्छका भावी उदय ज्ञात कर, भेंट करना लिखा है ।

शायद ये ही सबसे पहले जैनाचार्य थे जिन्होंने यावनी भाषाका अध्ययन किया और उसमें स्तोत्र जैसी कृतिया भी कीं। दिल्लीमें अधिक रहने और मुसल्मान बादशाहोंके दरबारमें आने-जानेके विशेष प्रसगोंके कारण इनको उस भाषाके अध्ययनकी परम आवश्यकता माळूम दी होगी। शायद बादशाहको, जैन देवकी स्तुति कैसे की जाती है इसका परिचय करानेके निमित्त ही इन्होंने उस भाषामें इन स्तोत्रोंकी रचना की हो।

स० १३७६ में दिल्लीके सा० देवराजने शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थोंका संघ निकाला। उस संघमें सूरिजी भी साथ थे। मिती ज्येष्ठ कृष्ण १ को शत्रुंजय तीर्थकी यात्रा की और मिती ज्येष्ठ शुक्ल ५ को श्री गिरनार तीर्थकी यात्रा की। देवराजके संघ एव इन तीर्थद्वयकी यात्राका उल्लेख सूरजीने स्वय अपने तीर्थयात्रा स्तवन एव नेमिकर्म किया है।

स० १३८० में पादलिप्तसूरि कृत वीरस्तोत्रकी वृत्ति और स० १३८१ में राजादिरुचादिगणवृत्ति, साधुप्रतिक्रमण-वृत्ति, सूरिमन्त्राम्नाय आदि ग्रन्थोंकी रचना की।

स० १३८२ के वैशाख शुद्ध १० को श्रीफलवर्द्धि तीर्थकी यात्रा कर स्तोत्र बनाया।

सुलतान कुतुबुद्दीन मिलन—

हमारी ओरसे प्रकाशित ऐतिहासिक जैन काव्यसग्रहके 'जिनप्रभसूरि गीत' में लिखा है कि सूरिजीने सुलतान कुतुबुद्दीनको रञ्जित किया था। अठाही, आठम, चौदसको सम्राट् कुतुबुद्दीन उन्हें अपनी सभामें बुलाता था और एकान्तमें बैठ कर उनसे अपना सशय निवारण किया करता था। सुप्रसन्न हो कर सुलताननें गाव, हाथी आदि सूरिजीको लेनेके लिये कहा पर निस्पृह गुरुजीने उनमेंसे कुछ भी ग्रहण नहीं किया।

सं० १३९३ में रचित 'नाभिनन्दनोद्धार प्रबन्ध'[1] में लिखा है कि—शत्रुञ्जयोद्धारक समरसिंहने शाही फरमान ले कर सघ और श्रीजिनप्रभ सूरिजीके साथ मथुरा और हस्तिनापुरकी यात्रा की थी।

महमद तुगलक प्रतिबोध[2]।

बादशाहका आमन्त्रण—

सूरिजीके अद्भुत पाण्डित्यकी ख्याति सर्वत्र फैल चुकी थी। एक बार स० १३८५ में जब आप दिल्लीके शाहपुरामें विराजमान थे तब दिल्लीपति सम्राट् महमद तुगलकने अपनी सभामें विद्वद्गोष्ठी

---

१ यह ग्रन्थ गुजराती अनुवाद सहित अहमदाबादसे छप चुका है।

२ डॉ ईश्वरीप्रसादके भारतवर्षके इतिहास (पृ २२३-३२) में सुल्तान महमद तुगलकके सबन्धमें अच्छा प्रकाश डाला गया है। उस ग्रन्थसे कुछ आवश्यक अंश नीचे दिया जाता है इससे उसके स्वभाव चरित्रादिके विषयमें पाठकोंको अच्छी जानकारी हो सकेगी। "महम्मद तुगल्क-(सन् १३२५-१३५१ ई)-अपने पिता गयासुद्दीनकी मृत्युके बाद शाहजादा जूना महम्मद तुगल्क नामसे दिल्लीकी गद्दी पर बैठा। दिल्लीके सुलतानोंमें वह सबसे अधिक विद्वान और योग्य पुरुष था। उसकी स्मरण शक्ति और बुद्धि अलौकिक थी और मस्तिष्क बडा परिष्कृत था। अपने समयकी कला तथा विज्ञानका वह ज्ञाता था, और बडी आसानी तथा खूबीके साथ फारसी भाषा बोल और लिख सकता था। उसकी मौलिकता, वक्तृत्व और विद्वत्ता देख कर लोग दग रह जाते थे और उसे सृष्टिकी एक अद्भुत चीज समझते थे। तर्कशास्त्रका वह बडा पण्डित था और उस विषयके प्रकाण्ड विद्वान भी उससे शास्त्रार्थ करनेका साहस नहीं करते थे।

वह अपने धर्मका पाबन्द था परंतु विधर्मियों पर अत्याचार नहीं करता था। वह मुल्लाओं और मौलवियोंकी रायकी परवाह नहीं करता था और प्राचीन सिद्धान्तों और परिपाटियोंको आख बध कर नहीं मानता था। उसने हिन्दुओंके साथ धार्मिक अत्याचार नहीं किया और सती प्रथाको रोकनेका प्रयत्न किया। वह न्याय करनेमें किसीकी रियायत नहीं करता था और छोटे बडे सबके साथ एकसा बर्ताव करता था। विदेशियोंके प्रति वह बडा आदाय्य दिखलाता था उसमें ठीक निश्चय तक पहुचनेकी शक्तिकी कमी थी। उसे क्रोध जल्दी आता था और जरासी देरमें वह आपेसे

करते हुए पण्डितोसे पूछा कि–'इस समय सर्वोत्तम विद्वान कौन है?' इसके उत्तरमें ज्योतिषी धाराधरने श्रीजिनप्रभ सूरिजीके गुणोकी प्रशंसा करते हुए उन्हे सर्वश्रेष्ठ विद्वान् बतलाया। बादशाह एक विद्याव्यसनी सम्राट् था, वह विद्वानोका खूब आदर करता था। उसकी सभामे सदैव बहुतसे चुने हुए पण्डित विद्वद्गोष्ठी किया करते थे, जिसमें सम्राट् स्वय रस लिया करता था। अत प० धाराधरसे श्रीजिनप्रभ सूरिजीका नाम श्रवण कर उन्हींके द्वारा आचार्य श्रीको अपनी राजसभाम बहुमान पूर्वक बुलाया।

बादशाहसे मिलन व सत्कार–

सम्राट्का आमन्त्रण पा कर मिती पोषशुक्ला २ को सध्याके समय सूरिजी उससे मिले। सम्राट्ने अपने अत्यन्त निकट सूरिजीको बैठा कर भक्तिके साथ उनसे कुशलप्रश्न पूछा। सूरिजीने प्रत्युत्तर देते हुए नवीन काव्य रच कर आशीर्वाद दिया जिसे सुन कर सम्राट् अत्यन्त प्रमुदित हुआ। लगभग अर्धरात्रि तक सूरिजीके साथ सम्राट्की एकान्त गोष्ठी होती रही। रात्रि अधिक हो जानेके कारण सूरिजी वहीं रहे। प्रात काल पुन सम्राट्ने सूरिजीको अपने पास बुलाया, और सन्तुष्ट हो कर १००० गाय, द्रव्यसमूह, श्रेष्ठ उद्यान, १०० वस्त्र, १०० कम्बल, एव अगर, चदन, कर्पूरादि सुगन्धित द्रव्य उन्हे अर्पण करने लगा। परन्तु–'जैन साधुओंको यह सब अकल्पनीय हैं'–इत्यादि समझाते हुए सूरिजीने उन सबका लेना अस्वीकार किया। किन्तु सम्राट्को अप्रीति न हो इसलिये राजाभियोग वश उनमेंसे केवल कम्बल वस्त्रादि अल्प वस्तुयें कुछ ग्रहण कीं।

सम्राट्ने विविध देशान्तरोसे आये हुए पण्डितोंके साथ सूरिजीकी वाद-गोष्ठी करवा कर दो श्रेष्ठ हाथी मगवाये। उनमेंसे एक पर श्रीजिनप्रभ सूरिजीको और दूसरे पर उनके शिष्य श्रीजिनदेव सूरिजीको चढा[1] कर, अनेक प्रकारके शाही वाजित्रोंके समारोह पूर्वक, पौषध शालामें पहुचाया। उस समय भट्टादि लोग विरुदावली गा रहे थे, राज्याधिकारी प्रधान-वर्ग भी, चारो वर्णकी प्रजाके सहित, उनके साथ थे। सबमे अपार आनद छा रहा था, आचार्य महाराजकी जयध्वनिसे आकाश गूज रहा था। श्रावकोंने इस सुअवसर पर आडबरके साथ प्रवेश-महोत्सव किया और याचकोको प्रचुर दान दे कर सन्तुष्ट किया।

संघरक्षा और तीर्थरक्षाके फरमान–

सम्राट्का सूरिजीसे परिचय दिनों-दिन बढने लगा जिससे उनके विद्वत्तादि गुणोंकी उसके चित्त पर जबरदस्त छाप पड़ी। उस समय जैनो पर आये दिन नाना प्रकारके उपद्रव हुआ करते थे।

बाहर हो जाता था। वह चाहता था कि लोग उसके सुधारोंको शीघ्र स्वीकार कर लें। जब उसकी आज्ञाके पालनमें आनाकानी होती अथवा विलम्ब होता था तो वह निर्दय हो कर कठोर से कठोर दण्ड देता था। विद्वान् होनेके साथ ही साथ महम्मद एक वीर सिपाही और कुशल सेनापति भी था। सुदूर प्रान्तोंमें कई बार उसने युद्धमें महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त की थी। वह कठोर हृदय होते हुए भी उदार था। अपने धर्मका पाबन्द होते हुए भी कट्टरता और पक्षपातसे दूर रहता था। और अभिमानी होते हुए भी उसका विनय प्रशसनीय था।

महम्मद स्वेच्छाचारी था–परंतु उसकी चित्तवृत्ति उदार थी। शासन प्रबन्धके सबन्धमें वह धर्माधिकारियोंको जरा भी हस्तक्षेप नहीं करने देता था और हिन्दुओंके प्रति उसका व्यवहार अन्य सुलतानोंकी अपेक्षा अधिक निष्पक्ष और सौजन्यपूर्ण था। वह बडा न्यायप्रिय था। शासनके छोटे बडे सभी कामोंकी स्वय देख भाल करता था और फकीर तथा गृहस्थ सभीको न्यायकी दृष्टिसे समान समझता था।"

१ यद्यपि हाथी पर आरोहण करना मुनियोंका आचार नहीं है, परन्तु शासन प्रभावनाका महान् लाभ एवं सम्राट्के विशेष आग्रहके कारण यह प्रवृत्ति अपवाद रूपसे हुई ज्ञात होती है। स० १३३४ में रचित प्रभावकचरित्रमें भी, सूराचार्यके गजारूढ होनेका उल्लेख मिलता है।

अत समस्त श्वेताम्बर दर्शनकी उपद्रवसे रक्षा करनेके लिये सम्राट्ने एक फरमान पत्र सूरिजीको समर्पण किया। गुरुश्रीने चारों दिशाओंमें उस फरमानकी नकल भेज दी जिससे शासनकी बड़ी भारी उन्नति हुई। इसी प्रकार एक दिन सूरिजीने तीर्थोकी रक्षाके लिये सम्राट्का ध्यान आकर्षित किया। सम्राट्ने तत्काल शत्रुञ्जय, गिरनार, फलौधी आदि तीर्थोकी रक्षाके लिये फरमान पत्र लिखवा कर दे दिये। उन फरमान पत्रोंकी नकल भी तीर्थोमें भेज दीं गई। अन्य समय एक बार सूरिजीके उपदेशसे सम्राट्ने बहुत बन्दियोंको कैदसे मुक्त कर दिया।

स० १३८५ की माघ शुद्धि ७ को दिल्लीमें सूरिजीने 'राजप्रासाद'[1] नामक शत्रुंजय कल्प बनाया।

कन्यानयनकी चमत्कारी प्रतिमाका उद्धार—

संवत् १३८५ में आसीनगर (हासी) के अलिय वंशके किसी क्रूर व्यक्तिने श्रावकों एव साधुओंको बंदी बना कर उनकी विडम्बना की। उसने कन्यानयनके श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी पाषाण मय प्रतिमाको खण्डित कर दी, और स० १२३३ आषाढ सुद्धि १० गुरुवारको, श्रीजिनपति सूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित एव उनके चाचा विक्रमपुर निवासी सा० मानदेव कारित, २३ अंगुल प्रमाण वाली श्रीमहावीर भगवानकी चमत्कारी प्रतिमाको अखण्डित रूपसे ही गाड़ीमें रख कर दिल्ली ले आया। सम्राट् उस समय देवगिरिमें था। अत उसके आने पर उसकी आज्ञानुसार व्यवस्था करनेके विचारसे उस जिनबिम्बको तुगुलकाबादके शाही खजानेमें रख दिया। इससे वह प्रतिमा पन्द्रह मास पर्यन्त तुर्कोके आधिकारमें रही।

महावीर प्रभुकी इस प्रतिमाका यह वृत्तान्त ज्ञात कर सूरि महाराज सोमवारके दिन राजसभामें पधारे। उस समय वृष्टि हो रही थी जिससे उनके पैर कीचड़से भर गये थे। सम्राट्ने यह देख कर मल्लिक काफूर द्वारा अच्छे वस्त्रखडसे उनके पैर पुछवाये। सूरिजीने बहुत ही भाव गर्भित काव्य द्वारा सम्राट्को आशीर्वाद दिया। उस काव्यकी व्याख्या करने पर सम्राट्के हृदयमें अत्यन्त चमत्कृति पैदा हुई। अवसर जान कर सूरि महाराजने उपर्युक्त महावीर प्रतिमाका वृत्तान्त बतला कर सम्राट्से, उसे जैनसघको समर्पण कर देनेके लिये निवेदन किया। सम्राट्ने सूरिजीकी आज्ञाको सहर्ष स्वीकार की। तुगुलकाबादके खजानेसे असूअण मल्लिकोंके कन्धे पर विराजमान करा कर प्रभुप्रतिमाको राजसभामें मगवाई और सम्राट्ने दर्शन करके सूरि महाराजको समर्पण कर दी। उस चमत्कारी प्रतिमाकी प्राप्तिसे सबको अपार हर्ष हुआ। समस्त सघने एकत्र हो कर बड़े समारोहके साथ सुखासनमें विराजमान कर 'मलिकताजदीन सराय' के जिनमन्दिरमें उसे स्थापित की। सूरिजीने वासक्षेप किया, और श्रावकलोग प्रतिदिन पूजन करने लगे।

कन्यानयकी प्रतिमाका पूर्व इतिहास—

इस प्रतिमाके पूर्व इतिहासके विषयमें सूरिजीने 'कन्यानयन' तीर्थकल्पमें लिखा है कि— सं० १२४८ में पृथ्वीराज चोहानके, सहाबुदीन गौरी द्वारा मारे जाने पर, राज्यप्रधान परम श्रावक सेठ रामदेवने स्थानीय श्रावक सघको लिखा कि—तुर्कोका राज्य हो गया है, अत महावीर प्रभुके बिंबको कहीं प्रच्छन्नरूपमें रखना आवश्यक है। इस सूचनासे वहांके श्रावकोंने दाहिमाज्ञातीय मडलेश्वर कैमासके मामने बने हुए 'कयवास स्थल' में बालुके नीचे प्रतिमाको गाड़ दी।

स० १३८६ में सूरिजीने ढिंपुरी तीर्थ स्तोत्रकी रचना की।

---

[1] इस कल्पका नाम 'राजप्रासाद' होनेका कारण सूरिजीने ही बताया है कि इसकी रचना प्रारंभके समय राजा विराज (महमद तुगलक) सघ पर प्रसन्न हुए थे। उपर्युक्त फरमान द्वयकी प्राप्तिसे भी इसका समर्थन होता है।

सं० १३११ के दारुण दुर्भिक्षमें जीवन निर्वाहके लिये जाजओ नामक सूत्रधार कन्नाणयसे सुभिक्ष देशकी ओर चला । प्रथम प्रयाण थोड़ा ही करना चाहिये यह विचार कर उसने रात्रिनिवास 'कयवास स्थल'में किया । अर्द्धरात्रिके समय उससे स्वप्नमें देवताने कहा—'तुम जहा सोये हो उसके कितनेक हाथ नीचे प्रभु महावीरकी प्रतिमा है । तुम उसे प्रकट करो ता कि तुम्हें देशान्तर न जाना पड़े और यहीं निर्वाह हो जाय !' सम्भ्रम पूर्वक जग कर देवकथित स्थानको अपने पुत्रादिसे खुदवाने पर प्रतिमा प्रकट हुई । यह शुभ सूचना उसने श्रावकोंको दी । उन्होंने महोत्सवके साथ मन्दिरजीमें प्रतिमाको स्थापित की और सूत्रधारकी आजीविका बाध दी ।

एक बार न्हवणकरानेके पश्चात् प्रभुबिंब पर पसीना आता दिखाई दिया । बार-बार पोंछने पर भी अविरल गतिसे पसीना आता रहा । इससे श्रावकोंने भावी अमगल जाना । इतने ही में प्रभातके समय जेहुय लोगोंकी धाड आई । उन्होंने नगरको चारो तरफसे नष्ट किया । इस प्रकार प्रकट प्रभाव वाले महावीर भगवान, सं० १३८५ तक 'कयवास स्थल' में श्रावकों द्वारा पूजे गये । इसके बादका वृत्तान्त ऊपर आ ही चुका है ।

कन्यानयन स्थान निर्णय—

पं० लालचद भगवानदासका मत है कि उपर्युक्त कन्नाणय या कन्यानयन वर्तमान कानानूर है । पर हमारे विचारसे यह ठीक नहा है । क्यो कि उपर्युक्त वर्णनमें, सं० १२४८ में उधर तुर्कोंका राज्य होना लिखा है, किन्तु उस समय दक्षिण देशके कानानूरमें तुर्कोंका राज्य होना अप्रमाणित है । 'युगप्रधानाचार्यगुर्वावली' में (जो कि श्री जिनविजयजी द्वारा सम्पादित हो कर 'सिंघी जैन ग्रन्थमाला' में प्रकाशित होने वाली है) कन्यानयनका कई स्थलोंमें उल्लेख आता है । उससे भी कन्नाणय, आसी नगर (हासी) के निकट, वागड़ देशमें होना सिद्ध है । जिस कन्यानयनीय महावीर प्रतिमाके सम्बन्ध में ऊपर उल्लेख आया है उसकी प्रतिष्ठाके विषयमें भी गुर्वावलीमें लिखा है कि—सं० १२३३ के ज्येष्ठ सुदि ३ को, आशिकामें बहुतसे उत्सव समारोह होनेके पश्चात्, आषाढ महीनेमें कन्यानयनके जिनालयमें श्रीजिनपति सूरिजीने अपने पितृव्य सा० मानदेव कारित महावीर बिंबकी प्रतिष्ठा की और व्याघ्रपुरमें पार्श्वदेवगणिको दीक्षा दी । कन्यानयनके सम्बन्धमें गुर्वावलीके अन्य उल्लेख इस प्रकार हैं—

संवत् १३३४ मे श्रीजिनचन्द्र सूरिजीकी अध्यक्षतामें कन्यानयन निवासी श्रीमाल ज्ञातीय सा० कालाने नागोरसे श्रीफलौधी पार्श्वनाथजीका सघ निकाला, जिसमें कन्यानयनादि समग्र वागड़ देश व सपादलक्ष देशका सघ सम्मिलित हुआ था ।

संवत् १३७५ माघ सुदि १२ के दिन, नागौरमें अनेक उत्सवोंके साथ श्रीजिनकुशल सूरिजीके वाचनाचार्य-पदके अवसर पर, सघके एकत्र होनेका जहा वर्णन आता है वहा 'श्रीकन्यानयन, श्रीआशिका, श्रीनरभट प्रमुख नाना नगर ग्राम वास्तव्य सकल वागड देश समुदाय' लिखा है ।

संवत् १३७५ वैशाख वदि ८ को, मन्त्रिदलीय ठक्कुर अचलसिंहने सुलतान कुतुबुद्दीनके फरमान से हस्तिनापुर और मथुराके लिये नागोरसे सघ निकाला । उस समय, श्रीनागपुर, रुणा, कोसवाणा, मेडता, कडुयारी, नवहा, झुझणु, नरभट, कन्यानयन, आसिकाउर, रोहद, योगिनीपुर, धामइना, जमुनापार आदि नाना स्थानोंका सघ सम्मिलित हुआ लिखा है । सघने क्रमश चलते हुए नरभटमें श्रीजिनदत्तसूरि-प्रतिष्ठित श्रीपार्श्वनाथ महातीर्थकी वन्दना की । फिर समस्त वागड देशके मनोरथ पूर्ण करते हुए कन्यानयनमें श्रीमहावीर भगवानकी यात्रा की ।

श्रीजिनचन्द्र सूरिजीने खण्डासराय (दिल्ली) चातुर्मास करके मेड़ताके राणा माल्देवकी वीनतिसे विहार कर मार्ग में धामइना, रोहद आदि नाना स्थानोंसे हो कर, कन्यानयन पधार कर महावीर प्रभुको नमस्कार किया।

सवत् १३८० में सुलतान गयासुद्दीनके फरमान ले कर दिल्लीसे शत्रुजयका सघ निकला। वह सर्व-प्रथम कन्यानयन आया, वहां वीर प्रभुकी यात्रा कर फिर आशिका, नरभट, खाटू, नवहा, झुझणू, आदि स्थानोंमें होते हुए, फलौधी पार्श्वनाथजीकी यात्रा कर, शत्रुजय गया।

उपर्युक्त इन सारे अवतरणोंसे कन्यानयनका, आशिकाके निकट वागड़ देशमें होना सिद्ध होता है। श्रीजिनप्रभ सूरिजीने कन्यानयनके पास 'कयवासस्थल' का जो कि मडलेश्वर कैमासके नामसे प्रसिद्ध था, उल्लेख किया है। मडलेश्वर कैमासका सबन्ध भी काननूरसे न हो कर हांसीके आसपासके प्रदेशसे ही हो सकता है। गुर्वावलीके अवतरणोंसे नागौरसे दिल्लीके रास्तेमें नरभट और आशिकाके बीचमें कन्यानयन होना प्रामाणित है। अनुसन्धान करने पर इन स्थानोंका इस प्रकार पता लगा है—

नरभट—पिलानी से ३ मील।

कन्यानयन—वर्तमान कनाणा दादरी से ४ मील जिंद रियासतमें है।

आशिका—सुप्रसिद्ध हांसी।

प० भगवानदासजी जैनने ठ० फेरु विरचित 'वस्तुसार' ग्रन्थकी प्रस्तावनामें कन्यानयनको वर्त्तमान करनाल बतलाया है, परन्तु हमें वह ठीक नहीं प्रतीत होता। गुर्वावलीके उल्लेखानुसार करनाल कन्यानयन नहीं हो सकता।

इसमें अब एक यह आपत्ति रह जाती है कि श्रीजिनप्रभ सूरिजीने स्वय 'कन्यानयीय—महावीरकल्प' में कन्यानयनको चोल देशमें लिखा है। हमारे विचारमें यह चोल देश, जिस स्थानको हम बतला रहे हैं, पूर्वकालमें उसे भी चोल देश कहते हों। इस विषयमें विशेष प्रमाण न मिलनेसे विशेष रूपसे नहीं कह सकते, पर गुर्वावलीमें महावीर प्रतिमाकी प्रतिष्ठाके सबन्धमें जब यह उल्लेख है कि—स० १२३३ के ज्येष्ठ सुदि ३ को, आशिकामें धार्मिक उत्सव होनेके पश्चात्, आषाढमें ही कन्यानयनमें महावीर बिंबकी प्रतिष्ठा श्रीजिनपति सूरिजी द्वारा हुइ, और वहांसे फिर व्याघ्रपुर आ कर पार्श्वदेवको दीक्षित किया। श्रीजिनप्रभ सूरिजीने भी प्रतिमाको 'सा० मानदेव कारित, स० १२३३ आषाढ सुदि १० को प्रतिष्ठित, मानदेवको श्रीजिनपति सूरिजीका चाचा होना, और प्रतिष्ठा भी श्रीजिनपति सूरिजी द्वारा होना' लिखा है। उसी प्रकार ये सारी बातें प्राचीन गुर्वावलीसे भी सिद्ध और समर्थित हैं। पिछले उल्लेखोंमें भी, जो कि कन्यानयनके महावीर भगवानकी यात्राके प्रसङ्गमें हैं, कन्यानयनको वागड़ देशमें आशिकाके पास ही बतलाया है। इन सब बातों पर विचार करते हुए हमारी तो निश्चित राय है कि कन्यानयन काननूर न हो कर वर्त्तमान कनाणा ही है। जिस प्रकार वागड़ देश ४ हैं, इसी प्रकार चोल देश भी दो हो सकते हैं।

विक्रमपुर स्थल निर्णय—

सा० मानदेव के निवास स्थान विक्रमपुरको प० लालचद भगवानदासने दक्षिणके काननूर के पासका बतलाया है, पर यह विक्रमपुर तो निश्चिततया जेसलमेरके निकटवर्ती वर्तमान वीकमपुर है। श्रीजिनपति सूरिजीके रास में 'अत्थि मरुमडले नयर विक्कमपुरे' शब्दोंसे विक्रमपुरको मरुस्थलमें सूचित किया है। सभव है सा० मानदेव व्यापारादिके प्रसङ्गसे वागड़ देशके कन्यानयनमें रहते हों और वहीं श्रीजिनपति सूरिजीके जाने पर महावीर भगवानकी प्रतिष्ठा कराई हो।

'जैन स्तोत्र सदोह' भा० २ की प्रस्तावना, पृ० ४० में, इस विक्रमपुरको बीकानेर बतलाया है, पर यह भूल ही है। बीकानेर तो उस समय बसा भी नहीं था, उसे तो राव बीकाने, स० १५४५ में बसाया है। पूर्वक्त विक्रमपुर जेसलमेर निकटवर्ती वर्तमान बीकमपुर ही है।

देवगिरिकी ओर विहार और प्रतिष्ठानपुर यात्रा-

श्री जिनप्रभ सूरिने दिल्लीमें इस प्रकारकी धर्म-प्रभावना करके महाराष्ट्र (दक्षिण)की ओर विहार किया। सम्राट्ने सूरिजीके विहारमें सब प्रकारकी अनुकूलतायें प्रस्तुत कर दीं। सूरिजीने सम्राट् एव स्थानीय सघके सतोषके निमित्त श्री जिनदेव सूरिजीको, १४ साधुओंके साथ, दिल्लीमें ठहरनेकी आज्ञा दी। सूरिजी विहार-मार्गके अनेक नगरोंमें धर्म-प्रभावना करते हुए देवगिरि (दौलताबाद) पहुचे। स्थानीय सघने प्रवेशोत्सव किया[1]। वहासे सघपति जगसिह, साहण, मल्लदेव आदि सघ-मुख्योंके सहित प्रतिष्ठानपुर पधारे और वहा जीवत मुनिसुव्रत स्वामीकी प्रतिमाके दर्शन किये। यात्रा करके सघ सहित सूरिमहाराज पुन देवगिरि पधारे। सं० १३८७ भा० शु० १२ के दिन 'दीवाली कल्प' की यहा पर रचना की।

देवगिरिके जैन मन्दिरोंकी रक्षा-

एक बार, पेथड, सहजा और ठ० अचलके करवाए हुए जिनमन्दिरोंको तुर्क लोग तोड़नेके लिये उद्यत हुए,[2] तब सूरजीने शाही फरमान दिखला कर उन मन्दिरोंकी रक्षा की। इस प्रकार और भी अनेक तरहसे शासन-प्रभावना करते हुए, शिष्योंको सिद्धान्त-वाचना और तपोद्वहन कराते हुए, तीन वर्ष यहीं व्यतीत किये। इसी बीच सूरजीने उद्भट ऐसे बहुतसे वादियोंको शास्त्रार्थमें परास्त किया। अपने शिष्यों एव अन्य गच्छके मुनियोंको काव्य, नाटक, अलङ्कार, न्याय, व्याकरण आदि शास्त्र पढाए[3]।

दिल्लीमें जिनदेव सूरिद्वारा धर्म-प्रभावना-

इधर दिल्लीमें विराजित श्री जिनदेव सूरिजी, विजयकटक (शाही छावणीमें) में सम्राट्से मिले। सम्राट्ने बहुत सन्मानके साथ एक सराय (मुहल्ला) जैन सघके निवास करनेके लिये दी। इस सराय का नाम 'सुलतान सराय' रखा गया। वहा सम्राट्ने पौषधशाला और जैनमदिर बनवा दिया, एव ४०० श्रावकोंको सकुटुम्ब निवास करनेका आदेश दिया। पूर्वोक्त कन्यानयनके महावीर बिम्बको, इस सरायमें सम्राट्के बनवाये हुए मन्दिरमें विराजमान किया गया। श्वेताम्बर, दिगम्बर एव अन्य धर्मावलम्बी जन भी भक्तिभावसे इस प्रतिमाकी पूजा करने लगे। इस शासनोन्नतिके कार्यसे सम्राट् महम्मद तुगुलकका सुयश सर्वत्र फैल गया।

---

१ 'सस्कृत जिनप्रभसूरि प्रबन्ध' और शुभशीलगणिके कथाकोशमें लिखा है कि-जिनप्रभ सूरिजी सर्वत्र चैत्य परिपाटी करते हुए सुलतान महमद शाहके साथ देवगिरि पहुचे। तब सा० जगसिंहने ३२००० मुद्रा व्यय कर प्रवेशोत्सव किया। स्थानीय चैत्योंकी वदना करते हुए, जब सूरिजी जगसिंहके गृहमदिर पर पहुचे तो वहां के रत्नमय जिनबिम्बोंको देखकर सूरिजीने सिर धुनाया। जगसिंहके कारण पूछने पर कहा-'हमने बहुत स्थानोंमें जिनमदिरोंका वदन किया पर एक तो आज तुम्हारे गृहमदिरको स्थावर तीर्थरूप और दूसरे जगम तीर्थरूप जघरालपुरमें तपागच्छीय सोमतिलकसूरि को देखा।

२ विशेष जाननेके लिये **'जिनप्रभसूरि अने सुलतान महमद'** पृ० ७९ से १०१ तक देखना चाहिए।

३ हर्षपुरीय गच्छके मलधारि श्री राजशेखरसूरिने अपने बनाये हुए न्यायकन्दली विवरणमें, सूरिजीका अपने अध्यापक रूपसे स्मरण किया है। उन्होंने सूरिजीसे न्यायकदली० ग्रथका अध्ययन किया था। रुद्रपल्लीय गच्छके सघतिलकसूरिने सम्यक्त्वसप्ततिकावृत्तिमें सूरिजीको अपना विद्यागुरु बतलाया है। इसी तरह, स० १३४९ में नागेन्द्र गच्छके श्री मल्लीषेण सूरिने अपनी स्याद्वादमञ्जरीमें जिनप्रभ सूरिजी द्वारा प्राप्त सहायताका उल्लेख किया है।

सम्राट्का स्मरण और आमन्त्रण—

एक बार दिल्लीमें बादशाह महम्मद तुगुळक अपनी सभामें विद्वानोंके साथ विद्वद्गोष्टी करता था। उसको किसी शास्त्रीय विचारमें सन्देह उत्पन्न हो जाने पर उपस्थित पण्डितों द्वारा समाधान न होनेसे एकाएक श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी स्मृति हो आइ। उसने कहा—'यदि इस समय राजसभामें वे सूरि विद्यमान होते तो अवश्य हमारे संशय का निराकरण हो जाता। सचमुच उनकी विद्वत्ता अगाध है।' इस प्रकार सम्राट्के मुखसे सूरिजीकी प्रशंसा सुन कर दौलताबादसे आए हुए ताजुलमल्लिकने शिर झुका कर निवेदन किया—'स्वामिन्! वे महात्मा अभी दौलताबादमें हैं, परन्तु वहांका जलवायु अनुकूल न होनेसे वे बहुत कृश हो गये हैं।' यह सुन कर प्रसन्नता पूर्वक सूरिजीके गुणोंका स्मरण करते हुए उस मल्लिकको आज्ञा दी कि तुम शीघ्र दुबीरखाने जाकर फरमान लिखा कर सामग्री सहित भेजो, जिससे वे आचार्य देवगिरिसे यहां शीघ्र पहुंच सकें। सम्राट्की आज्ञासे मल्लिकने वैसा ही किया। यथा समय शाही फरमान दौलताबादके दीवानके पास पहुंचा। सूबेदार कुतुहलखानने सूरिजीको दिल्ली पधारनेके लिये सविनय प्रार्थना करते हुए शाही फरमान बतलाया। सूरि महाराजने सप्ताह भरमें (१० दिन बाद) तैयार होकर ज्येष्ठ सुदि १२ को राजयोगमें सघके साथ वहांसे प्रस्थान किया।

अल्लावपुरमें उपद्रव निवारण—

स्थान स्थानमें धर्म-प्रभावना करते हुए सूरि महाराज अल्लावपुर दुर्ग पधारे। असहिष्णु म्लेच्छोंको एक जैनाचार्यकी इस प्रकारकी महिमा सह्य नहीं हुइ। उन लोगोंने सघवाडेके लोगोंकी बहुतसी वस्तुएं छीन लीं एवं इसी प्रकार कितने ही उपद्रव करने प्रारम्भ कर दिये। जब दिल्लीमें विराजमान श्रीजिनदेव सूरजीको यह वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो उन्होंने तत्काल सम्राट्को सारा हाल कह सुनाया। सम्राट्ने बहुमान पूर्वक फरमान भेज कर वहांके मल्लिक द्वारा लोगोंकी सारी वस्तुएं वापिस दिला दीं। इससे सूरिजीका अद्भुत प्रभाव पड़ा, उन्होंने १॥ मास रह कर वहांसे प्रस्थान कर दिया। क्रमश विचरते हुए जब आप सिरोह पहुंचे तो सम्राट्ने उन्हें देवदूष्यकी भाँति सुकोमल १० वस्त्र भेज कर सत्कार किया। वहांसे विहार करके दिल्ली पहुंचे।

दिल्लीमें सम्राट्से पुनर्मिलन—

जैनसघ और सम्राट् उनके दर्शनोंके लिये चिर कालसे उत्कण्ठित था ही। पूज्य श्रीके शुभागमनसे उनका हृदय अत्यन्त प्रफुल्लित हो गया। मिती भादवा सुदि २ के दिन मुनिमण्डल एवं श्रावकसघके साथ युगप्रधान गुरुजी राजसभामें पधारे। सम्राट्ने मृदु वचनोंसे वन्दन पूर्वक कुशल प्रश्न पूछा और अत्यन्त स्नेहवश सूरजीके हाथको चुम्बन कर अपने हृदय पर रखा। सूरि महाराजने तत्काल ही नवीन निर्मित पद्यों द्वारा आशीर्वाद दिया। जिसे श्रवण कर सम्राट्का चित्त अत्यन्त चमत्कृत हुआ। सूरिजीके साथ वार्तालाप होनेके अनन्तर विशाल महोत्सव पूर्वक अपने हिन्दु राजाओं और प्रधान पुरुषोंके साथ वार्जित्रादि बजते हुए सन्मान पूर्वक सम्राट्ने सुल्तान सरायकी पौषधशालामें उन्हें पहुंचा दिया। उनका प्रवेशोत्सव अपूर्व आनंददायक और दर्शनीय था।

पर्युषणमें धर्म-प्रभावना—

मिती भादवा सुदि ४ के दिन सघने महोत्सव पूर्वक पर्युषणाकल्प सूरिजीसे भक्ति पूर्वक श्रवण किया। सूरिजीके आगमन और प्रभावनाके पत्र पा कर देशान्तरीय सघ हर्षित हुआ। सूरिजीने राजबन्दी श्रावकोंको

लाखो रुपयोंके दण्डसे मुक्त कराया, एव अन्य लोगोको भी करुणावान् पूज्यश्रीने कैदसे छुडाया। जो लोग अवकृपा प्राप्त हो गए थे वे भी सूरिजीके प्रभावसे पुन प्रतिष्ठाप्राप्त हुए। सूरिजी निरन्तर राजसभामें जाते थे। उन्होंने अनेक वादियों पर विजय प्राप्त कर जिन शासनकी शोभा बढाई थी। स० १३८९ के ज्येष्ठ सुदि ५ को 'वीरगणधर' कल्प और मिती भादवा सुदि १० को दिल्लीमें ही **विविधतीर्थकल्प** नामक अद्वितीय ग्रन्थरत्नकी पूर्णाहुती की।

फाल्गुन मासमे, दौलताबादसे सम्राट्की जननी मगदूमई जहाके आने पर, चतुरङ्ग सेनाके साथ बादशाह उसकी अभ्यर्थनामें सन्मुख गया। उस समय सूरि महाराज भी साथ थे। वडथूण स्थानमे मातासे मिल कर सम्राट्ने सबको प्रचुर दान दिया। प्रधानादि अधिकारियोको वस्त्रादि देकर सत्कृत दिया। वहांसे दिल्ली आकर सूरिजीको वस्त्रादि देकर सन्मानित किया।

दीक्षा और बिम्बप्रतिष्ठादि उत्सव–

चैत सुदि १२ के दिन, राजयोगमें, सम्राट्की अनुमतिसे उसके दिये हुए साईवाणकी छायामें नन्दी स्थापना की। सूरिजीने वहां ५ शिष्योंको दीक्षित किया। मालारोपण, सम्यक्त्व ग्रहण आदि धर्मकृत्य हुए। स्थिरदेवके पुत्र ठ० मदनने इस प्रसङ्ग पर बहुतसा द्रव्य व्यय किया।

मिती आषाढ सुदि १० को नवीन बनवाये हुए १३ अर्हत बिंबोंकी सूरिजीने महोत्सव पूर्वक प्रतिष्ठा की। बिम्बनिर्माता ए२ सा० पहराजके पुत्र अजयदेवने प्रतिष्ठा-महोत्सवमें पुष्कळ द्रव्य व्यय किया।

सम्राट् समर्पित भट्टारक-सरायमे प्रवेश–

सुलतान सराय राजसभासे काफी दूर थी, अत सूरिजीको हमेशा आनेमें कष्ट होता है ऐसा विचार कर सम्राट्ने अपने महलके निकटवर्ती सुन्दर भवनो वाली नवीन सराय समर्पण की। श्रावक-सघको वहों पर रहनेकी आज्ञा देकर बादशाहने उसका नाम 'भट्टारक सराय' प्रसिद्ध किया। वहा पर वीरप्रभुका मंदिर व पौषधशाला बनवाई। स० १३८९ मिती आषाढ कृष्णा ७ को, उत्सव पूर्वक सूरि महाराजने पौषधशालामें प्रवेश किया। इस प्रसङ्ग पर विद्वानो एव दीन अनाथोंको यथेष्ट दान दिया गया।

मथुरा तीर्थका उद्धार–

मार्गशिर महिनेमें सम्राट्ने पूर्व देशकी ओर विजय प्राप्त करनेके हेतु ससैन्य प्रस्थान किया। उस समय उन्होंने सूरिजीको भी वीनति करके अपने साथमें लिये। स्थान स्थान पर बन्दीमोचनादि द्वारा शासन-प्रभावना करते हुए सूरि महाराजने मथुरा तीर्थका उद्धार कराया।

हस्तिनापुरकी यात्रा और प्रतिष्ठा–

शाही सेनाके साथ पैदल विहार करते हुए सूरिजीको कष्ट होता है, यह विचार कर सम्राट्ने खोजे जहा मल्लिकके साथ उन्हें आगरेसे दिल्ली लौटा दिया। हस्तिनापुरकी यात्राका फरमान लेकर आचार्य श्री दिल्ली पहुचे। चतुर्विध सघ हस्तिनापुरकी यात्राके निमित्त एकत्र हुआ। शुभ मुहूर्तमें बोहित्थ (चाहड पुत्र) को सघपतिका तिलक कर वहांसे प्रस्थान किया। सघपति बोहित्थने स्थान स्थान पर महोत्सव किये।

तीर्थभूमिमें पहुच कर तीर्थको बधाया। नवनिर्मित शान्तिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ आदि तीर्थंकरोंके बिम्बोंकी सूरिजीसे प्रतिष्ठा करवाई। अंबिकादेवीकी प्रतिमा स्थापित की। सघपतिने सघवात्सल्यादि किये। सबने वस्त्र, भोजन आदि द्वारा याचकोंको सन्तुष्ट किया। सवत् १३८९ वैशाख सुदि ६ के दिन रचित,

हस्तिनापुर तीर्थकल्पम, सघ सहित यात्रा करनेका सूरिजीने स्वय उल्लेख किया है। तीर्थयात्रासे लौट कर सूरिजीने वैशाख सुदि १० के दिन श्रीकन्यानयनके महावीर बिम्बको सम्राट्के बनवाये हुए जैन मन्दिरमें महोत्सव पूर्वक स्थापित किया।

इधर सम्राट् भी दिग्विजय करके दिल्ली लौटा। जैनमन्दिर और उपाश्रयोंमें उत्सव होने लगे। सम्राट् एव सूरिजीका सम्बन्ध उत्तरोत्तर घनिष्ठता प्राप्त करने लगा। अत सूरिजी और सम्राट् दोनोंके द्वारा जिनशासनकी बड़ी प्रभावना होने लगी। सूरिजीके प्रभावसे दिगम्बर श्वेताम्बर समस्त जैन संघ व तीर्थोंका उपद्रव शाही फरमानो द्वारा सर्वथा दूर हो गया।

ग्रन्थान्तरोंके चमत्कारिक उल्लेख—

सुलतान प्रतिबोधका उपर्युक्त वृत्तान्त, विविधतीर्थकल्प ग्रन्थान्तर्गत **'श्रीकन्यानयन-महावीर प्रतिमाकल्प'** और रुद्रपल्लीय गच्छके श्रीसोमतिलक सूरि कृत **'कन्यानयन-श्रीमहावीर-तीर्थकल्प परिशेष'** से लिखा गया है जो कि प्रथम स्वय सूरि महाराजकी और दूसरी समकालीन रचना है। अब प्राकृत जिनप्रभसूरिप्रबन्धादि ग्रन्थान्तरोंसे सूरिजी एव सम्राट् सम्बन्धी विशेष बाते संक्षेपमें दी जाती हैं।

पद्मावती सानिध्य—

पद्मावती देवीकी सूचनानुसार सूरिजी दिल्लीके शाहपुरामें आकर ठहरे। एक बार शौचभूमि जाते समय अनार्योंने लेष्टु (ढेला-पत्थर) आदि द्वारा उन्हें अपमानित किया। पद्मावती देवीने उन अनार्योंको उचित शिक्षा दी। इससे उन्होंने भाग कर सुलतान महम्मदशाहसे सारा वृत्तान्त कहा। उसने चमत्कृत हो कर सूरिजीको अपने यहा बुलाया। सूरिजीके कुम्भकासनादि द्वारा सम्राट्का चित्त अत्यन्त प्रभावित हुआ।

व्यन्तरोपद्रव निवारण—

एक बार सम्राट्ने सूरिजीसे कहा—'मेरी प्रिया बालादेको किसी व्यन्तरकी बाधा है जिससे वह वस्त्र-ग्रहणादि शरीर शुश्रूषा नहीं करती। आपका प्रभाव असाधारण है अत कृपया किसी प्रकारसे इस व्यन्तरोपद्रवका निवारण करें'। सूरिजीने कहा,—'अच्छा! उसके पास जाकर कहो कि जिनप्रभ सूरि आते हैं।' सम्राट्ने वैसा ही किया। सूरिजीके आगमनकी बात सुन कर बालादेने सहसा उठ कर दासीसे वस्त्र मगा कर पहन लिये। सूरि महाराजके नाममें ही कैसा अद्भुत प्रभाव है इसका प्रत्यक्ष फल देख कर सम्राट् अत्यन्त प्रसन्न हुआ, और सूरिजीको महलमें पधारनेकी वीनति की। सूरिजीने आते ही बालादेके देहमें प्रविष्ट व्यन्तरको कहा—'दुष्ट! तू यहां कहांसे आया, चला जा'। उसने जब जानेकी आनाकानी की तो गुरुदेवने मेघनाद क्षेत्रपालके द्वारा उसे भगा दिया। रानी स्वस्थ हो गई और सूरिजीके प्रति अत्यन्त भक्तिभाव रखने लगी।

ईर्ष्यालु राघव चेतनको शिक्षा—

एक बार सम्राट्की सेवामें काशीसे चतुर्दशविद्यानिपुण मन्त्र-तन्त्रज्ञ राघवचेतन नामका ब्राह्मण आया। उसने अपनी चातुरीसे सम्राट्को रञ्जित कर लिया। सम्राट् पर जैनाचार्य श्रीजिनप्रभ सूरिजीका प्रभाव उसे बहुत अखरता था। अत उन्हें दोषी ठहरा कर, उनका सम्राट् पर प्रभाव कम करनेके लिये सम्राट्की मुद्रिका अपहरण कर सूरिजीके रजोहरणमें प्रच्छन्न रूपसे डाल दी। पद्मावती देवीसे वृत्तान्त ज्ञात कर सूरिजीने धीरेसे उस मुद्रिकाको राघव चेतनकी पगडी पर लटका दी। सम्राट् मुद्रिका न पा कर इधर उधर देखने लगा तो राघव चेतनने कहा—'आपकी मुद्रिका सूरिजीके पास है।' सम्राट्ने जब सूरिजीकी ओर देखा तो उन्होंने

कहा—'उलटा चोर कोतवालको दण्डे!' वाली उक्ति चरितार्थ हो रही है, मुद्रिका तो इसके मस्तक पर पडी है और यह हमारे पास बतलाता है। जब सम्राट्ने उसकी तलाशी ली तो वह अपनी करणीका फल पा कर म्लानमुख हो गया—"खाड खणे जो और को ता को कूप तैयार"।

कलंदर मुल्ला मानमर्दन—

इसी प्रकार फिर कभी राजसभामें खुरासानसे एक कलन्दर मुल्ला आया। उसने अपना प्रभाव जमाने और सूरिजीका प्रभाव घटानेके लिए अपनी टोपीको आकाशमे फैंक कर अधर रखी और गर्वपूर्वक सम्राट् से कहने लगा—'क्या कोई आपकी सभामें ऐसा है जो इस टोपीको नीचे उतार सकता है?' सम्राट्ने सूरिजीकी ओर देखा। उन्होंने तत्काल रजोहरण फैंक कर उसके द्वारा टोपीको ताडित करते हुए फकीरके मस्तक पर गिरा दी[1]। इस कोशलसे हताश होकर कलन्दरने एक पनिहारीके मस्तक पर रहे हुए घडेको अधर स्तम्भित कर दिया। सूरिजीने कहा—'घडेको स्तभित करनेमें क्या है, विना घडे पानीको स्तभित करे वही श्रेष्ठ कला है'। सम्राट्ने मुल्लासे वैसा करनेको कहा परन्तु वह न कर सका। तब सूरिजीने तत्काल घडेको कंकरसे फोड कर पानीको अधर स्तंभित दिखला दिया।

अद्भुत भविष्य-वाणी—

एक समय सम्राट्ने शाही सभामें बैठे हुए समस्त पण्डितोंसे पूछा—'कहिये! आज मैं किस मार्गसे राजवाटिकामें जाऊगा?' सभी पण्डितोंने अपनी अपनी बुद्धिके अनुसार लिख कर सम्राट्को दे दिया। सम्राट्ने सूरिजीसे कहा तो उन्होंने भी अपना मन्तव्य लिख दिया। सब चिट्ठीयोंको अपने दुपट्टेमें बाध कर सम्राट्ने विचार किया, कि आज किसी ऐसे मार्गसे जाना चाहिए जिससे ये सब असत्यवादी सिद्ध हो जावें। विचारानुसार वह किलेके बुर्जको तुडवा कर नवीन मार्गसे राजवाटिकामें पहुचा और एक वट वृक्षकी छायामें बैठ कर सब पण्डितों और सूरिजीको बुलाया। सबके लेख पढे गये और वे असत्य प्रमाणित हुए। अन्तमें सूरिजीका लेख पढा गया। उसमे लिखा था—'किलेके बुर्जको तोड कर राजवाटिकामें जा कर सुल-तान वट वृक्षके नीचे विश्राम करेंगे।' इस अद्भुत निमित्तको श्रवण कर सभी विद्वान और विशेषत. सम्राट् अत्यन्त विस्मित हुए और सम्राट्ने स्पष्ट रूपसे सबके समक्ष सूरिजीकी इन शब्दोंमें स्तुति की कि—'सच-मुच यह बात मनुष्यकी कल्पनासे भी अगम्य है। ये गुरु मनुष्य रूपमें साक्षात् परमेश्वर हैं।' इसी प्रकार अन्यदा सम्राट्के यह पूछने पर कि—'मैं आज क्या खाऊगा?' सूरिजीने निमित्त बलसे एक पुर्जेमें अपना मन्तव्य लिख दिया और भोजनानन्तर खोलनेको कहा। सुलतानने "खोल" खाया और जब सूरिजीका लिखा हुआ पुर्जा देखा गया तो उसमे भी वही लिखा पाया।

वट वृक्षको साथ चलाना—

एक बार सम्राट्ने देशान्तर जानेके लिये प्रस्थान कर एक शीतल छायावाले वृक्षके नीचे विश्राम किया। सम्राट्ने आराम पा कर उस वृक्षकी बहुत प्रशसा की और कहा कि—'यदि यह वृक्ष अपने साथ रहे तो क्या ही अच्छा हो!' सूरिजीने अपने लोकोत्तर विद्या-प्रभावसे वृक्षको भी सम्राट्का सहगामी बना दिया। पांच कोस तक वृक्ष साथ चला, फिर सूरिजीने सम्राट्के कहनेसे उस वृक्षको वापिस स्वस्थान

---

१ सम्राटके समक्ष मुल्लाकी टोपीको रजोहरण द्वारा आकाशसे गिरानेका उल्लेख युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरिजीके संबन्धमें भी आता है। इसी प्रकार अमावास्याके दिन पूर्णचद्रका उदय करनेका प्रसङ्ग भी यु० जिनचन्द्रसूरि और सम्राट् अकबरके चरित्रोंमें आता है। हमारे विचारसे ये दोनों बातें श्रीजिनप्रभसूरिजीके सम्बन्धकी होंगी।

जानेकी आज्ञा दी। तब वृक्ष भी सम्राट्को नमस्कार करके स्वस्थान चला गया। इस अनोखे चमत्कारसे सूरिजीके प्रति सम्राट्की श्रद्धा अत्यधिक दृढ हो गई।

बादशाह महमद तुगलक क्रमश प्रयाण करते हुए मारवाड़ पहुंचा। वहांके लोग सम्राट्के दर्शनार्थ आये। उन्हें उत्तम वस्त्राभरणोंसे रहित देख कर सम्राटने सूरिजीसे कहा—'ये लोग लुटे हुएसे क्यों मालूम होते हैं?' सूरिजीने कहा—'राजन्! यह मरुस्थली है, जलाभावके कारण धान्यादिकी उपज अत्यल्प होती है, अतएव निधनतावश इनकी ऐसी स्थिति है।' सम्राट्ने करुणार्द्र होकर प्रत्येक मनुष्यको पाँच पाँच दिव्य वस्त्र और प्रत्येक स्त्रीको दो दो स्वर्णमुद्राएं एव साड़ी प्रदान कीं।

महावीर प्रतिमाका बोलना—

कन्यानयनकी श्री महावीर प्रतिमाको सूरिजीने सम्राट्से प्राप्त की थी, जिसका उल्लेख ऊपर आ ही चुका है। प्राकृत प्रबन्धमें लिखा है कि—जिस समय सम्राट्ने उस प्रतिमाका दर्शन किया और सूरिजीने प्रतिमाको जैन संघके सुपुर्द करनेका उपदेश दिया, तब सम्राट्ने कहा—'यदि यह प्रतिमा मुहसे बोले तो मैं आपको दे सकता हू।' इस पर सूरिजीने कहा—'प्रतिमाकी विधिवत् पूजा करनेसे वह अवश्य बोलेगी।' सम्राट्ने कौतुकसे उनके कथनानुसार पूजन किया और दोनों हाथ जोड़ कर विनीत भावसे प्रतिमाको बोलनेके लिए प्रार्थना की। तत्काल ही देवप्रभावसे अपना दाहिना हाथ लम्बा करके वह इस प्रकार बोली—

विजयतां जिनशासनमुज्वलं विजयतां भूभुजाधिपवल्लभा।
विजयतां भुवि साहि महम्मदो विजयतां गुरुसूरिजिनप्रभः।

अपने पूछे हुए प्रश्नोंका प्रभुप्रतिमासे सन्तोषजनक उत्तर पा कर सम्राट्के चित्तमें अत्यन्त चमत्कृति उत्पन्न हुई और उस प्रतिमाकी पूजाके निमित्त खरह और मातड नामक दो ग्राम दिये और मन्दिर बनवा दिया।

सम्राट्की शत्रुंजय यात्रा और रायणकी दूधवर्षा—

एक बार सुल्तानने गुरुजीसे पूछा—'जिस प्रकार यह कान्हड़ महावीरका चमत्कारी तीर्थ है, क्या वैसा ही और कोई तीर्थ है?' सूरिजीने तीर्थाधिराज शत्रुंजयका नाम बतलाया। तब संघके साथ सम्राट् सूरिजीको लेकर शत्रुंजय गया। रायण रुखकी यात्रा करते समय सूरिजीने कहा—'यदि इस रायणको मोतियोंसे बधाया जाय तो इसमेंसे दूधकी वर्षा होती है।' सम्राट्ने ऐसा ही किया, जिससे रायण रुखसे दूध झरने लगा। इससे चमत्कृत हो कर सम्राट्ने वहां पर ऐसा लेख लिखवाया कि इस तीर्थकी जो अवज्ञा करेगा उसे सम्राट्की अवज्ञाका महान् दण्ड मिलेगा। शत्रुंजयकी तलहट्टीमें सर्व दर्शनोंके मान्य देवताओंकी मूर्तियां एकत्र कर मध्य भागमें जिनप्रतिमाको रखा और स्वय सशस्त्र मुसाहिबोंके बीचमें बैठ कर लोगोंसे पूछा—'बड़ा कौन है?' लोग बोले—'आप ही बड़े हैं।' तो सुल्तानने कहा जिस प्रकार हथियार वाले सब सेवक और मैं उनका मालिक हू वैसे ही अस्त्र शस्त्र धारण करने वाले सब देवता सेवक हैं और जैन तीर्थङ्कर सब देवोंमें बड़े हैं।

गिरनारकी अच्छेद्य प्रतिमा—

वहांसे सूरिजी एव संघके साथ सम्राट्ने गिरनार पर्वतकी यात्रा की। वहांके श्रीनेमिनाथ प्रभुके बिम्बको अच्छेद्य और अभेद्य सुन कर परीक्षाके निमित्त उस पर कई प्रहार करवाये, पर प्रहारोंसे प्रभु-प्रतिमा खण्डित

न हो कर उससे अग्निकी चिनगारियां निकलने लगीं। तब सम्राट्‌ने प्रतिमाके समक्ष क्षमा याचना कर उसे स्वर्णमुद्राओंसे बधाई।

विजय-यन्त्र-महिमा—

एक वार मन्त्र-यन्त्रके माहात्म्यके सम्बन्धमें सूरिजी और सम्राट्‌में वार्त्तालाप हो रहा था। सम्राट्‌ने प्रसङ्गवश विजय-यन्त्रकी महिमा सुन कर उसके प्रभावको प्रत्यक्ष देखना चाहा। सूरिजीने विजय-यन्त्र देते हुए सम्राट्‌से कहा—'जिसके पास यह यन्त्र होता है उसे देवताओंके अस्त्र भी नहीं लगते और कुपित शत्रु भी अनिष्ट नहीं कर सकते।' सम्राट्‌ने उस यन्त्रको एक बकरेके गलेमें बाध कर उस पर खड्गके कई प्रहार किये परन्तु यन्त्रके प्रभावसे बकरेके तनिक भी घाव नहीं हुआ। तब फिर उस यन्त्रको छत्रदण्ड पर बाध कर उसके नीचे एक चूहेको रखा गया और सामनेसे बिल्ली छोडी गई। चूहेको पकड़नेके लिए बिल्ली दौडी अवश्य, परन्तु यन्त्रके प्रभावसे छत्रके नीचे न आ सकी, जिससे वह चूहा बाल बाल बच गया। यन्त्रका यह अक्षुण्ण प्रभाव देख कर सम्राट्‌ने ताम्रमय दो यन्त्र बनवा कर एक स्वय रखा और एक सूरिजीको दे दिया।

इसी प्रकारके चमत्कारी प्रवादोंमें अमावसको पूनम बना देना, शीतज्वरको झोलीमें बांधके रख देना, भैंसेके मुखसे वाद कराना, आदि जनश्रुतिया भी पाई जाती हैं।

बुद्धिशाली कथन—

प० श्रीशुभशीलगणिके कथाकोशमें उपर्युक्त प्रवादोंके साथ सम्राट्‌के पूछे हुए दो प्रश्नोंके सूरिजी द्वारा दिये गये युक्तिपूर्ण उत्तरोंके उल्लेख इस प्रकार हैं—

एक वार सम्राट्‌ने राजसभामें पूछा, कहो—'शक्कर किस चीजमें डालनेसे मीठी लगती है?' पण्डितोंमेंसे किसीने कुछ और किसीने कुछ ही उत्तर दिया। उससे सम्राट्‌को सतोष न होने पर सूरिजीसे पूछा। उन्होंने कहा—'शक्कर मुँहमें डालनेसे मीठी लगती है।'

इसी तरह एक वार, सम्राट् क्रीड़ाके हेतु उद्यानमें गया था, वहा जलसे भरे हुए विशाल सरोवरको देख कर सबसे पूछा—'यह सरोवर धूलि आदि द्वारा भरे विना ही छोटा कैसे हो सकता है?' कोई भी इस प्रश्नका युक्तिपूर्ण उत्तर न दे सका, तब सूरिजीने कहा—'यदि इस सरोवरके पास अन्य कोई बड़ा सरोवर बनाया जाय तो उसके आगे यह सरोवर स्वयमेव छोटा कहलाने लग जायगा।'

एक समय सुलतानने सूरिजीसे पूछा कि—'पृथ्वी पर कौनसा फल बड़ा है?' उन्होंने कहा—'मनुष्योंकी लज्जा रखने वाली वडणी (कपास) का फल बड़ा है।'

सोमप्रभसूरि मिलन और अपराधी चूहेको शिक्षा—

स० १५०३ में विरचित श्रीसोमधर्मकृत उपदेशसप्तति और सस्कृत जिनप्रभसूरि-प्रबन्धमें लिखा है कि—एक वार श्रीजिनप्रभ सूरिजी पाटणके निकटवर्ती जघराल नगरमें पधारे तो वहा तपागच्छीय श्रीसोमप्रभ सूरिजीसे मिलनेके लिये गये। सोमप्रभ सूरिजीने खड़े हो कर बहुमान पूर्वक आसनादि द्वारा उनका सन्मान करते हुए कहा—'भगवन्! आपके प्रभावसे आज जैनधर्म जयवन्त वर्त रहा है। आपकी शासन-सेवा परम स्तुत्य है।' प्रत्युत्तरमें श्रीजिनप्रभ सूरिजीने कहा—'सम्राट्‌की सेनाके साथ एव सभामें रहनेके कारण हम चारित्रका यथावत् पालन नहीं कर सकते। आपका चारित्रगुण श्लाघनीय है।' इस प्रकार दोनों आचार्योंका शिष्ट सभाषण हो रहा [illegible] सिकिका

(झोली)को चूहों द्वारा काटी हुई देख कर सोमप्रभ सूरिजीको दिखलाई। श्रीजिनप्रभ सूरिजी भी पासमें बैठे थे, उन्होंने आकर्षणी विद्यासे उपाश्रयके समस्त चूहोंको रजोहरण द्वारा आकर्षित कर लिया और उनसे कहा कि–'तुममेंसे जिसने इस निक्किाको काटी हो वह यहां ठहरे, बाकी सब चले जाँय'। तब केवल अपराधी चूहा वहां रह गया, और बाकी सब चले गये। उसे भविष्यमें ऐसा न करनेको कह कर उपाश्रयका प्रदेश छोड़ देनेकी आज्ञा दे दी। इससे श्रीसोमप्रभ सूरि और मुनिमण्डली बड़ी विस्मित हुई।

योगिनी प्रतिबोध–

प्राकृत प्रबन्धमें लिखा है कि–एक बार चौसठ योगिनी श्राविकाके रूपमें सूरिजीको छलनेके लिये आईं और सामायक ले कर व्याख्यान श्रवणार्थ बैठीं। पद्मावती देवीने योगिनीयोंकी भावनाको सूरिजीसे विदित कर दी। तब सूरिजीने उन्हें व्याख्यान श्रवणमें निमग्न देख कर वहा कीळ करके स्तम्भित कर दीं। व्याख्यान समाप्तिके अनन्तर जब वे उठनेको प्रस्तुत हुईं तो अपनेको आसनों पर चिपकी हुई पाईं। यह देख कर सूरिजीने मृदु हास्यपूर्वक उनसे कहा–'मुनियोंके गोचरीका समय हो गया है, अतः शीघ्र वन्दना व्यवहार करके अवसर देखो।' मन-ही-मन लज्जित होती हुईं योगिनियोंने कहा–'भगवन्! हम तो आपको छलनेके लिये आईं थीं पर आपने तो हमें ही छल लिया। अब कृपा कर मुक्त करें।' सूरिजीने कहा–'हमारे गच्छके अधिपति जब योगिनीपीठ (उज्जैनी, दिल्ली, अजमेर, भरौंच) में जाँय तो उन्हें किसी प्रकारका उपद्रव नहीं करनेकी प्रतिज्ञा करो तो छोड़ सकता हू।' योगिनियां इस बातका स्वीकार कर स्वस्थान चली गईं। इसके बाद खरतर गच्छके आचार्य सत्र निर्विघ्नतया विहार करते रहे।

शैवोंको जैन बनाना–

स० १३४४ (१७४)में खडेलपुरमें जगल गोत्रके बहुतसे शिवभक्तोंको प्रतिबोध दे कर जैन बनाए।

देवीउपद्रव निवारण–

शुभशीलगणिके कथाकोशमें लिखा है कि–एक नगरमें श्रावक लोगोंको दो दुष्ट देवियां रोगोपद्रवादि किया करती थीं, सूरिजीको ज्ञात होने पर उन्होंने उन देवियोंको आकर्षित कीं। उसी समय उस नगरके सघने दो श्रावकोंको इसी कार्यके लिये सूरिजीके पास भेजा था। उन्होंने, उपद्रवकारी देवियोंको सूरिजी समझा रहे हैं, यह अपनी आँखोंसे देखा तो उन्हें बड़ा विस्मय हुआ। उनके प्रार्थना करनेके पूर्व ही सूरिजीने उस उपद्रवको दूर करवा दिया। श्रावकोंने लौट कर सघके समक्ष सब वृत्तान्त कह कर सूरिजीकी भूरि भूरि प्रशसा की।

श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी साहित्य सम्पत्ति–

श्रीजिनप्रभ सूरिजीने साहित्यकी अनुपम सेवा की है। उनकी कृतियां जैन समाजके लिये अत्यन्त गौरवपूर्ण हैं। इन कृतियोंमेंसे रचना समयके उल्लेख वाली कृतियोंका निर्देश तो यथास्थान किया जा चुका है। पर बहुतसी कृतियोंमें रचना समयका उल्लेख नहीं है। अत यहां उनकी सभी कृतियोंकी यथा ज्ञात सूची दी जाती है।

१ कातन्त्र विभ्रमटीका, ग्र० २६१, सं० १३५२, योगिनीपुर, कायस्थ खेतलकी अभ्यर्थनासे।
२ श्रेणिक चरित्र (द्व्याश्रयकाव्य), स० १३५६ (कुछ भाग प्रकाशित)
३ विधिप्रपा, ग्र० ३५७४, स० १३६३ विजयदशमी, कोशलानगर।
४ कल्पसूत्रवृत्ति–सन्देहविषौषधि, ग्र० २२६९, सं० १३६४, अयोध्या, (प्रकाशित)

५ अजितशान्तिवृत्ति (बोधदीपिका) स० १३६५ पोष, ग्र० ७४०, दाशरथिपुर (प्र०)

६ उपसर्गहरस्तोत्रवृत्ति (अर्थकल्पलता), ग्र० २७१, स० १३६४ पो० व० ९, साकेतपुर (प्र०)

७ भयहरस्तोत्रवृत्ति (अभिप्रायचन्द्रिका), स० १३६४, पो० सु० ९, साकेतपुर।

८ पादलिप्तकृत वीरस्तोत्रवृत्ति, स० १३८०, (चतुर्विंशतिप्रबन्ध अनुवादके परिशिष्टमें प्र०)

९ राजादि-रुचादिगणवृत्ति, स० १३८१।

१० विविधतीर्थकल्प, स० १३९० तकमें पूर्ण (सिंघी जैन ग्रन्थ मालामें प्रकाशित)

११ विदग्धमुखमण्डनवृत्ति (इसकी एक मात्र प्रति बीकानेरके श्रीजिनचारित्रसूरि-भंडारमें है)।

१२ साधुप्रतिक्रमणवृत्ति, जैनस्तोत्रसदोह, भा० २, प्रस्तावना पृ० ५१ में इसका रचना काल स० १३६४ लिखा है।

१३ हैमव्याकरणानेकार्थकोष, श्लो० २००, (पुरातत्त्व, वर्ष २, पृ० ४२४ में उल्लिखित)

१४ प्रत्याख्यानस्थानविवरण
१५ प्रव्रज्याभिधानवृत्ति
१६ वन्दनस्थानविवरण
१७ विषमकाव्यवृत्ति
१८ पूजाविधि

} इनका उल्लेख, हीरालाल कापड़ियाकी 'चतुर्विंशति जिनानन्द-स्तुति'की प्रस्तावना, पृ० ४० में है।

१९ तपोटमतकुट्टन

२० परमसुखद्वात्रिंशिका, गा० ३२

२१ सूरिमन्त्राम्नाय (सूरिविद्याकल्प)

२२ वर्द्धमानविद्या, प्रा० गा० १७

२३ पद्मावती चतुष्पदिका, गा० ३७

२४ अनुयोगचतुष्टयव्याख्या (प्र०)

२५ रहस्यकल्पद्रुम, अलभ्य, उल्लेख ग्र० न० २४ में।

२६ आवश्यकसूत्रावचूरि (षडावश्यक टीका) उल्लेख 'जैन साहित्यनो स० इतिहास' तथा जैनस्तोत्र-सदोह भाग २

२७ देवपूजाविधि – विधिप्रपा परिशिष्टमे प्रकाशित

जै० सा० स० इ० ४२०, और जैनस्तोत्रस० भा० २, प्रस्तावनामें इनके रचित ग्रन्थोंमें, चतुर्विधभावनाकुलक आदि कई अन्य कृतियोका उल्लेख है पर हमें वे आगमगच्छीय जिनप्रभसूरिरचित प्रतीत होती हैं (देखो, जै० गु० क० भा० १, प्रस्तावना पृ० ८०–८१)

स्तुति-स्तोत्रादिकी सूची†

क्रमाङ्क	नाम	पद्य प्रारम्भ	भाषा	पद्यसंख्या	विशेष
१	श्रीजिनस्तोत्र (१० दिग्पाल-स्तुतिगर्भ)	अस्तु श्रीनाभिभूर्देवो	सं०	११	श्लेषमय
२	श्रीऋषभजिनस्तोत्र	अल्लाल्लाहि ! तुराह		११	पारसी भाषा
३	श्रीऋषभजिनस्तोत्र	निरवधिरुचिरज्ञान		४०	अष्टभाषामय
४	श्रीअजितजिनस्तोत्र	विश्वेश्वर मथितमन्मय०		२१	महायमक
५	श्रीचन्द्रप्रभजिनस्तुति	देवैर्यस्तुष्टुवे तुष्टै	सं०	४	समचरण साम्य
६	,, ,,	नमो महासेननरेन्द्रतनुज !		१३	षड्भाषामय
७	श्रीशान्तिजिनस्तवन	श्रीशान्तिनाथो भगवान्	सं०	२०	
८	श्रीमुनिसुव्रतजिनस्तोत्र	निर्माय निर्माय गुणर्द्धि	सं०		त्र्यक्षर यमक
९	श्रीनेमिजिनस्तोत्र	श्रीहरिकुळहीराकर०	सं०	२०	क्रियागुप्त
१०	श्रीपार्श्वजिनस्तोत्र	अधियदुपनमन्तो	सं०	१२	सं० १३६९
११	,, ,,	कामे वामेय ! शक्तिर्भवतु	सं०	१७	
१२	,, ,, (जीरापल्ली)	जीरिकापुरपतिं सदैव त	सं०	१५	त्र्यक्षर यमक
१३	,, ,, (प्रातिहार्य)	त्वां विनुत्य महिमश्रिया मह	सं०	१०	समचरण-साम्य
१४	,, ,, (नवग्रहग०)	दोसावहारदक्खो	प्रा०	१०	प्राकृत
१५	,, ,,	पार्श्वनाथमनघ	सं०	९	
१६	,, ,,	पार्श्व प्रभु शश्वदकोपमानम्	सं०	८	पादान्तयमक
१७	,, ,,	श्रीपार्श्व ! पादानतनागराज	सं०	८	,,
१८	,, ,,	श्रीपार्श्वं भावत स्तौमि	सं०	९	समचरण-साम्य
१९	,, ,,	श्रीपार्श्वः श्रेयसे भूयात्	सं०	४४	
२०	,, (फलवर्द्धि)	सयलाहिवाहिजलहर०	प्रा०	१२	प्राकृत
२१	श्रीवीरजिनस्तोत्र	असमशमनिवास	सं०	२५	विविधछंद जाति
२२	श्रीवीरजिनस्तोत्र	कंसारिक्रमर्यिदापगा०	सं०	२५	छंदनाममय
२३	,, ,,	चित्रैः स्तोष्ये जिन वीर	सं०	२७	चित्रमय
२४	,, ,,	निस्तीर्णविस्तीर्णभवार्णव	सं०	१७	लक्षणप्रयोग
२५	,, (पञ्चकल्याणक)	पराक्रमेणेव पराजितोऽय	सं०	३६	
२६	,, ,,	श्रीवर्द्धमानपरिपूरित०	सं०	१३	

† इनमेंसे नं० ८ १५ २९, ३३ अप्रकाशित हैं, अवशेष सब प्रकरण रत्नाकर, जैनस्तोत्रसमुच्चय, जैनस्तोत्रसन्दोह, प्राचीनजैनस्तोत्रसंग्रह आदिमें प्रकाशित हो गये हैं। नं० २ सावचूरि जैन साहित्यसंशोधकमें प्रकाशित हो चुका है। नं० १४, ४१ की अवचूरि टिप्पण उपलब्ध है। पं० लालचंद भगवानदासने इस सूचीके अतिरिक्त 'किं कप्पतरु' आदि वाले पंचपरमेष्ठिस्तवका भी नाम लिखा है। हीरालाल रसिकदास कापडिया सूरिजीके सभी स्तोत्रोंका संग्रहग्रन्थ सम्पादित करके दे० ला० पु० फंडसे प्रकाशित करने वाले हैं। यह शीघ्र ही प्रगट हो यही हमारी मनोकामना है।

क्रमाङ्क	नाम	पद्य प्रारम्भ	भाषा	पद्यसंख्या	विशेष
२७	,, ,,	श्रीवर्द्धमान' सुखवृद्धयेऽस्तु	स०	९	पद्यके आद्यान्ताक्षरोंमें नामोल्लेख
२८	,, (निर्वाणकल्याणक)	श्रीसिद्धार्थनरेन्द्रवंश०	स०	१९	
२९	,, ,,	सिरिवीयराय देवाहिदेव	प्रा०	३५	प्राकृत
३०	,, ,,	स्व श्रेयससरसीरुह—	स०	२६	पचवर्गपरिहार
३१	,, (चतुर्विंशतिजिनस्तव)	आनन्दसुन्दरपुरन्दरनम्रः	स०	२९	
३२	,, ,,	आनम्रनाकिपति०	स०	२५	
३३	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	ऋषभदेवमनन्तमहोदय	स०		त्र्यक्षर यमक
३४	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	ऋषभ ! नम्रसुरासुर०	स०	२९	त्र्यक्षर यमक
३५	,,	ऋषभनायमनायनिमानन !	स०	२९	,,
३६	,,	कनककान्तिधनु शत०	स०	२९	,,
३७	,,	जिनर्षभ ! प्रीणितभव्यसार्थ !	स०	७	
३८	,,	तत्त्वानि तत्त्वानि मृतेषु सिद्ध	स०	२८	त्र्यक्षर यमक
३९	,,	पात्वादिदेवो दशकल्पवृक्ष	स०	२९	श्लेष
४०	,,	प्रणम्यादि जिन प्राणी	स०	२८	
४१	,,	य सततमक्षमालोप०	स०	३०	
४२	श्रीवीतरागस्तोत्र	जयन्ति पादा जिननायकस्य	स०	१६	
४३	श्रीअर्हदादिस्तोत्र	मानेनोर्वी व्यहत परितो	स०	८	
४४	श्रीपचनमस्कृतिस्तोत्र	प्रतिष्ठित तम पारे	स०	३३	
४५	श्रीमन्त्रस्तोत्र	स्व.श्रिय श्रीमदर्हन्त	स०	५	
४६	पचकल्याणकस्तोत्र	निलिम्पलोकायितभूतल	स०	८	
४७	श्रीगौतमस्वामिस्तोत्र	जम्मपवित्तियसिरिमगह	प्रा०	२५	प्राकृत
४८	,,	श्रीमन्त मगधेषु गोर्वर इति	स०	२१	
४९	,,	ॐ नमस्त्रिजगन्नेतु	स०	९	महामन्त्रगर्भित
५०	श्रीशारदास्तोत्र	वाग्देवते ! भक्तिमता	स०	१३	चरणसमानता
५१	श्रीशारदाष्टक	ॐ नमस्त्रिजगद्वन्दितक्रमे !	स०	९	
५२	श्रीवर्द्धमानविद्या	इय वद्धमाण विज्जा	प्रा०	१७	
५३	सिद्धान्तागमस्तोत्र	नत्वा गुरुभ्य	स०	४६	
५४	आज्ञास्तोत्र (ऋषभ०)	नयगमभगपहाणा	प्रा०	११	प्राकृत
५५	श्रीजिनसिंहसूरिस्तोत्र	प्रभु प्रदद्या मुनिपक्षिपङ्क्ते	स०	१३	चरणसाम्य
५६	मङ्गलाष्टक	नतसुरेन्द्र ! जिनेन्द्र !	स०	९	चौवीस जिननामगर्भित
५७	नन्दीश्वरकल्पस्तव	आराध्य श्रीजिनाधीशान्	स०	४९	

इनके अतिरिक्त हमारे अन्वेपणमें निम्नोक्त स्तोत्र और मिले है—

क्रमाङ्क	नाम	पद्य प्रारम्भ	भाषा	पद्यसंख्या	विशेष
५८	श्रीफलवर्धिपार्श्वस्तोत्र	श्रीफलवर्धिपार्श्वप्रभो कार	सं०	९	सं० १३८२ पौ० सु० १०
५९	फलवर्द्धिपार्श्वस्तोत्र	जयामदा श्रीफलवर्धिपार्श्वं	स०	२१	
६०	पार्श्वनाथस्तवन	असमसरणीय जउ निरंतरा	प्रा०	७	ऋतुवर्णन
६१	परमेष्ठिस्तव (मंगलाष्टक)	जितमावद्विप सांद्रदाम्	सं०	८	
६२	चन्द्रप्रभचरित्रस्तोत्र	चंदप्पह २ पणमिय चर०	प्रा०	२२	
६३	मथुरायात्रास्तोत्र	सुराचलश्रीजितदेवनिर्मिता	स०	१०	
६४	शत्रुञ्जययात्रास्तोत्र	श्रीशत्रुंजयतित्थे	प्रा०	९	स० १३७६यात्रा
६५	मथुरास्तूपस्तुतय	श्रीदेवनिर्मितस्तूपशृंगारनि०	सं०	४	
६६	पंचकल्याणकस्तुतय	पद्मप्रभप्रभोर्गर्भे०	सं०	१५	
६७	त्रोटक	निय जम्मु सफल	प्रा०	५	
६८	पहाडिया राग	अकलु अमलुअ जोणि ममवु	प्रा०	४	
६९	प्रभातिक नामावलि	सौभाग्यभाजनमभंगुर			(विधिप्रपाके परिशिष्टमें प्रकाशित)
७०	प्राकृतसिद्धान्तस्तव	सिरि वीरजिण सुयरयण			(समाचारी शतक पृ० ७६ में प्र०)
७१	उवसग्गहरपादपूर्ति पार्श्वस्तवन		गा०	२२	
७२	मायाबीजकल्प		प्रा०गा०	३०	
७३	शान्तिनाथाष्टक	अजिकुट पाए सुन०	पारसीभाषाचित्रक		

श्रीजिनप्रभसूरिकी शिष्यपरम्परा।

१ श्रीजिनदेव सूरि—आप सा० कुलधरकी पत्नी वीरिणीकी कुक्षिसे उत्पन्न हुए थे। आपने श्रीजिनसिंह सूरिजीके पास दीक्षा ग्रहण की थी। जिनप्रभ सूरिजीने इन्हें अपने पद पर स्थापित किये थे। सुलतान महम्मदसे जब सूरिजी मिले तब आप भी साथ ही थे। सम्राट्ने सूरिजीके साथ इनका भी बड़ा सम्मान किया था। सूरिजीके विहार करने पर आप सम्राट्के पास बहुत समय तक रहे थे और इनका सम्राट् पर अच्छा प्रभाव था। इनका उल्लेख आगे आ चुका है। आपकी रचित **कालकाचार्यकथा** प्रकाशित हो चुकी है।

२ श्रीजिनमेरु सूरि—आप श्री जिनदेव सूरिजीके शिष्य थे। इनके गुरुभाई श्रीजिनचन्द्र सूरि थे।

३ श्रीजिनहित सूरि—इनका रचा हुआ एक वीरस्तवन गा० ९ (हमारे संग्रहके गुटकेमें) है। इनके प्रतिष्ठित १ पार्श्वनाथ पंचतीर्थीका लेख स० १४४७ पो० व० ८ सोम श्रीमाल ठक्कुर धिरीयाराम कर्मसिंह कारित, बुद्धिसागरसूरिके धातुप्रतिमा लेखसंग्रह, भा० २, लेखांक ६१७ में प्रकाशित हो चुका है।

४ श्रीजिनसर्व सूरि

५ श्रीजिनचन्द्र सूरि—इनके प्रतिष्ठित प्रतिमा लेख, स० १४६९, १४९१, १५०६ के उपलब्ध होते हैं।

६ श्रीजिनसमुद्र सूरि—इनकी रचित कुमारसम्भव टीका, डेक्कन कालेजवाले संग्रहमें उपलब्ध है।

७ श्रीजिनतिलक सूरि—इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाओंके लेख स० १५०८ से १५२८ तक के उपलब्ध हैं। इनके शिष्य राजहंसकी की हुई वाग्भट्टालङ्कारवृत्ति स० १४८६ में लिखित उपलब्ध है।

८ श्रीजिनराज सूरि—इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाका लेख सं० १५६२ वै० सु० १० का प्रकाशित है।

९ श्रीजिनचन्द्र सूरि—इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाका लेख सं० १५६६ ज्येष्ठ सुदि २ और सं० १५६७ मा० सु० ५ के उपलब्ध हैं।

१०A श्रीजिनभद्र सूरि—इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाओंके लेख सं० १५७३ वै० सु० ५ और सं० १५६८ मि० सु० ७ के प्रकाशित हैं।

१०B श्रीजिनमेरु सूरि।

११ श्रीजिनभानु सूरि—आप श्रीजिनभद्र सूरिजीके शिष्य थे (सं० १६४१)। इसके पश्चात् आचार्य परम्पराके नाम उपलब्ध नहीं है। सं० १७२६ के नयचक्र वचनिकासे—जो कि श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी परम्पराके प० नारायणदासकी प्रेरणासे कवि हेमराजने बनाई थी—श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी परम्परा १८ वीं शताब्दीतक चली आ रही थी, ऐसा प्रमाणित होता है।

श्रीजिनप्रभ सूरिजीकी परम्परामें चारित्रवर्द्धन अच्छे विद्वान् हुए हैं जिनके रचित **'सिन्दूर प्रकर टीका'** (सं० १५०५), **नैषधमहाकाव्य टीका, रघुवंश टीका**—आदि ग्रन्थ उपलब्ध हैं। श्रीजिनप्रभ सूरिजीके शिष्य वाचनाचार्य उदयाकरगणि, जिन्होंने विधिप्रपाका प्रथमादर्श लिखा था, रचित श्रीपार्श्वनाथकलश, गा० २४ हमारे संग्रहके गुटकेमें उपलब्ध है। दि० जैन विद्वान्, प० बनारसीदासजी, जिनप्रभ सूरिजीके शाखाके विद्वान् भानुचन्द्रके पास प्रतिक्रमणादि पढे थे, ऐसा वे स्वयं अपनी जीवनीमें लिखते हैं।

उपसंहार—

उपर्युक्त वृत्तान्तसे, श्रीजिनप्रभ सूरिजीका जैन साहित्यमें बहुत ऊँचा स्थान है यह स्वत प्रमाणित हो जाता है। उन्होंने सुल्तान महम्मदको अपने प्रभावसे प्रभावित कर जैन समाजको निरुपद्रव बनाया, जैन तीर्थों व मन्दिरोंकी सुरक्षा की। सम्राट्को समय समय पर सत्परामर्श दे कर दीन दुःखियोंका कष्ट निवारण किया। उसकी रुचिको धार्मिक बना कर जनता पर होने वाले अत्याचारोंको रोका। जैन शासनकी तो इन सब कार्योंसे शोभा बढी ही, पर साथ साथ जन साधारणका भी बहुत कुछ उपकार हुआ।

सूरिजीने साहित्यकी जो महान् सेवा की उससे जैनसाहित्य गौरवान्वित है। उनका **विविध तीर्थकल्प** ग्रन्थ भारतीय साहित्यमें अपनी सानी नहीं रखता। इस ग्रन्थसे सूरिजीका विहार कितना सार्वत्रिक था, और पुरातन स्थानोंका इतिवृत्त संचय करनेकी उनमें कितनी बड़ी लगन थी,—यह बात इस ग्रन्थके पढने वालोंसे छिपी नहीं है। इसी प्रकार द्व्याश्रयकाव्यसे सूरिजीकी अप्रतिम प्रतिभाका अच्छा परिचय मिलता है। विधिप्रपा ग्रन्थ भी आपके श्रुतसाहित्यके गम्भीर अध्ययन और गुरुपरम्परासे प्राप्त ज्ञानका प्रतीक है। आपके निर्माण किये हुए स्तुतिस्तोत्र, स्तोत्रसाहित्यमें महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। एक ही व्यक्ति द्वारा इतने सुन्दर और वैशिष्ट्यपूर्ण अनेक स्तोत्रोंका निर्माण होना अन्यत्र नहीं पाया जाता। तपागच्छीय सोमतिलक सूरिसे मिलने पर सूरिजीने जो शब्द कहे, अपने रचित स्तोत्रोंको उन्हें समर्पित किया एवं अन्य गच्छीय विद्वानोंको शास्त्रीय अध्ययन कराया, उन्हें ग्रन्थ रचनेमें साहाय्य प्रदान किया—इन सब बातोंसे सूरिजीकी उदार प्रकृतिकी अच्छी झांकी मिलती है।

इस प्रकार विविध सत्प्रवृत्तियों द्वारा श्रीजिनप्रभ सूरिने जैन शासनकी महान् प्रभावना करके एक विशिष्ट आदर्श उपस्थित किया। मुसलमान बादशाहों पर **इतना अधिक प्रभाव डालने वालोंमें आप सर्वप्रथम हैं**। जैन धर्मकी महत्ताका और जैन विद्वानोंकी विशिष्ट प्रतिभाका सुन्दर प्रभाव डालनेका काम सबसे पहले इन्होंहीने किया। सचमुच ही जैनधर्मके ये एक महाप्रभावक आचार्य हो गये।

जिनप्रभ सूरिकी परम्पराके प्रशंसात्मक कुछ गीत और पद

[इस शीर्षकके नीचे जो कुछ प्राचीन गीत, पद और गाथादि दिये जाते हैं वे बीकानेरके भंडारकी एक प्राचीन प्रकीर्ण पोथीमें उपलब्ध हुए हैं। यह पोथी प्राय इन्हीं जिनप्रभ सूरिकी शिष्यपरंपरामेंके किसी यतिकी हाथकी लिखी हुई प्रतीत होती है। इसमें जो 'गुर्वावलि गाथा कुलक' लिखा हुआ मिलता है उसमें जिनहित सूरि तकका नामनिर्देश है उसके बादके किसी आचार्यका नाम नहीं है। अत यह जिनहित सूरिके समयमें—वि० स० १४२५–५० के अरसेमें—लिखी गई होनी चाहिए। इस पोथीमें प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश और तत्कालीन देश्य भाषामें बनी हुई अनेक प्रकीर्ण रचनाओंका संग्रह है। इसी संग्रहमेंसे ये निम्नोद्धृत कृतियां, जो श्रीजिनप्रभ सूरिकी परंपराके गुरु और शिष्य रूप आचार्योंके गुणगानात्मक रूप हैं—उपयोगी समझ कर यहां पर प्रकाशित की जाती हैं। इनमें जिनप्रभ सूरिके गुणवर्णनपरक जो गीत हैं वे उसी समयके बने हुए होनेसे भाषा और इतिहास दोनोंकी दृष्टिसे उल्लेखनीय हैं। —**जिनविजय**]

[१] जिनेश्वरसूरिवधावणा गीत—

जलाउर नयरि वधावणउ।
चलु न चलु हलि सखे देखण जाहिं। गणधरु गोतमसामि समोसरिउ ॥ १ ॥
वीरजिणभवणि देवलोकु अवतरियले। सुगुरु जिणसरसूरि मुनिरयणु ॥ आचली ॥
चउविवि रयली समोसरणु।
चतुर्विध बइठले सघसमुदाओं। जिणसरसूरि सूध देसण करए ॥ २ ॥
दिढ पहरि ग्या[रि]सि दिण सोधियले।
सुभ लगनि सुभ मुहु[र]ति महतरि पइ थापियलि। चउदह मुणिवर दिख दिनले ॥ ३ ॥
तवसिरि मिवसिरि सजमसिरि।
नाणि दरिसणि दुद्धरु सजमु भरु लइयले। जिणसरसुरि पुड वचन समुधरिउ ॥ ४ ॥

॥ वधावणागीत ॥

[२] श्रीजिनसिंहसूरि गीत—

हियडइ लाठि परी वसए चलणइ ए आविकदेवि। उठि गोरा उठि पातलए।
उठि सहिय परगलओं विहाणउ, लइ चादणु करि वादणओं ॥ १ ॥
वादणओं करि रिसभ जिणेसर, जेणइ धरमु प्रकासियओं ॥ २ ॥
वदणडउ करि सांतिजिणेसर, जिणि सरणागत राखियओं ॥ ३ ॥
वादणडउ मुणि सुव्रतसामिय, जीणइ मीतु प्रतिबोधियओं ॥ ४ ॥
वादणडउ करि नेमिजिणेसर, जेणइ जीव रखावियए ॥ ५ ॥
वादणडउ करि पासजिणेसर, जेणइ कमठु हरावियओं ॥ ६ ॥
वादणउ करि वीरजिणेसर, जेणइ मेरु कपावियओं ॥ ७ ॥
वादणडउ गुरु वडउ सोहइ, जिणसिंघसूरि चारिनि नीमलओं ॥ ८ ॥

॥ गीतपदानि ॥

[३] श्रीजिनप्रभसूरि गीत—

उदयले खरतरगच्छगयणि अभिनवउ सहसकरो। सिरि जिणप्रभसूरि गणहरओ जगमकउपवरो ॥ १ ॥
वदहु भविक जना जिणसासणवणनवमसतो। छतीस गुण सजुतो वाइयमयगलदलणसीहो ॥ आंचली ॥

तेर पचासियइ पोससुदि आठमि सणिहिं वारे। मेदिउ असपते **महमदो** सुगुरु **ढीलियनयरे** ॥ २ ॥
आपुणु पास वइसारए नमिवि आदरि नरिंदो। अभिनव कवितु वखाणिनि राय रंजइ मुणिंदो ॥ ३ ॥
हरखितु देइ राय गय तुरय धण कणय देस गाम। भणइ अनेवि जे चाहहो ते तुह दिउ इमा(मं?) ॥ ४ ॥
लेइ णहु किंपि **जिणप्रभुसुरि** मुणिवरो अति निरीहो। श्रीमुखि सलहिउ पातसाहि विविहपरि मुणिसीहो ॥ ५ ॥
पूजिवि सुगुरु वस्त्रादिकिहि करिवि सहिथि निसाणु। देइ फुरुमाणु अनु कारवइ नव वसति राय सुजाणु ॥६॥
पाटहथि चाडिवि जुगपवरु जिणदिवसुरि समेतो। मोकलइ राउ पोसालह वहु मलिक परिकरीतो ॥ ७ ॥
वाजहि पच सबुद गहिरसरि नाचहि तरण नारि। इदु जम गइद सठितु गुरु आवइ वसतिहिं मझारि ॥८॥
धमधुरधवल सघरइ सयल जाचक जन दिति दानु। सघ सजूत बहु भगति भरि नमहिं गुरु गुणनिधानु ॥९॥
सानिधि पउमिणि देवि इम जगि जुग जयवन्तो। नदउ **जिणप्रभसूरि** गुरु संजमसिरि तणउ कतो ॥१०॥

॥ जिनप्रभसूरीणां गीत ॥

[४]

के सलहउ **ढीली** नयरु हे, के वरनउ वखाणू ए।
जिणप्रभुसुरि जगि सल्हीजइ, जिणि रजिउ सुरताणू ए ॥ १ ॥
चलु सखि वदण जाह, गुण गरुवउ जिणप्रभुसुरि।
रलियइ तसु गुणगाह, रायरजणु पडियतिलओं ॥ आचली ॥
आगमु सिद्धतु पुराणु वखाणिइ, पडिबोहइ सब लोई ए।
जिणप्रभसुरि गुरु सारिखउ, हो विरलउ दीसइ कोई ए ॥ २ ॥
आठाही आठमिहि चउथी, तेडावइ सुरिताणू ए।
प्रहसितु मुख जिणप्रभुसुरि चलियउ, जिम ससि इदु विमाणू ए ॥ ३ ॥
असपति **कुदुदुदीनु** मनि रजिउ, दीठलि जिणप्रभसूरी ए।
एकतिहि मन सासउ पूछइ, रायमणोरह पुरी ए ॥ ४ ॥
गामन्तरिय पटोला गजवल, रूढउ देइ सुरिताणू ए।
जिणप्रभसुरि गुरु कपि न ईछइ, निहुयणि अमलिय माणू ए ॥ ५ ॥
ढोल दमामा अरु नीमाणा, गहिरा वाजइ तूरा ए।
इणपरि **जिणप्रभसुरि** गुरु आवइ, सघमणोरह पूरा ए ॥ ६ ॥

---

[५] मगलु सीधिहि मगलु साहू मगलु आयरिय मगलु च[उ]विहसघ पर देवाधिदेवा।
मगलु राणिय तिसलादेविहि वीरजिणिंदह जा जणणि।
मगलु सघसिधतपरा मगलु वहु लपमीइ मगलु चविह सघ पर देवाधिदेवा ॥ आचली ।
मगलु रायह कुमरहपालह जेणि पलाविय जीव दया ॥
मगलु सूरिहि जिणप्रभसूरिहि यात्र(च ?)गजी भडिया ॥

॥ मगल गीतं ॥

[६] श्रीजिनदेवसुरि गीत–

निरुपम गुणगणमणि निधानु सजमि प्रधानु, सुगुरु **जिणप्रभसुरि** पट उदयगिरि उदयले नवल भाणु ॥१॥
वदहु भविय हो सुगुरु **जिणदेवसुरि**।
ढिल्लिय वर नयरि देसण अमिय रसि वरिसए मुणिवरु जणु घणु ऊनविउ ॥ आचली ॥
जेहिं **कन्नाणापुर** मडणु सामिउ वीरजिणु। **महमद** राइ समप्पिउ थापिउ सुभ लगनि सुभदिवसि ॥ २ ॥
नाणि विनाणि कलाकुसले विद्यावलि अजेओं। लखण छद नाटक प्रमाण वखाणए आगमि गुणि अमेओं ॥३॥

धनु कुलघरु जसु कुलि उपनु इहु मुणिरयणु। धनु वीरिणि रमणि चूडामणि जिणि गुरु उरि धरिउ॥४॥
धनु निणसिंघसूरि दिखियाओं धनु चद्रगच्छु। धनु जिणप्रभुसुरि निजगुरु जिणि निजपाटिहि थापियाओं॥५
इति सखे। घणउ सोहागणिय रलियानणिय। देसण जिणदेवसुरि मुणिरायह जाणउ नितु सुणउ॥६॥
महिमडलि धरमु समुधरए जिणसासणिहिं। अणुदिण प्रभावन करइ गणधरो अनयरिउ वयरसामि॥७॥
वादिय मयगउ दलणसीहो विमल सीळ धरु। छत्रीस गणधर गुण कलिउ चिरु जयउ जिणदेवसुरि गुरु॥८॥

॥ श्री आचार्याणा गीतपदानि ॥

[७] सुगुरु परपरा गीत–

खरतर गच्छि वर्द्धमानछरि जिणेसरसूरि गुरो।
अभयदेवसूरि जिणवल्लहसुरि जिणदत्तु जुगपवरो।
सुगुरु परपर थुणह तुम्हि भवियहु भत्तिभरि।
सिद्धिरमणि जिम वरइ सयवर नवियपरि॥ आचली॥
जिणचदसूरि जिणपतिसुरि जिणेसरु गुणनिधानु।
तदणुक्रमि उपनले सुगुरु जिणसिंघसूरि जुगप्रधानु॥२॥
तासु पटि उदयगिरि उदयले जिणप्रभसूरि भाणु।
भवियकमलपडिबोहणु मिच्छत्ततिमिरहरणु॥३॥
राउ महमदसाहि जिणि नियगुणिरजियाओं।
मेदमडलि ढिल्लियपुरि जिणधरमु प्रकटु किओं॥४॥
तसु गछ धुरधरणु भयलि जिणदेवसुरि सूरिराओं।
तिणि थाविउ जिणमेरुसूरि नमहु जसु मनइ राओं॥५॥
गीतु पवीतु जो गायए सुगुरपरपरह। सयल समीहिं सिझहिं पुहविहि तसु नरह॥६॥

॥ सुगुरु परपरा गीत ॥

[८] गुर्वावली गाथा कुलक–

वंदे सुहमसामि जंबूसामिं च पभवसूरिं च। सिज्जभव-जसभद्द अज्जसभूय तहा वदे॥१॥
तह भद्दबाहुसामि च थूलभद्द जईजि(ज)णवरिट्ठ। अज्ज महा[गि]रिसूरिं अज्जसुहत्थि च वदामि॥२॥
तह सतिसूरि हरिभद्दसूरि म(स)ण्डिल्लसूरिजुगपवर। अज्जसमुद्द तह अज्जमगु अज्जधम्म अह वदे॥३॥
भद्दगुत्त च वइर च अज्जरक्खियमुणिवर। अज्जनदिं च वदामि अज्जनागहत्थिं तहा॥४॥
रेवय-खडिल्ल-हिमवत नाग-उज्जोयसूरिणो वदे। गोविंद-भूइदिन्ने लोहिच्चिय दूससूरिओं॥५॥
उमासाइवायगे वदे वदे जिणभद्दसूरिणो। हरिभद्दसूरिणो वदे वदे ह देवसूरिं पि॥६॥
तह नेमिचदसूरिं उज्जोयणसूरिपमिइणो वदे। तह वद्धमाणसूरिं सूरिसिरिजिणेसर वदे॥७॥
जिणचद अभयसूरिं सूरिजिणवल्लह तहा वदे। जिणदत्त जिणचद जिणवइ य जिणेसर वदे॥८॥
संजमसरसइनिलय सुमुणीण नियमरधरण। सुगुरु गणहररयण वदे जिणसिंहसूरिमह॥९॥
जिणपहसूरिमुणिदो पयडियनीसेसतिहुयणाणदो। सपइ जिणवरसिरिवद्धमाणतित्थ पभावेइ॥१०॥
सिरिजिणपहसूरीण पटमि पइट्ठिओ गुणगरिट्ठो। जयइ जिणदेवसूरी नियपन्नाविजयसुरसूरी॥११॥
जिणदेवसूरिपट्टोदयगिरिचूडाविभूसणे भाणू। जिणमेरुसूरिसुगुरू जयउ जए सयलविज्जनिही॥१२॥
जिणहितसूरिमुणिंदो तप्पट्टे भवियकुमुयवणचदो। मयणकरिकुभविहडणदुद्धरपचाणणो जयउ॥१३॥
सुगुरुपरपरगाहाकुलयमिण जे पढेइ पच्चूसे। सो लहइ मणोवछियसिद्धिं सव्व पि मवजणे॥१४॥

॥ इति गुर्वावलीगाथाकुलक समाप्त ॥ छ ॥

अर्हम्

खरतरगच्छालङ्कारश्रीजिनप्रभसूरिकृता

विधि प्रपा

नाम

सुविहितसामाचारी ।

नमिय महावीरजिणं[1], सम्मं सरिउं गुरूवएसं च[2] ।
सावय-मुणिकिच्चाणं सामायारिं लिहामि अहं ॥ [१]

§ १. सम्मत्तमूलत्तेण गिहिधम्मकप्पतरुणो पढमं सम्मत्तारोहणविही भण्णइ — तत्थ जिणभवणे समोसरणे वा सुद्देसु तिहि-मुहुत्ताइएसु उवसमाइगुणगणासयस्स[3] उवासयस्स विसिट्ठकयनेवत्थस्स चंदणरसरइय-भालयलतिलयस्स जहासत्ति निव्वत्तियजिणनाहपूओवयारस्स अखंडअक्खयाणं वड्ढुतियाहिं[4] तिहिं मुट्ठीहिं गुरू अंजलिं भरेइ । सन्निहियसावओ साविया वा तदुवरि पसत्थफलं नालिकेराइ धारेइ । तओ नवकार-पुव्वं समोसरणं तिपयाहिणी काउं सावओ इरियावहियं पडिक्कमिय खमासमणं दाउं भणइ — 'इच्छा-कारेण तुब्भे अम्ह सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयआरोवणत्थं चेइयाइं वंदावेह ।' गुरू भणइ — 'वंदावेमो ।' पुणो खमासमणं दाउं — 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयआरोवणत्थं वासनिक्खेवं करेह'त्ति भणइ । तओ 'करेमो'त्ति भणित्ता निसिज्जासीणो कयसकलीकरणो सूरिमंतेण इयरो वद्धमाण-विज्जाए वासे अभिमंतिय तस्स सिरे देइ, चंदणक्खए य रक्खं च करेइ । तओ तं वामपासे ठवित्ता वड्ढुंति[4]-याहिं थुईहिं संघसहिओ गुरू देवे वंदइ । चउत्थथुईअणंतरं सिरिसंतिनाह–संतिदेवया–सुयदेवया–[5]भवणदेवया–खेत्तदेवया–अंबा–पउमावई–चक्केसरी–अच्छुत्ता–कुबेर–बंभसंति गोत्तसुरा–सक्काइवेयावच्चगराणं नवकारचिंतणपुव्व[6] थुईओ । इत्थ य भगवाइ जाव थुईओ अवस्सदायव्वाओ । सेसाणं न नियमु त्ति गुरूवएसो । अम्हाणं पुण पउमावई गच्छदेवय त्ति तीसे थुई अवस्सदायव्वा । तओ सासणदेवयाकाउ-स्सग्गे चउरो उज्जोयगरा पणुवीसुस्सा चिंतिज्जंति । तओ गुरू पारित्ता थुइं देइ । सेसा काउस्सग्गट्ठिया सुणंति । तओ सव्वे पारित्ता उज्जोयगरं पढित्ता नवकारतिगं भणित्ता जाणूसु भविय सक्कत्थयं भणंति । 'अरिहाणा'दि थुत्तं गुरू भणइ । तओ 'जयवीयराय' इच्चाइ पणिहाणगाहादुगं सव्वे भणंति । इच्चेसा पक्किया सव्वनंदीसु तुल्ला, णवरं तेण तेण अभिलावेण । तओ खमासमणं दाउं सड्ढो भणइ — 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयआरोवणत्थं काउस्सग्गं करावेह ।' गुरू भणइ — 'करावेमो' । पुणो खमासमणं दाउं भणइ — 'सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयआरोवणत्थं करेमि काउस्सग्गं'ति । तओ काउस्सग्गे सत्तावीसु-स्सासं उज्जोयगरं चिंतिय पारित्ता मुहेण भणइ सव्वं । गुरू वि काउस्सग्गं करेइ त्ति अन्ने । तओ खमासमणं

1 B वीरजिणं । 2 B य । 3 B °गणायरस्स । 4 B वड्ढुतयाहिं । 5 B भुवण° । 6 A चिंतनपुव्विं ।

दाउ भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयसुत्त उच्चारावेह' त्ति। गुरू भणइ—'उच्चारावेमो'। तओ नवकारतिग भणित्तु वारतिग दडग भणावेइ। जहा—'अह ण भते तुम्हाण समीवे मिच्छत्ताओ पडिक्कमामि, सम्मत्त उवसंपज्जामि। नो मे कप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नतित्थिए वा, अन्नतित्थियदेवयाणि वा, अन्नतित्थियपरिग्गहियाणि अरहतचेइयाणि वा, वदित्तए वा, नमसित्तए वा, पुव्विं अणालत्तएण आलवित्तए वा, संलवित्तए वा, तेसिं असण वा, पाण वा, खाइम वा, साइम वा, दाउ वा अणुप्पयाउ वा, तेसिं गधमल्लाइ पेसेउ वा, नन्नत्थ रायाभिओगेण, गणाभिओगेण, बलाभिओगेण, देवयाभिओगेण, गुरुनिग्गहेण, वित्तीकतारेण,—त च चउव्विह, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ—दसणदव्वाइ अहिगिच्च, खित्तओ जाव भरहम्मि मज्झिमखडे, कालओ जाव जीवाए, भावओ जाव छलेण न छलिज्जामि, जाव सन्निवाएण न भुज्जामि, जाव केणइ उम्मायवसेण एसो मे दसणपालणपरिणामो न परिवडइ, ताव मे एसो दसणाभिग्गहो त्ति'॥ तओ सीसस्स सिरे वासे खिवेइ। तओ निसिज्जोवविट्ठो गुरू सकलीकरणरक्खामुद्दापुव्वय अक्खए अभिमतिय उवरिं पणव(ॐ)–भुवणेसर(ह्रीँ)–लच्छी (श्रीँ)–अरहतबीयाइ* हत्थेण लिहित्ता, लोगुत्तमाण पाए सुगधे खिवित्ता, संघस्स देइ।

पचपरमिट्ठिमुद्दा, सुरही-सोहग्ग-गरुडवज्जा य।
मुग्गरकरा य सत्तओ एया अक्खयपयाण मि॥ [२]

§२ तओ खमासमण दाउ सावओ भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइय आरोवेह'। गुरू भणइ—'आरोवेमो'। पुणो वदिऊण सीसो भणइ—संदिसह किं भणामो ?'। गुरू भणइ 'वदित्ता पवेयह'। पुणो वदिऊण सीसो भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्ह सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइय आरोविय ?'। एव पण्हे कए गुरू भणइ—'आरोविय'। ३ खमासमणाण, हत्थेण, सुत्तेण, अत्थेण, तदुभएण सम्म धारणीय चिरं पालणीय। सीसो भणइ—'इच्छामो अणुसट्ठिं'। पुणो वदिय भणइ—'तुम्हाण पवेइय, संदिसह साहूण पवेएमि'। गुरू भणइ—'पवेयह'। तओ खमासमण दाउ नमोक्कारं पढतो पयाहिण करेइ। 'गुरुगुणेहिं वड्ढाहि, नित्थारपारगा होहि'—त्ति भणतो गुरू संघो य वासक्खए खिवेइ। एव जाव तिन्नि वारा। तओ वदित्ता भणइ—'तुम्हाण पवेइय, साहूण पवेइय,[1] संदिसह काउस्सग्ग करेमि'। गुरू आह—'करेह'। तओ खमासमणपुव्व 'सम्मत्तसामाइय-सुयसामाइयथिरीकरणत्थ करेमि काउस्सग्ग' त्ति। सत्तावीसुस्सास काउस्सग्ग काउ चउवीसत्थय च भणिय गुरु तिपयाहिणी करेइ। तओ गुरू लग्गवेलाए—

इय मिच्छाओ विरमिय सम्मं उवगम्म भणइ गुरुपुरओ।
अरहतो[2] निस्सगो मम देवो दक्खिणा †साहू॥ [३]

इइ वारतिय भणावेइ। विणेओ वि तत्थ दिणे एगासणगाइ जहसत्ति तव करेइ। तओ खमासमण दाउ भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह धम्मोवएस देह'। तओ गुरू देसण करेइ।

भूएसु जगमत्त, तत्तो पचिंदियत्तमुक्कोस।
तेसु विय माणुसत्त, मणुसत्ते आरिओ देसो॥ [४]
देसे कुलं पहाण, कुले पहाणे य जाइमुक्कोसा।
तीय वि रूवसमिद्धी, रूवे य बल पहाणयर॥ [५]

---

* 'बीजानि पुनानि ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नम इत्यमूनि।' इति टिप्पणी A आदर्शे। † द्वितारकान्तर्गत पाठो नोपलब्धत B आदर्शे। 1 नास्ति B आदर्शे। 2 B अरिहतो। ‡ 'सरला निष्प्रपञ्चा इत्यर्थ।' इति A आदर्शे टिप्पणी।

होइ चले विय जीयं, जीए वि पहाणयं तु विन्नाणं ।
विन्नाणे सम्मत्तं, सम्मत्ते सीलसंपत्ती ॥ [६]
सीले खाइयभावो, खाइयभावेण केवलं नाणं ।
केवलिए पडिपुन्ने, पत्ते परमक्खरे मोक्खे ॥ [७]
पन्नरसंगो एसो समासओ मोक्खसाहणोवाओ ।
इत्थं बहु पत्तं ते थेवं सपावियव्वं ति ॥ [८]
तो तह कायव्वं ते जह तं पावेसि थोवकालेणं ।
सीलस्स नऽत्थऽसज्झं जयंमि तं पाविय तुमए-त्ति ॥ [९]

पुरिसो जाणुट्ठिओ इत्थियाओ उद्धट्ठियाओ सुणंति । जिणपूयणाइ[1] अभिग्गहे य गुरू देइ । जिणपूया कायव्वा । दव्वभावभिन्ने लोइय-लोउत्तरिए अणाययणे न गंतव्व । परतित्थे तव-न्हाण-होमाइ धम्मत्थ न कायव्व । लोइयपव्वाइ गहण-संकंति-उत्तरायण-दुवट्ठमी-असोयट्ठमी-करगचउत्थी-चित्तट्ठमी-महानवमी-विहिसत्तमी-नागपंचमी-सिवरत्ति-वच्छबारसि-दुद्धबारसि-ओधबारसि-नवरत्तपूआ-होलियपयाहिणा-बुहअट्ठमी-कज्जलतइया-गोमयतइया-हलिहुव[2] चउद्दसी-अणंतचउद्दसी-सावणचंदण[3] छट्ठी-अवछट्ठी-गोरीभत्त-रविरहनिक्खमणपमुहाइ न कायव्वाइ । तहा कज्जारंभे विणायगाइनामग्गहण, ससिरोहिणिगेय, वीवाहे विणायगठवण, छट्ठीपूयण, माऊण ठावणा, बीयाचंदस्स दसियादाण, दुग्गाईण ओवाइय, पिंडपाडण, थानेरे पूया, माऊण मल्लगाइ, रवि-ससि-मंगलवारेसु तवो, रेवत-पंथदेवयाण पूया, खेत्ते सीयाइअच्चण, सुन्निणि-रुप्पिणि-रंगिणिपूया, माहे घयकंबलदाण तिलदव्भदाणेण जलजली, गोपुच्छे करुस्सेहो, सवत्ति-पियरपडिमाओ, भूयमल्लग, सद्ध-मासिय-वरिसिय[4] करण, पव्व[5] दाण, कन्नाहलग्गहो, जलघडदाण, मिच्छदिट्ठीण लाहणयदाण, धम्मत्थ कुमारियामत्त, सडविवाहो, पियरह नईकूवाइ-खणणपइट्ठावएसो, वायस-विरालाइपिंडदाण, तरुरोवण-वीवाहो, तालायरकहासवण, गोधणाइपूया, धम्मगिठयकरण, इदयाल-नडपिच्छण-पाइक्क-महिस-मेसाइ-जुज्झ-भूयखिल्लणाइदरिसण, मूल-असिलेसाजाए बाले बंभणाहवण-तव्वयणकरण,—एमाइ मिच्छत्तठाणाइ परिहरियव्वाइ । सक्कत्थएण वि तिकाल चीवंदण कायव्व । छम्मासं जाव दोवाराओ संपुण्णा चीवंदणा कायव्वा । नवकाराण च अट्ठुत्तर सय गुणेयव्व । बीयापंचमी-अट्ठमी-एगारसीए चउदसीए उद्दिट्ठपुन्निमासु दोक्कासणाइतव । जा जीव चउवीसं नवकारा गुणेयव्वा । पंचुंबरी-मज्ज-मंस-महु-मक्खण-मट्टिया-हिम-करग-विस-राईभत्त-बहुबीय-अणंतकाय-अत्थाणय-घोलवडय-वाइंगण-अमुणियनामपुप्फ-फल-तुच्छ-फल-चलियरस-दिणदुगातीयदहिमाईणि वज्जेयव्वाइ । संगरफलिया-मुग्ग-मउट्ठ-मास-मसूर-कलाय-चणय-चवलय-वल्ल-कुलत्थ-मेत्थिया-कडुय-गोयारमाइ विदलाइ आमगोरसेण सह न जिमेयव्वाइ । एएसिं रायत्तय न कायव्व । निसिन्हाण, अच्छाणियजलेण य दहाइसु ण्हाण, अंदोलण, जीवाण जुज्झावण, साहम्मिएहिं सद्धिं धरणगाइविरोहो, तेसु च सीयंतेसु सइविरिएऽभोयण, चेइयहरे अणुचियगीयनट्ट निट्ठीवणाइआसायणाओ, देवनिमित्त थावरपाउग्गकूवारामकरणाणि य वज्जणिज्जाइ । उस्सुत्तभासगलिंगीण कुतित्थियाण च वयण न सद्दहेयव्व । एमाइ अभिग्गहा गुरुणा दायव्वा । सो वि तम्मि दिणे साहम्मियवच्छल्ल सुविहियाण च वत्थाइपडिलाहण करेइ त्ति ॥

॥ सम्मत्तारोवणविही समत्तो ॥ १ ॥

1 B पूयणाय । 2 B हलिट्ठुव° । 3 B वदिण° । 4 B °दब्भदाण दाणे जल° । 5 B °वीरसिय° । 6 A पव्वादाण ।

§ ३ पडिपनसम्मत्तस्स य पइदिणं देव–गुरु–पूया–धम्मसवणपरायणस्स देसविरइपरिणामे जाए बारस॰वयाइं आरोविज्जंति। तत्थ इमो विही–

गिहिधम्मे चीवंदण, गिहिवयउस्सग्गपइवउच्चरणं।
जहसत्ति वयग्गहणं, पयाहिणुस्सग्गदेसणया॥ [१०]

हत्थट्ठियपरिग्गहपरिमाणटिप्पणयस्स य। वयाभिलावो जहा–'अहं णं भंते तुम्हाण समीवे थूलगं पाणाइवायं संकप्पओ निरवराहं पच्चक्खामि। जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए कायेणं, न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि' त्ति वारतिगं भणियव्वं। एवं, अहं णं भंते तुम्हाण समीवे थूलगं मुसावायं जीहाच्छेयाइहेउयं कन्नालियाइपचविहं पच्चक्खामि। दक्खिन्नाइअविसए अहागहियभंगएणं। एवं थूलगं अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं रायनिग्गह-॰ कारयं सचित्ताचित्तवत्थुविसयं पच्चक्खामि। एवं, ओरालियवेउव्वियभेयं थूलगं मेहुणं पच्चक्खामि, अहागहियभंगएणं। तत्थ दुविहतिविहेण दिव्वं, तेरिच्छं एगविहतिविहेणं, माणुस्सयं एगविहएगविहेण वोसिरामि। अहं णं भंते परिग्गहं पडुच्च अपरिमियपरिग्गहं पच्चक्खामि। धणधन्नाइ–नवविह–वत्थुविसयं इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि, अहागहियभंगएणं। एवं गुणव्वयवए दिसिपरिमाणं पडिवज्जामि। उवभोग-परिभोगवए भोयणओ अणंतकाय–बहुवीय–राइभोयणाइं परिहरामि। कम्मओ णं पन्नरसकम्मादाणाइं इंगालकम्माइयाइं बहुसावज्जाइं खरकम्माइयं रायनिओगं च परिहरामि। अणत्थदंडे अवज्झाण-पावोवएस-हिंसोवगरणदाण पमायायरियरूवं चउव्विहं अणत्थदंडं जहासत्तीए परिहरामि। अहं णं भंते तुम्हाण समीवे सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिहिसंविभागवयं च जहासत्तीए पडिवज्जामि। इच्चेयं सम्मत्तमूलं पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि।' पयाहिणा-वासदाणाइयं सेसं पुव्विं व दट्ठव्वं॥

§ ४ पुव्वोल्लिंगिय परिग्गहपरिमाणटिप्पणं च गाहाहिं विवेहिं वा अत्थओ एवं लिहिज्जइ–'वीराइअक्खयरं जिणं नमिउं, सम्मत्तमूलं गिहत्थधम्मं पडिवज्जामि। तत्थ अरहं[1] महं देवो। तदाणाठियसाहू गुरुणो। जिणमयं पमाणं। धम्मत्थं परतित्थे तव–दाण–न्हाण–होमाइं न करेमि। सकत्थएण वि तिकालं चीवंदणं काहं।

पाणिवह–मुसावाए अदत्त–मेहुण–परिग्गहे चेव।
दिसि–भोग–दंड–समइय–देसे तह पोसह–विभागे॥ [११]

संकप्पियं निरवराहं थूलं जीवं तिव्वकसायवसा मण–वय–तणूहिं जावज्जीवं न हणे न हणावे, सकज्जे सयणाइकज्जे वा ओसहाइसावज्जे किमि–गंडोलग–जलुगाविसए य जयणा। कन्नाइथूलग-मलीयं दुविहं तिविहेण वोसिरे। देव–संघ–साहु–मित्ताइकज्जे रहगिज्ज–दिज्ज–पडिकयववहारे य जयणा। थूलमदत्तं दुविहतिविहेण वज्जे। निहि-सुक्काइसु जयणा। दुविहतिविहेण दिव्वमित्ताइभणिय-॰ भंगेण मेहुणनियमो। परदारं परपुरिसं वा काएण सव्वहा नियमो वा। माणुस्से दुच्चिंतिय-दुब्भासिय-दुच्चिट्ठिय-हास-कलहवयणाइ अकयाणुवंध वज्जित्ता जहासंभवं सव्वया। धण–धन्न–खेत्त–वत्थू–रुप्प–सुवन्ने चउप्पए दुपए कुविए परिग्गहे नवविहे इच्छापमाणमिणं। जाइफल-पुप्फलाइगणिमं, कुंकुम-गुडाइ-

1 B अरहंतो।

धरिम, चोप्पड-जीराइमेज्ज, रयण-वत्थाइपरिछिज्ज। एव चउविह पि धण गहणक्खणे सव्वया वा इत्तिय-पमाण, इत्तिओ धण्णसगहो, इत्तियाइ हलाइं खेत्ताइ चरी वा, किंसिनियमो वा। इत्तियाइ हट्टघराइ। रुप्प-कणगेसु टकयपमाण तोलयपमाण गद्दियाणगपमाण वा। चउप्पय-तिरियाण पमाण जहाजोग्ग नियमो वा। दुपए दासरूवाण, सगडाईण च पमाण। कुविय इत्तियमोल्ल उवक्खर-थालाइ, मणियपमाणाओ अहिय धम्मवए दाह[1]। एसो नियमो मह सपरिग्गहावेक्खाए। भाइ-सयणाईण तु रक्खण-ववहरण मुक्कलय अङ्खाणगाइ य। तहा, अमुगनगराओ चउदिसिं जोयणसयाइ, उड्ढ जोयणदुगाइ, अहोदिसि पुरिसपमाण धणुहमाण वा। दुविहतिविहेण मसं, एगविह मज्ज-मक्खण, अन्नत्थ ओसहाइकज्जेण महुं च वज्जेमि। सामन्नेण वा मसाइ नियमेमि। अप्पउलिय-दुप्पउलिय-तुच्छफलेसु जयणा। एव पचुंबरि-वाइगण-पुपुट्टय-अन्नायफल-सगोरसविदल-पुप्फिओयणाइ। वडिय तीमणाइनिक्खित्तअद्दयाइ सुत्तु अणतकाय च। असण-खाइमे निसि न जिमे, पाण-साइमेसु जयणा। अत्थाणयाण नियमो परिमाण वा। असणे सेइया-सेराइपमाण। भोयणे न्हाणे य नेहकरिस*दुगाइ। सच्चित्तदव्व विगई-ओगाहिम-पाणगभेय-सालणयउक्कडदव्वाण परिमाण। पाणे एगाइघडा, उच्छुलयाण, चिब्भडाइ-गणियफलाण च बोराइ-मेज्जफलाण, दक्खाइ-तोलिमफलाण संखा–मण–माणगाइपरिमाण जहासंख कायव्व। संपत्ति गुच्छाण पण्णाण पुप्फ-फलाण च संखा। कप्पूर-एलाइसु रूवयपरिमाण। तियडुय-तिहलाइसु पलाइ-परिमाण। धोवत्तिय-सीओढणवज्ज इत्तियमुल्लाओ इत्तियाओ तियलीओ। फुल्लाण तुङ्गर-चउसराइ-संखा नियमो वा। आभरणे संखा सुवण्ण-रुप्प-पलमाण वा। कुकुम-चदणविलेवणे पलाइसंखा। जलघड-दुगाइणा मासे इत्तिया सिरिन्हाणा, दिणे य अगोहलीओ। आसण-सिज्जाण संखा। ओहेण वा भोग-परिभोगाण इगालगाइकम्मादाणाण नियमो, भाडगाइसु परिमाण वा। मणुयाण कयविक्कयनियमो। चउप्पयविक्कयसखा। तलाराइखरकम्मनियमो। विचित्तोवरिं लाहाइलोमेण तिले न धारइस्स। चुल्लीसधु-क्खण-जलघडाणयणसंखा, खडण-पीसण-दलणाइसु मण-कलसियाइपरिमाण।

चउहा अणत्थदंडं, अवज्झाणं, वेरितप्पुरवहाई।
वज्जे वद्धावणयं, मुत्तु मरं गीयनट्टाइं॥ [१२]

जूयजलकीलणाई चएमि दक्खिन्नअवसए[1] देमि।
नो सत्थग्गिहलाई पाओवएसं च कइयावि॥ [१३]

मासे वरिसे वा सामाइयसंखा। दुब्भासियाइसु मिच्छादुक्कडदाण। अहोरत्तते गमणे जल-थलपहेसु जोयण-संखा। पोसहे वरिसतो संखा जहासंभव वा। अट्ठमि–चउद्दसि–चउमासिय[4]–पज्जुसणेसु जहासत्ति एगास-णाइ तव, बभचेरं, अन्हाणाइय च। काले नियगेहागयसुविहियाण संविभागपुव्व भोयण। दिणतो नवकार-गुणणसंखा य। इत्तिय धम्मवय वरिसंतो काह। इत्तिओ य सज्झाओ मासे। एए य मह अभिग्गहा ओसह–परवसत्त–देहअसामत्थ–वित्तिच्छेय–रोग–मग्गकतार–देवया–गुरु–गण–रायाभिओग–अणाभोग–सहसागार–महत्तर–सव्वसमाहिवत्तियागारे मोत्तु। मज्झिमखडाओ बाहि सव्वासवदाराण तिविह तिविहेण नियमो, विरइयसव्वाहिगरणाण च। इत्थ य पमाएण नियमभगे सज्झायसहस्सं, आबिल च पच्छित्त।"

---

1 B दाणं। * 'पचभिर्गुंजाभिर्माषक, तै षोडशभि कर्ष।' इति A. टिप्पणी। 2 B चिब्भिडा°। 3 'अंशुमाङ्कमादि।' इति A. टिप्पणी। 3 B °अविसए। 4 A. चउमासय।

एवं लिहित्ता एसा गाहा लिहिज्जइ–

सम्मत्तमूलमणुवयखधं उत्तरगुणोरुसाहाल।
गिहिधम्मदुम सिंचे सद्धासलिलेण सिवफलय॥ [१४]

तओ गुरुक्कम लिहित्ता अमुगगणहरपायमूले अमुगसंवच्छर-मास-तिहीसु अमुगेण अमुगीए वा एसो ५ सावगधम्मो पडिवण्णो त्ति परिग्गहपमाणटिप्पणविही॥

॥ परिग्गहपरिमाणविही समत्तो॥ २॥

§५ पडिवन्नदेसविरइयस्स विसिट्ठतरसद्धस्स सड्ढस्स छम्मासिय सामाइयवय आरोविज्जइ। तत्थ य चेइयवदणाइविही हिट्ठिल्लो चेव। नवरं, काउस्सग्गाणतर अहिणवमुहपोत्तिया वासविन्नासपुव्व समप्पणीया। तीए य तेण छम्मासे जाव उभयसझ सामाइय गहेयव्व। तओ नवकारतिगपुव्व 'करेमि भंते सामाइय १० सावज्ज जोग पच्चक्खामि, जाव नियम पज्जुवासामि, दुविह तिविहेण मणेण वायाए काएण, न करेमि न कारवेमि, तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।' तहा 'दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ सामाइयदव्वाइ अहिगिच्च, खेत्तओ ण इहेव वा अन्नत्थ वा, कालओ ण जाव छम्मासं, भावओ ण जाव रोगायकाइणा परिणामो न परिवडइ, ताव मे एसा सामाइयपडिवत्ती।' इति दडगो वारतिगमुच्चारणीओ। सेसं पुव्विं व दट्ठव्व॥

१५ ॥ इइ सामाइयारोवणविही॥ ३॥

§६ अगीकयसामाइएण य उभयसझ सामाइय गहेयव्व। तस्स एसो विही–पोसहसालाए साहुसमीवे गेहेगदेसे वा खमासमणदुगपुव्व सामाइयमुहपोत्तिं पडिलेहिय पढमखमासमणेण 'सामाइय सदिसावेमि, बीयखमासमणेण सामाइए ठामि' त्ति भणिऊण पुणो वदिय, अद्धावणओ नमोक्कारतिगपुव्व 'करेमि भंते सामाइय– इच्चाइदडग– वोसिरामि' पज्जत वारतिग कड्ढिय, खमासमणेण इरियावहिय पडिक्कमिय, २० खमासमणदुगेण वासासु कट्ठासण, उडुबद्धे पाउछण, खमासमणदुगेण सज्झाय च सदिसाविय, पुणो वदिय नवकारऽट्ठग भणइ। तओ सीयकाले पगुरण संदिसावेइ। संझाए सज्झायाणंतर कट्ठासण सदिसावेइ त्ति। जइ पुण कयसामाइय पोसहइत्त वा, कोइ कयसामाइओ पोसहइत्तो वा वदइ, तया 'वदामो' त्ति वत्तव्व, जइ इयरो वदइ तत्थ 'सज्झाय करेह' त्ति वत्तव्व। जहण्णओ वि घडियादुग सुहज्झवसाएण चिट्ठित्ता, तओ मुहपोत्तिं पडिलेहिय पढमखमासमणे 'सामाइय पारावेह'– गुरू आह–'पुणो वि कायव्वो'। २५ बीयखमासमणे 'सामाइय पारेमि'– गुरू आह–'आयारो न मुत्तव्वो'। तओ नवकारतिग भणिय, 'भयवं दसन्नभद्दो' इच्चाइगाहाओ भूमिनिहियसिरो भणइ।

॥ इय सामाइयग्गहण-पारणविही॥ ४॥

§७ इत्थ केइ आइल्लाण चउण्ह सावयपडिमाण पडिवत्तिं इच्छति। त च न सुगुरूण समय। जओ संपय पडिमारूव सावयधम्म वोच्छिन्न बिंति गीयत्था। अओ न तस्स विही भण्णइ।

३० §८ इयाणिं उवहाणविही– सोहणतिहि–करण–मुहुत्ताइदिणे जिणभवणाइसु नदी कीरइ। पचमगल-महासुयक्खधे इरियावहियासुयक्खधे य, अन्नेसु उवहाणतवेसु नदीए न नियमो। जइ कोइ समोसरणे पूय करेइ तया कीरइ नऽन्नहा। दोसु आइल्लउवहाणतवेसु पुण नियमा नदी। तत्थ सावओ साविया

वा विसिट्ठकयनेवत्था महया विच्छड्डेण गुरुसमीवमागम्म समवसरण वत्थ-नेवेज्ज-अक्खय-थाल-नालिएरविसिट्ठ पूयाए पूइऊण नालिकेर अजलीए करित्ता पयाहिण करेइ, चउसु ठाणेसु पणामपुव्व* । तओ समवसरणपुरओ अक्खए नालिएरं च मुचइ† । तओ दुवालसावत्तवदण दाउ, खमासमण दाऊण भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह पचमगलमहासुयक्खधाइउवहाणतव उक्खिवह' । गुरू भणइ—'उक्खिवामो' । तओ 'इच्छ'ति भणित्ता, वदिय भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह पचमगलमहासुयक्ख-धाइउवहाणतवउक्खिवणत्थ काउसग्ग करावेह' । गुरू भणइ—'करेह' । सीसो 'इच्छ'ति भणिय, खमासमण दाउ भणइ—'पचमगलमहासुयक्खधाइउवहाणतवउक्खिवणत्थ करेमि काउस्सग्ग । अन्नत्थ¹ ऊससिएण'मिचाइ । तत्थ नवकार उज्जोयगर वा चिंतेइ । तओ नमोक्कारेण पारित्ता, नमोक्कार उज्जोयगर वा भणिय, खमासमण दाउ, भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह पचमगलमहासुयक्खधाइउवहाण-तवउक्खिवणत्थ चेइयाइ वदावेह' । गुरू भणइ—'वदोवेमो' । सीसो भणइ—'इच्छ'ति । तओ गुरू तस्सु-समगे वासे खिवेइ, वारतिन्नि सत्त वा । तओ गुरू चउविहसंघसहिओ वड्ढुतियाहिं थुईहिं चेइए वदावेइ । सतिनाह-सुयदेवयापमुह-जाव-सासणदेवयाए काउस्सग्गे करित्ता, तासिं चेव थुईओ दाउ, सासण-देवयाए काउस्सग्ग चउरो उज्जोयगरे चिंतिय, नमोक्कारेण पारिय, थुइ दाउ, चउवीसत्थय कहित्ता, नवकारतिय कहिय, वइसिऊण, सक्कत्थय कहिय, पचपरमेट्ठिथव भणेइ । तओ गुरू लोगुत्तमाण पाएसु वासे छुहिय, समवसरणमि सव्वदेवयाण सरण करिय, वासे खिवेइ । तओ वद्धमाणविज्जाइणा अक्खए वासे य अहिमतिय चउविहसंघस्स दाऊण, गुरू सीस दुवालसावत्तवदण दाविय, भणावेइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह पचमगलमहासुयक्खधाइउवहाणतव उद्दिसह' । गुरू भणइ—'उद्दिसामो' । सीसो 'इच्छ' इति भणिय, वदिय, भणइ—'संदिसह किं भणामो' । गुरू भणइ—'वदित्ता पवेयह' । सीसो 'इच्छ'ति भणिय, खमासमणेण वदिय, भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भेहि अम्ह पचमगलमहासुयक्खधाइउवहाणतवो उद्दिट्ठो ?' । तओ गुरू वासे खिवतो आह—'उद्दिट्ठो' । २ खमासमणाण । हत्थेण सुत्तेण अत्थेण तदुभएण सम्म जोगो कायव्वो । सीसो भणइ—'इच्छामो अणुसट्ठिं' । तओ वदिय भणइ—'तुम्हाण पवेइय, संदिसह साहूण पवेएमि' । गुरू भणइ—'पवेयह' । तओ वदिय, नमोक्कारं भणतो पयक्खिण करेइ । अणेण विहिणा अन्ने वि दो वारे पयक्खिण करेइ । चउविहो वि संघो तस्सुत्तमगे वासे अक्खए य खिवइ । तओ खमास-मण दाउ भणइ—'तुम्हाण पवेइय, साहूण पवेइय, संदिसह काउस्सग्ग करेमि' । गुरू भणइ—'करेह' । तओ वदिय खमासमणेण भणइ—'पचमगलमहासुयक्खधाइउवहाणतवउद्देसनिमित्त करेमि काउस्सग्ग । अन्नत्थ ऊससिएण' इच्चाइ । उज्जोअगरं चिंतिय सागरवरगंभीरा जाव पारिय, चउविसत्थय पढइ । तओ पचमगलमहासुयक्खधाइउवहाणतवउद्देसनदियिरीकरणत्थ² अट्ठुस्सासं उस्सग्ग काउ नमोक्कार भणित्ता, खमासमणदुगदाणपुव्व पुत्तिं पेहिय वदण दाउ भणइ—'इच्छाकारेण संदिसह, पवेयण पवेयह' । गुरू भणइ—'पवेयह' । तओ वदिय भणइ—'पचमगलमहासुयक्खधदुवालसमपवेसनिमित्तु' तपु करह । गुरू भणइ—'करेह' । वदिय उववासाइतव करेइ, वदण देइ । तम्मि चेव समए पोसह करेइ सज्झाए वा करेइ । तत्थ पोसहविही सव्वो वि कीरइ ।

---

* 'उक्खिवावणिय नदिपवेसावणिय करेमि ।' इति B टिप्पणी । † 'इमां प्रतिलेख्य मुखवस्त्रिकां प्रतिलिख्य ।' इति B टिप्पणी । 1 A अन्नत्थूससिएण । 2 B निमित्त तवु ।

§९ एव सेसेसु वि दिणेसु नदिवज्ज गुरुसगासे पोसह सामाइय च करेइ, पोसहकरणविहिणा। सो य इमो – इरिय पडिक्कमिअ आगमणमालोइय खमासमणदुगेण पोसहमुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, पढमखमासमणेण 'पोसह संदिसावेमि'। बीयखमासमणेण 'पोसह ठामि'। पुणो तइयखमासमण दाउ नवकारतिग भणिय,– 'करेमि भंते पोसह। आहारपोसह देसओ, सरीरसक्कारपोसह सव्वओ, बभचेरपोसह सव्वओ, अव्वावार-
५ पोसह सव्वओ। चउव्विहे पोसहे सावज्ज जोग पच्चक्खामि जाव अहोरत्त पज्जुवासामि। दुविह तिविहेण, मणेण वायाए काएण, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसि-रामि'–इइ दडग वारतिग भणइ। तओ इरियावज्ज पुव्वविहिणा सामाइय गिण्हइ। तओ मुहपोत्तिं पडि-लेहिय दुवालसावत्तवदण दाउ भणइ–'इच्छाकारेण संदिसह पवेयण पवेयह'। जो पुण पुढो पडिक्कतो सो दुवालसावत्तवदणेण आलोयण, दुवालसावत्तवदणेण य खमासमण काउ, दुवालसावत्तवदणेण पवेयण पवे-
१० इए। तओ वदिउ भणइ–'पचमगलमहासुयक्खधउवहाणदुवालसमपवेसनिमित्तु तपु करह'। तओ गुरू भणइ–'करेह'। तओ 'इच्छ'ति भणिय, वदिय, पच्चक्खाण काउ, खमासमणदुगेण बहुवेल संदिसाविय, खमासमणदुगेण सज्झाय, खमासमणदुगेण बइसण च संदिसाविय, वदणय देइ। तओ गुरुणा मुहुत्तंते पुच्छिए 'देवगुरुपसाएण'त्ति भणइ। एसो पभायसमये विही कीरइ। जओ पउणपहरमज्झे पवेयण न पवेयइ, तओ सो दिवसो गलइ त्ति। उवहाणवाही पाभाइयपडिक्कमणे नवकारसहिय चेव पच्चक्खति।
१५ 'उग्गए सूरे नवकारसहिय पच्चक्खामि' इच्चाइ।

तओ चरमपोरिसीए गुरुसमीवमागम्म इरियावहिय पडिक्कमिय, आगमण आलोइय, खमासमणदुगेण पुत्तिं[1] पडिलेहिय, दुवालसावत्तवदण दाउ, आलोयण खामण च *पच्चक्खाण च करिय, खमासमणदुगेण उवहि–थडिल–पडिलेहण संदिसाविय, खमासमणदुगेण सज्झाय संदिसाविय, खमासमणदुगेण बइसण संदिसाविय, कट्ठासण पाउछण वा पडिलेहिय, दुवालसावत्तवदण देइ। एसो चरमपोरिसीए विही।
२० सेसविही जहा पोसहविहीए भणिओ तहा कीरइ।

§१० तओ दुवालसमतवे पडिपुन्ने वायणा दिज्जइ। तत्थ एसो विही – पुत्तिं[2] पेहाविय, वदण दाविय, गुरू भणावेइ–'इच्छाकारेण संदिसह पचमगलमहासुयक्खधवायणापडिगाहणत्थ काउस्सग्ग करावेह'। गुरू भणइ–'करावेमो'। तओ 'इच्छ'ति भणिय, खमासमणेण वदिय, भणइ–'पचमगलमहासुयक्खधवायणा-पडिगाहणत्थं करेमि काउस्सग्ग। अन्नत्थ ऊससिएण'–इच्चाइ जाव–'वोसिरामि'त्ति भणिय, सागरवरगंभीरा
२५ जाव उज्जोयगरं चिंतिय, नमोक्कारेण पारिय, उज्जोयगरं भणिय, खमासमण दाउ, भणइ–'इच्छाकारेण पंचमंगलमहासुयक्खधवायणापडिगाहणत्थ चेइयाइ वदावेह'। गुरू भणइ–'वदावेमो'। तओ सक्कत्थय भणिय खमासमणेण वदिय, सीसो भणइ–'इच्छाकारेण संदिसह वायण संदिसावेमि'। बीयखमासमणेण 'वायण पडिगाहेमि'। गुरू भणइ–'पडिगाहेह'। तओ 'इच्छ'ति भणिय, खमासमणं दाउ, उभयकर-विहियगहियमुहपोत्तियाथइयमुहकमलस्स, अद्धोणयकायस्स सीसस्स तिक्खुत्तो पचनमुक्कारं कड्ढिय पचण्ह
३० अज्झयणाण पढमा वायणा दिज्जइ। तओ दिन्नाए वायणाए तस्सुवमग्गेसु गुरू वासे खिवइ। तओ सीसो वदिय सज्झायमाइ करेइ। तओ अट्ठहिं आयविलेहिं तिहिं उववासेहिं कएहिं बीया वायणा तिण्ह चूल-अज्झयणाण दिज्जइ।

---

1 B मुहपुत्तिं। * A खामण च करिय खमासमणपुव्व पच्चक्खिय। 2 B मुहपुत्तिं।

§११ एयस्स चेव निक्खिवणविही वोच्छइ–सीसो गुरुसमीवमागम्म इरियावहिय पडिकमिय, गमणागमण आलोइय, खमासमणदुगदाणपुव्व मुत्तिं पेहिय दुवालसावत्तवंदण दाउ, भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह पंचमंगलमहासुयक्खधउवहाणतव †निक्खिवह' । गुरू भणइ–'निक्खिवामो' । सीसो 'इच्छ'ति भणिय, खमासमणेण वंदिय, भणइ–'इच्छाकारेण संदिसह पंचमंगलमहासुयक्खधाइउवहाणतव†निक्खिवणत्थ काउस्सग्ग करावेह' । गुरू भणइ–'करावेमो' । 'इच्छ'ति भणिय खमासमणेण वंदिय, पंचमंगलमहासुयक्खधाइउवहाणतवनिक्खिवणत्थ करेमि काउस्सग्ग । अन्नत्थ ऊससिएण' इच्चाइ जाव 'वोसिरामि'त्ति । तत्थ नवकार चिंतिय, पारिय, नमोक्कार पढिय, खमासमणेण वंदिय, भणइ–'इच्छाकारेण संदिसह पंचमंगलमहासुयक्खधाइउवहाणतवनिक्खिवणत्थं चेइयाइं वंदावेह' । गुरू भणइ–'वंदावेमो' । तओ सक्कत्थय भणिय, दुवालसावत्तवंदण दाउ, 'पवेयण पवेयह'त्ति भणिय, पडिपुण्णा विगइपारणगेण पच्चक्खइ । तओ पोसह सामाइय च पारिय, खमासमण दाउ, भणइ–'उपधाण[3] मज्झि अविधि आसातना मनि वचनि काइ ज कोई कीई तहिं मिच्छामि दुक्कड' ॥

॥ उवहाणनिक्खिवणविही समत्तो ॥ ६ ॥

§१२ इयाणिं उवहाणसामायारी भण्णइ । पंचमंगलमहासुयक्खधे पढम दुवालसम पुव्वसेवाए[4] । तओ पचण्ह अज्झयणाण वायणा दिज्जइ ॥ १ ॥

तत्थ पुण सव्वे अज्झयणा अट्ठ, आयविलट्ठगेण उववासतिगेण । तओ तिण्ह चूलाअज्झयणाण वायणा दिज्जइ । इत्थ उववासतिग उत्तरसेवाए ॥ २ ॥

॥ पंचमंगलउवहाणं समत्तं ॥

§१३ एव इरियावहियासुयक्खधे वि अट्ठ अज्झयणा । तिण्णि चरिमाणि चूला भण्णइ । सेस जहा पंचमंगलमहासुयक्खधे । दोसु वि दो दो वायणाओ । उवरिल्लेसु चउसु एगा पुव्वसेवा । अंते उववासाभावाओ उत्तरसेवा नत्थि ॥ ३ ॥

भावारिहतत्थए पढम अट्ठम, तओ तिण्ह संपयाण वायणा दिज्जइ । १ । पुणो बत्तीसं आयविलाणि । सोलसहिं गएहिं तिण्ह संपयाण वायणा दिज्जइ । २ । अन्नेहिं सोलसहिं गएहिं तिण्ह संपयाण वायणा दिज्जइ । चरमगाहाए वि वायणा दिज्जइ । ३ । सक्कत्थए सव्वाओ तिण्णि वायणाओ । नवर सक्कत्थए 'नमोत्थुण तियहृछउमाणसुत्तु'मिति वयणा सेसा बत्तीस पया बत्तीस हुति अज्झयणा ।

ठवणारिहतत्थए आईए चउत्थ, तओ तिन्नि आयविलाणि, तओ अंते तिण्हवि अज्झयणाण एगा वायणा दिज्जइ । अज्झयणतिग च इम–'अरिहतचेइयाण जाव. निरुवसग्गवत्तियाए' । १ । 'सद्धाए जाव ठामि काउस्सग्ग' । २ । 'अन्नत्थऊससिएण .जाव वोसिरामि' । ३ । ॥ ४ ॥

नामारिहतचउवीसत्थए आईए अट्ठम । तओ चउरतिसयसिलोगस्स पढमा वायणा दिज्जइ । १ । पुणो पचवीसं आयविलाणि । बारसहिं गएहिं अट्ठट्ठनाम गाहातिगस्स बीया वायणा दिज्जइ । २ । पुणोवि तेरसहिं गएहिं पणिहाण-गाहातिगस्स तइया वायणा दिज्जइ । ३ । नवरं छहिं रूवगेहिं चउवीसं अज्झयणा, पचवीसइम सत्तम-सव्वगाहाए । ४ । * ॥ ५ ॥

---

1 B मुहपुत्तिं । 2 B पडिलेहिय । † एतद्विदण्डान्तर्गता पङ्क्तिर्नोपलभ्यते A आदर्शे । 3 B उवहाण मज्झे । 4 B °सेवाओ ।

दवारिहतसुयत्थए पढम चउत्थ, तओ पच आयबिलाणि, अते एगा वायणा दिज्जइ । १ । नवरं अज्झयणाइ तिहिं रूवगेहिं तिन्नि, चउत्थरूवगे दोहिं पाएहिं चउत्थमज्झयण, अन्नेहिं दोहिं पचम ॥ ६ ॥

सव्वत्थ जत्थ जेत्तियाणि अबिलाणि तत्थ तेत्तियाणि अज्झयणाणि भवति । सिद्धत्थथुईए उवहाण विणावि मालादिणकओववासस्स तिण्ह गाहाण वायणा दिज्जइ । न उण गाहादुगस्स । जेण ओडियपरिग-
हियउज्जिंततित्थसगहत्थ । दाहिणदारपविट्ठ-सिरिगोयमगणहरवदिय-अट्ठावय-सीहनिसीहिइचेइयट्ठिय-जिणचिंतकमउवदसणत्थ च पच्छा वुड्ढेहिं कय ति अन्ने भणति । एयस्स वि एगा परिवाडी दिज्जइ । वायणा सिग सव्वत्थ परिवाडीतिगेण दिज्जइ । एयस्स पुण गाहादुगस्स एगा चेव परिवाडि त्ति भावत्थो ॥

सपय पुण जहोत्ततवोविहाणअसामत्था एगविगइगहण-एगासण पारणगतरिया दस उववासा पचमगलमहासुयक्खधे कीरति । जओ दुवालसभट्ठमेहिं अट्ठ उववासा, आयबिलट्ठगेण चत्तारि, मिलिया
१० बारस उववासा पचमगलमहासुयक्खधे । जयावि दस एगासणा, दस उववासा, तयावि चउहिं एगासणेहिं उववासो त्ति दुवालसोववासा साइरेगा जायति त्ति परमत्थओ सो चेव तवोविही । एव च वीसं पोसहदिणाइ भवति । अओ चेव 'वी स ड ति' भण्णइ । जो य असहू पारणगे दोकासण करेइ तस्स इक्कारस उववासा । अट्ठहिं दोकासणेहिं च एगो उववासो । एव दुवालस ॥ एव चेव इरियावहियासुयक्खधे वि ॥

भावारिहतत्थए पणतीस पोसहदिणाइ उववासा इगुणवीस पारणएहिं सह पूरिज्जति ॥

१५ एव ठवणारिहतत्थए अड्ढाइज्जा उववासा चत्तारि पोसहदिणाइ । एय च उवहाणदुग एगट्ठमेव वहिज्जइ । अओ चेव एगूणचे वि रूढीए 'चा ली स ड'ति भण्णइ । ‡उक्खेव निक्खेवा पुण पुढो पुढो कायव्वा‡ ॥

नामारिहतत्थए अट्ठावीसपोसहदिणा पन्नरस उववासा पारणेहिं सह पूरिज्जति । अओ चेव 'अ ट्ठा वी स ड'ति रूढ । एव सुयत्थए अड्ढुट्ठ उववासा छप्पोसहदिणाइ । अओ चेव 'छ क्क ड'ति भण्णइ ।
२० साहु साहुणीओ य निव्विगइ आयबिलोववासेहिं जहुत्तोववाससंख पूरंति । न उण तेसिं दिणसंखानियमो विगइपवेसो वा ॥

॥ उवहाणसामायारी समत्ता ॥

§ १४. संपय एय उज्जमणरूवो मालारोवणविही भण्णइ । तत्थ पुव्विल्लो चेव नदिकमो । *नाणत्त पुण एय । मालग्गाही भत्तो मालादिणाओ पुव्वदिणे परमभत्तीए वत्थासणाइणा पडिलाभियसाहु-साहुणिवग्गो,
२५ विहियसाहम्मियवत्थतबोलाइपवरवच्छल्लो, पवे य पसत्थतिहि-करण-मुहुत्त-नक्खत्त-जोग-लग्ग-चदब-लोवेए मालादिणे नियविहवाणुरूव कयजिणपूओवयारोपक्खेव बलिनिक्खेवपुव्व विग्गहयविसिट्ठ-उचियणेवत्थो मेलियनीसेसमाया-पिउमाइबधुजणो कय-साहु-साहम्मियवदणो सन्निहीकयपउरगध-चदण-अक्खय-नालि-केराइपसत्थवत्थू अखड-अक्खय-नालिकेरसणाहकरंजली तिपयाहिणीकयसमोसरणो खमासमणपुव्व भणइ-'पचमगलमहासुयक्खध-पडिक्कमणसुयक्खध-चीवदणसुत्त अणुजाणावणिय वासनिक्खेव करेह, देवे वदावेह'
३० त्ति । तओ गुरुणा अहिमतियसिरोविन्नत्थगधो जिणपडिमानिच्चलीकयदिट्ठी जिणमुद्दाइविहिणा पए पए सुत्तत्थ भाविंतो सद्धासंवेगपरमवेरग्गजुत्तो पवड्ढमाणसुहपरिणामो भत्तिभरनिब्भरो हरिसुल्लसियरोमचो गुरुणा चउव्विहसंघेण य सद्धि समोसरणपुरो वड्ढमाणथुईहिं देवे वदेइ । जाव परमिट्ठियुत्तभणणाणतरं उट्ठित्ता पचमगलमहासुयक्खध-पडिक्कमणसुयक्खध-भावारिहतत्थय-ठवणारिहतत्थय-चउवीसत्थय-नाण-त्थय-सिद्धत्थय-अणुजाणावणिय नदिकड्ढावणिय सत्तावीसूस्सास काउस्सग्ग दो वि करंति । पारित्ता,

‡ एतच्चिह्नद्वयान्तर्गत पाठ पतित B आदर्शे । * 'विशेष पुन ' इति A टिप्पणी ।

चउवीसत्थय भणित्ता, नवकारतिग भणितु,—'नाण पचविह पण्णत्त त जहा—आभिणिबोहियनाण, सुयनाण, ओहिनाण, मणपज्जवनाण, केवलनाण, जाव सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुओगो पवत्तइ'—इति मगलत्थ नदिं कड्ढिय सूरी निसिज्जाए उवविसिय 'भो भो देवाणुप्पिय' इच्चाइगाहाहि, अह वा—

कल्लाणकंदकंदलकारणमइतिक्खदुक्खनिद्दलण ।
सम्मद्दंसणरयणं सिवसुहसंसाहग भणियं ॥ १ ॥
तस्स य संसिद्धिविसुद्धिसाहगं बाहग विवक्खस्स ।
चिइवदणमिह वुत्तं तस्सुवहाणं अओ वुत्त ॥ २ ॥
लोए वि अणेगंतियपयत्थलभे निहाणमाइम्मि ।
पुरिसा पवत्तमाणा उवहाणपरा पयट्टंति ॥ ३ ॥
किं पुण एगंतियमोक्खसाहगे सयलमंतमूलम्मि ।
पंचनमोक्काराईसुयम्मि भविया पयट्टंता ॥ ४ ॥
किच—कप्पियपयत्थकप्पणपउणा वरकप्पपायवलया वि ।
पाविज्जइ पाणीहिं ण उणो चीवंदणुवहाणं ॥ ५ ॥
लाभमि जस्स नूणं दंसणसुद्धिवसेणनिमिसेणं ।
करतलगय व जायइ सिद्धी धुवसिद्धिभावस्स ॥ ६ ॥
धन्ना सुणंति एयं मुणंति धन्ना कुणंति धन्नयरा ।
जे सद्दहंति एयं ते वि हु धन्ना विणिद्दिट्ठा ॥ ७ ॥
कम्मक्खओवसमेणं गुरुपयपंकयपसायओ एयं ।
तुब्भेहिं सुयं मुणिय सद्दहियमणुट्ठिय विहिणा ॥ ८ ॥

इच्चाइगाहाहिं देसण करित्ता तिसङ्घ चेइय साहुवदणाभिग्गह देइ । तओ वासक्खए अभिमतेइ । तम्मि समये सुरहिगधड्ढा अमिलाणसियपुप्फमाला सत्तसरिया जिणपडिमापाओवरिं विण्णसणीया । तओ उट्ठाय सूरी जिणपाए सुगधे खिविय चउव्विहसघस्स वासक्खए देइ । तओ मालागाही वदित्ता भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह पचमगलमहासुयक्खध अणुजाणह' । गुरू भणइ—'अणुजाणामो' । तओ सीसो वदिय भणइ—'सदिसह किं भणामो ?' । गुरू भणइ—'वदित्ता पवेयह' । पुणो वदिय सीसो भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह पचमगलमहासुयक्खधो अणुन्नाओ ?' । तओ गुरू वासे खिवतो भणइ—'अणुन्नाओ' । २ खमासमणाण । हत्थेण सुत्तेण, अत्थेण, तदुभएण, 'सम्म धारणीओ, चिर पालणीओ, साहु पइ पुणु अन्नेसिं पि पवेयणीओ त्ति' । सीसो भणइ—'इच्छामो अणुसट्ठिं' । सीसो वदिय भणइ—'तुम्हाण पवेइय, संदिसह साहूण पवेएमि' । गुरू भणइ—'पवेयह' । तओ वदिय, नमोक्कार भणतो पयक्खिण देइ । संघो गुरू य तस्स सिरे वासे अक्खए य खिवइ, 'नित्थारगपारगो होहि'त्ति भणिरो । एव पढमा पयक्खिणा ॥ १ ॥ 'इरियावहियासुयक्खध अणुजाणह'—अणेण अभिलावेण सव्वे आलावगा भणिज्जति । बीया पयक्खिणा ॥ २ ॥ भावारिहतत्थय अणुजाणह'—अणेण तईया पयक्खिणा ॥ ३ ॥ 'ठवणारिहतत्थय अणुजाणह'—अणेण चवत्थी पयक्खिणा ॥ ४ ॥ नामारिहतत्थय अणुजाणह'—अणेण पचमी पयक्खिणा ॥ ५ ॥ 'सुयत्थय अणुजाणह'—अणेण छट्ठी पयक्खिणा ॥ ६ ॥ 'सिद्धत्थय अणुजाणह'—अणेण सत्तमी पयक्खिणा ॥ ७ ॥ सत्तसु य पयक्खिणासु सत्त गधमुट्ठीओ हवति । अन्ने अक्खयदाणाणतर एगहेलाए चिय सत्त गधमुट्ठीओ दिंति त्ति ॥

तओ खमासमण दाउ सीसो भणइ–'तुम्हाण पवेइय, साहूण पवेइय, संदिसह काउस्सग्ग कारवेह' । गुरू भणइ–'करावेमो' । तओ खमासमण दाउ–'पचमगलमहासुयक्खधाइअणुन्नानिमित्त करेमि काउस्सग्ग' । उज्जोय चिंतिय, त चेव पढिय, खमासमण दाउ भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह, उवहाणविहिं सुणावेह' । तओ सूरी उद्धढिओ उवहाणविहिं वक्खाणेइ ।

§ १५ सो य इमो–

पच नमोक्कारे किल, दुवालस तवो उ होइ उवहाण ।
अट्ठ य आयामाइ, एग तह अट्ठम अते ॥ १ ॥
एय चिय निस्सेस इरियावहियाइ होइ उवहाण ।
सक्कत्थयमि अट्ठममेग बत्तीस आयामा ॥ २ ॥
अरहतचेइयथए उवहाणमिण तु होइ कायव्व ।
एग चेव चउत्थ तिन्नि अ आयविलाणि तहा ॥ ३ ॥
एग चिय किर छट्ठ चउत्थमेगं च होइ कायव्वं ।
पणवीस आयामा चउवीसत्थयमि उवहाणं ॥ ४ ॥
एग चेव चउत्थ पच य आयंविलाणि नाणथए ।
चिइवदणाइसुत्ते उवहाणमिण विणिद्दिट्ठ ॥ ५ ॥
अद्यावारो विगहाविवज्जिओ रुद्दझाणपरिमुक्को ।
विस्साम अकुणतो उवहाणं वहइ उवजुत्तो ॥ ६ ॥
अह कहवि होज्ज बालो वुड्ढो वा सत्तिवज्जिओ तरुणो ।
सो उवहाणपमाण पूरिज्जा आयसत्तीए ॥ ७ ॥
राईभोयणविरई दुविहं तिविहं चउविहं वावि ।
नवकारसहियमाई पच्चक्खाण विहेऊण ॥ ८ ॥
एक्केण सुद्धअच्छविलेण इयरेहिं दोहिं उववासो ।
नवकारसहियएहिं पणयालीसाए उववासो ॥ ९ ॥
पोरसिचउवीसाए होइ अवड्ढेहिं दसहिं उववासो ।
विगईचाएहिं छहिं एगट्ठाणेहिं य चउहिं ॥ १० ॥
जीएण निवियतिय पुरिमड्ढा सोलसेव उववासो ।
एक्कासणगा चउरो अट्ठ य विक्कासणा तह य ॥ ११ ॥
एयपयं[1] पभूयकालो एव करेंतस्स पाणिणो होज्जा ।
तो कहवि होज्ज मरण नवकारविवज्जियस्सावि ॥ १२ ॥
नवकारवज्जिओ सो निव्वाणमणुत्तर कह लभिज्जा ।
तो पढमं चिय गिण्हइ, उवहाण होउ वा मा वा ॥ १३ ॥
गोयम ! ज समय चिय सुओवयारं करिज्ज सो पाणी ।
त समय चिय जाणसु गहियतयट्ठ जिणाणाए ॥ १४ ॥
एव कयउवहाणो भवतरे सुलभबोहिओ होज्जा ।
एयज्झवसाणो वि हु गोयम ! आराहगो भणिओ ॥ १५ ॥

1 B इणइ ।

जो उ अकाऊणमिमं गोयम ! गिण्हिज्ज भत्तिमंतो वि ।
सो मणुओ दट्ठव्वो अगिण्हमाणेण सारिच्छो ॥ १६ ॥
आसायइ तित्थयर तव्वयणं संघ-गुरुजणं चेव ।
आसायणबहुलो सो गोयम ! संसारमणुगामी ॥ १७ ॥
पढमं चिय कन्नाहेडएण जं पचमंगलमहीयं ।
तस्स वि उवहाणपरस्स सुलहिया बोहि निद्दिट्ठा ॥ १८ ॥
इय उवहाणपहाणं निउणं सव्वं पि वंदणविहाण ।
जिणपूयापुव्व चिय पढिज्ज सुयभणियनीईए ॥ १९ ॥
तं सर-वंजण-मत्ता-बिंदु-परिच्छेयठाणपरिसुद्धं ।
पढिऊण चियवंदणसुत्तं अत्थ वियाणिज्जा ॥ २० ॥
तत्थ वि य जत्थे य सिया सदेहो सुत्त-अत्थविसयंमि ।
तं बहुसो वीमंसिय सयल निस्संकियं कुणसु ॥ २१ ॥
अह सोहणतिहि-करणे मुहुत्त-नक्खत्त-जोग-लग्गंमि ।
अणुकूलंमि ससिबले *सस्से सस्सेयसमयंमि ॥ २२ ॥
निययविहवाणुरूव संपाडियभुवणनाहपूएणं ।
फुडभत्तीए विहिणा पडिलाहियसाहुवग्गेण ॥ २३ ॥
भत्तिभरनिब्भरेण हरिसवसोल्लसियबहलपुलएणं ।
सद्धा-संवेग-विवेग-परमवेरग्गजुत्तेणं ॥ २४ ॥
निट्ठियघणराग-दोस-मोह-मिच्छत्त-मलकलंकेणं ।
अइउल्लसतनिम्मलअज्झवसाएण अणुसमयं ॥ २५ ॥
तिहुयणगुरुजिणपडिमाविणिवेसियनयणमाणसेण तहा ।
जिणचंदवंदणाए धन्नोऽहमी मन्नमाणेण ॥ २६ ॥
नियसिररइयकरकमलमउलिणा जंतुविरहिओगासे ।
निस्संकं सुत्तत्थं पयं पयं भावयंतेण ॥ २७ ॥
जिणनाहदिट्ठगंभीरसमयकुसलेण सुहचरित्तेणं ।
अपमायाईबहुविहगुणेण गुरुणा तहा साद्धिं ॥ २८ ॥
चउविहसंघजुण्णं विसेसओ नियबंधुसहिएणं ।
इय विहिणा निउणेण जिणबिंबं वंदणिज्जं च[1] ॥ २९ ॥
तयणतर गुणड्ढे साहू वंदिज्ज परमभत्तीए ।
साहम्मियाण कुज्जा जहारिहं तह पणामाई ॥ ३० ॥
जाव य महग्घ-माउक्क[1]-चोक्ख-वत्थप्पयाणपुव्वेणं ।
पडियत्ति[2]विहाणेणं कायव्वो गुरुयसम्माणो ॥ ३१ ॥
एयावसरे गुरुणा सुविइयगंभीरसमयसारेण ।
अक्खेवणि-विक्खेवणि-सवेयणिपमुहविहिणा उ ॥ ३२ ॥

* 'श्रवसे' इति A टिप्पणी। 1 B तु। 1 'मृदुल' इति A टिप्पणी। 2 A पडिवित्ति°।

भवनिव्वेयपहाणा सद्धासंवेगसाहणे पउणा।
गुरुएण पबंधेण धम्मकहा होइ कायव्वा ॥ ३३ ॥
सद्धासंवेगपरं सूरी नाऊण तं तओ भव्वं।
चिइवंदणाइकरणे इय वयणं भणइ निउणमई ॥ ३४ ॥
भो भो देवाणुपिया! संपावियसयलजम्मसाफल्ल[1]!।
तुमए अज्जप्पभिई तिकालं जावजीवाए ॥ ३५ ॥
वंदेयव्वाइं चेइयाइं एगग्गसुथिरचित्तेण।
खणभंगुराओ मणुयत्तणाओ इणमेव सारं ति ॥ ३६ ॥
तत्थ तुमे पुव्वण्हे पाणं पि न चेव ताव पेयव्वं।
नो जाव चेइयाइं साहू वि य वंदिया विहिणा ॥ ३७ ॥
मज्झण्हे पुणरवि वंदिऊण नियमेण कप्पए भोत्तुं।
अवरण्हे पुणरवि वंदिऊण नियमेण सयणं ति ॥ ३८ ॥
एवमभिग्गहबंधं काउं तो वद्धमाणविज्जाए।
अभिमंतिऊण गेण्हइ सत्त गुरू गंधमुट्ठीओ ॥ ३९ ॥
तस्सोत्तमंगदेसे 'नित्थारगपारगो भविज्ज'त्ति।
उच्चारेमाणु चिय निक्खिवइ गुरू सुपणिहाणं ॥ ४० ॥
एयाए विज्जाए पभावजोगेण जो स किर भव्वो।
अहिगयकज्जाण लहुं नित्थारगपारगो होइ ॥ ४१ ॥
अह चउविहो वि संघो 'नित्थारगपारगो भविज्ज तुमं धन्नो।
सुलक्खणो' जंपिरो त्ति से निक्खिवइ गंधे ॥ ४२ ॥
तत्तो जिणपडिमाए पूया देसाउ सुरहि गंधड्ढं।
अमिलाणं सियदामं गिण्हिय विहिणा सहत्थेण ॥ ४३ ॥
तस्सोभयखंधेसु आरोविंतेण सुद्धचित्तेण।
निस्संदेहं गुरुणा वत्तव्व एरिसं वयणं ॥ ४४ ॥
'भो भो सुलद्धनियजम्म! निचियअइगुरुअ-पुण्णपब्भार!।
नारय-तिरियगईओ तुज्झ अवस्सं निरुद्धाओ ॥ ४५ ॥
नो बंधगो य सुंदर! तुममित्तो अयस-नीयगोत्ताणं।
न य दुलहो तुह जम्मंतरे वि एसो नमोक्कारो ॥ ४६ ॥
पंचनमोक्कारपभावओ य जम्मंतरे वि किर तुज्झ।
जातीकुलरूवारोग्गसंपयाओ पहाणाओ ॥ ४७ ॥
अन्नं च इमाउ चिय न हुंति मणुया कयावि जियलोए।
दासा पेसा दुभगा नीया विगलिंदिया चेव ॥ ४८ ॥
किं बहुणा जे गोयम! विहिणा एयं सुयं अहिज्जित्ता।
सुयभणियविहाणेण सुद्धे सीले अभिरमिज्जा ॥ ४९ ॥

---
1 वयणे। 2 B °साफल्ल।

ते जइ नो तेणं चिय भवेण निव्वाणमुत्तमं पत्ता ।
ताऽणुत्तरगेविज्जाइएसु सुइर अभिरमेउ ॥ ५० ॥
उत्तमकुलंमि उक्किट्ठलट्ठसव्वंगसुंदरा पयडी ।
सयलकलापत्तट्ठा जणमणआणंदणा होउ ॥ ५१ ॥
देविंदोवमरिद्धी दयावरा विणयदाणसंपन्ना ।
निव्विन्नकामभोगा धम्मं सयलं अणुट्ठेउ ॥ ५२ ॥
सुहझाणानलनिद्दड्ढघाइकम्मिंधणा महासत्ता ।
उप्पन्नविमलनाणा विहुयमला झत्ति सिज्झंति ॥ ५३ ॥
इय विमलफलं सुणिउं जिणस्स मह मा ण दे व सू रि स्स ।
वयणा उवहाणमिणं साहेह महानिसीहाओ ॥ ५४ ॥

॥ उवहाणविही समत्तो ॥ ७ ॥

§ १६. तओ मालोववूहणं करेइ । जहा–

सावज्जकज्जवज्जणनिट्ठुरणुट्ठाणविहिविहाणेण ।
दुक्करउवहाणेणं विज्जा इव सिज्झए माला ॥ १ ॥
परमपयपुरीपत्थियपवयणपाहेयपाणिपहियस्स ।
पत्थाणपढममंगलमाला पयडा परमपसवा ॥ २ ॥
संतोसखग्गदारियमोहरिउत्तेण रुद्धविसयस्स ।
आणंदपुरपवेसे वंदणमाला जियनिवस्स ॥ ३ ॥
अहवा दुजोह-मय-मोह-जोहविजयत्थमुज्जमपरस्स ।
जीवज्जोहस्सेसा रणमाला इव सहइ माला ॥ ४ ॥
समत्त-नाण-दसण-चरित्तगुणकलियभव्वजीवस्स ।
गुणरजियाइ एसा सिद्धिकुमारीइ वरमाला ॥ ५ ॥
माला सग्गपवग्गमग्गगमणे सोवाणवीही समा,
एसा भीमभवोयहिस्स तरणे निच्छिद्दपोओवमा ।
एसा कप्पियवत्थुकप्पणकए संकप्परुक्खोवमा,
एसा दुग्गइदुग्गवारपिहणा गाढग्गला देहिणं ॥ ६ ॥
जह पुडपायविसुद्धं रयणं ठाणं वरं लहइ तह य ।
तवतवणुतवियपावो परमपयं पावए पाणी ॥ ७ ॥
जह सूरसमारुहणे कमेण छिज्जति[1] सयलछायाओ ।
तह सुहभावारुहणे जीवाण कम्मपयडीओ ॥ ८ ॥
दाणं सील तव-भावणाओ धम्मस्स साहणं भणिया ।
ताओ एय विहाणे बहु पडिपुन्नाओं नायव्वा ॥ ९ ॥

---

* 'शोभते' इति A टिप्पणी । 1 B छज्जति ।

—इच्चाइ। इत्थंतरे सुनेवत्थेहिं मालागाहिणो बंधवेहिं जिणनाहपूयाऽऽदेसाओ अणुजाणावित्तु माला आणेयव्वा। सपइ सुत्तमई रत्तवत्थुच्छुया माला कीरइ। सूरी य तत्थ वासे खिवेइ। तओ तव्वयवहत्थेण तस्स भवस्स कंठे माला पक्खेवणीया। इत्थ केई भणंति–'परिखित्तमाला समोसरणे पयाहिणाचउक्कं दिंति, संघो य तस्सीसे वासक्खए खिवइ'त्ति। तओ पचसद्दे वज्जंते मालागाहिणो जिणगओ सपरियणा नचंति, दाणं च दिंति। आयबिलं उववासो वा तस्स तम्मि दिणे पच्चक्खाणं। संपयं उववासो कारविज्जइ त्ति दीसइ। तओ आरत्तियमाइ सावया कुणंति। तओ महयाविच्छड्डेण सावय-सावियाओ मालागाहिणं गिहे नेंति। सो वि गिहागयाणं तेसिं ससत्तीए वत्थ तंबोलाइ देइ। जइ पुण वसहीए नंदीरयणा कया, तओ चेईहरे समुदाएण गम्मइ त्ति, सा य माला घरपडिमाअग्गओ ठविया छम्मासं जाव पूइज्जइ त्ति॥

॥ मालारोवणविही समत्तो ॥ ८ ॥

§ १७ इत्थ केई उदग्गकुग्गाहगहियचित्ता महानिसीहसिद्धंतमवमन्नंता उवहाणतवं न मन्नंति चेव। तओ य तेसिं जुत्तिआभासेहिं मानियमइणो* सीसा मा मिच्छत्तं गमिहिंति त्ति परिभाविय पुव्वायरिएहिं उवहाणपइट्ठापंचासयं नाम पगरणं निरइयं तं च सीसाणमणुग्गहट्ठाए इत्थ पत्थावे लिहिज्जइ।

नमिऊण वीरनाहं, वोच्छं नवकारमाइ उवहाणे।
किं पि पइट्ठाणमहं विमूढसमोहमहणत्थं ॥ १ ॥
जं सुत्ते निद्दिट्ठं पमाणमिह तं सुओवयाराइ।
आयाराईण जहा जहुत्तमुवहाणनिवहणं† ॥ २ ॥
वुत्तं च सुए नवकार–इरिय–पडिक्कमण–सक्कथयविसयं।
चेइय–चउवीसत्थय–सुयत्थएसु[1] च उवहाणं ॥ ३ ॥
किं पुण सुत्तं तं इह जत्थ नमोक्कारमाइउवहाणं।
उवइट्ठं आह गुरू, महानिसीहक्खसुयखंधे ॥ ४ ॥
एसो वि कहं पमाणं नंदीए हंदि कित्तणाओ त्ति।
जं तत्थेव निसीहं महानिसीहं च सलत्तं ॥ ५ ॥
अह तं न होइ एयं एवं आयारमाइवि तयन्न[2]।
तुल्ले वि नंदिपाढे को हेऊ विसरिसत्तम्मि ॥ ६ ॥
अह दुब्बलियसूरीणा, पराभवत्थं कयं सबुद्धीए।
गोट्ठेण ति मयं नो इमं पि वयणं अविण्णूणं ॥ ७ ॥
पुट्ठमबद्धं कम्मं अप्परिमाणं च संवरणसुत्तं[3]।
जं तेण दुगं एयं तं चिय अपमाणमक्खायं ॥ ८ ॥
सेसं तु पमाणत्तेण कित्तियं गोट्ठमाहिलुत्तं पि।
इग-दुगपभेयए[4] चिय जं सुत्ते निण्हवा वुत्ता ॥ ९ ॥
किंच न गोट्ठामाहिलकयमेयं नंदिसेणचरिए जं।
कह भोगफलं भणिही अवद्धिओ बद्धपुट्ठ सो ॥ १० ॥ प्रक्षेपः।

* 'मव्या' इति A टिप्पणी। † निम्मवण' इति A आदर्शे पाठभेदसूचिका टिप्पणी। 1 B °त्थए सुय च। 2 B नयत्त। 3 B संवरसुत्त। 4 B ° मइमेए।

अह भूरि मयविरोहा पमाणया नो महानिसीहस्स।
लोइयसत्थाणं पिव तहाहि तम्मी अणुचियाइ ॥ ११ ॥
सत्तमनरयगमाईणि इत्थियाणं पि वण्णियाइ ति।
तन्न लिहणाइदोसा संति विरोहा[1] सुए वि जओ ॥ १२ ॥
आभिणिबोहियनाणे अट्ठावीसं हवंति पयडीओ। 5
आवस्सयम्मि वुत्त इममवह कप्पभासम्मि ॥ १३ ॥
नाणमवाय-धिईओ दंसणमिट्ठं[2] च उग्गहेहाओ।
एवं कह न विरोहो विवरीयत्तेण भणणाओ ॥ १४ ॥
किंच–गइ-इंदियाइसु दारेसु न सम्मसासणं इट्ठं।
एगिंदीणं विगलाण मइ-सुए त चऽणुन्नायं ॥ १५ ॥ 10
सयगे पुण विगलाणं एगिंदीणं च सासण इट्ठं।
न पुणो मइ-सुयनाणे तहेवमावस्सए वुत्तं ॥ १६ ॥
सीहो तिविट्ठुजीओ जाओ सत्तममहीओं उव्वट्टो।
जीवाभिगममएण मीणत्त चेव सो लहइ ॥ १७ ॥
नायासु पुव्वण्हे दिक्खा नाणं च भणियमवरण्हे। 15
आवस्सयम्मि नाणं वीयम्मि दिणम्मि मल्लीस्स ॥ १८ ॥
छउमत्थप्परियाओ सड्ढछम्मास-बारससमाओ।
मग्गसिर[3]किण्हदसमी दिक्खाए वीरनाहस्स ॥ १९ ॥
वइसाहसुद्धदसमी केवललाभम्मि संभविज्ज कह।
इय [4]सत्थेसु बहवो दीसंति परोप्परविरोहा ॥ २० ॥ 20
तस्सभवे वि आवस्सयाइँ सत्थाइँ जह पमाणाइँ।
तह किं महानिसीहं खिप्पइ न पमाणवुद्धीए ॥ २१ ॥
अह पंचनमोकाराइयाणसुवहाणमणुचियं भिन्नं।
आवस्सयस्स अंतो पाढाओ तहाहि सामइयं ॥ २२ ॥
नवकारपुव्वयं चिय कारइ ज ता तयंगमेसो ति। 25
अन्न च इत्थ अत्थे पयडं चिय कित्तिअं एय ॥ २३ ॥
नंदिमणुओगदारं, विहिवद्धुवग्घाइयं† च नाऊणं।
काऊण पचमगलमारंभो होइ सुत्तस्स ॥ २४ ॥
इय सामाइयनिज्जुत्तिमज्झमज्झासिओ इमो ताव।
पडिक्कमणे य पविट्ठो इरियावहियाएँ पाढो वि ॥ २५ ॥ 30
अरिहंतचेइयाण य वंदणदंडो सुयत्थओ य तहा।
काउसग्गज्झयणे पंचमए अणुपविट्ठो ति ॥ २६ ॥

---

1 B विरोहो। 2 B °मित्त। 3 B °कण्ह। 4 B सुत्तेसु। † 'विधिपयोद्घातिक उपन्यास इत्यर्थ।' इति A टिप्पणी।

बीयज्झयणसरूवो चउवीसत्थओ वि ज विणिद्दिट्ठो ।
आवस्सयाउ न पिहो जुज्झइ ता तेसिमुवहाण ॥ २७ ॥
आवस्सओवहाणे ताणुवहाण कय समवसेय ।
कयओवहाणे य पिहो तक्करणे होइ अणवत्था ॥ २८ ॥
भण्णइ उत्तरमिहइ नवकारो आइमगलत्तेण ।
वुचइ जया तयचिय सामइयऽणुप्पवेसो से ॥ २९ ॥
जइया य सयण-भोयणनिज्जरहेउ[1] पढिज्जए एसो ।
तइया सतत एव हि गिज्झइ अन्नो सुयक्खधो ॥ ३० ॥
इह-परलोयत्थीण सामाइयविरहिओ वि वावारो ।
दीसइ नवकारगओ तदत्थसत्थाणि य बहूणि ॥ ३१ ॥
नवकारपडल-नवकारपंजिया-सिद्धचक्कमाईणि ।
सामाइयगभावो इमस्स णेगतिओ तम्हा ॥ ३२ ॥
पढमुच्चारणमित्ते वि ऽणुप्पवेसो हविज्ज सामइए ।
एयस्स सव्वहा जइ ता नदणुओगदाराण[2] ॥ ३३ ॥
तदणुप्पवेसओ चिय तव्वचरणं नेय जुज्झइ विभिन्न ।
दीसइ य कीरमाणं जोगविहीए य भन्नत (भिन्नत्त) ॥ ३४ ॥
किं वा भिन्नत्ते सव्वहा वि सामाइयाउ एयस्स ।
काऊण पचमगलमिचाई अणुचिय वयण ॥ ३५ ॥
इय भेयपक्खमणुसरिय जइ तवो कीरई नमोक्कारे ।
ता को दोसो नदणुओगदारेसु य हविज्ज ॥ ३६ ॥
इरियावहियाईय सुय पि आवस्सयस्स करणम्मि ।
अणुपविसइ तम्मि तयन्नया य भिन्न हि तेणेव ॥ ३७ ॥
भत्ते पाणे सयणासणाइसुत्त पि जायइ कयत्थ ।
तिन्नि वि कहइ तिसिलोइयत्थुइवाइसुत्तं पि ॥ ३८ ॥
आवस्सए पवेसो जइ एसिं सव्वहावि य हविज्ज ।
तो पिहुपढणं एसिं सव्वेसिं कए घडिज्ज त्ति ॥ ३९ ॥
ज च इयरेयरासयदूसणमेव च वुचइ इमाण ।
पाढेण विणा ण तवो तव विणा नेसिं पाढो ति ॥ ४० ॥
त पि हु अदूसण जए पवइउसुवट्ठियस्सऽणुन्नाय ।
सामाइयाइयाण आलावगदाणमतवे वि ॥ ४१ ॥
एवं जइ पढिएसु वि नवकाराईसु ताणमुवहाण ।
सविसेसगुणनिमित्त कारिज्जइ को णु ता दोसो ॥ ४२ ॥
नियमइविगप्पिय पि हु कारिज्जइ मुक्खदडयाइतव ।
सत्थुत्त पि निसिज्झइ उवहाण ही महामोहो ॥ ४३ ॥

[1] A तिज्जरहेऊ। [2] B ॰दारेण।

मंतमि पुव्वसेवा जइ तुच्छफले वि वुचइ इरं ता ।
मुक्खफले वि उवहाणलक्खणा किं न कीरइ सा ॥ ४४ ॥
एईइ परमसिद्धी जायइ जं ता दढ तओ अहिगा ।
जत्तमि वि अहिगत्त भवस्सेयाणुसारेण ॥ ४५ ॥
अह सक्कविरयणाओ सक्कथए नोवहाणमुवचन्नं ।
एयं पि केण सिट्ठं जमेस सक्केण रइओ त्ति ॥ ४६ ॥
सक्कस्स अविरयत्ता जिणथुई जइ अणेणणुन्नाया ।
ता तक्कउ त्ति सो वुत्तुमेवमुचिय करं तम्हा ॥ ४७ ॥
केवलिणा दिट्ठाण उवइट्ठाणं च विरइयाणं च ।
नवकारमाइयाणं महप्पभावो व वेयाण ॥ ४८ ॥
तिक्कालियमहवा सत्तकालिय सुमरणे निउत्ताणं ।
जुत्त चिय उवहाण महानिसीहे निबद्धाणं ॥ ४९ ॥
उवहाणविहीणाण वि मरुदेवाईण सिवगमो दिट्ठो ।
एव च वुचमाणे तवदिक्खाईण वि निसेहो ॥ ५० ॥
इय भूरिहेउजुत्तीजुयमि बहुकुसलसलहिए मग्गे ।
कुग्गहविरहेणुज्जमह महह जइ मोक्खसुहमणहं ॥ ५१ ॥

॥ उवहाणपइट्ठापंचासगपगरणं समत्तं ॥ ९ ॥

---

§ १८. संपय पुव्वुल्लिगिओ पोसहविही सखेवेण भण्णइ । जम्मि दिणे सावओ साविया वा पोसह गिण्हिही, तम्मि दिणे अ प्पभाए चेव वावारतरपरिचाएण गहियपोसहोवगरणो पोसहसालाए साहुसमीवे वा गच्छइ । तओ इरियावहिय पडिक्कमिय गुरुसमीवे ठवणायरियसमीवे वा खमासमणदुगपुव्व पोसहमुहपोत्तिं पडिलेहिय पढमखमासमणेण पोसह सदिसाविय, बीयखमासमणेण पोसहे ठामि त्ति भणइ । तओ वदिय, नमोक्कारतिग कड्ढिय, 'करेमिभंते पोसहमिच्चाइ दडग वोसिरामि' पज्जत भणइ । तओ पुव्वुत्तविहिणा सामाइय गेण्हइ । वासासु कट्ठासण, सेसट्ठमासेसु पाउछण च सदिसाविय, उवउत्तो सज्झाय करिंतो, पडिक्कमणवेल जाव पडिवालिय, पाभाइय पडिक्कमइ । तओ आयरिय–उवज्झाय–सव्वसाहू वदइ । तओ जइ पडिलेहणाए सवेला, ताहे सज्झाय करेइ । जायाए य पडिलेहणाए खमासमणदुगेण अगपडिलेहण सदिसावेमि, पडिलेहण करेमि त्ति भणिय, मुहपोत्तिं पडिलेहेइ । एव खमासमणदुगेण अगपडिलेहण करेइ । इत्थ अगसद्देण 'अगट्ठिय कडिपट्टाइ णेय' इइ गीयत्था । तओ ठवणायरिय पडिलेहित्ता नवकारतिगेण ठविय, कडिपट्टय पडिलेहिय, पुणो मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, खमासमणदुगेण उवहिपडिलेहण संदिसाविय, कबल-वत्थाइ, अवरण्हे पुण वत्थ-कबलाइ, पडिलेहेइ । तओ पोसहसाल पमज्जिय, कज्जय विहीए परिट्ठविय, इरिय पडिक्कमिय, सज्झाय सदिसाविय, गुणण–पढण–पुच्छण–वायण–वक्खाणसवणाइ करेइ । तओ जायाए पउणपोरिसीए, खमासमणदुगेण पडिलेहण सदिसाविय, मुहपोत्तिं पडिलेहिय, भोयणभायणाइ पडिलेहेइ । तओ पुणो सज्झाय करेइ, जाव कालवेला । ताहे आवस्सियापुव्व चेईहरे गतु देवे वंदेइ । उवहाणवाही पुण पचहिं सक्कत्थएहिं देवे वदेइ । तओ जइ पारणइत्तओ तो पच्चक्खाणे पुन्ने खमासमणदुगपुव्व मुहपोत्तिं पडिलेहिय, वदिय, भणइ–'भगवन्! भाति पाणी पारावह ।' उवहाणवाही भणइ–'नवकारसहिय चउविहार ।' इयरो

भणइ–'पोरिसि पुरिमड्ढो वा, तिविहार चउविहार वा, एकासणउ निवी आंबिलु वा, जा काइ वेला, तीए भत्तपाण पारावेमि'त्ति। तओ सक्कत्थय भणिय, खण सज्झाय च काउ, जहासंभव अतिहिसंविभाग काउ, मुह-हत्थे पडिलेहिय, नमोक्कारपुव्व, अरत्तदुट्ठो असुरसुर अचवचव अदुयमविलंबिय अपरिसाडिं जेमेइ। त पुण नियघरे अहापवत्त फासुय ति, पोसहसालाए वा पुव्वसदिट्ठसयणोवणीय। न य भिक्ख हिंडेइ। तओ आसणाओ अचलिओ चेव दिवसचरिम पचक्खाइ। तओ इरियावहिय पडिक्कमिय, सक्कत्थय भणइ। जइ पुण सरीरचिंताए अट्ठो तो नियमा दुगाई आवस्सिय करिय साहु व उवउत्तो निज्जीवथंडिले गतु 'अणुजाणह जस्सावग्गहो' ति भणिऊण, दिसि-पवण-गाम-सूरियाइसमयविहिणा उच्चारपासवणे वोसिरिय, फासुयजलेण आयमिय, पोसहसालाए आगतूण, निसीहियापुव्व पविसिय, इरियावहिय पडिक्कमिय, खमासमणपुव्व भणति–'इच्छाकारेण संदिसह गमणागमण आलोयह'। 'इच्छ' आवस्सिय करिय, अवर-दक्खिण-उत्तरदिसाए गच्छिय, दिसालोय करिय, सडासए थंडिल च पडिलेहिय, उच्चार-पासवण वोसिरिय, निसीहिय करिय, पोसहसाल पविट्ठा आवतजतेहिं ज खडिय ज विराहिय तस्स मिच्छामि दुक्कड। तओ सज्झाय ताव करेइ, जाव पच्छिमपहरो। जाए य तम्मि खमासमणपुव्व 'पडिलेहण करेमि, पुणो पोसहसाल पमज्जेमि'त्ति भणइ। तओ पुव्व व अंगपडिलेहण काउ, पोसहसाल दंडगपुंछणेण पमज्जिय, कज्जय उद्धरिय, परिट्ठविय, इरिय पडिक्कमिय, ठवणायरिय पडिलेहिय ठवेइ। तओ गुरुसमीवे ठवणायरियसमीवे वा खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय, पढमखमासमणे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसावेमि', बीए खमासमणे 'सज्झाय करेमि'त्ति भणिय, काऊण य, वंदणय दाऊण गुरुमुहम्मि य पच्चक्खाइ। तओ खमासमणदुगेण उवहिथंडिलपडिलेहण संदिसाविय, खमासमणदुगेण 'वइसण संदिसावेमि, वइसणे ठामि'त्ति भणिय वत्थकंबलाइ पडिलेहेइ। इत्थ जो अभत्तट्ठी सो सव्वोवहिपडिलेहणाणतर कडिपट्टय पडिलेहेइ। जो पुण भत्तट्ठी सो कडिपट्टय पडिलेहिय, उवहि पडिलेहेइ त्ति विसेसो। तओ सज्झाय ताव करेइ, जाव कालवेला। जायाए य तीए उच्चारपासवणथंडिले चउवीसं पडिलेहिय, जइ तम्मि दिणे चउद्दसी तो पक्खिय चउम्मासिय वा, अह अट्ठमी उद्दिट्ठा पुन्नमासिणी वा तो देवसिय, अह भद्दवयसुद्धचउत्थी तो संवच्छरिय, पडिक्कमणसामायारीए पडिक्कमिय साहुविस्सामण कुणइ। तओ सज्झाय ताव करेइ जाव पोरिसी। उवरिं जइ समाही तो लहुयसरेण कुणइ, जहा खुद्दजतुणो न उट्ठिति। तओ असज्झभणणपुरओ भूमिपमज्जणाइविहिविहियसरीरचिंतो खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय, खमासमणेण राईसथारय संदिसाविय, बीयखमासमणेण राईसंथारए ठामि त्ति भणिय, सक्कत्थय भणइ। तओ संथारग उत्तरपट्ट च जाणुगोवरि मीलित्तु पमज्जिय भूमीए पत्थरेइ। तओ सरीर पमज्जिय, निसीही 'नमो खमासमणाण' ति भणिय, संथारए भविय, नमोक्कारतिग सामाइय च उच्चारिय–

अणुजाणह परमगुरू गुणगणरयणेहिं भूसियसरीरा।
बहुपडिपुन्ना पोरिसि राईसथारए ठामि ॥ १ ॥
अणुजाणह सथार बाहुवहाणेण वामपासेण।
कुक्कुडपायपसारण [1]अतुरंतु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥
संकोइयसंडासे उवत्तते य कायपडिलेहा।
दव्वाओ उवओग ऊसासनिरुंभणा लोए ॥ ३ ॥
जइ मे होज्ज पमाओ इमस्स देहस्स इमाइ रयणीए।
आहारमुवहिदेहं तिविह तिविहेण वोसिरिय ॥ ४ ॥

1 B अतरंतु।

'खामेमि सव्वजीवे' इच्चाइगाहाओ भणिऊण वामबाहूवहाणो निद्दासोक्खं करेइ । जइ उव्वटइ तो सरीरसथारए पमज्जिय, अह सरीरचिंताए उट्ठेइ, तो सरीरचिंतं काऊण, इरियावहियं पडिक्कमिय, जहन्नेण वि गाहातिगं गुणिय सुयइ । सुत्तो वि जाव न निद्दा एइ ताव धम्मजागरियं जागरंतो थूलभद्दाइमहरिसिचरियाइं परिभावेइ । तओ पच्छिमरयणीए उट्ठिय, इरियावहियं पडिक्कमिय, कुसुमिण-दुस्सुमिणकाउस्सग्गं सयउस्सासं मेहुणसुमिणे अट्ठुत्तरसयउस्सासं करिय, सक्कत्थयं भणिय, पुव्वुत्तविहीए सामाइयं काउं, सज्झायं संदिसाविय, ताव करेइ जाव पडिक्कमणवेला । तओ विहिणा पडिक्कमिय, जायाए पडिलेहणाए, पुव्वविहिणा काऊण पडिलेहणं, जहन्नओ वि मुहुत्तमेत्तं सज्झायं करिय, पोसहपारणट्ठी खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय, खमासमणपुव्वं भणइ–'इच्छाकारेण संदिसह पोसहं पारावेह' । गुरू भणइ–'पुणो वि कायव्वो' । बीयखमासमणेण 'पोसहं पारेमि'त्ति । गुरू भणइ–'आयारो न मोत्तव्वो'त्ति । तओ नमोक्कारतिगं उद्धट्ठिओ भणइ । पुणो मुहपोत्तिं पडिलेहिय, पुव्वविहिणा सामाइयं पारेइ । पोसहे पारिए नियमा सइ समवे साहू पडिलाभिय, पारियव्वं ति । जो पुण रत्तिं पोसहं लेइ सो सज्झाए उवहिं पडिलेहिय, तो पोसहे ठाउ, थंडिलपेहणाई सव्वं करेइ । नवरं जाव दिवससेसं रत्तिं वा पज्जुवासामि त्ति उच्चरइ । पभाए पुण जाव अहोरत्तं दिवसं वा पज्जुवासामि त्ति उच्चरइ । भणियत्थसंगाहियाओ इमाओ गाहाओ[1] –

वत्थाइअ पडिलेहिय, सड्ढो गोसम्मि पेहिउं पोत्तिं ।
नवकारतिगं कड्ढिउमियं पोसहसुत्तमुच्चरइ ॥ १ ॥

'करेमि भंते पोसहं मिच्चाइ' ।

सामाइयं पगिण्हिय कयपडिक्कमणो य कुणइ पडिलेहं ।
अंगपडिलेहणं पिय कडिपट्टय-ठवणायरिए ॥ २ ॥
उवहिमुहपोत्ति-उवहीपोसहसालाइपेहसज्झाओ ।
पुत्तीभंडुवगरणस्स पेहणं पउणपहरम्मि ॥ ३ ॥
चेइयचियवंदण-पुत्तिपेहण भत्तपाणपारवणं ।
सक्कत्थय-भोयण-सक्कत्थयग-वंदणय-संवरणे ॥ ४ ॥
आवस्सियाइगमणं सरीरचिंताइ-आगमनिसीही ।
काउं गमणागमणालोयणमह कुणइ सज्झायं ॥ ५ ॥
तह चरिमपोरिसीए विहीइ पडिलेहणगपडिलेहे ।
कडिपट्ट-वसहिपेहा-ठवणायरिउवहिमुहपोत्ती ॥ ६ ॥
तो उवहिथंडिले संदिसावइ कंबलाइ पडिलेहे ।
पुण मुहपोत्तिय-सज्झाय-आसणे संदिसावेइ ॥ ७ ॥
पढइ सुणेइ जाव कालवेलमह थंडिले चउवीसं ।
पेहिय पडिक्कमिउ जाममित्तमिह गुणइ विहिणाउ ॥ ८ ॥
राइयसंथारय-पुत्तिपेह-सक्कत्थएण उ सुवित्ता ।
सुत्तुट्ठिओ उ इरियं सक्कथयं कहिय मुहपोत्तिं ॥ ९ ॥
पेहिय विहिणा सामाइयं पि काउं तओ पडिक्कमइ ।
पडिलेहणाइपुव्वं च कुणइ सव्वं पि कायव्वं ॥ १० ॥

1 B संगाहियाओ इमाइ गाहाओ ।

जो पुण रयणीपोसहमाययई सो वि सक्षसमयम्मि ।
पढम उवट्ठिय पडिलेहिऊण तो पोसहे ठाइ ॥ ११ ॥
थंडिल्लपेहणाई सो वि विहीए करेइ सव्व पि ।
पारिंतो पुण पोत्ति पेहित्ता दो खमासमणे[1] ॥ १२ ॥
दाउ नवकारतिग भणइ ठिओ एवमेव सामाइय ।
पारेइ किं पुण 'भयव दसण्ण' भणणे इह विसेसो ॥ १३ ॥
गुरुजिणवल्लहविरइयपोसहविहिपयरणाउ सखेवा[2] ।
दसियमेयनिहाण विसेसओ पुण तओ नेय ॥ १४ ॥
आसाढाईपुरओ चउरगुलवुड्ढिमाइओ हाणी ।
†पहरो दु-ति-ति-ति एगे सड्ढे‡ उद्धदसट्ठछहि पउणो ॥ १५ ॥
एयाए गाहाए उवरि पोसहिएण पडिलेहणाकालो नायव्वो ति ॥

॥ इति पोसहविही समत्तो ॥ १० ॥

§१९ पुव्वोलिंगिया पडिक्कमणसामायारी पुण एसा । सावओ गुरूहिं सम इक्को वा 'जावति चेइयाइ'ति गाहादुग थुत्तिपणिहाणवज्ज चेययाइ वदित्तु, चउराइखमासमणेहिं आयरियाई वदिय, भूनिहियसिरो 'सव्वस्स वि देवसिय' इच्चाइदडगेण सयलाइयारमिच्छामिदुक्कड दाउ, उट्ठिय सामाइयसुत्त भणित्तु, 'इच्छामि ठाइउ काउस्सग्ग'मिच्चाइसुत्त भणिय, पलंबियभुयकुप्परधरिय नाभिअहो जाणुड्ढ चउरगुलठवियकडियपट्टो सजइकविट्ठाइदोसरहिय काउस्सग्ग काउ, जहक्कम दिणकए अइयारे हियए धरिय, नमोक्कारेण पारिय, चवीसत्थय पढिय, सडासगे पमज्जिय, उवविसिय, अलग्गवियियबाहुजुओ मुहणतए पनवीस पडिलेहणाओ काउ, काए वि तत्तियाओ चेव कुणइ । साविया पुण पुट्ठि-सिर-हिययवज्ज पन्नरस कुणइ । उट्ठिय बत्तीसदोसरहिय पणवीसावस्सयसुद्ध किइकम्म काउ अवणयगो करजुयविहिधरियपुत्ती देवसियाइयाराण गुरपुरओ वियडणत्थ आलोयणदडग पढइ । तओ पुत्तीए कट्ठासण पाउछण वा पडिलेहिय वाम जाणु हिट्ठा दाहिण च उड्ढ काउ, करजुयगहियपुत्ती सम्म पडिकमणसुत्त भणइ । तओ दव्वभावुट्ठिओ 'अब्भुट्ठिओमि' इच्चाइदडग पढित्ता, वदण दाउ, पणगाइसु जइसु तिन्नि खामित्ता, सामन्नसाहूसु पुण ठवणायरिएण सम खामण काउ, तओ तिन्नि साहू खामित्ता, पुणो किइकम्म काउ, उद्धट्ठिओ सिरकयजली 'आयरियउवज्झाए' इच्चाइगाहातिग पढित्ता, सामाइयसुत्त उस्सग्गदडय च भणिय, काउस्सग्गे चारित्ताइयारसुद्धिनिमित्त, उज्जोयदुग चितेइ । तओ गुरुणा पारिए पारित्ता, सम्मत्तसुद्धिहेउ उज्जोय पढिय, सव्वलोयअरिहतचेइयाराहणुस्सग्ग काउ, उज्जोय चितिय, सुयसोहिनिमित्त 'पुक्खरवरदीवड्ढे' कड्ढिय, पुणो पणवीसुस्सास काउस्सग्ग काउ पारिय, सिद्धत्थव पढित्ता, सुयदेवयाए काउस्सग्गे नमुक्कार चितिय, तीसे थुइ देइ सुणेइ वा । एव खित्त-देवयाए वि काउस्सग्गे नमुक्कार चितिऊण पारिय, तत्थुइ दाउ सोउ वा पचमगल पढिय, संडासए पमज्जिय, उवविसिय, पुव्व व पुत्तिं पेहिय, वदण दाउ, 'इच्छामो अणुसिट्ठिं'ति भणिय, जाणूहिं ठाउ वद्धमाणक्खरस्सरा

1 B °समगा । 2 B सखवो । † एव द्वादशमासेषु । ‡ 'यथासख्येन पञ्चादिभिरंगुलै' इति A आदर्शे स्थिता टिप्पणी ।

तिन्निथुईउ पढिय, सक्कत्थय थुत्तं च भणिय, आयरियाई वंदिय, पायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्गं काउं उज्जोयचउक्कं चिंतेइ त्ति।

॥ इति देवसियपडिक्कमणविही ॥ ११ ॥

§२०. पक्खियपडिक्कमणं पुण चउद्दसीए कायव्वं। तत्थ 'अब्भुट्ठिओमि आराहणाए' इच्चाइसुत्तंतं देवसियं पडिक्कमिय, तओ खमासमणदुगेण पक्खियमुहपोत्तिं पडिलेहिय, पक्खियाभिलावेण वंदणं दाउं, संबुद्धाखामणं काउं, उट्ठिय पक्खियालोयणसुत्तं 'सव्वस्स वि पक्खिय' इच्चाइपज्जंतं पढिय, वंदणं दाउं भणइ-'देवसियं आलोइय पडिक्कंत, पत्तेयखामणेणं अब्भुट्ठिओऽहं अब्भिंतरपक्खियं खामेमि' त्ति भणित्ता, आहारायणियाए साहू सावए य खामेइ, मिच्छुक्कडं दाउं सुहतवं पुच्छेइ, सुहपक्खियं च साहूणमेव पुच्छेइ, न सावयाणं। तओ जहासट्ठलीए ठाउं वंदणं दाउं भणइ-'देवसियं आलोइय पडिक्कंत, पक्खियं पडिक्कमावेह'। तओ गुरुणा-'सम्मं पडिक्कमह'त्ति भणिए, इच्छंति भणिय, सामाइयसुत्तं उस्सग्गसुत्तं च भणिय, खमासमणेण 'पक्खियसुत्तं संदिसावेमि', पुणो खमासमणेण 'पक्खियसुत्तं कड्ढेमि'त्ति भणित्ता, नमोक्कारतिगं कड्ढिय पडिक्कमणसुत्तं भणइ। जे य सुणंति ते उस्सग्गसुत्ताणंतरं 'तस्सुत्तरीकरणेणं'ति तिदंडगं पढिय काउस्सग्गे ठंति। सुत्तसमत्तीए उद्धट्ठिओ नवकारतिगं भणिय, उववेसिय, नमोक्कारसामाइयतिगपुव्वं 'इच्छामिपडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अइयारो कओ' इच्चाइदंडगं पढिय, सुत्तं भणित्ता, उट्ठिय 'अब्भुट्ठिओमि आराहणाए'त्ति दंडगं पढित्ता, खमासमणं दाउं 'मूलगुण-उत्तरगुण-अइयारविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं'ति भणिय, 'करेमि भंते' इच्चाइ, 'इच्छामि ठामि काउस्सग्गं'मिच्चाइदंडयं च पढित्ता, काउस्सग्गं काउं, बारसुज्जोए चिंतेइ। तओ पारित्ता, उज्जोयं भणित्ता, मुहपोत्तिं पडिलेहिय, वंदणं दाउं, समत्तिखामणं काउं, चउहिं छोभवंदणगेहिं तिन्नि तिन्नि नमोक्कारे, भूनिहियसिरो भणेइ त्ति। तओ देवसियसेसं पडिक्कमइ। नवरं सुयदेवयाथुइअणंतरं भवणदेवयाए काउस्सग्गे नमोक्कारं चिंतिय, तीसे थुइं देइ सुणेइ वा। थुत्तं च अजियसंतित्थओ। एवं चाउम्मासिय-संवच्छरिया वि पडिक्कमणा तदभिलावेण नेयव्वा। नवरं जत्थ पक्खिए बारसुज्जोया चिंतिज्जंति, तत्थ चाउम्मासिए वीसं, संवच्छरिए चालीसं, पंचमंगलं च। तहा पक्खिए पणगाइसु जइसु तिण्ह संबुद्धखामणाणं, चाउम्मासिए सत्ताइसु पंचण्ह, संवच्छरिए नवाइसु सत्तण्ह। दुगमाईनियमा सेसे कुज्ज त्ति भावत्थो। तहा संवच्छरिए भवणदेवयाकाउस्सग्गो न कीरइ न य थुई। असज्झाइयकाउस्सग्गो न कीरइ। तहा राइय देवसिएसु 'इच्छामोऽणुसट्ठिं'ति भणणाणंतरं, गुरुणा पढमथुईए भणियाए मत्थए अंजलिं काउं 'नमो खमासमणाणं'ति भणिय, मत्थए अंजलिपग्गहमित्तं वा काउं इयरे तिन्नि थुईओ भणंति। पक्खिए पुण नियमा गुरुणा थुइतिगे पूरिए, तओ सेसा अणुकड्ढंति त्ति॥

॥ पक्खियपडिक्कमणविही ॥ १२ ॥

§२१. देवसियपडिक्कमणे पच्छित्तउस्सग्गाणंतरं खुद्दोवद्दवओहडावणियं सयउस्सासं काउस्सग्गं काउं, तओ खमासमणदुगेण सज्झायं संदिसाविय, जाणुट्ठिओ नवकारतिगं कड्ढिय विग्घावहरणत्थं सिरिपासनाहनमोक्कारं सक्कत्थयं 'जावंति चेइयाइं'ति गाहं च भणित्तु, खमासमणपुव्वं 'जावंत केइ साहू' इति गाहं पासनाहथवं च जोगमुद्दाए पढित्ता, पणिहाणगाहादुगं च मुत्तासुत्तिमुद्दाए भणिय, खमासमणपुव्वं भूमिनिहित्तसिरो 'सिरिथंभणयट्ठियपाससामिणो' इच्चाइगाहादुगमुच्चरित्ता, 'वंदणवत्तियाए' इच्चाइदंडगपुव्वं चउ लोगुज्जोयगरियं काउस्सग्गं काउं चउवीसत्थयं पढंति त्ति पडिक्कमणविहिविसेसो पुव्वपुरिससंताणकमागओ, 'आयरणा वि हु

आण' त्ति वयणाओ कायव्वो चेव। जहा थुइतिगभणणाणंतरं सक्कत्थय-थुत्त-पच्छित्त-उस्सग्गा। पुव्वं हि गुरुथुइगहणे थुईतिन्नि त्ति पज्जंतमेव पडिक्कमणमासि। अओ चेव थुइतिगे कड्ढिए छिंदणे वि न दोसो। छिंदणं ति वा अंतरणं ति वा अग्गलि त्ति वा एगट्ठा। छिंदणं च दुहा-अप्पकयं, परकयं च। तत्थ अप्पकयं अप्पणो अंगपरियत्तणेण भवइ। परकयं जया परो छिंदइ। पक्खियपडिक्कमणे पत्तेयखामणं कुणंताणं पुनो कयआलोयणं मुत्तुं नत्थि छिंदणदोसो। अओ चेव अम्ह सामायारीए मुहपोत्तिया पत्तेयखामणाणंतरं न पडिलेहिज्जइ त्ति। जया य मज्जारिया छिंदइ तया-

जा सा करडी कब्बरी अक्खिहिँ कक्कडियारि।
मंडलिमाहिँ संचरीय हय पडिहय मज्जारि-त्ति॥ १॥

चउत्थपयं वारतिगं भणियं, खुद्दोवद्दवओहडावणियं काउस्सग्गो कायव्वो। सिरिसंतिनाहनमोकारो घोसेयव्वो। कारणंतरेण पुढोपडिक्कंता पुढोकयआलोयणा वा पडिक्कमणाणंतरं गुरुणो वंदणं दाउं, आलोयण-खामण-पच्चक्खाणाइं कुणंति। पडिक्कमणं च पुव्वाभिमुहेण उत्तराभिमुहेण वा।

आयरिया इह पुरओ, दो पच्छा तिन्नि तयणु दो तत्तो।
तेहिं पि पुणो इक्को, नवगणमाणा इमा रयणा॥ १॥

इइगाहाभणियसिरिवच्छाकारमंडलीए कायव्वं। श्रीवत्सस्थापनाचेयम्-

तत्थ देवसियं पडिक्कमणं रयणिपढमपहरं जाव सुज्झइ। राइयं पुण आवस्सयचुण्णिअभिप्पाएण उग्घाडपोरिसिं जाव, ववहाराभिप्पाएण पुण पुरिमड्ढं जाव सुज्झइ।

जो वद्धमाणमासो तस्स य मासस्स होइ जो तइओ।
तन्नामयनक्खत्ते सीसत्थे गोसपडिक्कमणं॥ १॥

राइयपडिक्कमणे पुण आयरियाई वंदिय भूनिहियसिरो 'सव्वस्स वि राइय' इच्चाइदंडगं पढिय, सक्कत्थयं भणित्ता, उट्ठिय, सामाइय-उस्सग्गसुत्ताइं पढिय, उस्सग्गे उज्जोयं चिंतिय पारिय, तमेव पढित्ता, बीये उस्सग्गे तमेव चिंतित्ता, सुयत्थयं पढित्ता, तईए जहक्कमं निसाइयारं चिंतित्ता, सिद्धत्थयं पढित्ता, संडासए पमज्जिय, उवविसिय, पुत्तिं पेहिय, वंदणं दाउं, पुव्विं व आलोयणसुत्तपढण-वंदणय-खामणय-वंदणय-गाहातिगपढण-उस्सग्गसुत्तउच्चारणाइं काउं, छम्मासियकाउस्सग्गं करेइ। तत्थ य इमं चिंतेइ-'सिरिवद्धमाणतित्थे छम्मासिओ तवो वट्टइ। तं ताव काउं अहं न सक्कुणोमि। एवं एगाइएगूणतीसंतदिणूणं पि न सक्कुणोमि। एवं पंच-चउ-ति-दु-मासे वि न सक्कुणोमि। एवं एगमासं पि जाव तेरसदिणूणं न सक्कुणोमि। तओ चउत्तीस-बत्तीसमाइकमेण हावितो जाव चउत्थं आयंबिलं निव्वियं एगासणाइं पोरिसिं नमोक्कारसहियं वा जं मन्नेइ तेण पारेइ। तओ उज्जोयं पढिय, पुत्तिं पेहिय, वंदणं दाउं, काउस्सग्गे जं चिंतियं तं चिय गुरुवयणमणुभणितो सयं वा पच्चक्खाइ। तो 'इच्छामोणुसट्ठिं'ति भणंतो जाणूहिं ठाउं तिन्नि वद्धमाणथुईओ पढित्ता, मिउसरेण सक्कत्थयं पढिय, उट्ठिय, 'अरहंतचेइयाणं' इच्चाइपढिय, थुइचउक्केण चेइए वंदेइ। 'जावंति चेइयाइं' इच्चाइगाहादुगथुत्तं पणिहाणगाहाओ य भणेइ। तओ आयरियाई वंदेइ। तओ वेलाए पडिलेहणाइ करेइ त्ति॥

॥ राइयपडिक्कमणविही॥

॥ पडिक्कमणसामायारी समत्ता॥ १३॥

§२२. भणिओ पसंगाणुप्पसंगसहिओ उवहाणविही। उवहाणं च तवो। अओ तवोविसेसा अन्ने वि उवदसिज्जंति।

तत्थ कल्लाणगतवो चवण-जम्मेसु जिणाण तासु तासु तिहीसु उववासा कीरंति ॥ १ ॥ दिक्खा–नाणोप्पत्ति–मोक्खगमणेसु जो तवो उसभाईहिं जिणेहिं कओ सो चेव जहासत्ति कायव्वो। सो य इमो–

सुमइत्थ निच्चभत्तेण निग्गओ वासुपुज्जो जिणो चउत्थेणं।
पासो मल्ली विय अट्ठमेण, सेसाउ छट्ठेणं ॥ १ ॥

निच्चभत्ते वि उववासो कीरइ त्ति सामायारी।

अट्ठमत्तवेण नाणं पासोसभ-मल्लि-रिट्ठनेमीणं।
वसुपुज्जस्स चउत्थेण छट्ठभत्तेण सेसाणं ॥ २ ॥
निव्वाणमन्तकिरिया सा चउदसमेण पढमनाहस्स।
सेसाण मासिएणं वीरजिणिंदस्स छट्ठेण ॥ ३ ॥

एगतराइकरणे वि तहा कायव्वाइ निक्खमणाइतवाइ, जहा तीए कल्लाणगतिहीए उववासो एइ त्ति।

सग[७] तेरस[१३] दस[१] चोद्दस,[१४] पनरस[१५] तेरस[१३] य सत्तरस[१७] दस[१५] छ[६]।
नव[९] चउ[४] ति[३] कत्तियाइसु, जिणकल्लाणाइ जह संखं ॥ ४ ॥

प्रतिमासकल्याणकसंख्यासंग्रह, सर्वाग्रेण १२१।

तहा सुक्कपक्खे अट्ठोववासा एगतरआयंबिलपारणेण सव्वंगसुंदरो खमाभिग्गहजिणपूयामुणिदाणपरेण विहेओ ॥ ४ ॥

एवं चिय किण्हपक्खे गिलाणपडिजागरणाभिग्गहसारो निरुजसिंहो ॥ ५ ॥

तहा एगासणपारणेण बत्तीसं आयंबिलाणि परमभूसणो। इत्थुज्जमणे तिलग-मउडाइ जहासत्ति जिणभूसणदाणं ॥ ६ ॥

आयइजणगो वि एवं चिय। नवरं वंदणग–पडिक्कमण–सज्झायकरण–साहुसाहुणिवेयावच्चाइसव्व-कज्जेसु अणिगूहियबलविरियस्स अच्चंतपरिसुद्धो हवइ ॥ ७ ॥

एगे पुण एवमाहंसु–'अणिगूहियबलविरियस्स निरंतरबत्तीसायंबिलपमाणो एगासणंतरियबत्तीसोववास-प्पमाणो वा आयइजणगो त्ति।

तहा सोहग्गकप्परुक्खो चित्ते एगंतरोववासा गुरुदाणविहिपुव्वं सव्वरसं पारणगं च। उज्जमणं पुण सुवण्णतंदुलाइमयस्स नाणाविहफलभरोणयस्स जिणनाहपुरओ कप्परुक्खस्स कप्पणेण चारित्तपवित्तमुणिजण-दाणेण य विहेयं ॥ ८ ॥

तहा इंदियजओ जत्थ पुरिमड्ढ–इक्कासणग–निव्विय–आंबिल–उववासा एगेगमिंदियमणुसरिय पंचहिं परिवाडीहिं कज्जंति इत्थ तवोदिणा पंचवीस ॥ ९ ॥

कसायमहणो उण पुरिमड्ढवज्जाहिं चउहिं परिवाडीहिं पइकसायं किज्जइ। तवो दिणा सोलस ॥ १० ॥

जोगसुद्धी उण इक्केकं जोगं पडुच्च निव्विगइय–आयाम–उववासा कीरंती त्ति पुरिमड्ढ–एगासणवज्जाहिं तिहिं परिवाडीहिं तवोदिणा नव ॥ ११ ॥

तहा जत्थेगेगं कम्ममणुसरिय, उववास-एगासणग-एगसित्थय-एगठाणग-एगदत्तिग-निव्विय-आयंबिल-अट्ठकवलाणि अट्ठहिं परिवाडीहिं निज्जंति, सो अट्ठकम्मसूडणो तवो दिणा चउसट्ठी । उज्जमणे सुवन्नमयकुहाडिया कायव्वा ॥ १२ ॥

तहा अट्ठमतिगेण नाण-दंसण-चरित्ताराहणातवो भवइ ॥ १३ ॥

तहा रोहिणीतवो रोहिणीनक्खत्ते वासुपुज्जजिणविसेसपूयापुरस्सरमुववासो सत्तमासाहियसत्तवरिसाणि । उज्जमणे वासुपुज्जबिंबपइट्ठा ॥ १४ ॥

तहा अंबातवो पंचसु किण्हपंचमीसु एगासणगाइ-नेमिनाह-अंबापूयापुव्वं किज्जइ ॥ १५ ॥

तहा एगारससु सुक्कएगारसीसु सुयदेवयापूया मोणोपवासकरणजुत्तो सुयदेवया तवो ॥ १६ ॥

तहा नाणपंचमिं छ अकम्ममासे वज्जित्ता मग्गसिर-माह-फग्गुण-वइसाह-जेट्ठ-आसाढेसु सुक्कपंचमीए जिणनाहपूयापुव्वं तयग्गाविणिवेसियमहत्थपोत्थय विहियपंचवण्णकुसुमोवयारो अक्खइक्खयाभिलिहियपसत्थसत्थिओ घयपडिपुन्नपनोहियरत्तपंचवट्टिपईवो फलनलिविहाणपुव्वं पडिवज्जेइ । उववासबंभचेरविहाणेण । एवं पडिमासं पंचमासकरणे लहुई । महई उण पंचवरिसाणि । विसेसो उण पंचगुणपूयाविहाणं, पंचपोत्थयपूयणं, पंचसत्थियदाणं, पंचपईवबोहणं च त्ति । केइ पुण एयं जहन्नं पंचमासाहियपंचहिं वरिसेहिं, मज्झिमं तु दसमासाहियदसवरिसेहिं, उक्किट्ठं पुण जावज्जीवं ति भणंति । असहणो पुण बालाई पंचसु नाणपंचमीसु इक्कासणे, तओ पंचसु निव्वीए, तओ पंचसु आयंबिले, तओ पंचसु उववासे कुणंति त्ति । उज्जमणं पुण तीए आईए मज्झे अंते वा कुज्जा । तत्थ सत्तिविभवाणुसारेण जिणपूया-पुत्थयपंचयलेहण-संघदाणाइ कायव्वं । पंचविहबलिवित्थारो नाणग्गे, पंच ठवणियाओ, पंच मसीभायणाइं, एवं लेहणीओ, पंचकवलियाओ, कट्ठगरणाइं, निक्खेवणाइं, छिद्ददोरयाइं, फुल्लियाओ, उत्तरियाओ । पट्टदुगुल्लाइपुत्थयवेट्ठणयाइं । कुंपियाओ, पडलियाओ, जवमालियाओ, ठवणायरिया, ठवणायरियसिंहासणाइं, मुहपोत्तियाओ, सिरिखंडियाओ, पिंगाणियाओ, पट्टियाओ, वासकुंपगा, अन्नाइं वि जोडय-धूवकडुच्छय-कलस-भिंगारथाल-आरत्तियमाइं पंच पंच उवगरणाइं दायव्वाइं । सवित्थरुज्जमणे पुण सव्वं पंचवीसगुणं कायव्वं । नाणपंचमीतवोदिणे पुत्थयपुरओ नाणस्स तइयथुइरहिते अन्ने वा नमोक्कारे पढिय, उट्ठित्तु 'तमतिमिरपडल'इच्चाइदंडगं भणिय, काउस्सग्गनमोक्कारे चिंतिय, पारिय --

देविंदवंदियपएहिं परूवियाणि नाणाणि केवलमणोहिमईसुयाणि ।
पंचावि पंचमगइं सियपंचमीए पूया तवोगुणरयाण जियाण दिंतु ॥ १ ॥

इच्चाइथुइं दाऊण पुणो जाणुट्ठिओ नाणथुत्तं भणिय, 'बोधागाध'मिच्चाइनाणथुइं पढइ त्ति । नाणपंचमीवंदणविही ॥ १७ ॥

तहा अमावसाए, मयंतरेण दीवूसवामावसाए, पडिलिहियनंदीसरजिणभवणपूयापुव्वं उववासाइ सत्त वरिसाणि नंदीसरतवो ॥ १८ ॥

तहा एगा पडिवया, दुन्नि दुइज्जाओ, तिन्नि तिज्जाओ, एवं जाव पंचदसीओ उववासा भवंति जत्थ सो सच्चसुक्खसंपत्तितवो ॥ १९ ॥

तहा चित्तपुन्नमासीए आरब्भ पुंडरीयगणहरपूयापुव्वमुववासाइणमन्नतरं तवो दुवालसपुन्निमाओ पुंडरीयतवो ॥ २० ॥

तहा सत्तसु भद्दवएसु पइदिणं नवनवनेवज्जढोवणेण जिणजणणिपूयापुव्वं सुक्कसत्तमीए आरब्भ तेरसिपज्जंतं एगासणसत्तगं कीरइ जत्थ स मायरतवो। भद्दवयसुद्धचउद्दसीए पइवरिसं उज्जवणं कायव्वं। बलि-दुद्ध-दहि-घिय-खीर-करबय-लप्पसिया-घेउर-पूरीओ चउवीसं खीचडीथालं, दाडिमाइफलाणि य सपुत्तसाविंयाणं दायव्वाइं। पीयलीवत्थं च तंबोलाइं ऊसवो य ॥ २१ ॥

तहा भद्दवए किण्हचउत्थीए एगासण-निव्विगइय-आयबिल-उववासेहिं परिवाडीचउक्केण जहासत्ति-कएहिं समवसरणपूयाजुत्तं चउसु भद्दवएसु समवसरणदुवारचउक्कसाराहणेण समवसरणतवो चउसट्ठिदिण-माणो होइ। उज्जमणे नेवज्जथालाइं चत्तारि भद्दवयसुद्धचउत्थीए दायव्वाइं ॥ २२ ॥

तहा जिणपुरओ कलसो पइट्ठिओ मुट्ठीहिं पइदिणखिप्पमाणतंदुलेहिं जावइयदिणेहिं पूरिज्जइ, तावइयदिणाणि एगासणगाइं अक्खयनिहितवो ॥ २३ ॥

तहा आयबिलवद्धमाणतवो जत्थ अलवण-कंजिय-संछन्नभत्तभोयणमित्तरूवमेगमायबिलं, तओ उव-वासो, दुन्नि आयबिलाणि, पुणो उववासो, तिन्नि आयबिलाणि, उववासो, चत्तारि आयबिलाणि, उववासो, एवं एगेगायबिलवुड्ढीए चउत्थं कुणतस्स जाव अंबिलसयपज्जंते चउत्थं। तओ पडिपुन्नो होइ। एत्थाय-बिलाणं पंचसहस्सा पचासाहिया, उववासाणं सयं। एयस्स कालमाणं वरिसचउद्दसगं, मासतिगं, वीसं च दिणाणि त्ति ॥ २४ ॥

तहा थेराइणो वद्धमाणतवो-जत्थ आइतित्थगरस्स एगं, दुइज्जस्स दुन्नि, जाव वीरस्स चउवीसं आयबिलनिव्वियाईणि तस्स विसेसपूयापुव्वं कीरंति। पुणो वीरस्स एगं जाव उसहस्स चउवीसं, तओ पडिपुन्नो होइ त्ति ॥ २५ ॥

तहा एगेगतित्थगरमणुसरिय वीस-वीस-आयबिलाणि पारणयरहियाणि। एगं चायबिलं सासण-देवयाए। उज्जमणे विसेसपूयापुव्वं तित्थयराणं चउवीसतिलयदाणं च जत्थ सो दवदंतीतवो ॥ २६ ॥

नाणावरणिज्जस्स उत्तरपयडीओ पंच, दंसणावरणिज्जस्स नव, वेयणीयस्स दो, मोहणीयस्स अट्ठावीसं, आउस्स चत्तारि, नामस्स तेणउई, गोयस्स दो, अंतरायस्स पंच,-एवं अडयालसएणं उववासाणं अट्ठकम्मउत्तरपयडीतवो ॥ २७ ॥

चंदायणतवो दुहा-जवमज्झो, वज्जमज्झो य। तत्थ जवमज्झो सुक्कपडिवयाए एगदत्तिय एगकवलं वा। तओ एगोत्तरवुड्ढीए जाव पुन्निमाए किण्हपडिवयाए य पंचदस। तओ एगेगहाणीए जाव अमाव-साए एगदत्तिय एगकवलं वा। इय जवमज्झो। वज्जमज्झे किण्हपडिवयाए पंचदस। तओ एगेगहाणीए जाव अमावसाए सुक्कपडिवयाए य एगो। तओ एगेगवुड्ढीए जाव पुन्निमाए पंचदस। इय वज्जमज्झो। दोसु वि उज्जमणे रुप्पमयचंददाणं, जवमज्झे बत्तीसं सुवन्नमयजवा य, वज्जमज्झे वज्जं च ॥ २८ ॥

तहा अट्ठ-दुवालस-सोलस-चउवीसंपुरिसाणं एक्कतीसं, थीणं सत्तावीसं कवला। जहक्कमं पंचहिं दिणेहिं ऊणोयरियातवो। जदाह-

> अप्पाहार अवड्ढा दुभागपत्ता तहेव किंचूणा।
> अट्ठ-दुवालस-सोलस-चउवीस-तहिक्कतीसा य ॥ इति ॥

भद्दाइतवेसु तहा, इमालया इग दु तिन्नि चउ पच ।
तह ति चउ पच इग दो तह पण इग दो तिग चउक्क ॥ १ ॥
तह दु ति चउ पण एगेगं तह चउ पणगेग दु तिन्नेव ।
पणहुत्तरि उववासा पारणयाण तु पणवीसा ॥ २ ॥

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

भद्रतप । तपोदिन ७५, पारणा २५

*

पभणामि महाभद्द, इग दुग तिग चउ पण छ सत्तेव ।
तह चउ पण छग सत्तग इग दुग तिग सत्त इक्क दो ॥ ३ ॥
तिन्नि चउ पच छक्क तह तिग चउ पण छ सत्तगेग दो ।
तह छग सत्तग इग दो तिग चउ पण तह दुग चऊ ॥ ४ ॥
पण छग सत्तेक्क तह, पण छग सत्तेक्क दोन्नि तिय चउ ।
सो पारणयाणुगवन्ना छन्नउयसय चउत्थाण ॥ ५ ॥

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

महाभद्रतप । तपोदिन १९६, पारणा ४९

*

भद्दोत्तरपडिमाए पण छग सत्त ट्ठ नव तहा सत्त ।
अड नव पंच छ तहा नव पण छग सत्त अट्ठेव ॥ ६ ॥
तह छग सत्तड नव पण तह ट्ठ नव पण छ सत्तभत्तट्ठा ।
पणहुत्तरसयमेव पारणगाणं तु पणवीस ॥ ७ ॥

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

भद्रोत्तरतप । तपोदिन १७५, पारणा २५

*

पडिमाइ सव्वभद्दाए पण छ सत्त ट्ठ नव दसेक्कारा ।
तह अड नव दस एक्कार पण छ सत्त य तहेक्कारा ॥ ८ ॥
पण छग सत्तग अड नव दस तह सत्त ट्ठ नव दसेक्कारा ।
पण छ तहा दस एगार पण छ सत्तट्ठ नव य तहा ॥ ९ ॥
छग सत्तड नव दसग एक्कारस पच तह य नव दसग ।
एक्कारस पण छक्क सत्त ट्ठ य इह तवे होंति ॥ १० ॥
तिन्निसया बाणउया इत्थुववासाण होंति सव्वाए ।
पारणयागुणवन्ना भद्दाइतवा इमे भणिया ॥ ११ ॥

५	६	७	८	९	१०	११
८	९	१०	११	५	६	७
११	५	६	७	८	९	१०
७	८	९	१०	११	५	६
१०	११	५	६	७	८	९
६	७	८	९	१०	११	५
९	१०	११	५	६	७	८

सर्वतोभद्रतप । तपोदिन ३९२, पारणा ४९

एए चत्तारि वि तवा पारणगभेया चउव्विहा होंति । सव्वकामगुणिएण वा, निव्वीएण वा, वल्लचणगाइअलेवाडेण वा, आयबिलेण वा । चउविह् पारणग ति ॥ ३० ॥

तहा एगारससु सुद्धएगारसीसु सुयदेवयापूयापुव्व एगासणगाइ तवो मासे एगारस कीरइ जत्थ सो एगारसगतवो । उज्जमण पचमी तुल्ल । नवरं सव्ववत्थूणि एगारसगुणाइ ति ॥ ३१ ॥

एव बारससु सुद्धबारसीसु दुवालसंगाराहणतवो । उज्जवणे पुण बारसगुणाणि वत्थूणि ॥ ३२ ॥

एव चउदससु सुद्धचउद्दसीसु चउद्दसपुव्वाराहणतवो उज्जवणे चउद्दसठाणाणि ॥ ३३ ॥

तहा आसोयसियट्ठमिमाइ अट्ठदिणे एगासणाइतवो त्ति पढमा पाउडी । एवं अट्ठसु वरिसेसु अट्ठ-पाउडिओ । उज्जवणे कणगमयअट्ठावयपूया कणगनिस्सेणी य कायबा । पक्कन्नाइ फलाइं चउवीसवत्थूणि जत्थ सो अट्ठावयतवो ॥ ३४ ॥

सत्तरसय जिणाण सत्तरसय उववासाई तवो कीरइ जत्थ सो सत्तरसयजिणाराहणतवो । उज्जवणे लड्डुयाइ वत्थूहिं सत्तरसयसंखेहि सत्तरसयजिणपूया ॥ ३५ ॥

पचनमोक्कारउवहाणअसमत्थस्स नवक्कारतवेणावि आराहणा कारिज्जइ । सा य इमा–पढमपए अक्खराणि सत्त, अओ सत्त इक्कासणा । एवं पचक्खरे बीयपए पच इक्कासणा । तइयपए सत्त । चउत्थपए वि सत्त । पचमपए नव । छट्ठपए चूलापयदुगरूवे सोलस, सत्तमपए चूलाअतिमपयदुगरूवे सत्तरस्सक्खरे सत्तरस्स इक्कासणा । उज्जमणे रुप्पमयपट्टियाए कणयलेहणीए मयनाहिरसेण अक्खराणि लिहित्ता अट्ठसट्ठीए मोयगेहिं पूया ॥ ३६ ॥

तित्थयरनामकरणाइ वीसं ठाणाइ पारणतरिएहि वीसाए उववासेहिं आराहिज्जति त्ति चालीसदिण-माणो वीसट्ठाणतवो ॥ ३७ ॥

कीरति धम्मचक्के तवंमि आयंबिलाणि पणवीसं ।
उज्जमणे जिणपुरओ दायबं रुप्पमयचक्कं ॥ १ ॥
अहवा–दो चेव तिरत्ताइं सत्तत्तीस तहा चउत्थाइं ।
तं धम्मचक्कवालं जिणगुरुपूया समत्तीए ॥ २ ॥ ३८ ॥

चित्तबहुलट्ठमीओ आरब्भ चत्तारिसया उववासा एगतराइक्कमेण जहा अगिकारं पूरिज्जति । तईय-वरिससंतियअक्खयतइयाए संघ–गुरु–साहम्मियपूयापुव्वं पारिज्जति । उसभसामिचिन्नो सवच्छरियतवो ॥३९॥

एव उसभसामितित्थसाहुचिण्णो बारसमासियतवो छट्ठेहिं तिहिं तिहिं सएण उववासाणं । बावीस-तित्थयरसाहुचिण्णो अट्ठमासियतवो चालीसाहियदुसयउववासेहिं । वद्धमाणसामितित्थसाहुचिण्णो असिय-सएण उववासाण छम्मासियतवो ॥ ४० ॥

अन्ने य माणिक्कपत्थारिया–मउडसत्तमी–अमियट्ठमी–अविहवदसमी–गोयमपडिग्गह–मोक्खदडय–अदुक्खदिक्खिया–अम्बडदसमीमाइतवविसेसा आगमगीयत्थायरणबज्झ त्ति न परूविया । जे य एगार-संगतवाइणो अट्ठावयाइणो य तवविसेसा ते तहाविहथेरेहिं अपवत्तिया वि आराहणापगारो त्ति पयसिया । जे पुण एगावली–कणगावली–रयणावली–मुत्तावली–गुणरयणसवच्छर–खुड्डमहल्ल–सिंहनिकीलियाइणो तवभेया ते संपयं दुक्कर त्ति न दसिया । सुयसागराओ चेव नेय त्ति ॥

॥ तवोविही समत्तो ॥ १४ ॥

§ २३. संपयं पुण सम्मत्तारोवणाइसावयकिच्चाणि तित्थयरनदीए भवति, दव्वत्थयप्पहाणत्तेण तेसिं, साहूणं पुण भावत्थयप्पहाणत्तेण संसेवनदीए वि कीरति त्ति–सावयकिच्चाहिगारे नदिरयणाविही भण्णइ । अहवा सावय-साहुकिच्चाणमंतरे भणिओ नदिरयणाविही, डमरुगमणिनाएण उभयत्थ वि सबज्झइ त्ति इहेव भण्णइ । तत्थ पसत्थखित्ते सूरिणा मुत्तासुत्तिमुद्दाए 'ॐ ह्रीं वायुकुमारेभ्य स्वाहा' इइमतेण वायुकुमारा आहविज्जति । तओ सावएहिं अवणीए[1] सुपरिमज्जण तेसिं कम्मं कीरइ । एवं मेहकुमाराहवणे गधोदग-दाण । तओ देवीण आहवणे सुगधपचवण्णकुसुमवुट्ठी । अग्गिकुमाराहवणे धूवक्खेवो । वेमाणिय–जोइस–

1 'अवन्या' इति B टिप्पणी ।

भवणवासिआइवणे रयण–कंचण–रुप्पवण्णएहिं पगारतिगन्नासो। वंतराइवणे तोरण–चेइय–तरु–सिंहा-सण–छत्त–ज्झाणाइण विन्नासो। तओ उक्किट्ठवण्णगोवरि समोसरणे निरूवेण सुवणगुरुठवणा॥ एयस्स पुव्वदक्खिणभागे गणहरसमणओ मुणीण वेमाणियत्थीसाहुणीण च ठावणा। एवं नियगवण्णेहिं अवरदक्खिणे भवणइ–वाणवंतर–जोइसदेवाण। पुव्वोत्तरेण वेमाणियदेवाण नराण नारीण च। बीयपायारंतरे अहि–नउल–मय–मयाहिवाइतिरियाण। तईयपायारंतरे दिव्वजाणाईण ठावणा। एवं विरइए, आलिक्ख-समोसरणे जिणभवणागिडकट्ठाइनदिआलगट्ठिय'पडिमासु वा थालाइपइट्ठियपडिमाचउक्के वा, वासक्खेव चउद्दिसिं काऊण, तओ धूववासाइदाणपुव्वं दिसिपाले नियनियमंतेहिं आहविज्जंति। तं जहा–'ॐ ह्रीँ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह नन्द्या आगच्छ आगच्छ स्वाहा।' एवं अग्नये, यमाय, नैर्ऋताय, वरुणाय, वायवे, सौम्याय, कुबेराय वा ईशानाय, नागराजाय, ब्रह्मणे। दससु वि दिसासु वास क्खेवो। तओ समोसरणस्स पुप्फवत्थाइएहिं पूया॥ एवं नंदिरयणा सव्वत्थिचेसु सामन्ना। नंदिसमत्तीए तेणेव कमेण आहूय देवे विसज्जेइ। जाव 'ॐ ह्रीँ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पुनरागमाय स्वस्थान गच्छ गच्छ यः।' इच्चाइमंतेहिं दिसिपाले विसज्जिय, समोसरणमणुजाणाविय, खमावेइ। जं च इत्थ पुव्वायरिएहिं भणियं जहा–'अक्खएहिं पुप्फेहिं वा अंजलिं भरित्ता सियवत्थच्छाइयनयणो पराहुत्तो वा काऊण,' दिक्खट्ठमुवट्ठिओ संतोऽणंतरोत्तविहिरइयसमोसरणे अक्खयंजलिं पुप्फंजलिं वा खेवाविज्जइ। जइ तस्स मज्झदेसे सिहरे वा पडइ तया जोग्गो, बाहिरे पडइ अजोग्गो। इइ परिक्खं काऊण सावयत-दिक्खा दिज्जइ त्ति।' तं मिच्छद्दिट्ठीहिंतो जो सम्मत्तं पडिवज्जइ तं पडुच्च बोधव्वं। जे पुण परंपरागयसावय-कुलप्पसूया तेसिं परिक्खाकरणे न नियमो। अओ चेव सावयधम्मकहा पीइमाइपंचलिंगगम्मस्स अत्थिणो चेव गुरुविणयाइपंचलक्खणलक्खियवस्स समत्थस्सेव सवजणवल्लहत्ताइलिंगपंचगसज्झस्स सुत्तापडिकुट्ठस्सेव य सावयधम्माहिगारित्ते पुव्वायरियभणिए वि सयय परिक्खाए अभावे वि पवाहओ सावयधम्मारोवणं पसिद्धं ति।

§२४. देववंदणावसरे वद्धतियाओ य थुईओ इमाओ–

यदङ्घ्रिनमनादेव देहिनः सन्ति सुस्थिताः।
तस्मै नमोऽस्तु वीराय सर्वविघ्नविघातिने॥ १॥
सुरपतिनतचरणयुगान् नाभेयजिनादिजिनपतीन् नौमि।
यद्वचनपालनपरा जलाञ्जलिं ददन्ति दुःखेभ्यः॥ २॥
वदन्ति वन्दारुगणाग्रतो जिनाः, सदर्थतो यद् रचयन्ति सूत्रतः।
गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे, तदङ्गिनामस्तु मतं तु मुक्तये॥ ३॥
शक्रः सुरासुरवरैः सह देवताभिः, सर्वज्ञशासनसुखाय समुद्यताभिः।
श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान्, भव्यान् जनानवतु नित्यममङ्गलेभ्यः॥ ४॥

§२५. संतिनाहाइथुईओ पुण इमाओ–

रोगशोकादिभिर्दोषैरजिताय जितारये।
नमः श्रीशान्तये तस्मै, विहितानतशान्तये॥ ५॥
श्रीशान्तिजिनभक्ताय भव्याय सुखसंपदम्।
श्रीशान्तिदेवता देयादशान्तिमपनीय मे॥ ६॥
सुवर्णशालिनी देयाद् द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा[1]।
श्रुतदेवी सदा मह्यमशेषश्रुतसंपदम्॥ ७॥

1 B आगत°।

चतुर्वर्णाय संघाय देवी भवनवासिनी।
निहत्य दुरितान्येषा करोतु सुखमक्षतम् ॥ ८ ॥
यासां क्षेत्रगताः सन्ति साधवः श्रावकादयः।
जिनाज्ञां साधयन्तस्ता रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः ॥ ९ ॥
अवा निहतडिंवा मे सिद्ध-बुद्धसुताश्रिता।
सिते सिंहे स्थिता गौरी वितनोतु समीहितम् ॥ १० ॥
धराधिपतिपत्नी या देवी पद्मावती सदा।
क्षुद्रोपद्रवतः सा मां पातु फुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥
चञ्चचक्रकरा चारु प्रवालदलसन्निभा।
चिरं चक्रेश्वरी देवी नन्दतादवताच माम् ॥ १२ ॥
खड्गखेटककोदंडबाणपाणिस्तडिद्युतिः।
तुरङ्गगमनाऽच्छुप्ता कल्याणानि करोतु मे ॥ १३ ॥
मथुरापुरिसुपार्श्व-श्रीपार्श्वस्तूपरक्षिका।
श्रीकुबेरा नरारूढा सुताङ्का ऽवतु वो भवात् ॥ १४ ॥
ब्रह्मशान्तिः स मां पायादपायाद् वीरसेवकः।
श्रीमत्सत्यपुरे सत्या येन कीर्त्तिः कृता निजा ॥ १५ ॥
या गोत्रं पालयत्येव सकलापायतः सदा।
श्रीगोत्रदेवता रक्षां सा करोतु नताङ्गिनाम् ॥ १६ ॥
श्रीशक्रप्रमुखा यक्षा जिनशासनसंश्रिताः।
देवा देव्यस्तदन्येऽपि संघं रक्षं त्वपायतः ॥ १७ ॥
श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातङ्गसङ्गता।
सा मां सिद्धायका पातु चक्रचापेषुधारिणी ॥ १८ ॥

*

§ २६. अरहाणादि थुत्त च इम—

अरिहाण नमो पूय अरहंताणं रहस्सरहियाणं।
पयओ परमेट्ठीण अरहताणं धुयरयाण ॥ १ ॥
निद्दड्ढअट्ठकम्मिंधणाण वरणाणदंसणधराणं।
मुत्ताण नमो सिद्धाणं परमपरमेट्ठिभूयाण ॥ २ ॥
आयारधराण नमो पंचविहायारसुट्ठियाण च।
नाणीणायरियाणं आयारुवएसयाण सया ॥ ३ ॥
वारसविहंगपुव्वं दिंताण सुयं नमो सुयहराणं।
सययमुवज्झायाणं सज्झायज्झाणजुत्ताणं ॥ ४ ॥
सव्वेसिं साहूणं नमो तिगुत्ताण सव्वलोए वि।
तव नियमनाणदंसणजुत्ताणं बंभयारीणं ॥ ५ ॥

एसो परमेट्ठीणं पंचण्ह वि भावओ नमोक्कारो।
सव्वस्स कीरमाणो पावस्स पणासणो होइ ॥ ६ ॥
भुवणे वि मंगलाणं मणुयासुरअमरखयरमहियाणं।
सव्वेसिमिमो पढमो होइ महामंगलं पढमं ॥ ७ ॥
चत्तारिमंगलं मे हुंतु ऽरहंता तहेव सिद्धा य।
साहू अ सव्वकालं धम्मो य तिलोअमंगल्लो ॥ ८ ॥
चत्तारि चेव ससुरासुरस्स लोगस्स उत्तमा हुंति।
अरहंत-सिद्ध-साहू धम्मो जिणदेसियमुयारो ॥ ९ ॥
चत्तारि वि अरहंते सिद्धे साहू तहेव धम्मं च।
संसारघोररक्खसभएण सरणं पवज्जामि ॥ १० ॥
अह अरहओ भगवओ महइ महावीरवद्धमाणस्स।
पणयसुरेसरसेहरवियलियकुसुमच्चियकमस्स ॥ ११ ॥
जस्स वरधम्मचक्कं दिणयरबिंबं व भासुरच्छायं।
तेएण पज्जलंतं गच्छइ पुरओ जिणिंदस्स ॥ १२ ॥
आयासं पायालं सयलं महिमंडलं पयासंतं।
मिच्छत्तमोहतिमिरं हरेइ तिण्ह पि लोयाणं ॥ १३ ॥
सयलम्मि वि जीयलोए चिंतियमेत्तो करेइ सत्ताणं।
रक्खं रक्खस-डाइणि-पिसाय-गह-जक्ख-भूयाणं ॥ १४ ॥
लहइ विवाए वाए ववहारे भावओ सरंतो य।
जूए रणे य रायंगणे य विजयं विसुद्धप्पा ॥ १५ ॥
पच्चूस-पओसेसु सययं भव्वो जणो सुहज्झाणो।
एवं झाएमाणो मुक्खं पइ साहगो होइ ॥ १६ ॥
वेयाल-रुद्द-दाणव-नरिंद-कोहंडि-रेवईणं च।
सव्वेसिं सत्ताणं पुरिसो अपराजिओ होइ ॥ १७ ॥
विज्जु व्व पज्जलंती सव्वेसु वि अक्खरेसु मत्ताओ।
पंच नमोक्कारपए इक्किक्के उवरिमा जाव ॥ १८ ॥
ससिधवलसलिलनिम्मलआयारसहं च वण्णियं बिंदुं।
जोयणसयप्पमाणं जालासयसहसदिप्पंतं ॥ १९ ॥
सोलससु अक्खरेसु इक्किक्कं अक्खरं जगुज्जोयं।
भवसयसहस्समहणो जम्मि ठिओ पंच नवकारो ॥ २० ॥
जो थुणति हु इक्कमणो भविओ भावेण पंचनवकारं।
सो गच्छइ सिवलोयं उज्जोयंतो दसदिसाओ ॥ २१ ॥
तव-नियम-संजमरहो पंचनमोक्कारसारहिनिउत्तो।
नाणतुरंगमजुत्तो नेइ फुडं परमनिव्वाणं ॥ २२ ॥

सुद्धप्पा सुद्धमणा पंचसु समिईसु संजुय तिगुत्ता ।
जे तम्मि रहे लग्गा सिग्घ गच्छंति सिवलोयं ॥ २३ ॥
थंभेइ जलं जलणं चिंतियमत्तो वि पंचनवकारो ।
अरि–मारि–चोर–राउल–घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २४ ॥
अट्ठेव य अट्ठसया अट्ठसहस्सं च अट्ठकोडीओ ।
रक्खं तु मे सरीरं देवासुरपणमिया सिद्धा ॥ २५ ॥
नमो अरहंताण तिलोयपुज्जो य संठिओ भयवं ।
अमरनररायमहिओ अणाइनिहणो सिवं दिसउ ॥ २६ ॥
सव्वे पओसमच्छरआहियहियया पणासमुवयंति ।
दुगुणीकयधणुसद्दं सोउ पि महाधणुं सहसा ॥ २७ ॥
इय तिहुयणप्पमाणं सोलसपत्तं जलंतदित्तसरं ।
अट्ठारअट्ठवलयं पंचनमोक्कारचक्कमिणं ॥ २८ ॥
सयलुज्जोइयभुवणं विद्दावियसेससत्तुसंघायं ।
नासियमिच्छत्ततम वियलियमोह हयतमोहं ॥ २९ ॥
एयस्स य मज्झत्थो सम्मद्दिट्ठी विसुद्धचारित्तो ।
नाणी पवयणभत्तो गुरुजणसुस्सूसणापरमो ॥ ३० ॥
जो पंच नमोक्कार परमो पुरिसो पराइ भत्तीए ।
परियत्तेइ पइदिण पयओ सुद्धप्पओ अप्पा ॥ ३१ ॥
अट्ठेव य अट्ठसयं अट्ठसहस्सं च उभयकाल पि ।
अट्ठेव य कोडिओ सो तइयभवे लहइ सिद्धिं ॥ ३२ ॥
एसो परमो मंतो परमरहस्सं परपरं तत्तं ।
नाण परमं नेयं सुद्धं झाणं परं झेयं ॥ ३३ ॥
एयं कवयमभेयं खाइयमत्थं[1] परा भुवणरक्खा[2] ।
जोईसुन्न बिंदुं नाओ [3]तारालवो मत्तो[4] ॥ ३४ ॥
सोलसपरमक्खरबीयबिंदुगब्भो जगोत्तमो जोओ ।
सुयबारसंगसायरमहत्थपुव्वत्थपरमत्थो ॥ ३५ ॥
नासेइ चोर-सावय-विसहर-जल-जलण-बंधणसयाइं ।
चिंतिज्जंतो रक्खस-रण-रायभयाइं भावेण ॥ ३६ ॥

॥ अरिहाणादिथुत्तं समत्तं ॥

अन्नं पि वा परमिट्ठिथवणं भणिज्जइ त्ति ।

॥ नंदिरयणाविही समत्तो ॥ १५ ॥

*

1 A °मित्थं । 2 C रक्खो । 3 A तारो । 4 A मित्तो ।

§ २७ सावओ कयाइ चारित्तमोहणीयकम्मक्खओवसमेण पव्वज्जापरिणामे जाए दिक्खं पडिवज्जइ त्ति, तीए विही भण्णइ – पव्वज्जादिणस्स पुव्वदिणम्मि संझासमये वयग्गाही सच्चो जहाविभूईए मंगलतूरसहिओ रयहरणाइवेससगयछव्वयएण अविहवसुद्धनारीसिरम्मि दिन्नेण समागम्म गुरुवसहीए, समोसरणाइ-पूयसक्कारं अक्खयवत्तनालिएरसहियं करेत्ता गुरूणं पाए वंदइ। तओ गुरू वासचंदणअक्खए अहिमंतिऊण सीसस्स सिरम्मि वासे खिवंतो वद्धमाणविज्जाईहिं अट्ठाओ† अहिवासिय कुसुमभरचंदसियाए उग्गाहेइ‡, चंदणं अक्खए य सिरे देइ। तओ रयहरणाइवेसमहिवासिय तस्स मज्झे पूगीफलानि पंच सत्त नव पणवीसं वा पक्खिवावेइ। मूइपोट्टलियं च वेसछव्वयएण अविहवनारीसिरदिन्नएण उभओ पासट्ठिएसु निकोसखग्गहत्थेसु दोसु पंचइयनरेसु गिहं गतूण जिणबिंबे पूइत्ता, तेसिं पुरओ सासणदेवयापुरो वा छव्वयं ठवित्ता, रयणिं जग्गंति। सावया सावियाओ य देव गुरूण चउव्विहसंघस्स य गीयाणि गायमाणीओ चिट्ठंति, जाव पभायवेला। तओ पभाए गुरूणं चउव्विहसंघसहियाणं गिहमागयाणं पूयं काऊण अमारिघोसणापुव्वयं दाणं दाविंतो जहोचियं सयणाइवग्ग[1] सम्माणेइ। तओ तस्स माइपिइबंधुवग्गो गुरूणं पाए वंदिय भणइ–'इच्छाकारेण सचित्तभिक्खं पडिग्गाहेह।' गुरू भणइ–'इच्छामो, वट्टमाणजोगेण।' तओ गुरुसहिओ जाणाइसु आरूढो मंगलतूररवेण सयमेव दाणं दिंतो जिणभवणे समागच्छइ। लग्गाइकारणे पच्छा वा। तओ जिणाणं पूयं करेइ। तओ अक्खयाणं अंजलिं नालिएरसहियं भरिऊण पयाहिणत्तयं नमोकारपुव्वयं देइ। तओ पुव्वोत्तविहिणा पुप्फे अक्खए वा खेवाविज्जइ, परिक्खानिमित्तं। तओ पच्छा इरियावहियं पडिक्कमिऊण खमासमणपुव्वयं पुव्विं पडिवन्नसम्मत्ताइगुणो सीसो भणइ – 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सव्वविरइसामाइयआरोवणत्थं चेइयाइं वंदावेह'। जो पुण अपडिवन्नसम्मत्ताइगुणो सो 'सम्मत्तसामाइय-सव्वविरइसामाइयआरोवणत्थं' ति भणइ। गुरू आह–'वंदावेमो'। पुणरवि खमासमणं दाउ, गुरुपुरओ जाणूहिं ठाइ। गुरू वि तस्स सीसे वासे खिवेइ। तओ गुरुणा सह चेइयाइं वंदेइ। गुरू वि सयमेव संतिनाह–संतिदेवयाइथुईओ देइ। सासणदेवयाकाउस्सग्गे उज्जोयगरचउक्कं चंदेसुनिम्मलयरापज्जंतं चिंतंति। गुरू वि पारित्ता थुई देइ, सेसा काउस्सग्गठिया सुणंति। पच्छा सव्वे वि य उज्जोयगरं पढंति। तओ नमोकारत्तयं कड्ढंति। तओ जाणूहिं ठाऊण सक्कत्थयं पंचपरमेट्ठित्थवं च भणिंति। तओ गुरू वेसमभिमंतेइ। पच्छा खमासमणं दाउ सीसो भणइ–'इच्छाकारेण संदिसह तुब्भे अम्ह रयहरणाइवेसं समप्पेह'। तओ नमोकारपुव्वं 'सुगृहीतं कारेह' त्ति भणंतो सीसदक्खिणबाहासंमुहं रओहरणदसियाओ करिंतो पुव्वाभिमुहो उत्तराभिमुहो वा वेसं समप्पेइ। पुणो खमासमणं दाउ, रयहरणाइवेसं गहाय, ईसाणदिसाए गतूण आभरणाइअलंकारं ओमुयइ। वेसं परिहरेइ। पयाहिणावत्तं। चउरंगुलवरिं कप्पियकेसो गुरुपासमागम्म खमासमणं दाउ भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह अड्डं गिण्हह'। पुणो खमासमणं दाउ उद्धट्ठियस्स ईसिमोणयकायस्स नमोकारतिगमुच्चरित्तु उद्धट्ठिओ गुरू पवाए लग्गवेलाए समकालनाडीदुगपवाहवज्जं अब्भिंतरपविसमाणसासं अक्खलियं अट्ठातिगं गिण्हइ। तस्समीवट्ठिओ साड्ढ सदसवत्थेण अट्ठाओ पडिच्छइ। तओ खमासमणं दाउ सीसो भणइ– 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सव्वविरइसामाइयआरोवणत्थं काउस्सग्गं करावेह।' खमासमणपुव्वयं 'सव्वविरइसामाइयआरोवणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएणं' मिच्चाइ पढिय, उज्जोयगरं सागरवरगंभीरापज्जंतं सीसो गुरू य दो वि चिंतंति। पारित्ता उज्जोयगरं भणंति। तओ खमासमणं दाऊ सीसो भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सव्वविरइसामाइयसुत्तं उच्चारावेह'। गुरू आह–'उच्चारावेमो'। पुणो खमासमणं दाऊण ईसिमोणयकाओ गुरुवयणमणुभणंतो, नमोकारतिगपुव्वं सव्वविरइसामाइयसुत्तं वारतिगमुच्चरइ। गुरू मतो-

---

† 'शिखा' इति A टि°। ‡ 'बध्नाति' इति B टि°। 1 B सयणवग्ग।

चारणपुव पणाम काउ लोगुत्तमाण पाएसु वासे खिवेइ । अक्खए अभिमंतिऊण सघस्स देइ । तओ खमासमण दाउ सीसो भणइ –'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सव्वविरइसामाइय आरोवेह' । गुरू भणइ –'आरोवेमो' । खमासमण दाउ सीसो भणइ –'संदिसह कि भणामो' । गुरू भणइ –'वंदित्ता पवेयह' । पुणो खमासमण दाउ भणइ –'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सव्वविरइसामाइय आरोविय ?' गुरू वासक्खेवपुव्वय भणइ –'आरोविय' । ३ खमासमणाण, 'हत्थेण सुत्तेण, अत्थेण, तदुभएण, सम्म धारणीय, चीर पालणीय, नित्थारगपारगो होहि, गुरुगुणेहि वड्ढाहि' । सीसो–'इच्छामो अणुसट्ठिं'ति भणित्ता खमासमण दाऊण भणइ – 'तुम्हाण पवेइय, सदिसह साहूण पवेएमि' । तओ खमासमण दाउ नमोक्कारमुच्चरंतो पयाहिण देइ, वाराओ तिन्नि । सघो य तस्सिरे अक्खयनिक्खेव करेइ । तओ खमासमण दाउ भणइ –'तुम्हाण पवेइय, संदिसह काउस्सग्ग करेमि' । गुरू भणइ –'करेह' । खमासमण दाउ 'सव्वविरइसामाइयआरोवणत्थ करेमि काउसग्ग, अन्नत्थूससिएण'मिच्चाइ पढिय, सागरवरगंभीरापज्जत उज्जोयगर चिंतिय, पारित्ता उज्जोयगर पढइ । तओ खमासमणपुव्व भणइ –'इच्छाकारेण तुम्हे अम्ह सव्वविरइसामाइयथिरीकरणत्थ काउस्सग्ग करावेह' । 'सव्वविरइसामाइयथिरीकरणत्थ करेमि काउस्सग्ग' । तत्थ सागरवरगंभीरापज्जत उज्जोयगर चिंतिय पारित्ता उज्जोयगर पढइ । तओ खमासमण दाउ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह नामठवण करेह' । गुरू भणइ– 'करेमो' । तओ वासे खिवतो रवि–ससि–गुरुगोयरसुद्धीए जहोचिय नाम करेइ । तओ कयनामो सेहो सव्वसाहूण वदेइ । अज्जिया सावया सावियाओ वि त वदति । तओ खमासमणपुव्वय सेहो गुरु भणइ – तुब्भे अम्ह धम्मोवएस देह' । पुणो खमासमण दाउ जाणूहि ठिओ सीसो सुणइ । गुरू–

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह देहिणो ।
माणुसत्त सुई सद्धा, संजममि य वीरियं ॥

इच्चाइ उत्तरज्झयणाण तइयज्झयण चाउरंगिज्ज वक्खाणइ । पवज्जाविहाण वा । "जय चरे जय चिट्ठे" इच्चाइय वा । सो वि सवेगाइसयओ तहा सुणेइ, जहा अन्नो वि को वि पव्वयइ । इत्थ संगहो–

चिइवदण वेसऽप्पण समइय[1] उस्सग्ग लग्ग अट्ठगहो ।
सामाइय तिय कड्ढण तिपयाहिण वास उस्सग्गो ॥

॥ पवज्जाविही समत्तो ॥ १६ ॥

§ २८ पव्वइएण य लोओ कायव्वो । अओ तव्विही भण्णइ – गुरुसमीवे खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय दुवालसावत्तवदण दाउ, पढमखमासमणेण 'इच्छाकारेण सदिसह लोय संदिसावेमि', बीए 'लोय कारेमि', तइए 'उच्चासण संदिसावेमि', चउत्थए 'उच्चासणे ठामि' । तओ लोयगार खमासमणपुव्व भणइ – 'इच्छाकारि लोय करेह' । मत्थयरक्खधारिणो य इच्छाकार देइ । तओ–

पुव्विं पडिवय नवमी तइया इक्कारसी य अग्गीए ।
दाहिणि पंचमि तेरसि, बारसि चउत्थि नेरइए ॥ १ ॥
पच्छिम छट्टि चउद्दसि सत्तमि पडिपुन्न वायवदिसाए ।
दसमि दुइज्जा उत्तर, अट्ठमि अमावसा य ईसाणे ॥ २ ॥

इइ गाहक्कमेण जोगिणीओ वामे पिट्ठओ वा काउ, बुह–सोमवारेसु चदबलाइभावे सुक्क–गुरूसु वि, पुस्स–पुणव्वसु–रेवइ–चित्ता–सवण–धणिट्ठा–मियसिर–अस्सिणि–हत्थेसु कित्तिया–विसाहा–महा–

1 'सामायिक । सर्वविरतिसामायिकोत्सर्ग ।' इति A टिप्पणी ।

भरणीवज्जेसु अन्नेसु वा रिक्खेसु उवविसिय सम्ममहियासंतो लोयं कारिय, लोयगारबाहु विस्सामिय, इरिया-वहियं पडिक्कमिय, सक्कत्थयं भणिय, गुरुसमीवमागम्म, खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिय, दुवाल-सावत्तवंदणं दाउं, खमासमणं दाउं, पढमखमासमणे भणइ–'इच्छाकारेण संदिसह लोयं पवेएमि'। गुरू भणइ–'पवेयह', बीए 'संदिसह किं भणामो'। गुरू भणइ–'वंदित्ता पवेयह', तइए 'केसा मे पज्जुवा-सिया'। तओ 'दुक्करं कयं, इंगिणी साहियं'त्ति गुरुणा वुत्ते 'इच्छामो अणुसट्ठिं'ति भणइ। चउत्थे 'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि', पंचमे नमोक्कारं भणइ। छट्ठेण 'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करेमि'। सत्तमे केसेसु पज्जुवासिज्जमाणेसु सम्मं जन्न अहियासियं, कुइयं कक्कराइयं छीयं जंभाइयं तस्स ओहडावणियं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएण'मिच्चाइणा सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं करेइ। चउवीसत्थयं भणित्ता जहारायणियं साहू वंदइ, पाए य विस्सामेइ। जो उण सयं चिय लोयं करेइ सो संदिसावणपवेयणाइ न करेइ।

॥ इइ लोयकरणविही ॥ १७ ॥

§२९ पव्वइएण य उभयकालं पडिक्कमणं विहेयं। तव्विही य सावयकिच्चाहिगारे वुत्तो। जओ साहूणं सावयाणं पडिक्कमणविही तुल्लो चेव। नाणत्तं पुण इमं – साहुणो सत्सूरिए चेव चउव्विहाहारं पच्चक्खिय, जल्लाइ उज्झिय, जल्लभंडाइं संठविय, सम्मं इरियं पडिक्कमिय, चउवीसं थंडिले जहन्नओ निहत्थमित्ते बाहिं अंतो य अहियासि अणहियासिजुग्गे आसन्ने मज्झिमे दूरे य दंडाउछणेण पेहिय गुरुपुरओ खमासमणेण 'गोयरचरियं पडिक्कमेमो', बीयखमासमणेण 'गोयरचरियपडिक्कमणत्थं काउस्सग्गं करेमो'त्ति भणित्ता, अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ भणित्ता, नवकारं चिंतिय पढित्ता य इमं गाहं घोसंति–

कालो गोयरचरिया थंडिल्ला वत्थपत्तपडिलेहा।
संभरउ सो साहू जस्सवि जं किंचि अणुवउत्तं॥

तओ अहारायणियाए साहू वंदित्ता, तहा देवसियपडिक्कमणमारभंति, जहा चेइयवंदणाणंतरं अद्ध-निवुड्ढे सूरिए सामाइयसुत्तं कड्ढंति। सावया पुण वावारबाहुल्लेण अत्थमिए वि पडिक्कमंति। तहा साहुणो रयणीचरमजामे जागरिय, सत्तट्ठ नवकारे भणिय, इरियं पडिक्कमिय, कुसुमिण-दुस्सिमिणुस्सग्गे उज्जोय-चउक्कं चिंतिय, सक्कत्थएण चेइए वंदिय, मुहपोत्तिं पडिलेहिय, खमासमणदुगेण सज्झायं संदिसाविय, नवकारं सामाइयं च तिक्खुत्तो कड्ढिय, अहारायणियाए साहू वंदिय, सज्झायं काउं, पडिक्कमणाणंतरं मुह-पोत्ती–रयहरण–निसिज्जा–दुगचोलपट्ट–कप्पतिग–संथारयउत्तरपट्टेसु पडिलेहिएसु जहा सूरो उट्ठेइ तहा वेलं तुलित्ता राइयं पडिक्कमंति। तहा चेइयवंदणाणंतरं साहुणो खमासमणदुगेण 'बहुवेलं संदिसावेमि, बहुवेलं करेमि' त्ति भणित्ता, आयरियाई वंदंति। सावया पुण बहुवेलं न संदिसावेयंति अपोसहिया। तहा साहुणो 'आयरियउवज्झाए' इच्चाइगाहातिगं न भणंति। पडिक्कमणसुत्तं च साहूणं 'चत्तारिमंगलं'मिच्चाइ। सावयाणं तु 'वंदित्तु सव्वसिद्धे' इच्चाइ। तहा पक्खिए पज्जंतियखामणाणंतरं चउसु छोभवंदणएसु साहुणो मुनिहियसिरा 'पियं च मे जं भे' इच्चाइदंडगे भणंति। सावया पुण तिन्नि तिन्नि नवकारे पढंति। पढमे छोभवंदणए 'साहूहिं समं', बीए 'अहमवि चेइयाइं वंदे', तइए 'गच्छम्मि संतियं', चउत्थे 'नित्थारपारगा होह'त्ति जहक्कमं गुरुवयणाइं। पक्खियसुत्तं च साहूणं 'तित्थंकरे इ तित्थे' इच्चाइ। सावयाणं पुण पडि-क्कमणसुत्तमेव। तहा साहुणो खुद्दोवद्दवकाउस्सग्गाणंतरं पक्खिए चाउम्मासिए वा 'असज्झाइय अणाउत्त-ओहडावणियं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएणं' मिच्चाइ भणिय, चउगुणं पणवीसुस्सासं काउस्सग्गं कुणंति। सावया न कुणंति।

§ ३० सपय उवओग विणा न भत्तपाणविहरण ति उवओगविही भण्णइ – तत्थ सूरिए उगए पमज्जियाए वसहीए गुरुणो पुरओ आयरिय–उवज्झाय–वायणायरिया पमुरिया, सेसा कडिपट्टमित्तावरणा पढमे खमासमणे 'सज्झाय सदिसावेमि' त्ति, बीए 'सज्झाय करेमि' त्ति भणिय, जाणूवरि धरियरयहरणा मुहपोत्तिया-थइयवयणा 'धम्मो मगलाइ' सत्तरससिलोगे थेरावलिय वा सज्झाय सुत्तपोरिसि-आयारसच्चवणत्थ करित्ता, खमासमण दाउ 'उवओग सदिसावेमि'त्ति, बीए 'उवओग करेमि'त्ति भणिय, उट्ठित्तु 'उवओगस्स कारावणिय करेमि काउस्सग्ग'ति दडग भणिय, काउस्सग्ग करिय, नवकार चिंतेति । गुरुणो पुण नवकार चिंतित्ता वारतिग मत सुमरिंति । सो य इमो–

अउम् नअ मओ भअ गअ वअ तइ कआ मए शवअ इइ अ ननअम् पऊ इणअम् भअ वअ तउ सवआ हआ ।

तओ नमोक्कारेण गुरुणा पारिए काउस्सग्गे, साहुणो पारित्ता पचमगल भणति । तओ जिट्ठो ओणयकाओ भणइ–'इच्छाकारेण सदिसह' । इत्यतरे गुरुनिमित्तोवउत्तो भणइ 'लाभु' त्ति पुणो जिट्ठो ओणयतरकाओ भणइ – 'कह लेसह' । गुरू भणइ 'तह'त्ति । जहा पुव्वसाहूहिं गहिय तहा ग्रहीतव्यमित्यर्थ । तओ इत्थ आवसियाए जस्स वि जोगो त्ति भणिऊण जहारायणियाए साहुणो वदति ।

॥ उवओगविही समत्तो ॥ १८ ॥

§ ३१ कए य उवओगे सो नवदिक्खिओ भोम-सणिवज्जिय पसत्थदिणे, चित्ता–अणुराहा–रेवई–मियसिर–रोहिणि–तिउत्तरा–साइ–पुणव्वसु–स्सवण–धणिट्ठा–सयभिस–हत्थ–स्सिणि–पुस्स–अभीइरिक्खेसु अहिणवपत्ताणि उग्गाहिय कयवासक्खेवपत्तो महूसवपुव्व गोयरचरियाए गीअत्थसाहुसहिओ भिक्खालाभ जाव भूमिअट्टवियदडगो वच्चइ । तओ उच्च-नीय-मज्झिमकुलेसु एसिय[1] वेसिय[2] गवेसिय[3] फासुय घयाइ-[4] भिक्खमादाय पडिनियत्तो–'निसीही ३, नमो खमासमणाण गोयमाईण महामुणीण' ति भणिय उवस्सए पविसइ । तओ गुरुपुरओ खमासमणपुव्व इरिय पडिक्कमिय, काउस्सग्गे ज जहा गहिय त तहा चिंतिय, नमोक्कारेण पारित्ता, गमणागमण आलोइत्ता, कविया–करोडिया–चट्टुयाइणा इत्थीओ पुरिसाओ वा ज जहा गहिय भत्तपाण त तहा आलोइज्जा । तओ 'दुरालोइय-दुप्पडिक्कतस्स इच्छामि पडिक्कमिउ गोयरचरियाए भिक्खायरियाए' इच्चाइ जाव ज उग्गमेण उप्पायणेसणाए अपरिसुद्ध पडिग्गाहिय परिभुत्त वा ज न परिट्ठविय तस्स मिच्छामि दुक्कड । तस्सुत्तरीकरणेणमिच्चाइ जाव वोसिरामि त्ति पढिय, काउस्सग्गे य–

अहो जिणेहिऽसावज्जा, वित्ती साहूण देसिया ।
मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥ १ ॥

इइ चिंतेइ । तओ नमोक्कारेण पारित्ता, चउवीसत्थय भणित्ता, भत्तपाण पाराविय, उवरिं अहे य पमज्जियाए भूमीए दडग ठाविय, देवे वदित्ता जहन्नओ वि 'धम्मो मगलमुक्किट्ठ'मिच्चाइ सत्तरससिलोगे सज्झाय करित्ता, जहारायणिय जहारिह दवाइ जेसिं न अट्ठो ते अणुन्नवित्ता, मुहपोत्तियाए मुह पडिलेहित्ता, रयहरणेण पायभाणट्ठाण च पमज्जिय, असुरसुरमिच्चाइविहिणा अरत्तदुट्ठो जेमेइ ।

॥ आइमअडणविही ॥ १९ ॥

*

1 एषणादोषपरिशुद्ध एसिय । 2 वेषमानेन लब्ध तत्त्वमुरोऽह अमुकशिष्य एवगुण इत्यादि कथनत इति वेसिय । 3 स्वय गत्वा अवलोकित गवेसिय । 4 एतेनादौ घृत विहर्तव्यमित्युक्तम् । इति A. आदर्शे टिप्पणी ।

§ ३२. तओ य आवस्सगतव कारिज्जइ। मंडलिसत्तगायंबिलाणि य। मंडलिसत्तग च इमं –

सुत्ते[१] अत्थे[२] भोयण[३] काले[४] आवस्सए य[५] सज्झाए[६]।
संथारए[७] विय तहा सत्तेया मंडली होंती॥ १॥

अत्र पुणुवट्ठाविय च्चेव कारियायबिल मंडलीए पवेसंति, तं च जुत्ततरं। जओ भणियं –

अणुवट्ठावियासह अकयविहाण च मंडलीए उ।
जो परिभुंजइ सहसा सो गुत्तिविराहगो भणिओ॥ २॥

तओ दसवेयालियतवं कारित्ता उट्ठावणा कीरइ। आवस्सय-दसवेयालियजोगविही उवरिं भण्णिही।

तीए विही पुण इमो –

पढिए य कहिय अहिगय परिहर उवठावणाए सो कप्पो।
छक्कं तेहिं विसुद्धं परिहरनवएण भेएण॥ ३॥

'धम्मो मंगलाइ-छज्जीवणियासुत्तं' पाढित्ता, तस्सेव अत्थं कहित्ता, पुढविकायाइजीवरक्खणविहिं जाणावित्ता, पाणाइवायविरमणाईणि वयाणि सभारणाइ सादयाराणि कहिय, पसत्थे तिहि–करणजोगे ओसरणे गुरू अप्पणो वामपासे सीसं ठावेऊण मुहपोत्तिं पडिलेहाविय, दुवालसावत्तवंदणयं दाविय भणेइ – 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमहव्वयाणं राईभोयणवेरमणछट्ठाणमारोवणत्थं चेइयाइं वंदावेह'। गुरू भणइ–'वंदावेमो'। तओ सेहस्स वासक्खेवं काउं वड्ढमाणथुईहिं चेइए वंदिय, जाव थोत्तभणणं पणिहाणपज्जंतं। तओ सेहं खमासमणं दावित्ता, पंचमहव्वयसुत्तउच्चारावणत्थं सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं कराविय, चउवीसत्थयं भाणित्ता, लोगुत्तमाणं पाएसु वासे छुहित्ता, पंचमंगलं तिक्खुत्तो कड्ढित्ता, गुरुणुप्परेहिं पट्टं धरिय, वामहत्थअणामियाए मुहपोत्तिं लंबंतिं धरित्ता, गयग्गदंतोन्नएहिं करेहिं रयहरणं धारिय, तिक्खुत्तो पंचमहव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं उच्चारावेइ। जाव लग्गवेलाए 'इच्चेयाइं पंचमहव्वयाइं' इति आलावगं तिन्निवारे कड्ढेइ। गुरू वासक्खए अभिमंतेइ। तओ गुरू लोगुत्तमाणं पाएसु वासे खिवइ। वासक्खए अभिमंतिए संघस्स देइ। तओ खमासमणं दाउं सीसो भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमहव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं आरोवेह'। गुरू भणइ–'आरोवेमि'। सीसो खमासमणं दाउं भणइ–'संदिसह किं भणामो'। गुरू भणइ–'वंदित्ता पवेयह'। पुणो खमासमणं दाउं भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्हं पंचमहव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं आरोवियाइं?'। गुरू वासक्खेवपुव्वयं भणइ–'आरोवियाइं।' ३ खमासमणाणं, हत्थेणं, सुत्तेणं, अत्थेणं, तदुभएणं, सम्मं धारणीयाणि, चिरपालणीयाणि, नित्थारगपारगो होहि, गुरुगुणेहिं वड्ढाहि।' सीसो 'इच्छामो अणुसट्ठिं'ति भणित्ता, खमासमणं दाऊण भणइ–'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि'। तओ खमासमणं दाउं नमोक्कारमुच्चरंतो पयाहिणं देइ वाराओ तिन्नि। संघो य तस्स सिरे वासअक्खयनिक्खेवं करेइ। तओ खमासमणं दाऊण भणइ–'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करेमि'। गुरू भणइ–'करेह'। खमासमणं दाउण 'पंचमहव्वयाणं राईभोयणवेरमणछट्ठाणं आरोवणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थूससिएणं'–मिच्चाइ पढिय, सागरवरगंभीरापज्जंतं उज्जोयगरं चिंतिय, पारित्ता उज्जोयगरं पढइ। तओ खमासमणपुव्वयं भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं पंचमहव्वयाणं राईभोयणवेरमणछट्ठाणं थिरीकरणत्थं काउस्सग्गं करावेह'। गुरू भणइ–'करावेमो'। 'पंचमहव्वयाणं राईभोयणवेरमणछट्ठाणं थिरीकरणत्थं करेमि काउस्सग्गं' इच्चाइ भणिय, काउस्सग्गं करेइ। तत्थ सागरवरगंभीरापज्जंतं उज्जोयगरं चिंतिय, पारित्ता उज्जोयगरं पढइ। तओ खमासमणं दाउं भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं नामठवणं करेह'। गुरू भणइ–'करेमो'। तओ वासे खिवंतो जहोचियं नामं करेइ। तओ कयनामो सीसो संघे

साहुणो वदइ । अज्जिया सावया सावियाओ वि त वदति । पुणो खमासमण दाउ भणइ–'इच्छाकारेण तुम्हे अम्ह दिसिबध करेह' । गुरू भणइ–'करेमो' । तओ सीसस्स आयरिओवज्झायरूवो दुविहो दिसिबधो कीरए । जहा–चदाइय कुल, कोडियाइओ गणो, वइराइया साहा, अप्पणिचया गुरुणो आयरिया उवज्झाया य । गच्छे य उवज्झायाभावे आयरिया चेव उवज्झाया । साहुणीए अमुगा पवत्तिणीय त्ति तिविहो । तम्मि दिणे जहासत्तीए आयामनिव्वियाइ तवो कारिज्जइ । तओ खमासमणपुव्वय सीसो गुरु भणइ–'तुब्भे अम्ह धम्मोवएस देह' । पुणो खमासमण दाउ जाणूहि ठिओ सीसो सुणइ । गुरू य नायाधम्मकहा-अग–पढमसुयक्खध–सत्तमज्झयणस्स रोहिणीनायस्स अत्थओ वक्खाण करेइ । सो वि सवेगाइसयओ तहा सुणेइ, जहा अन्नो वि को वि पव्वयइ । रोहिणीनाय पुण सुपसिद्ध । तस्स य अत्थोवणओ एव–

§ ३३. जह सिट्ठी तह गुरुणो जह नाइजणो तहा समणसंघो ।
जह वहुया तह भव्वा जह सालिकणा तह वयाइ ॥ १ ॥
जह सा उज्झियनामा उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा ।
पेसणगारित्तेण असखदुक्खक्खणी जाया ॥ २ ॥
तह भव्वो जो कोई सघसमक्ख गुरुविइन्नाइ ।
पडिवज्जिउ समुज्झइ महव्वयाइं महामोहो ॥ ३ ॥
सो इह चेव भवमी जणाण धिक्कारभायणं होइ ।
परलोए उ दुहत्तो नाणाजोणीसु सचरइ ॥ ४ ॥

उक्तं च–धम्माउ भट्ठं सिरिओववेयं जन्नग्गिविज्झायमिवप्पतेयं ।
हीलंति णं दुविहिय कुसीला दाढोद्धिय घोरविस व नाग ॥ ५ ॥
इहेव धम्मो अयसो अ कित्ती दुन्नामधिज्जं च पिहुज्जणंमि ।
चुअस्स धम्माउ अहम्मसेविणो सभिन्नचित्तस्स उ हिट्ठओ गई ॥ ६ ॥
जहवा सा भोगवई जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा ।
पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुहं चेव ॥ ७ ॥
तह जो महव्वयाइं उवभुंजइ जीविय त्ति पालितो ।
आहाराइसु सत्तो चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥ ८ ॥
सो इत्थ जहिच्छाए पावइ आहारमाइ लिंगि त्ति ।
विउसाण नाइपुज्जो परलोगम्मी दुही चेव ॥ ९ ॥
जहवा रक्खियवहुया रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा ।
परिजणमन्ना जाया भोगसुहाइ च सपत्ता ॥ १० ॥
तह जो जीवो सम्मं पडिवज्जित्ता महव्वए पंच ।
पालेइ निरइयारे पमायलेसं पि वज्जंतो ॥ ११ ॥
सो अप्पहिइक्करुई इहलोयंमि वि विऊहिं पणयपओ ।
एगतसुही जायइ परमि मोक्खं पि पावेइ ॥ १२ ॥
जह रोहिणी उ सुण्हा रोवियसाली जहत्थमभिहाणा ।
वड्ढित्ता सालिकणे पत्ता सवस्स सामित्त ॥ १३ ॥

तह जो भणो पाविय वयाइं पालेइ अप्पणा सम्मं।
अन्नेसि वि भवाण देइ अणेगेसि हियहेउ ॥ १४ ॥
सो इह संघपहाणो जुगप्पहाणो त्ति लहइ संसद्द।
अप्पपरेसि कल्लाणकारओ गोयमपहु व्व ॥ १५ ॥
तित्थस्स वुड्डिकारी अक्खेवणओ कुतित्थियाईण।
विउसनरसेवियकमो कमेण सिद्धिं पि पावेइ ॥ १६ ॥

उट्ठावणा जहन्नओ सत्तराइदिएहिं, सा पुण पुव्वोवट्ठावियपुराणस्स कीरइ। मज्झिमओ चउहिं मासेहिं, सा य अणहिज्जओ मंदसद्धस्स य। उक्कोसओ छम्मासेहिं, सा य दुम्मेहस्स। असद्दहओ य लग्गाइकारणे य अइरित्तेणावि कालेण कीरइ त्ति ॥

॥ उट्ठावणाविही समत्तो ॥ २० ॥

§ ३४. उट्ठाविएण य सुयमहिज्झियव्वं। सुयाहिज्झणं[1] च न जोगवहणमंतरेण त्ति संपयं जोगविही भण्णइ–तत्थ पढमं ताव जोगवाहीहिं एवं भूएहिं होयव्वं।

पियधम्मा सुविणीया लज्जालुइया तहा महासत्ता।
उज्जुत्ता य विरत्ता दढधम्मा सुट्ठियचरित्ता ॥ १ ॥
जियकोह–माण–माया जियलोहा जियपरीसहा निरुया।
मण-वयण-कायगुत्ता गुरिसया जोगवाहीओ ॥ २ ॥
धोवोवहिओवगरणा निद्दजयाहारजयपहाणा य।
आलोयणसलिलेण पक्खालियपावमलपडला ॥ ३ ॥
कयकप्पतिप्पकिरिया सन्निहियाई गुरूण आणरया।
अणगाढजोगिणो विहु अगाढजोगी विसेसेण ॥ ४ ॥

तत्थ पसत्थे दिणे अमियजोग – सिद्धिजोग – रविजोगाइगुणगणोवेए मिगसिराइनाणनक्खत्तजुत्ते मच्चुजोगवज्जपायाइदोसलेसादूसिए संझागय – रविगय – विड्डेर – सग्गहविलंबि – राहुहय – गहभिन्ननक्खत्तवज्जे सुमेसु सुमिणसउणनिमित्तेसु दिणपढमपोरिसीए चेव अगसुयक्खधाण उद्देस-समुद्देसाणुन्नाओ कीरंति। नो पच्छिमपोरिसीए राईए वा। अज्झयणुद्देसाइय राईए वि कीरइ।

§ ३५ तहा जोगा दुविहा – गणिजोगा, बाहिरजोगा य। तत्थ गणिजोगा आगाढा चेव। आगाढा नाम जेसु सव्वसमत्तीए उत्तरीज्जइ। इयरे आगाढा अणागाढा य। तत्थ उत्तरज्झयणसत्तिक्कय पण्हावागरण–महानिसीहाणि आगाढा। आवस्सगाई अणागाढा असमत्तीए वि उत्तरिज्जइ त्ति काउ। अवे दिणचउक्कांतरमुत्तरिज्जइ त्ति भणंति। तहा उक्कालिया कालिया य। तत्थुक्कालिएसु जोगुक्खेवो कीरइ न संघट्ट। केसिंचि मएण न जोगुक्खेवो न संघट्टं। कालिएसु जोगुक्खेवो संघट्ट च। केसु वि आउत्तवाणय च। एयविहाण पत्थावे भण्णिही।

§ ३६ तहा कालिएसु कालग्गहणाइय च होइ। कालग्गहण च अणज्झाए न विहेयव्व त्ति पुव्वमणज्झयणविही भण्णइ। तत्थ गब्भमासेसु कत्तिय-मग्गसिराइसु महियाए पडतीए रए वा जाव पडइ ताव असज्झाओ। जओ महिया पडणसमकालमेव सव्व आउकायभाविय करेइ। अओ तक्कालसममेव सव्वचिट्ठाओ निरुम्भंति पाणिदयट्ठा। सचित्तो आरण्णो उद्धुओ आगओ रओ भण्णइ। वण्णओ ईसि आयवो दियतेसु

1 B सुयमहिज्झण। ¹ 'आयाओ दिग'तेसु' इति A टिप्पणी।

दीसइ। जइ आगासे गधव्वनगरं विज्जु उक्का दिसदाहो वा तो असज्झाओ। जाव एयाणि वट्टंति। थक्केसु वि एगा पोरुसी हवइ। उक्कालक्खण पडियाए वि पच्छओ रेहा, अहवा उज्जोओ हवइ। कणगो पुण तव्विरहिओ। तहि वरिसाले सत्तहि, सीयाले पचहिं, उण्हयाले तिहिं पहरसित्तमसज्झाओ हवइ। गज्जिए पुण पहरदुग। तहा आसाढचाउम्मासियपडिक्कमणानतर पडिवया जाव असज्झाओ। बीयाए सुज्झइ। एव कत्तिय-चाउम्मासिए वि। आसोयसुक्कपक्खपचमीपहरदुगाओ आरब्भ बारसदिणाणि, जाव पडिवया ताव असज्झाओ, बीयाए सुज्झइ। एव चित्तमाससुक्कपक्खे वि, नवरमेगारसीए आरब्भ जाव पुन्निमा दिणतिग अचित्तरजओ-हडावणिय काउस्सग्गो कीरइ। लोगस्सुज्जोयगरचउक्क चिंतिज्जइ। अह न सुमरिय तो बारसी-तेरसीओ वि आरब्भ कीरइ। अह तेरसीए वि न सुमरिय तो संवच्छर जाव धूलीए पडतीए असज्झाओ होइ। दोण्ह राईण कलहे, मेच्छाइभए, आलयासन्ने, इत्थीण पुरिसाण वा जुज्झे, फग्गुणे धूलिकीलाए य जाव एयाणि वट्टंति, ताव असज्झाओ। दडिए पचत्त गए जाव अन्नो न हवइ ताव असज्झाओ। ठविए वि जाव न समजसं ति। नयरपहाणपुरिसे अहोरत्तमसज्झाओ। आलयाओ सत्तघरमज्झे पसिद्धे पचत्त गए अहोरत्तमसज्झाओ। अणाहपुरिसे पुण जत्तियावेला मडय चिट्ठइ। एव तिरिए वि नीणिए सुज्झइ। तिरियाण रुहिरे पडिए, अडए फुट्टिए, गोणीए य पसूयाए, जराउपडणे, पहरतिय असज्झाओ हवइ। माणुसरुहिरे पडिए, उद्धरिए वि अहोरत्त। जइ महईए वुट्ठीए धोयं तो तवेलाए वि सुज्झइ। अह रयणीए घडियामेत्ताए वि चिट्ठतीए पडिय उद्धरिय च तो अहोरत्तछेओ त्ति सूरुग्गमे सुज्झइ। माणुसहड्डे बारस संवच्छराणि असज्झाओ। अह दता वा दाढा वा पडिया, पयत्तेण पलोइया वि न लद्धा, तो ओहडावणिज्ज-काउस्सग्गो कीरइ। नवकारो चिंतिज्जइ भणिज्जइ य। जइ मूसग बिराली गहिऊण जीवत नेइ तो न असज्झाओ, अह विणासिऊण नेइ तो अहोरत्तमसज्झाओ। तिरियाणमवयवा रुहिर च सट्ठिहत्थमज्झे असज्झाय कुणति। माणुस्साण पुण हत्थसयमज्झे, जइ न अतरे सगडस्स उभयदिसिगामिणी वत्तणी। हत्थसयमज्झे इत्थीए पसूयाए जइ कप्पट्ठगो[1] तो सत्तदिणाणि असज्झाओ, अह कप्पट्ठिया[2] तो अट्ठदिणाणि। रत्तुक्कडा इत्थिय त्ति—इत्थीए मासे मासे रिउरुहिर पडइ, जइ जाणिज्जइ तो तिन्नि दिणाणि असज्झाओ कीरइ। अह पवाहि-यारोगाओ उवरिं पि पवहइ, ता असज्झायओहडावणत्थ काउसग्गो कीरइ। अद्दाइनक्खत्तदसगे आइच्चेण सगए विज्जु-गज्जिय पि सज्झाय न उवहणइ। तारगादसणमत्ति जाव साइनक्खत्ते आइच्चगमणं होइ। सेसकाले उण अवस्स तारगतिगदसणे सुज्झइ। अह केसिं पि साहूण तहाविह नक्खत्तपरिण्णाण न हवइ, तओ आसाढ-चउम्मासाओ कत्तियचउम्मासं जाव विज्जु-गज्जिएसु वि न असज्झाओ होइ। उक्का सयावि उवहणइ। तहा घडहडे भूमिकपे य सजाए अट्ठपहरा असज्झाओ होइ। जत्तियावेलाए सजाओ बीयदिणे तत्तियाए वेलाए परओ सुज्झइ। ससद्दो घडहडो, सद्दरहिओ भूमिकपो। पलीवणे य सजाए जाव त वट्टइ ताव असज्झाओ।

संपय चदसूरगहणअसज्झाओ भण्णइ—चदे गहिए उक्कोसेण बारस पहरा असज्झाओ। कह?— उप्पायगहणे चदो उग्गमतो चेव गहिओ, गहिओ चेव सव्वराईं पज्जते अत्थमिओ। एए रयणीए चत्तारि पहरा, अन्न च अहोरत्त, एव दुवालस पहरा असज्झाओ। अहवा अन्नहा दुवालस पहरा। को वि साहू थयाणओ न जाणइ कित्तियाए वेलाए गहणं, इत्तिय पुण जाणइ जहा अज्ज पुण्णिमाराईए गहण भवि-स्सइ। अब्भच्छन्नत्तेण य गहणदसणाभावाओ चत्तारि वि पहरा परिहरिया। पभायसमये अब्भविगमे सगहो अत्थमतो दिट्ठो तओ एए रयणितणया चत्तारि पहरा अन्न च अहोरत्त। एव दुवालस। जहन्नेण पुण अट्ठ। पुण्णिमारयणीपज्जते चदो गहिओ, तहट्ठिओ चेव अत्थमिओ, तओ अहोरत्त परिहरिज्जइ। एव अट्ठ। एयाण मज्झे मज्झिमो। सगहनिवुड्ड एव। जइ पुण राईए गहिओ, राईए चेव घडियाए सेसाए विमुक्को तो तीए

1 'पुन' इति A टिप्पणी। 2 'पुनी' इति A टिप्पणी।

चेव राईए सेस परिहरिज्जइ । सूरे उग्गए सज्झाओ हवइ । आइच्चगहणे पुण उक्कोसेण सोलसपहरा असज्झाओ । कह ¹—उप्पायगहणे उग्गमतो चेव गहिओ, सव्व दिण ठाउण गहिओ चेव अत्थमिओ । तओ एए चत्तारि दिणपहरा, चत्तारि राईपहरा, अन्न च अहोरत्त—एव सोलस । अहवा अब्भच्छन्ने साह न याणइ केवइवेलाए गहण भविस्सइ, तहाविहपरिण्णाणाभावाओ । तओ त दिवस सूरुग्गमाओ आरब्भ परिहरिय । अत्थमणसमए गहिओ अत्थमतो दिट्ठो, तओ सा राई य परिहरिया, अन्न च अहोरत्त—एव सोलस । जहन्नेण पुण बारस । कह ²—अत्थमतो आइच्चो गहिओ, तह चेव अत्थमिओ, तओ आगामिराइतणया चत्तारि पहरा अन्न च अहोरत्त—एव बारस । सोलस-बारसण्हमतराले मज्झिमो असज्झाओ । सग्गहनिवुड्ढे एव । जइ पुण दिणमज्झे गहिओ मुक्को य, तो गहणाओ आरब्भ अहोरत्त परिहरिज्जइ ।

जदाह—उक्कोसेण दुवालस चदो जहन्नेण पोरिसी अट्ठ ।
सूरो जहन्नबारस पोरसि उक्कोस दो अट्ठ ॥ १ ॥
सग्गहनिवुड्ड एव सूराई जेण होंत ऽहोरत्ता ।
आइन्न दिणमुक्को सो चिय दिवसो य राई य ॥ २ ॥

सपय वुट्ठीअसज्झाओ—बारससु वि मासेसु बुब्बुयवरिसे अहोरत्ता उड्ढपि जइ वरिसइ तो असज्झाओ, जाव वरिसइ । बुब्बुयवज्जवरिसे दोण्हमहोरत्ताणमुवरि जाव पडइ, ताव असज्झाओ । फुसियवरिसे सत्तण्हमहोरत्ताणमुवरि सतयां पडते जाव पडइ, ताव असज्झाओ, न परओ । अणुदिए सूरे, मज्झन्ने अत्थमणे अड्ढरत्ते य वि चउसु सझासु असज्झाओ । सुक्कपक्खस्स पडिवय बीय वा आरब्भ दिणतिग जूवओ तत्थ वाघाइयकालो न घिप्पइ । एव पक्खियदिणे वि ।

॥ अणज्झायविही समत्तो ॥ २१ ॥

§ ३७ अह कालग्गहणविही—तत्थ सामन्नेण कालो दुविहो—वाघाइओ अवाघाइओ य । तत्थ जो वाघाइओ सो घयसालाए घेप्पइ, जो उण अवाघाइओ सो मज्झे बाहिरे वा । जइ मज्झे घिप्पइ तो नियमा सोहग्गो ठावेयव्वो । अह बाहिरे, तो ठाविज्जइ वा नवा । दडधरो चेव सोहइ । विसेसो, जहा—चत्तारि काला । त जहा—पाओसिओ वाघाइओ वा १ अड्ढरत्तिओ २ वेरत्तिओ ३ पाभाइओ ४ । तत्थ पाओसिओ पओसवेलाए घेप्पइ । तीए य वेलाए छीयकलयलाइ अणेगे वाघाया होंति । अओ घयसालाए घेप्पइ । अओ चेव पाओसिओ वाघाइओ भण्णइ १ । अड्ढरत्तिओ अड्ढरत्तुवरिं घेप्पइ २ । वेरत्तिय पाभाइया चउत्थपहरे घिप्पति । पाओसिय-अड्ढरत्तिएसु नियमा उत्तरदिसाए कालग्गहण पुव्व कायव्व । वेरत्तिए भयणा उत्तरा वा पुव्वा वा । पाभाइए पुव्वा चेव । काल गेण्हमाणस्स वायणारियस्स दडधरस्स वा वच्चतस्स काउस्सग्गे वा वदणाणतर सदिसावण-पवेयणसमए वा जइ छीय-खलिय-जोइ-निग्घाय-विज्जुक-गज्जियाईणि भवति तओ चउरो वि हम्मति । पाओसिय-अड्ढरत्तिय-वेरत्तिया जइ उवहया तो उवहया चेव । पाओसिओ एग वार घिप्पइ न सुद्धो तो उवहम्मइ । अड्ढरत्तिओ दो तिन्नि वारा, वेरत्तिओ चत्तारि पच वा, पाभाइओ नव वारेत्ति । अओ चेव पाभाइए असुद्धे योगवाहीण जाव काला न पुज्जति ताव दिण गल्इ त्ति । एव पि भवाओ सुझइ त्ति—पाभाइओ उण पुणो पुणो नियत्तिय घेप्पइ नववेला जाव । इमिणा विहिणा जइ सदिसावणापुव्विं भज्जइ तो मूलाओ घेप्पइ, अह संदिसावणाणतर वच्चतस्स कालमडलस्स पडिलेहणाए पुव्व वा भज्जइ, तो एवमेव नियत्तिऊण कालगेण्हगो ठवणायरियसमीवे खमासमणपुव्व संदिसाविऊण विहिणा कालमडले आगच्छइ । अह कालपडिलेहणाणतर कालकाउस्सग्गो, कालकाउस्सग्गाणतर कालमडले ठियस्स, तो तत्थेव ठिओ ठवणायरियसमुह ठाऊण खमासमणपुव्व संदिसाविऊण पुणो मूलाओ

1 B चव्व । 2 A °राईए तणया । † सतत ।

अणुओगो पवत्तइ, किं आवस्सगस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ?, आवस्सगवइरित्तस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ? । आवस्सगस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, आवस्सगवइरित्तस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ आवस्सगस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं सामाइयस्स, चउवीसत्थयस्स, वंदणस्स, पडिक्कमणस्स, काउस्सगस्स, पच्चक्खाणस्स सव्वेसिं पि एएसिं उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ? । जइ आवस्सगवइरित्तस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ?, उक्कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ? । कालियस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, उक्कालियस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ उक्कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं दसवेयालियस्स, कप्पियाकप्पियस्स, चुल्लकप्पसुयस्स, महाकप्पसुयस्स, पमायप्पमायस्स, ओवाइयस्स, रायपसेणईयस्स, जीवाभिगमस्स, पण्णवणाए, महापण्णवणाए, नंदीए, अणुओगदाराणं देविंदत्थयस्स, तंदुलवेयालियस्स, चंदाविज्झयस्स, पोरिसीमंडलस्स, मंडलिपवेसस्स, गणिविज्जाए, विज्जाचरणविणिच्छियस्स, झाणविभत्तीए, मरणविभत्तीए, आयविसोहीए, मरणविसोहीए, । [1]संलेहणासुयस्स, वीयरायसुयस्स, विहारकप्पस्स, चरणविहीए, आउरपच्चक्खाणस्स, महापच्चक्खाणस्स, सव्वेसिं पि एएसिं उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं उत्तरज्झयणाणं, दसाणं, कप्पस्स, ववहारस्स, इसिभासियाणं, निसीहस्स, जंबुद्दीवपन्नत्तीए, चंदपन्नत्तीए, सूरपन्नत्तीए, दीवसागरपन्नत्तीए, खुड्डियाविमाणपविभत्तीए, महल्लियाविमाणपविभत्तीए, अंगचूलियाए, वग्गचूलियाए, विवाहचूलियाए, अरुणोववायस्स, गुरुलोववायस्स, धरणोववायस्स, वेलंधरोववायस्स, वेसमणोववायस्स, देविंदोववायस्स, उट्ठाणसुयस्स, समुट्ठाणसुयस्स, नागपरियावलियाणं, निरयावलियाणं, कप्पियाणं, कप्पवडिंसियाणं, पुप्फियाणं, पुप्फचूलियाणं, वण्हीदसाणं, आसीविसभावणाणं, दिट्ठिविसभावणाणं, चारणभावणाणं, महासुमिणगभावणाणं, तेयगनिसग्गाणं, सव्वेसिं पि एएसिं उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ अंगपविट्ठस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं आयारस्स, सूयगडस्स, ठाणस्स, समवायस्स, विवाहपण्णत्तीए, नायाधम्मकहाणं, उवासगदसाणं, अंतगडदसाणं, अणुत्तरोववाइदसाणं, पण्हावागरणाणं, विवागसुयस्स दिट्ठिवायस्स । सव्वेसिं पि एएसिं उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ।

इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च—इमस्स साहुस्स इमाइ साहुणीए वा अमुगस्स अंगस्स, सुयक्खंधस्स वा उद्देसनंदी अणुण्णानंदी वा पयट्टइ । तओ गंधाभिमंतणं तित्थयरपाएसु गंधक्खेवो अहासन्निहियाणं चामदाणं । तओ बारसावत्तवंदणयपुव्वं खमासमणं दाउं भणति—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं अंगं सुयक्खंधं वा उद्दिसह' । गुरू भणइ—'उद्दिसामो' । १ । पुणो वंदित्ता भणइ—'संदिसह किं भणामो' । गुरू भणइ—'वंदित्ता पवेयह' । २ । इच्छं भणित्ता, पुणो वंदित्ता भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्हं सुयक्खंधाइ उद्दिट्ठं ?' । गुरू आह 'उद्दिट्ठं' । ३ खमासमणाणं । हत्थेणं, सुत्तेणं, अत्थेणं, तदुभयेणं । सम्मं जोगो कायव्वो' । सीसो भणइ—'इच्छामो अणुसट्ठिं' । ३ । पुणो वंदित्ता भणइ—'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि' । गुरू आह—'पवेयह' । ४ । इच्छं ति भणिऊण वंदित्ता नमोक्कार कड्ढिंतो पयाहिणं देइ । ५ । पुणो वि, एवं दुन्निवारे । तओ वंदित्ता—'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं

---

1 A. संदेहणा° ।

माइभया कयाइ उद्देसाइकिरियाए अणतर सज्झाय पट्ठाविय, कालमडलाइ दुक्खुत्तो काऊण, सज्झाय पडिक्कमिय, पउणपहरमज्झे वि पडिक्कमिज्जइ । सेसा पुण उद्देसाइ किरियाणतर चेव पडिक्कमिज्जति । जाव कालो न पडिक्कतो ताव गज्जिमाईहिं उवघाओ । उद्देसाइसु कएसु खमासमणदुगेण 'सज्झाउ पडिक्कमह, सज्झायपडिक्कमणत्थु काउसग्गु करेह' इति भणिय, मोणेण अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ पढित्ता, अट्ठुस्सास काउस्सग्ग करिय, पारित्ता, नमोक्कार भणति । एव कालो वि पाभाइयाइअभिलावेण पडिक्कमियव्वो । एय पसंगओ भणिय ।

§ ३९ एव सुद्धे पाभाइए काले पडिक्कमण काउ, पडिलेहण अगपडिलेहण च काउ, वसहिं पमज्जिय, सोहित्ता य हड्डाई परिट्ठविय, वायणायरियअगओ इरिय पडिक्कमिय, पुत्ति पडिलेहित्ता, वसहि पवेयति । 'इच्छकारि तपसियह्रु वसति सूझइ' । जो वसहिं सोहिउ सट्ट गओ सो भणइ सुज्झइ त्ति । तओ कालग्गाही एव चेव काल पवेएइ । नवर इत्थ दडधरो सूझइ त्ति भणइ । तओ वायणायरिओ वामपासट्ठिओ सीसो य ठवणायरिअग्गओ सज्झाय पट्ठवेति । जहा मुहपोत्तिं पडिलेहिय बारसावत्तवदण दाउ, खमासमणदुगेण भणति—'इच्छाकारेण संदिसह सज्झाउ सदिसावह, सज्झाउ पाठविसह' । जउ सुद्धु तउ मोणेण—'सज्झाय पट्ठवणत्थ करेमि काउस्सग्ग, अन्नत्थूससिएण'मिच्चाइ भणिय, अट्ठुस्सास काउस्सग्ग चेइयामज्झे काउ पारिय, चउवीसत्थय सचरससिलोगे य पढित्ता, पुणो ओलग्गियबाह नवकार चिंतिय, भणिय, उवविसिय, चेइयामज्झे दाहिणपासट्ठियरयहरणे वदणय दाउ, खमासमणेण भणति—'इच्छाकारेण सदिसह सज्झाउ पवेयह' । पुणो खमासमण 'इच्छाकारि तपसियह्रु सज्झाउ सूझइ ?' । सव्वे भणति सूझइ । तओ खमासमणदुगेण सज्झाय सदिसाविंति, कुणति य 'धम्मोमगलाइ'सिलोग ५ । पुणो वायणारिओ निसिज्जाए सीसो पाउछणे वासासु कट्ठासणे रयहरण ठाविय, वदण दाउ भणति—'इच्छाकारि तपसियह्रु दिट्ठ सुय ?' । सव्वे भणति न किंचि । इत्थवि छीय-खलियाईय कालगमणेण नेयव्व ।

॥ सज्झायपट्ठवणविही ॥ २२ ॥

§ ४० एव सुद्धे सज्झाए जोगवाहिणो वदण दाउ भणति—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह जोगे उक्खिवेह ।' गुरू भणइ 'उक्खेवामो' । पुणो वदिय भणति—'तुब्भे अम्ह जोगोक्खेवावणिय काउस्सग्ग करावेह' । गुरू भणइ 'करावेमो' । तओ जोगोक्खेवावणिय पणवीसुस्सास अट्ठोस्सास वा, मयतरे सत्तावीसुस्सास वा, काउस्सग्ग करेंति । पारित्ता चउवीसत्थय भणति । तओ सावयकयपूयाचेइयहरे वसहीए वा समोसरणे सुयक्खधस्स अगस्स वा उद्देसनिमित्त अणुन्नानिमित्त वा वासे सिरसि खिवावेंति । पुणो वदिय भणति—'तुब्भे अम्ह अमुगसुयक्खधाइ-उद्देसाइनिमित्त चेइयाइ वदावेह' । गुरू भणइ 'वदावेमो' । तओ ते वामपासे काऊण वड्ढतियाहिं थुईहि गुरू चेइए वदइ पुव्वविहीए, जाव पुत्तपणिहाणपज्जत । तओ पुत्तिं पडिलेहिय बारसावत्तवदण दाऊ नदिकड्ढावणिय अट्ठुस्सास काउस्सग्ग करेंति । पारित्ता नमोकार पढति । अन्नेसिं पुण सत्तावीसुस्सास काउस्सग्ग काउ चउवीसत्थय भणति । तओ तेहिं खमासमणपुव्व 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह नदिं सुणावेह'त्ति वुत्ते गुरू नमोकारतिगपुव्व उद्देसत्थ अणुन्नत्थ वा नदिं कड्ढइ ।

जहा—नाण पचविह पण्णत्त । त जहा—आभिणिबोहियनाण, सुयनाण, ओहिनाण, मणपज्जवनाण, केवलनाण । तत्थ चत्तारि नाणाइ ठप्पाइ ठवणिज्जाइ, नो उद्दिसिज्जति, नो समुद्दिसिज्जति, नो अणुन्नविज्जति । सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, किं अंगपविट्ठस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ? अगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ? । अंगपविट्ठस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ, अगबाहिरस्स वि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । जइ अगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा

त उवहम्मइ। आगाढजोगवाही सीवण-तुन्नण-पीसण-लेवणाइ न करेइ। उभयपोरिसीसु सुत्तत्थाइ परियट्टेइ। वहिज्जमाणसुय मुत्तूण अपुव्वपढण न करेइ। पुव्वपढिय न वीसारेइ। पत्ताइउवगरण सया उववत्तो नियनियकाले पडिलेहेइ। अप्पमद्देण चयइ न दद्दरेण। कामकोहाइनिग्गहो कायव्वो। तहा कप्पइ भत्त वा पाण वा अब्भिंतर सघट्ट, वेइवाहिं गय न कप्पइ। [1]उग्गुडिओ तुयट्टो विगहाओ वा असंखड व करेमाणो सघट्टेइ उस्संघट्ट, उग्गुडिओ भूमीए मेल्लइ। परिसाडिं वा भत्तपाणे छुहेइ। तिन्नि भायणाइ उवरिं ठवेइ। उवविट्ठस्स उब्भो भत्तपाण अप्पेइ। सघट्टे वा पयलाइ, उस्सघट्ट वल्लीसघट्ट भत्त पाण च न कप्पइ। भत्त पाण वा मज्झपविट्ठकरगुलिचउक्कगहिय तिप्पणय-तुन्नगाइय, मज्झपविट्ठकरगुट्ठगहिय तुन्नगाइपत्त च न उस्सघट्टइ। एयविवरीय उस्सघट्टइ। उग्गुडिओ भूमिट्ठिय संघट्टइ उस्सघट्ट[2]।

§ ४३ सपय गणिजोगविहाणे कप्पाकप्पविही भण्णइ – सा य जोगिपरिण्णेया जोगि-सावयपरिण्णेया य। तत्थ जोगिपरिण्णेया जहा – पिंडवायट्ठियसघाडयछित्ते परोप्पर न उवहम्मइ। सीवण-तुन्नणाइय वाणायरियाणुन्नाए करेइ। जोगवाहिणो सण्णा असज्झाइय च रुहिराइ न उवहणइ। ओल्ली सण्णा[3] मणुय-साण-मज्जाराईण, आमिसासीण पक्खीण च। अतिणभक्खिणो *तन्नयस्स य गय-हय-खराण य छिक्कासमाणी[4] उवहणइ, न सुक्का। उल्ल चम्म हड्ड च। गोसाले अणुण्णाए वालसुकचम्मट्ठिसुक्कसन्नाओ वि न उवहणति। तेसिं अणुवघायट्ठा पवेयणासमए काउस्सग्गो कीरइ। अट्ठगुलाहियप्पमाणो दिट्ठो भोयणाइसु वालो उवहणइ। तहा गिहत्थीए वालए थण पियते सुक्के जइ थणे दुद्ध न दीसइ, तो कप्पिय होइ। एव गोपमुहेसु वि। सन्निहि-आहाकम्म-मणुय-तिरियपचिंदियसघट्टे उवहम्मइ। लेवाडयपरिवासे पत्ते पत्तावघे वा भत्त पाण च उवहम्मइ। आहाकम्मिओवहए पत्तगाइ चउकप्पाइ अन्नत्थ तिकप्पाइ। जइ कप्पिएण भाण हत्थाइकप्पिया तो उल्लेणावि हत्थमत्तएण घिप्पइ। अह पुण [5]मूलमडलियाण पाणएण ताहे सुक्केसु काउस्सग्गे कए घिप्पइ। [6]वायणारियाणुण्णाए पढण-सुणण-वक्खाण-धम्मकहाओ कीरति न समईए। परियट्टण अणुप्पेहा य जहाजोग कीरइ। पढमपोरिसिमज्झे पवेयणे पवेइए सघट्टाइए य सदिसाविए कप्पइ असणाइपडिगाहित्तए, न उण उवरिं। कप्पइ निव्विगइयघयतिल्लेहिं कारणे पायगायाइ अब्भगित्तए वायणायरियससट्टेण य॥

इयाणिं जोगिसावयपरिण्णेया जहा – आ छट्ठजोगाओ दससु विगईसु, छट्ठजोगे पुण लग्गे पक्कन्नवज्जासु नवसु विगईसु, छिवणदाणलिवणाइवावडहत्थो उवहम्मइ। तेसिं जइ अवयव पि छिवइ तो भत्त पाण वा ज हत्थे त उवहम्मइ। विगइससट्ठ ति परपर न उवहणइ। मयगभत्त न कप्पइ। तिल्लघयाइअब्भगिया इत्थी पुरिसो वा ज सघट्टेइ सो उवहम्मइ। तद्दिणनवणीयमोइयकज्जल छिवती तेणजियनयणा वा दिंती उवहम्मइ, न सेसदिवसेसु। अन्न पि अकप्पिएण दव्वेण मीसिय छिक्क वा वीयदिणे न उवहणइ। ण्हाया जइ केसेसु असुक्केसु असणाइ देइ तो उवहम्मइ। तद्दिणतिल्लाइमोइयकुकुमपिंजरियसरीरा य उवहणइ। दीवओ वि ज पुण थिर कट्ठकवाडाइय अकप्पिएण दव्वेण छिक्क त न उवहणइ। जइ त दव्व न छिवइ थिरकट्ठकवाडाइ जोगवाहिणा छिक्काइ न उवहणति। उत्तिविडिठियअकप्पवत्थुभायणछिक्क सत्तपरपरमवि अणायरिय। एगे तिपरपर गिण्हति, अन्ने दुपरपर पि। एव तिरिच्छथलीठिएसु वि परोप्परसंबद्धेसु दायगेसु वि तहा कप्पइ। कक्कव-इक्खुरस-गुडपाय-गुल्वाणीय-खड-सक्करवाट-खीरिदुद्धकजिय-दुद्धसाडिया-कक्करियग-मोरिंडग-गुलहाणा। दुद्धसाडिया नाम दक्खदुद्धरद्धा। मोरिंडगाणि

---

1 A उग्गुडुओ। 2 C भूमिट्ठिय सघट्ट। 3 C रुण्णा सग्गा। * C स्तन्यपायिन। 4 A 'स्पृष्टासती'। 5 B मूलि°। 6 B वाणायरि°। 7 A लिय'गाइ°, C लिंव'गाइ°।

पवेइय, संदिसह काउस्सग्ग करावेह'। गुरू आह -'करावेमो'। ६। इच्छं भणित्ता, वंदित्ता, 'सुयक्खंधाइउद्दिसावणियं करेमि काउस्सग्गं जाव वोसिरामि'। सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं काऊण पारित्ता, पुणो चउवीसत्थयं भणइ। एवं सव्वत्थ सत्त छोभा वंदणा भवंति। तओ उद्देस-अणुण्णानंदि-थिरीकरणत्थं अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं करिय नवकारं भणंति। सुयक्खंधस्स अंगस्स य उद्देसाणुन्नासु नंदी। एवं उद्देसे सम्मं जोगो कायव्वो। समुद्देसे थिरपरिचियं कायव्वं। अणुण्णाए सम्मं धारणीयं, चिरं पाल-णीयं, अन्नेसिं पि पवेणीयं। साहुणीण तु अन्नेसिं पि पवेयणीयं ति न वत्तव्वं। उद्देसाणंतरं खमासमणदुगेण वायणं संदिसाविय तहेव बइसणं संदिसाविज्जइ। अणुण्णानंतरं वंदणयपुव्वं पवेयणे पवेइए। पढमदिणे असहस्स आयंबिलं निरुद्धं ति वुच्चइ, सहस्स अब्भत्तट्ठं। बीयदिणे पारणयं निव्वीयं। तओ दोहिं दोहिं खमासमणेहिं बहुवेलं सज्झायं बइसणं च संदिसाविय, खमासमणदुगेण 'सज्झाउ पाठविसहं, सज्झाय-पाठवणत्थु काउस्सग्गु करिसहं'। तहेव कालमंडलं संदिसाविसहं, कालमंडलं करिसहं'। तओ खमा-समणतिगेण 'संघट्टउ संदिसाविसहं संघट्टउ पडिगाहिसहं, संघट्टपडिगाहणत्थु काउस्सग्गु करिसहं'। केसु वि आउत्तवाणयं च एमेव संदिसाविंति। तओ खमासमणदुगेण 'सज्झाउ पडिक्कमिसहं, सज्झायपडि-क्कमणत्थु काउस्सग्गु करिसहं। तहेव पाभाइकालु पडिक्कमिसहं, पाभाइयकालपडिक्कमणत्थु काउस्सग्गु करिसहं'। ततो तववंदणयं दिंति। गुरुणा सुहतवो पुच्छियव्वो। तओ मुहपोत्तिं पडिलेहिय, खमासमण-तिगेण 'संघट्टउ संदिसावउं, संघट्टउ पडिगाहउं, संघट्टापडिगाहणत्थु काउस्सग्गु करउं। संघट्टापडिगाह-णत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएणं'मिच्चाइ। नमोक्कारचिंतणं भणणं च। एवं आउत्तवाणयं पि घेप्पइ। पुणो खमासमणं दाउं 'त्रांबा त्रउया सीसा कासा सूना रूपा हाड चाम रुहिर लोह नह दंत बाल 'सूकीतान लादि' इच्चाइ ओहडावणियं करेमि काउस्सग्गं'। नवकारचिंतणं भणणं च।

§ ४१. जोगसमत्तीए जया उत्तरंति तया सिरसि गंधक्खेवपुव्वं वायणायरिओ योगनिक्खेवावणियं देवे वंदाविय, पुत्तिं पडिलेहाविय, वंदणं दाविय, पच्चक्खाणं कारिय, विगइलियावणियं अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं करेइ। अन्ने भणंति दुवालसावत्तवंदणं दाउं, खमासमणेणं 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह जोगे निक्खिवह, धीए जोगनिक्खेवावणियं काउस्सग्गं करावेह'त्ति भणित्ता,-जोगनिक्खेवावणियं करेमि काउस्सग्गं। नव-कारचिंतणं भणणं च। तओ 'जोगनिक्खेवावणियं चेइयाइं वंदावेह'त्ति खमासमणेण भणित्ता, सक्कत्थयं कहिंति। पुणो वंदणं दाउं, भणंति-'पवेयणं पवेयह। पडिपुण्णा विगइ, पारणउ करह'। गुरू भणइ-'करेह'त्ति। तओ विगईपच्चक्खाणं काउं, वंदिय गुरुणो पाए संवाहिय, जोगे वहंतेहिं अविही आसायणं च मण-वयण-काएहिं मिच्छादुक्कडेण खमाविय आहारायणियाए सव्वे वंदंति।

॥ जोगनिक्खेवणविही ॥ २३ ॥

§ ४२ राइयपडिक्कमणे जोगवाहिणो पइदिणं नवकारसहियं पच्चक्खंति। जोगारंभदिणादारब्भ छम्मासं जाव काला न उवहम्मंति, तत्तियाणि दिणाणि जाव संघट्टा कीरंति, उवरि न सुज्झंति। एस मग्गो अणा-गाढेसु आयाराइसु नेओ। चित्तासोयसुद्धपक्खे वि आगाढा गणिजोगा न निक्खिप्पंति। कप्पतिप्पकिरिया य कीरइ। सज्झाओ पुण निक्खिप्पइ। छम्मासियकप्पो य चइसाह-कत्तियबहुलपाडिवयाउड्ढं उत्तारिज्जइ। अत्र च रयणीए पच्छिम-चरमजामेसु जागरणं बारसुट्ठाईणं सामत्तं। जोगिणा उण सव्ववेलं अप्पणिद्देण होयव्वं। विसेसओ दिवा हास-कंदप्प विगहा कलहरहिएण य होयव्वं। एगागिणा सया वि हत्थसया बाहिं न गंतव्वं, विमुयं जोगवाहिणा। अह जाइ अणाभोगेण आयामं से पच्छित्तं। जं च हत्थे भत्तं पाणं वा

1 बिहा दि°। 2 A 'लाद'।

त उवहम्मइ । आगाढजोगवाही सीवण-तुन्नण-पीसण-लेवणाइ न करेइ । उभयपोरिसीसु सुत्तत्थाइ परियट्टेइ । वहिज्जमाणसुय मुत्तूण अपुव्वपढण न करेइ । पुव्वपढिय न वीसारेइ । पत्ताइउवगरण सया उववत्तो तियनियकाले पडिलेहेइ । अप्पसद्देण वयइ न दड्डुरेण । कामकोहाइनिग्गहो कायव्वो । तहा कप्पइ भत्त वा पाण वा अब्भिंतर सघट्ट, वेइबाहिं गय न कप्पइ । [1]उग्गुडिओ तुयट्टो विगहाओ वा असंखट व करेमाणो संघट्टेइ उस्सघट्ट, उग्गुडिओ भूमीए मेलइ । परिसाडिं वा भत्तपाणे छुहेइ । तिन्नि भायणाइ उवरिं ठवेइ । उवविट्ठस्स उब्भो भत्तपाण अप्पेइ । सघट्टे वा पयलाइ, उस्सघट्ट वलीसघट्ट भत्त पाण च न कप्पइ । भत्त पाण वा मज्झपविट्ठकरग्गुलिचउक्कगहिय तिप्पणय-तुब्बगाइय, मज्झपविट्ठकरगुट्ठगहिय तुन-गाइपत्त च न उस्संघट्टइ । एयविवरीय उस्सघट्टइ । उग्गुडिओ भूमिट्ठिय संघट्टइ उस्सघट्ट[2] ।

§ ४३ संपय गणिजोगविहाणे कप्पाकप्पविही भण्णइ — सा य जोगिपरिण्णेया जोगि-सावयपरिण्णेया य । तत्थ जोगिपरिण्णेया जहा — पिंडवायहिंडयसघाडयछिक्के परोप्पर न उवहम्मइ । सीवण-तुन्नणाइय वाणायरियाणुन्नाए करेइ । जोगवाहिणो सण्णा असज्झाइय च रुहिराइ न उवहणइ । ओल्ली सण्णा[3] मणुय-साण-मज्जाराईण, आमिसासीण पक्खीण च । अतिणभक्खिणो *तन्नयस्स य गय-हय-खराण य छिक्कासमाणी[4] उवहणइ, न सुक्का । उल्ल चम्म हड्ड च । गोसाले अणुण्णाए वालसुक्कचम्मट्ठिसुक्कसन्नाओ वि न उवहणंति । तेसिं अणुवघायट्ठा पवेयणासमए काउस्सग्गो कीरइ । अट्ठगुलाहियप्पमाणो दिट्ठो भोयणाइसु वालो उवहणइ । तहा गिहत्थीए बालए थण पियते सुक्के जइ थणे दुद्ध न दीसइ, तो कप्पिय होइ । एव गोपमुहेसु वि । सन्निहि-आहाकम्म-मणुय-तिरियपचिंदियसघट्टे उवहम्मइ । लेवाडय-परिवासे पत्ते पत्ताबधे वा भत्त पाण च उवहम्मइ । आहाकम्मिओवहए पत्तगाइ चउकप्पाइ अन्नत्थ तिकप्पाइ । जइ कप्पिएण भाण हत्थाइकप्पिया तो उल्लेणावि हत्थमत्तएण घिप्पइ । अह पुण [5]मूलमड-लियाण पाणएण ताहे सुक्केसु काउस्सग्गे कए घिप्पइ । [6]वायणारियाणुण्णाए पढण-सुणण-वक्खाण-धम्म-कहाओ कीरंति न समईए । परियट्टण अणुप्पेहा य जहाजोग कीरइ । पढमपोरिसिमज्झे पवेयणे पनेइए सघट्टाइए य सदिसाविए कप्पइ असणाइमडिगाहित्तए, न उण उवरिं । कप्पइ निव्विगइयघय-तिलेहिं कारणे पायगायाइ अब्भगित्तए वायणायरियससट्ठेण य ॥

इयाणिं जोगिसावयपरिण्णेया जहा — आ छट्ठजोगाओ दससु विगईसु, छट्ठजोगे पुण लग्गे पक्क-न्नवज्जासु नवसु विगईसु, छिवणदाणलिंपणाइवावडहत्थो उवहम्मइ । तेसिं जइ अवयव पि छिवइ तो भत्त पाण वा ज हत्थे त उवहम्मइ । निगइससट्ठ ति परपरं न उवहणइ । मयगभत्त न कप्पइ । तिल्लघ-याइअब्भगिया इत्थी पुरिसो वा ज सघट्टेइ सो उवहम्मइ । तद्दिणनवणीयमोइयकज्जल छिवती तेणजिय-नयणा वा दिंती उवहम्मइ, न सेसदिवसेसु । अन्न पि अकप्पिएण दव्वेण मीसिय छिक्क वा बीयदिणे न उवहणइ । ण्हाया जइ केसेसु असुक्केसु असणाइ देइ तो उवहम्मइ । तद्दिणतिल्लाइमोइयकुकुमपिंजरिय-सरीरा य उवहणइ । दीवओ वि ज पुण थिर कट्ठकवाडाइय अकप्पिएण दव्वेण छिक्क त न उवहणइ । जइ त दव्व न छिवइ थिरकट्ठकवाडाइ जोगवाहिणा छिक्काइ न उवहणंति । उत्तिविडिठियन्नकप्पवत्थु-भायणछिक्क सत्तपरपरमवि अणायरिय । एगे तिपरपर गिण्हंति, अन्ने दुपरपर पि । एव तिरिच्छथलीठिएसु वि परोप्परसंबद्धेसु दायगेसु वि तहा कप्पइ । कक्कव-इक्खुरस-गुडपाय-गुलवाणीय-खड-सक्करवाट-खीरि-दुद्धकनिय-दुद्धसाडिया कक्करियग-मोरिंटग-गुलहाणा । दुद्धसाडिया नाम दक्खदुद्धरद्धा । मोरिंढगाणि

---

1 A उग्गुडुओ । 2 C भूमिट्ठिय सघट्ट । 3 C उल्ला सण्णा । * C तन्नयपायिन । 4 A 'स्पृष्टासती' । 5 B मूलि° । 6 B वाणायरि° । 7 A लियणाइ°; C लिंवणाइ° ।

पवेइय, संदिसह काउस्सग्ग करावेह'। गुरू आह—'करावेमो'। ६। इच्छं भणित्ता, वंदित्ता, 'सुयक्खंधाइउद्दिसावणियं करेमि काउस्सग्गं जाव वोसिरामि'। सत्तावीसुस्सासं काउस्सग्गं काऊण पारित्ता, पुणो चउवीसत्थयं भणइ। एवं सव्वत्थ सत्त छोभा वंदणा भवंति। तओ उद्देस-अणुण्णानंदि-थिरीकरणत्थं अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं करिय नवकारं भणंति। सुयक्खंधस्स अंगस्स य उद्देसाणुन्नासु नंदी। ५ एवं उद्देसे सम्मं जोगो कायव्वो। समुद्देसे थिरपरिचियं कायव्वं। अणुण्णाए सम्मं धारणीयं, चिरं पालणीयं, अन्नेसिं पि पवेणीयं। साहुणीणं तु अन्नेसिं पि पवेयणीयं ति न वत्तव्वं। उद्देसाणंतरं खमासमणदुगेण वायणं संदिसाविय तहेव बइसणं संदिसाविज्जइ। अणुण्णानंतरं वंदणयपुव्वं पवेयणं पवेइए। पढमदिणे असहस्स आयंबिलं निरुद्धं ति वुच्चइ, सहस्स अब्भत्तट्ठं। बीयदिणे पारणयं निव्वीयं। तओ दोहिं दोहिं खमासमणेहिं बहुवेलं सज्झायं बइसणं च संदिसाविय, खमासमणदुगेण 'सज्झाउ पाठविसह, सज्झाय-१० पाठवणत्थु काउस्सग्गु करिसह'। तहेव कालमंडलं संदिसाविसह, कालमंडलं करिसह'। तओ खमासमणतिगेण 'संघट्टउ संदिसाविसह संघट्टउ पडिगाहिसह, संघट्टपडिगाहणत्थु काउस्सग्गु करिसह'। केसु वि आउत्तवाणयं च एमेव संदिसावेंति। तओ खमासमणदुगेण 'सज्झाउ पडिक्कमिसह, सज्झायपडिक्कमणत्थु काउस्सग्गु करिसह। तहेव पाभाइकालु पडिक्कमिसह, पाभाइयकालपडिक्कमणत्थु काउस्सग्गु करिसह'। ततो तववंदणयं दिंति। गुरुणा सुहतवो पुच्छियव्वो। तओ मुहपोत्तिं पडिलेहिय, खमासमण-१५ तिगेण 'संघट्टउ संदिसावउं, संघट्टउ पडिगाहउं, संघट्टापडिगाहणत्थु काउस्सग्गु करउं। संघट्टापडिगाहणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएणं'मिच्चाइ। नमोक्कारचिंतणं भणणं च। एवं आउत्तवाणयं पि घेप्पइ। पुणो खमासमणं दाउं 'त्राबा त्रउया सीसा कासा सूना रूपा हाड चाम रुहिर लोह नह दंत वाल 'सूकीसान लादि[2]' इच्चाइ ओहट्टावणियं करेमि काउस्सग्गं'। नवकारचिंतणं भणणं च।

§ ४१ जोगसमत्तीए जया उत्तरंति तया सिरसि गंधक्खेवपुव्वं वायणायरिओ योगनिक्खेवावणियं देवे २० वंदाविय, मुत्तिं पडिलेहाविय, वंदणं दाविय, पच्चक्खाणं कारिय, विगइउलियावणियं अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं करेइ। अन्ने भणंति दुवालसावत्तवंदणं दाउं, खमासमणेण 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह जोगे निक्खिवह, बीए जोगनिक्खेवावणियं काउस्सग्गं करावेह'त्ति भणित्ता,—जोगनिक्खेवावणियं करेमि काउस्सग्गं। नवकारचिंतणं भणणं च। तओ 'जोगनिक्खेवावणियं चेइयाइं वंदावेह'त्ति खमासमणेण भणित्ता, सक्कत्थयं कहिंति। पुणो वंदणं दाउं, भणंति—'पवेयणं पवेयह। पडिपुण्णा विगइ, पारणउं करह'। गुरू २५ भणइ—'करेह'त्ति। तओ विगईपच्चक्खाणं काउं, वंदिय गुरुणो पाए संवाहिय, जोगे वहंतेहिं अविही आसायणं च मण-वयण-काएहिं मिच्छादुक्कडेण खमाविय आहारायणियाए सव्वे वंदंति।

॥ जोगनिक्खेवणविही ॥ २३ ॥

§ ४२ राइमपडिक्कमणे जोगवाहिणो पइदिणं नवकारसहियं पच्चक्खंति। जोगारंभदिणादारब्भ छम्मासं जाव कालं न उवहम्मंति, तत्तियाणि दिणाणि जाव संघट्टा कीरंति, उवरिं न मुज्झंति। एस पगारो अणा-३० गाढेसु आयाराइसु नेओ। चित्तासोयसुद्धपक्खे वि आगाढा गणिजोगा न निक्खिप्पंति। कप्पतिप्पकिरिया य कीरइ। सज्झाओ पुण निक्खिप्पइ। छम्मासियकप्पो य वइसाह-कत्तियबहुलपाडिवयाउड्ढं उत्तारिज्जइ। अन्नं च रयणीए पढम-चरमजामेसु जागरणं बाल्वुड्ढाईणं सामन्नं। जोगिणा उण सव्ववेलं अप्पणिद्देण होयव्वं। विसेसओ दिवा हास-कंदप्प-विगहा-कलहरहिएण य होयव्वं। एगागिणा सया वि हत्थसया बाहिं न गंतव्वं, विमुय[1] जोगवाहिणा। अह जाइ अणाभोगेण आयामं से पच्छित्तं। जं च हत्थे भत्तं पाणं वा

1 विद्या टि°। 2 A 'लद'।

त उवहम्मइ । आगाढजोगवाही सीवण-तुन्नण-पीसण-लेवणाइ न करेइ । उभयपोरिसीसु सुत्तत्थाइ परियट्टेइ । वहिज्जमाणसुय मुत्तूण अपुव्वपढण न करेइ । पुव्वपढिय न वीसारेइ । पत्ताइउवगरण सया उववत्तो नियनियकाले पडिलेहेइ । अप्पसद्देण वयइ न दड्डुरेण । कामकोहाइनिग्गहो कायव्वो । तहा कप्पइ भत्त वा पाण वा अब्भितर सघट्ट, वेइवाहिँ गय न कप्पइ । [1]उग्गुडिओ तुयट्टो विगहाओ वा असंखड व करेमाणो संघट्टेइ उस्सघट्ट, उग्गुडिओ भूमीए मेलइ । परिसाडि वा भत्तपाणे छुहेइ । तिन्नि भायणाइ उवरिं ठवेइ । उवविट्ठस्स उब्भो भत्तपाण अप्पेइ । सघट्टे वा पयलाइ, उस्सघट्ट वल्लीसंघट्ट भत्त पाण च न कप्पइ । भत्त पाण वा मज्झपविट्ठकरगुलिचउक्कगहिय तिप्पणय-तुनगाइय, मज्झपविट्ठकरगुट्ठगहिय तुनगाइपत्त च न उस्संघट्टइ । एयविवरीय उस्सघट्टइ । उग्गुडिओ भूमिट्ठिय सघट्टइ उस्सघट्ट[2] ।

§ ४३ सपय गणिजोगविहाणे कप्पाकप्पविही भण्णइ – सा य जोगिपरिण्णेया जोगि-सावयपरिण्णेया य । तत्थ जोगिपरिण्णेया जहा – पिंडवायहिडयसघाडयछित्ते परोप्पर न उवहम्मइ । सीवण-तुन्नणाइय वाणायरियाणुन्नाए करेइ । जोगवाहिणो सण्णा असज्झाइय च रुहिराइ न उवहणइ । ओल्ली सण्णा[3] मणुय-साण-मज्जाराईण, आमिसासीण पक्खीण च । अतिणभक्खिणो *तन्नयस्स य गय-हय-खराण य छिक्कासमाणी[4] उवहणइ, न सुक्का । उल्ल चम्म हड्ड च । गोसाले अणुण्णाए वालसुक्कचम्मट्ठिसुक्कसन्नाओ वि न उवहणति । तेसिं अणुन्नघायट्ठा पवेयणासमए काउस्सग्गो कीरइ । अट्ठगुलाहियप्पमाणो दिट्ठो मोयणाइसु वालो उवहणइ । तहा गिहत्थीए बालए थण पियते सुक्के जइ थणे दुद्ध न दीसइ, तो कप्पिय होइ । एव गोपमुहेसु वि । सन्निहि-आहाकम्म-मणुय-तिरियपचिंदियसघट्टे उवहम्मइ । लेवाडयपरिवासे पत्ते पत्ताबधे वा भत्त पाण च उवहम्मइ । आहाकम्मिओवहए पत्तगाइ चउकप्पाइ अन्नत्थ तिकप्पाइ । जइ कप्पिएण भाण हत्थाइकप्पिया तो उल्लेणावि हत्थमत्तएण घिप्पइ । अह पुण [5]मूलमडलियाण पाणएण ताहे सुक्केसु काउस्सग्गे कए घिप्पइ । [6]वायणारियाणुण्णाए पढण-सुणण-वक्खाण-धम्मकहाओ कीरति न समईए । परियट्टण अणुप्पेहा य जहाजोग कीरइ । पढमपोरिसिमज्झे पवेयणे पनेइए सघट्टाइए य सदिसाविए कप्पइ असणाइपडिगाहित्तए, न उण उवरिं । कप्पइ निव्विगइयघयतिलेहिं कारणे पायगायाइ अब्भगित्तए वायणायरियससट्टेण य ॥

इयाणि जोगिसावयपरिण्णेया जहा – आ छट्ठजोगाओ दससु विगईसु, छट्ठजोगे पुण लग्गे पक्कन्नवज्जासु नवसु विगईसु, छिवणदाणलिवणाइवावडहत्थो उवहम्मइ । तेसिं जइ अवयव पि छिवइ तो भत्त पाण वा ज हत्थे त उवहम्मइ । विगइससट्ठ ति परपर न उवहणइ । मयगभत्त न कप्पइ । तिल्लघयाइअब्भगिया इत्थी पुरिसो वा ज सघट्टेइ सो उवहम्मइ । तद्दिणनवणीयमोइयकज्जल छिवती तेणजियनयणा वा दिंती उवहम्मइ, न सेसदिवसेसु । अन्न पि अकप्पिएण दव्वेण मीसिय छिक्क वा बीयदिणे न उवहणइ । ण्हाया जइ केसेसु असुक्केसु असणाइ देइ तो उवहम्मइ । तद्दिणतिल्लाइमोइयकुकुमपिंजरियसरीरा य उवहणइ । दीवओ वि ज पुण थिर कट्ठकवाडाइय अकप्पिएण दव्वेण छिक्क त न उवहणइ । जइ त दव्व न छिवइ थिरकट्ठकवाडाइ जोगवाहिणा छिक्काइ न उवहणति । उत्तिविडिठियअकप्पवत्थुभायणछिक्क सत्तपरपरमवि अणायरिय । एगे तिपरपर गिण्हति, अन्ने दुपरपर पि । एव तिरिच्छथलीठिएसु वि परोप्परसंनद्धेसु दायगेसु वि तहा कप्पइ । कक्कव-इक्खुरस-गुडपाय-गुलवाणीय-खड-सक्करवाट-खीरिदुद्धकजिय-दुद्धसाडिया-ककरियग-मोरिंडग-गुलहाणा । दुद्धसाडिया नाम दक्खदुद्धरद्धा । मोरिंडगाणि

1 A उग्गुड्डओ । 2 C भूमिट्ठिय सघट्ट । 3 C उल्ला सण्णा । * C स्तन्यपायिन । 4 A 'हट्ठासदी' । 5 B मूलि° । 6 B वाणायरि° । 7 A लियणाइ°, C लिंवणाइ° ।

कक्करियविसेसा। तहा मोइय कुल्लरि[1] चुप्पडिय मडग मोइय सत्तुय दहिकरंबय घोल मिहरणि तिलवट्टिय पगरणससट्ट माइसराव एयाणि वासियाणि कप्पंति। वीसंदण भरोलग नदिह्लि नालिएर तिलमाइ गिहत्थेहिं अप्पणो कए कय कप्पइ। वीसंदण ताविययहडियाए वेसणाइकय। भरोलगाणि घयलेट्ठकयमुट्ठियाणि। अन्न पि [2]खुड्डहडियढक्खा, दक्खाराणय, अनिलियावाणय नालिएरवाणय-सुठिमिरियमाइय कप्पइ। तहा [3]दहिकयआमुरी, धूविय इड्डुरी [4]मोक्कलिपमुह तद्दिणे उवहणइ, बीयदिणे कप्पइ। छट्ठजोगे एगे संघट्टइय तक्कतीमण भज्जियाइय च कप्पइ, न आरओ कप्पइ। अवधाएण असहुस्स तिण्ह धाणाणोवरि ज निभ्भजण चउत्थधाणो गाहिम, अन्नघयाइअपक्खेवे पुव्विल्लघयभरियतावियाए बीयघाणपक्क पि ओगाहिम कप्पइ। जइ एगेण चेव पूएण ताविया पूरिज्जइ। उद्देसाइ, जइ साहुणीहिं सह तो चोलपट्टसंजुयाण, अट अन्नहा, तो अग्गोयरेणावि कप्पइ। कप्पइ साहुणीण उद्देसाइ पडिक्कमण वा काउ सया ओढियपरिहियाण। कप्पइ दुगाउयद्धाण भिक्खायरियाए अडित्तए। कप्पइ बत्तीस कवला आहार आहारित्तए। कप्पंति तिन्नि पाउरणा पाउरित्तए। असहुस्स चत्तारि पच जाव समाही। कप्पइ दिया वा राओ वा आयावेउ। एव सव्वो वि जो जसि कप्पे विही उवहयाणुवहय कप्पा कप्पाइ जहा दिट्ठो गीयत्थेहिं, सो तहेव सक्कारहिएहिं वायणायरियाणुन्नाए कायव्वो, न समईए। अन्नहाकरणे बहुदोसप्पसगाओ। तथाहि–

> उम्माय व लभिज्जा रोगायक व पाउणइ दीह।
> केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ वा वि भसिज्जा॥ १॥
> इह लोए फलमेय परलोए फल न दिंति विज्जाओ।
> आसायणा सुयस्स य कुवइ दीहं च ससार॥ २॥
> ज जह जिणेहिं भणिय केवलनाणेण तत्तओ नाउं।
> तस्सन्नहाविहाणे अणाभंगो महापावो॥ ३॥

एसो य उवहयाणुवहयविही भत्तपाणनिमित्त आउत्तवाणयकाउस्सग्गे कए दट्ठव्वो, न सामन्नेण। विगइवावहहत्थाइदसणेण, तहा अजियनयणाए पुछिए घोयल्लहिए वि जेहिं सा दिट्ठा तेसिं तीए हत्थेण न कप्पइ। जेसिं पुण न दिट्ठा ते घूयल्लहिए गेण्हंति, जइ दिट्ठपुव्वजोगीहिं न साहिय। अओ चेव परोप्परं असुगा उवहय त्ति न साहियव्व। एव भत्त पाण च इमाए विहीए अडित्ता, इरिय पडिक्कमिय, गमणागमण-मालोइत्ता, भत्तपाण च जहागहियविहिणा तओ पाराविता, सन्निहियसाहुणो अणुण्णवित्ता, मुहपोत्तियाए मुह पडिलेहित्ता, उवउत्ता असुरसुर अचवचव अदुयमविलंबिय अपरिसाडिं अक्सरक्क अकुरुडुकमुरुडुक[5] इच्चाइविहिणा अरत्तदुट्ठा जेमंति। इत्थ य पमाय अन्नाणाइणा अन्नहाणुट्ठाणे जोगवाहिणो पच्छित्त, उवरिं तवाइयारपच्छित्ते भणीहामो।

> एव जोगविहाण सखेवेण तु तुम्हमक्खाय।
> जं च न इत्थ उ भणिय गीयायरणाइ तं नेय॥

*

§ ४४ संपय जो जत्थ तवोविही सो भण्णइ–

> आवस्सयंमि एगो सुयक्खंधो छच्च होंति अज्झयणा।
> दोण्णि दिणा सुयक्खंधे सवे वि य होंति अट्ठदिणा॥ १॥

सव्वगसुयक्खधोद्देसाणुन्नासु नदी हवइ। पढमदिणे सुयक्खधस्स उद्देसो पढमज्झयणस्स य उद्देस-समुद्देसाणुण्णाओ। बीयाइदिणेसु बीयाइअज्झयणा। सत्तमदिणे सुयक्खधस्स समुद्देसो, अट्ठमदिणे

1 B C इडुरि। 2 A खुड्डहडिय। 3 A दहिकर°। 4 पमुह°। 5 A मरुडक।

तस्सेव अणुण्णा । सुयक्खधस्स अगस्स य उद्देसे समुद्देसे अणुण्णाए य आयबिल । अन्नदिणेसु निव्वीय । एव सव्वजोगेसु नेय, भगवई–पण्हावागरण–महानिसीहवज्ज । अन्नसामायारीसु पुण निव्वियतरियाणि आयबिलाणि चेव कीरति । जहा निसीहे असहू बालाई निव्वीयदिणे पणगेणावि णिव्वाहिज्जति, एव दसकालिए वि ।

छच्च अज्झयणा पुण–सामाइय १, चउवीसत्थओ २, वदण ३, पडिक्कमण ४, काउस्सग्गो ५, पच्चक्खाण ६ ति । ओहनिज्जुत्ती आवस्सय चेव अणुप्पविट्ठा अओ न तीए पुढो उवहाण ।

§ ४५ दसयालियम्मि एगो सुयक्खधो बारसेव अज्झयणा। पचम-नवमे दो-चउउद्देसा दिवसपन्नरस ॥१॥ ऐगेगमज्झयणमेगेगदिणेण वच्चइ । नवर पचम अज्झयणमुद्दिसिय पढम-बीयउद्देसया उद्दिस्सति । तओ ते अज्झयण च समुद्दिसइ । तओ ते अज्झयण च अणुण्णवइ । एव नवम दोहिं दिणेहिं दो दो उद्देसा, दिणे जति त्ति काउ दो दिणा सुयक्खधे । एव पन्नरस ।

बारस अज्झयणाइ इमाइ, जहा–दुमपुप्फिया १, सामन्नपुव्विया २, खुड्डियायारकहा ३, छज्जीवणिय धम्मपन्नत्ती वा ४, पिंडेसणा ५, इत्थ पिंडनिज्जुत्ती ओयरद । धम्मत्थकामज्झयण–महल्लियायारकहा वा ६, वक्कसुद्धी ७, आयारप्पणिही ८, विणयसमाही ९, सभिक्खु अज्झयण १०, रइवक्का ११, चूलिया १२ ।

–दसवेयालियजोगविही ।

§ ४६ उत्तरज्झयणाण एगो सुयक्खधो, छत्तीस अज्झयणाणि, एगेगदिणेण एगेग जाइ । नवर चउत्थमज्झयणमसखय पउणपहरमज्झे जइ उट्ठवेइ, तओ तम्मि चेव दिवसे निव्विएण अणुण्णवइ । अह न उट्ठवेइ, तओ तम्मि दिणे अबिल काउ, बीयदिणे अबिलेण अणुण्णवइ । एव दोहि दिणेहि आयबिलेहि य असखय जाइ । केई भणति जइ पढमपोरिसीए उट्ठवेइ तो निव्विएण अणुजाणिज्जइ, अह न, तो आयबिल कारिज्जइ । तओ जइ पच्छिमपोरिसीए उट्ठावेइ, तो वि तम्मि चेव दिणे अणुजाणिज्जइ । जइ पुण बीयदिणे पढमपोरिसीमज्झे तो वि तम्मि दिणे निव्विएण अणुजाणिज्जइ । जइ न, तो आयबिलदुगेण । त चेम–

असखय जीविय मा पमायए जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एव वियाणाहि जणे पमत्ते कन्नु विहिसा अजया गहिति ॥ १ ॥
जे पावकम्मेहिं धणं मणूसा समाययती अमइ गहाय ।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे वेराणुबद्धा नरय उवेति ॥ २ ॥
तेणे जहा सधिमुहे गहीए सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एव पया पिच्च इह च लोए कडाण कम्माण न मोक्खु अत्थि ॥ ३ ॥
ससारमावन्नपरस्स अट्ठा साहारण ज च करेइ कम्म ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले न बधवा बंधवय उवेंति ॥ ४ ॥
वित्तेण ताण न लभे पमत्ते इमंमि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पणट्ठे व अणंतमोहे नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ५ ॥
सुत्तेसु आवी पडिबुद्धजीवी न वीससे पंडिय आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अबल सरीर भारुडपक्खीव चरऽप्पमत्तो ॥ ६ ॥

चरे पयाईं परिसंकमाणो जं किंचि पासं इह मन्नमाणो।
लाभंतरे जीविय वूहइत्ता पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥ ७ ॥

छंदं निरोहेण उवेइ मुक्खं आसे जहा सिक्खियवम्मधारी।
पुव्वाइं वासाइं चरऽप्पमत्तो तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मुक्खं ॥ ८ ॥

स पुव्वमेव न लभेज्ज पच्छा एसोवमा सासयवाइयाणं।
विसीयई सिढिले आउयंमि कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच लोगं समया महेसी आयाणरक्खी चरअप्पमत्तो ॥ १० ॥

मुहुं मुहुं मोहगुणा जयंतं अणेगरूवा समणं चरंतं।
फासा फुसंती असमंजसं च न तेसु भिक्खू मणसा पउसे ॥ ११ ॥

मंदा य फासा बहुलोभणिज्जा तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा।
रक्खिज्ज कोहं विणइज्ज माणं मायं न सेवे पयहिज्ज लोहं ॥ १२ ॥

जे संखया तुच्छपरप्पवाई ते पिज्ज दोसाणुगया परज्झा।
एए अहम्मु त्ति दुगुंछमाणो कंखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥ १३ ॥—त्तिबेमि ॥

समत्तेसु अज्झयणेसु छत्तीसाए सत्तत्तीसाए वा दिणेहिं एगायत्तिलेग सुयक्खधो समुद्दिसइ। बीएण नंदीए अणुजाणिज्जइ। एवं अट्ठत्तीसा एगूणचत्ता वा दिणाइं हवंति। अहवा जाव चोद्दस ताव एगसराणि, सेसाणि २२ एगेगदिणे दो दो उद्दिसिज्जंति, समुद्दिसिज्जंति, अणुजाणिज्जंति। दो दिणा सुयक्खंधे। एवं सत्तावीसं अट्ठावीसं वा दिणाणि होंति। आगाढजोगा एए। एएसु संघट्टिय-मोइय-चोट्टियाइ च तद्दिवसिय न कप्पइ। तेसिं नामाणि जहा—विणयसुय १, परीसहा २, चाउरंगिज्ज ३, असंखय पमायप्पमाय वा ४, अकाममरणिज्ज ५, खुड्डागणियंठिज्ज ६, एलइज्ज ७, काविलिज्ज ८, नमिपव्वज्जा ९, दुमपत्तय १०, बहुस्सुयपुज्ज ११, हरिएसिज्ज १२, चित्तसंभूइज्ज १३, उसुयारिज्ज १४, सभिक्खु अज्झयण १५, बंभचेरसमाहिट्ठाण १६, पावसमणिज्ज १७, संजइज्ज १८, मियापुत्तिज्ज १९, महानियंठिज्ज २०, समुद्दपालिज्ज २१, रहनेमिज्ज २२, केसिगोयमिज्ज २३, समिईओ २४, जन्नइज्ज २५, सामायारी २६, खुलंकिज्ज २७, मोक्खमग्गगई २८, सम्मत्तपरक्कम २९, तवमग्गइज्ज ३०, चरणविही ३१, पमायठाण ३२, कम्मपयडी ३३, लेसज्झयण ३४, अणगारमग्गो ३५, जीवाजीवविभत्ती ३६। छत्तीसं उत्तरज्झयणाणि।—उत्तरज्झयणजोगविही।

*

§ ४७ सपय पढममायारंग नंदीए उद्दिसिय अणंतरं पढमसुयक्खधो उद्दिसिज्जइ। पढम अगउद्देसका उस्सग्ग काऊण तओ सुयक्खधउद्देसकाउस्सग्गो कायव्वो। तओ तस्स पढममज्झयणं, पच्छा तस्स पढमबीयउद्देसया उद्दिसिज्जंति समुद्दिसिज्जंति अणुजाणिज्जंति य। एवं एगदिणेण एगकालेण दो उद्देसगा जंति। एवं तइय-चउत्था वि पंचम-छट्ठा वि, सत्तमउद्देसओ एगकालेण उद्दिसिज्जइ समुद्दिसिज्जइ वा। तओ अज्झयणं समुद्दिसिज्जइ, तओ उद्देसओ अज्झयणं च अणुजाणिज्जइ। एवं पढमज्झयणे दिण ४, काल ४। एवं जत्थ अज्झयणे समा उद्देसगा तत्थेगेगदिणेण एगेगकालेण य दो दो वच्चंति। विसमुद्देस

एसु चरिमो उद्देसओ अज्झयणेण सह एगदिणेण एगकालेण य वच्चइ। एव सव्वगसुयक्खधज्झयणेसु दट्ठव्व। बीए उद्देसा ६, दिणा ३। तइए उद्देसा ४, दिणा २। चउत्थए उद्देसा ४, दिणा २। पचमे उद्देसा ६, दिणा ३। छट्ठे उद्देसा ५, दिणा ३। सत्तमे उद्देसा ८, दिणा ४। अट्ठमे उद्देसा ४, दिणा २। नवमज्झयण वोच्छिन्न। त च महापरिण्णा—इओ किर आगासगामिणी विज्जा **वइरसामिणा** उद्धरिया आसि त्ति सातसयत्तणेण वोच्छिन्न। निज्जुत्तिमित्त चिट्ठइ। **सीलकायरिय**मएण पुण एय अट्ठम, विमुक्खज्झयण सत्तम, उवहाणसुय नवम ति। एएसिं नामाणि जहा—सत्थपरिण्णा १, लोगविजओ २, सीओसणिज्ज ३, सम्मत्त ४, आवती, लोगसार वा ५, धूय ६, विमोहो ७, उवहाणसुय ८, महापरिण्णा ९। सुयक्खधो एगकालेण एगायबिलेण वच्चइ। तम्मि चेव दिणे समुद्दिसिय नदीए अणुजाणिज्जइ। एव बभचेरसुयक्खधे दिणा २४। एव अन्नत्थ वि जत्थ दो सुयक्खधा तत्थेगकालेण एगायबिलेण य समुद्दिसिज्जइ, नदीए अणुजाणिज्जइ य। जत्थ पुण एगो सुयक्खधो सो एगकालेण एगायबिलेण समुद्दिसिज्जइ, बीयदिणे बीय- कालेण आयबिलेण य नदीए अणुजाणिज्जइ।

इयाणिं आयारगबीयसुयक्खध नदीए उद्दिसिय पढमज्झयणमुद्दिसिज्जइ। तम्मि उद्देसगा ११। एगेग- दिणेण एगेगकालेण य दो दो जति। चरिमुद्देसओ पुव्व व अज्झयणेण सम दिणा ६। बीए उद्देसा ३, दिणा २। तइए उद्देसा ३, दिणा २। चउत्थे उद्देसा २, दिण १। पंचमे उद्देसा २, दिण १। छट्ठे उद्देसा २, दिण १। सत्तमे उद्देसा २, दिण १। अणतर सत्तसत्तिक्कया नामज्झयणा एगसरा आउत्तवाणएण पुव्वुत्तभगवईविहाणट्ठजोगा लग्गविहीए एक्केक्केण दिणेण वच्चति। एव चोद्दस-पनरसमे दिणमेग, सोलसमे दिणमेग। एएसिं नामाणि जहा—पिंडेसणा १, सेज्जा २, इरिया ३, भासाजाय ४, वत्थेसणा ५, पाएसणा ६, उग्गहपडिमा ७, एएहिं सत्तहि अज्झयणेहि पढमा चूला। तओ सत्तसत्तिक्कएहिं बीया चूला। तत्थ पढम ठाणसत्तिक्कय १, बीय निसीहियासत्तिक्कय २, तइय उच्चारपासवणसत्तिक्कय ३, चउत्थ सद्दसत्तिक्कय ४, पचम रूवसत्तिक्कय ५, छट्ठ परकिरियासत्तिक्किय ६, सत्तम अन्नोन्नकिरियासत्तिक्कय ७। एएसु च उद्देसगाभावाओ इक्कसरएसो।

ठाण-निसीहिय-उच्चारपासवण-सद्द-रूव-परकिरिया।
अन्नोन्नकिरिया वि य सत्तिक्कयसत्तगं कमेण*॥

तओ भावणज्झयण तइया चूला। तओ विमुत्तिअज्झयण चउत्थी चूला। एव बीयसुयक्खधे आयारगे अज्झयणा १६, उद्देसा २५। पचमचूला निसीहज्झयण सुयक्खधसमुद्देसाणुण्णाए दिणमेग। एव बीय- सुयक्खधे दिणा २४। अगसमुद्देसे दिण १। अगाणुण्णाए दिण १। एवमायारंगे दिणा ५०। सव्वोद्देस- गपरिमाणमिण—

सत्तय १, छ २, चउ ३, चउरो ४, छ ५, पच ६, अट्ठेव ७ होंति चउरो य ८।
—इति पढमसुयक्खधस्स।

एक्कारस १, दोसु तिगं ३, चउसुं दो दो ७, नविक्कसरा १६॥ १॥
—इति बीयसुयक्खधस्स। **आयारगविही।**

§४८ बीय सूयगडग नदीए उद्दिसिय पढमसुयक्खधो उद्दिसिज्जइ, तओ पढमज्झयण। तम्मि उद्देसा ४, दिणा २। बीए उद्देसा ३, दिणा २। तइए उद्देसा ४, दिणा २। चउत्थे उद्देसा २, दिण १। पचमे

* इयं गाथा नास्ति C आदर्शे

चरे पयाइं परिसकमाणो जं किंचि पासं इह मन्नमाणो ।
लाभंतरे जीविय बूहइत्ता पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥ ७ ॥

छंद निरोहेण उवेइ मुक्खं आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरऽप्पमत्तो तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मुक्खं ॥ ८ ॥

स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा एसोवमा सासयवाइयाणं ।
विसीयई सिढिले आउयंमि कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच लोगं समया महेसी आयाणरक्खी चरअप्पमत्तो ॥ १० ॥

मुहुं मुहुं मोहगुणा जयंतं अणेगरूवा समणं चरंतं ।
फासा फुसंती असमंजसं च न तेसु भिक्खू मणसा पउसे ॥ ११ ॥

मंदा य फासा बहुलोभणिज्जा तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
रक्खिज्ज कोहं विणइज्ज माणं मायं न सेवे पयहिज्ज लोहं ॥ १२ ॥

जे संखया तुच्छपरप्पवाई ते पिज्ज दोसाणुगया परज्झा ।
एए अहम्मु त्ति दुगुंछमाणो कखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥ १३ ॥—त्तिबेमि ॥

समत्तेसु अज्झयणेसु छत्तीसाए सत्तत्तीसाए वा दिणेहिं एगायबिलेण सुयक्खंधो समुद्दिसइ । बीएण नंदीए अणुजाणिज्जइ । एवं अट्ठत्तीसा एगूणचत्ता वा दिणाइं हवंति । अहवा जाव चोद्दस ताव एगसराणि, सेसाणि २२ एगेगदिणे दो दो उद्दिसिज्जंति, समुद्दिसिज्जंति, अणुजाणिज्जंति । दो दिणा सुयक्खंधे । एवं सत्तावीसं अट्ठावीसं वा दिणाणि होंति । आगाढजोगा एए । एएसु सघूविय-मोइय-चोढ्ढियाइ च तद्दिवसियं न कप्पइ । तेसिं नामाणि जहा— विणयसुयं १, परीसहा २, चाउरंगिज्जं ३, असंखयं पमायप्पमायं वा ४, अकाममरणिज्जं ५, खुड्डागणियंठिज्जं ६, एलइज्जं ७, काविलिज्जं ८, नमिपवज्जा ९, दुमपत्तयं १०, बहुस्सुयपुज्जं ११, हरिएसिज्जं १२, चित्तसंभूइज्जं १३, उसुयारिज्जं १४, सभिक्खु अज्झयणं १५, बंभचेरसमाहिठ्ठाणं १६, पावसमणिज्जं १७, संजइज्जं १८, मियापुत्तिज्जं १९, महानियंठिज्जं २०, समुद्दपालिज्जं २१, रहनेमिज्जं २२, केसिगोयमिज्जं २३, समिईओ २४, जन्नइज्जं २५, सामायारी २६, खुलंकिज्जं २७, मोक्खमग्गगई २८, सम्मत्तपरक्कमं २९, तवमग्गइज्जं ३०, चरणविही ३१, पमायठाणं ३२, कम्मपयडी ३३, लेसज्झयणं ३४, अणगारमग्गो ३५, जीवाजीवविभत्ती ३६ । छत्तीसं उत्तरज्झयणाणि ।—उत्तरज्झयणजोगविही ।

*

§ ८७ सपयं पढममायारंगं नंदीए उद्दिसिय अणंतरं पढमसुयक्खंधो उद्दिसिज्जइ । पढमं अंगउद्देसकाउस्सग्गं काऊण तओ सुयक्खंधउद्देसकाउस्सग्गो कायव्वो । तओ तस्स पढममज्झयणं, पच्छा तस्स पढमबीयउद्देसया उद्दिसिज्जंति समुद्दिसिज्जंति अणुजाणिज्जंति य । एवं एगदिणेण एगकालेण दो उद्देसगा जंति । एवं तइय-चउत्था वि पंचम-छट्ठा वि, सत्तमउद्देसओ एगकालेण उद्दिसिज्जइ समुद्दिसिज्जइ वा । तओ अज्झयणं समुद्दिसिज्जइ, तओ उद्देसओ अज्झयणं च अणुजाणिज्जइ । एवं पढमज्झयणे दिण ४, काल ४ । एवं जंमि अज्झयणे समा उद्देसया तत्थेगेगदिणेण एगेगकालेण य दो दो वच्चंति । विसमुद्देस

§ ५३. इयाणिं भगवईए विवाहपन्नत्तीए पचमगस्स जोगविहाणं[1]—गणिजोगा छहि मासेहि छहि दिवसेहिं आउत्तवाणएण वच्चंति । तत्थ सुयक्खधो नत्थि । अज्झयणाणि य सयनामाणि एकचालीस । अग नदीए उद्दिसिय पढमसय उद्दिसिज्जइ । तत्थ उद्देसा १०, कालेण दो दो वच्चति । एगतरायामेण दिणेहि ५, कालेहिं ५ पढमसय जाइ । एगतरायाम जाव चमरो । बीयसए उद्देसा १०, नवर पढमुद्देसओ खदओ । तस्स अनिलेण उद्देसो समुद्देसो य कीरइ । तओ जइ उट्ठवेइ तो तमि चेव दिणे तेण चेव कालेण अणुजाणिय आयाम कारिज्जइ । अह न उट्ठिओ, तो बीयदिणे बीयकालेण बीयअनिलेण अणुजाणिज्जइ । उट्ठिओ त्ति पाढेणागओ । अणुण्णाए य तमि अविले पविट्ठे अगओ काउस्सग्गाइअणुट्ठाण कीरइ । एत्थ[2] पच दत्तीओ सपाणभोयणाओ भवति । सेसा दो दो उद्देसा दिणे दिणे जति । जाव नवमुद्देसो । एगमि पचमे दिणे दसमो सय च । सव्वे दिणा ७, काला ७ । तइयसए वि उद्देसा १०, नवर पढमदिवसे पढमकालेण पढमुद्देसय मोयानामगमणुजाणिय, बीयकालेण चमरस्स उद्देसो समुद्देसो य कीरइ । सेस तओ जइ उट्ठवेइ इच्चाइ जहा खदए । दत्तीओ वि सपाणभोयणाओ पच । केई चत्तारि भणति । एव चमरे अणुण्णाए पनरसहि कालेहिं पनरसहि दिणेहिं य गएहि छट्ठजोगो लग्गइ । छट्ठजोगअणुजाणावणत्थ ओगाहिमविगइविसज्जणत्थ काउस्सग्गो कीरइ, नमोकारचिंतण भणण च । पचनिव्वियाणि छट्ठ निरुद्ध ४ । अन्ने छन्निव्वियाणि सत्तम निरुद्ध ति भणति[3] । तम्मि लग्गे सधूइयतक्क—तीमण—वजणाइ तद्दिणकय पि कप्पइ । तओ पुव्व एयमकप्पमासि । ओगाहिमविगई वि न उवहणइ । जहा दिट्ठिवाए मोयगो गुरुमाइकए आणेउ पि कप्पइ । सेसा अट्ठ उद्देसा चउहि दिवसेहिं सएणसम वच्चति । सव्वे दिणा ७, काला ७ । चउत्थसए वि उद्देसा १०, दोहि दिणेहि वच्चति । पढमदिणे ८, चत्तारि चत्तारि आइल्ला अतिल्ल त्ति काऊण उद्दिसिज्जति, समुद्दिसिज्जति, अणुन्नविज्जति । बीयदिणे दो सएण सम वच्चति । दिणा २, काला २ । पचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठमसएसु दस दस उद्देसया दो दो दिणे दिणे जति । चत्तारि वि बीसाए दिणेहि कालेहि य वच्चति । अट्ठसु सएसु काला ४१ । नवम दसम एगारस बारस तेरस चउदसम च एयाइ [4]छस्सयाइ एकेक्ककालेण वच्चति । नवर नवमसयमुद्दिसिय तस्सुद्देसा ३४ दुहाकाउ (१७+१७) पढममाइल्ला उद्दिसिज्जति, तओ अतिल्ला सय च समुद्दिसिज्जति । तओ आइल्ला अतिल्ला सय च अणुन्नविज्जति । एव सए सए नव नव काउस्सग्गा कीरति । एव दसमसए वि उद्देसा ३४ दुहा (१७+१७), एकारसमे उद्देसा १२ दुहा (६+६), बारसमे तेरसमे चउदसमे य दस दस पत्तेय पच पच दुहा कज्जति । पनरसम गोसालसयमेगसर पढमदिणे उद्दिसिज्जइ । तओ जइ उट्ठिओ तो तम्मि चेव दिणे तेणेव कालेण आयनिलेण य अणुजाणिज्जइ । अह न उट्ठिओ, तो [5]बीयदिणे बीयकालेण बीयअविलेण अणुजाणिज्जइ । [6]इत्थ दत्तीओ तिन्नि तिन्नि सपाणभोयणाओ भवति । गोसाले अणुन्नाए अट्ठमजोगो लग्गइ । तस्स अणुजाणावणत्थ काउस्सग्गो कीरइ । सत्त निव्वियाणि अट्ठम निरुद्ध । अण्णे अट्ठ निव्वियाणि नवम निरुद्ध । सेसाणि निव्वियाणि चि । गोसालयसए तेयनिसग्गावरनामगे अणुण्णाए निव्वियदिणे नदिमाईण वदणय-खमासमण-काउस्सग्गपुव्व उद्देसाई कीरति । ते य इमे—नदि १, अणुओग २, देविंद ३, तदुल ४, चदवेज्झ ५, गणिविज्जा ६, मरण ७, ज्झाणविभत्ती ८, आउर ९, महा-पचक्खाण च १० । गोसाले जो[7] जइ दत्तीहिं अलद्धियाहिं उवहओ ताहे उवहओ चेव । अह वहवे जोगवाहिणो ताहे ताण सनभिणीओ घेप्पति । गोसालाणुण्ण जाव एगूणवन्नास काला ४९ हवति । तदुवरि सेसाणि छव्वीससयाणि एक्केक्केण कालेण वच्चति । एएहिं २६ सह ७५ भवति । एगेणग समुद्दिसिज्जइ । बीएण नदीए अणुजाणिज्जइ । गणिसद्दपज्जत नाम च ठाविज्जइ । अगस्स समुद्देसे अणुण्णाए य अबिल ।

1 B विहीण । 2 B इत्थ । 3 नास्ति A । 4 B C छच्च सयाइ । 5 नास्तिपदमेतत् A । 6 B नास्ति 'इत्थ' । 7 नास्ति 'जो' A C ।

उद्देसा २, दिण १। इओणंतरमेगारसज्झयणाणि एगसराणि एगेगदिणेण एगकालेण जंति। पढमसुयक्खंध-ज्झयणनामाणि जहा—समओ १, वेयालीय २, उवसग्गपरिण्णा ३, थीपरिण्णा ४, निरयविभत्ती ५, वीरत्थओ ६, कुसीलपरिभासा ७, वीरिय ८, धम्मो ९, समाही १०, मग्गो ११, समोसरण १२, अहतह १३, गंथो १४, जमईय १५, गाहा १६। सुयक्खंधसमुद्देसाणुण्णाए दिणमेगं। सव्वे दिणा २०।

पढमसुयक्खंधो गाहासोलसगो नाम गओ। बीयसुयक्खंधे नंदीए उद्दिसिए तस्स सत्त महज्झयणाणि, एगसराणि, एगेगदिणेण एगेगकालेण य वच्चंति। तेसिं नामाणि जहा—पुंडरीय १, किरियाठाण २, आहारपरिण्णा ३, पच्चक्खाणकिरिया ४, अणगार ५, अद्दइज्ज ६, नालंदा ७। सुयक्खंधसमुद्देसाणुण्णाए दिणमेगं। उद्देसगमाणमिणं—

सूयगडे सुयक्खंधा दोन्नि उ पढमम्मि सोलसज्झयणा।
चउ १, तिय २, चउ ३, दो ४, दो ५, एक्कारस ६, पढमसुयक्खंधस्स॥ १॥

सत्त इक्कसरा बीयसुयक्खंधस्स। अंगसमुद्देसे दिण १, अंगाणुण्णाए दिण १। सव्वे दिणा ३०।

—सूयगडंगविही।

§ ४९ तइयं **ठाणंगं** नंदीए उद्दिसिज्जइ। तओ सुयक्खंधो, तओ पढमज्झयणं, एगसरं एगदिणेण एगकालेण वच्चइ। बीए उद्देसा ४, दिणा २। तइए उद्देसा ४, दिणा २। चउत्थे उद्देसा ४, दिणा २। पंचमे उद्देसा ३, दिणा २। सेसाणि पंचठाणाणि एगसराणि पंचहिं दिणेहिं वच्चंति। एयउद्देसगमाणमिणं—

पढम एगसरं चिय१ चउ२ चउ३ चउरो४ ति५ पंच१० एगसरा।
ठाणंगे सुयखंधो एगो दस होंति अज्झयणा॥ १॥

तेसिं नामाणि जहा—एगठाणं दुठाणमिच्चाइ जाव दसठाण ७। सुयक्खंधसमुद्देसाणुण्णाए दिणा २, अंगसमुद्देसाणुण्णाए दिणा २, सव्वे दिणा १८। **—ठाणंगविही।**

§ ५० चउत्थं **समवायंगं** एगदिणे नंदीए उद्दिसिज्जइ, बीयदिणे समुद्दिसिज्जइ, तइयदिणे नंदीए अणुजाणिज्जइ। एवं तिहिं कालेहिं तिहिं आयंबिलेहिं वच्चइ। सुयक्खंधज्झयणुद्देसा इत्थ नत्थि।

—समवायंगविही।

§ ५१ इत्यंतरे इमे जोगा—**निसीहे** एगमज्झयणं वीसं उद्देसगा एगेगदिणेण एगेगकालेण य दो दो वच्चंति। दसहिं दिवसेहिं एगंतरायामेहिं समप्पइ। इत्थ अज्झयणत्तेण नंदी नत्थि। अणागाढजोगो। निसीहे दिणा १०।

§ ५२ **दसा कप्प ववहाराणं** एगो सुयक्खंधो सो नंदीए उद्दिसइ। तत्थ दस दसाअज्झयणा एगसरा, दसहिं दिवसेहिं वच्चंति। तेसिं नामाणि जहा—असमाहिठाणाइं १, सबला २, आसायणाओ ३, गणिसंपया ४, चित्तसोही ५, उवासगपडिमा ६, भिक्खुपडिमा ७, पज्जोसवणाकप्पो ८, मोहणीयठाणाइं ९, आयाइठाण १० ति। कप्पज्झयणे उद्देसा ६, दिणा ३। **ववहारज्झयणे** उद्देसा १०, दिणा ५। एगदिणे सुयक्खंधसमुद्देसो, बीयदिणे नंदीए सुयक्खंधाणुण्णा, सव्वे दिणा २०। केइ **कप्प-ववहाराणं** भिन्नं सुयक्खंधमिच्छंति। एवं च दिणा २२। तहा **पंचकप्पो** आयंबिलेण मंडलीए वहिज्जइ। **जीयकप्पो** निव्वीएण ति। **निसीह-दसा-कप्प-ववहारसुयक्खंध-पंचकप्प-जीयकप्पविही।**

§ ५३. इयाणिं भगवईए विवाहपन्नत्तीए पचमगस्स जोगविहाणं[1]—गणिजोगा छहि मासेहि छहि दिनसेहिं आउत्तवाणएण वच्चति। तत्थ सुयक्खधो नत्थि। अज्झयणाणि य सयनामाणि एकचालीस। अग नदीए उद्दिसिय पढमसय उद्दिसिज्जइ। तत्थ उद्देसा १०, कालेण दो दो वच्चति। एगतरायामेण दिणेहिं ५, कालेहि ५ पढमसय जाइ। एगतरायाम जाव चमरो। बीयसए उद्देसा १०, नवर पढमुद्देसओ खदओ। तस्स अनिलेण उद्देसो समुद्देसो य कीरइ। तओ जइ उट्ठवेइ तो तमि चेव दिणे तेण चेव कालेण अणुजाणिय आयाम कारिज्जइ। अह न उट्ठिओ, तो बीयदिणे बीयकालेण बीयअनिलेण अणुजाणिज्जइ। उट्ठिओ त्ति पाढेणागओ। अणुण्णाए य तमि अनिले पविट्ठे अगओ काउस्सगाइअणुट्ठाण कीरइ। एत्थ[2] पच दत्तीओ सपाणभोयणाओ भवति। सेसा दो दो उद्देसा दिणे दिणे जति। जाव नवमुद्देसो। एगमि पचमे दिणे दसमो सय च। सव्वे दिणा ७, काला ७। तइयसए वि उद्देसा १०, नवर पढमदिवसे पढमकालेण पढमुद्देसय मोयानामगमणुजाणिय, बीयकालेण चमरस्स उद्देसो समुद्देसो य कीरइ। सेस तओ जइ उट्ठवेइ इच्चाइ जहा खदए। दत्तीओ वि सपाणभोयणाओ पच। केई चत्तारि भणति। एव चमरे अणुण्णाए पनरसहि कालेहिं पनरसहिं दिणेहि य गएहि छट्ठजोगो लग्गइ। छट्ठजोगअणुजाणावणत्थ ओगाहिमविगइविसज्जणत्थ काउस्सग्गो कीरइ, नमोक्कारचिंतण भणण च। पचनिव्वियाणि छट्ठ निरुद्ध ४। अन्ने छन्निव्वियाणि सत्तम निरुद्ध ति भणति[3]। तम्मि लग्गे सधूइयतक्क-तीमण-वजणाइ तद्दिणकय पि कप्पइ। तओ पुव्व एयमकप्पमासि। ओगाहिमविगई वि न उवहणइ। जहा दिट्ठिवाए मोयगो गुरुमाइकए आणेउ पि कप्पइ। सेसा अट्ठ उद्देसा चउहि दिवसेहिं सएणसम वच्चति। सव्वे दिणा ७, काला ७। चउत्थसए वि उद्देसा १०, दोहिं दिणेहि वच्चति। पढमदिणे ८, चत्तारि चत्तारि आइल्ला अतिल त्ति काऊण उद्दिसिज्जति, समुद्दिसिज्जति, अणुन्नविज्जति। बीयदिणे दो सएण सम वच्चति। दिणा २, काला २। पचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठमसएसु दस दस उद्देसया दो दो दिणे दिणे जति। चत्तारि वि वीसाए दिणेहि कालेहि य वच्चति। अट्ठसु सएसु काला ४१। नवम दसम एगारस बारस तेरस चउदसम च एयाइ [4]छस्सयाइ एक्केककालेण वच्चति। नवर नवमसयमुद्दिसिय तस्सुद्देसा ३४ दुहाकाउ (१७+१७) पढममाइल्ला उद्दिसिज्जति, तओ अतिल्ला सय च समुद्दिसिज्जति। तओ आइल्ला अतिल्ला सय च अणुन्नविज्जति। एव सए सए नव नव काउस्सग्गा कीरति। एव दसमसए वि उद्देसा ३४ दुहा (१७+१७), एकारसमे उद्देसा १२ दुहा (६+६), बारसमे तेरसमे चउदसमे य दस दस पत्तेय पंच पच दुहा कज्जति। पनरसम गोसालसयमेगसर पढमदिणे उद्दिसिज्जइ। तओ जइ उट्ठिओ तो तम्मि चेव दिणे तेणेव कालेण आयबिलेण य अणुजाणिज्जइ। अह न उट्ठिओ, तो [5]बीय-दिणे बीयकालेण बीयअबिलेण अणुजाणिज्जइ। [6]इत्थ दत्तीओ तिन्नि तिन्नि सपाणभोयणाओ भवति। गोसाले अणुन्नाए अट्ठमजोगो लग्गइ। तस्स अणुजाणावणत्थ काउस्सग्गो कीरइ। सत्त निव्वियाणि अट्ठम निरुद्ध। अण्णे अट्ठ निव्वियाणि नवम निरुद्ध। सेसाणि निव्वियाणि त्ति। गोसालयसए तेयनिसग्गावरनामगे अणुण्णाए निव्वियदिणे नदिमाईण वदणय-खमासमण-काउस्सग्गपुव्व उद्देसाई कीरति। ते य इमे—नदि १, अणुओग २, देविंद ३, तदुल ४, चदवेज्झ ५, गणिविज्जा ६, मरण ७, ज्झाणविभत्ती ८, आउर ९, महा-पच्चक्खाण च १०। गोसालो जो[7] जइ दत्तीहि अलद्धियाहि उवहओ ताहे उवहओ चेव। अह बहवे जोग-वाहिणो ताहे ताण संबधिणीओ घेप्पति। गोसालाणुण्ण जाव एगूणपन्नास काला ४९ हवति। तदुवरि सेसाणि छत्तीससयाणि एक्केकेण कालेण वच्चति। एएहि २६ सह ७५ भवति। एगेणग समुद्दिसिज्जइ। बीएण नदीए अणुजाणिज्जइ। गणिसहपज्जत नाम च ठाविज्जइ। अगस्स समुद्देसे अणुण्णाए य अबिल।

1 B विहीण। 2 B इत्थ। 3 नास्ति A। 4 B C छच सयाइ। 5 नास्तिपदमेतत् A। 6 B नास्ति 'इत्थ'। 7 नास्ति 'जो' A C।

एवं सत्तहत्तरि ७७ कालेहिं भगवईपंचमंग समप्पइ। नवर सोलसमे सए उद्देसा चउद्दस ७+७। सत्तरसमे सत्तरस ९+८। अट्ठारसमे दस ५+५। एव एगूणवीसइमे वि ५+५। वीसइमे वि ५+५। इक्कवीसइमे असीई ४०+४०। बावीसइमे सट्ठी ३०+३०। तेवीसइमे पण्णासा २५+२५। इत्थ इक्कवीसमे अट्ठवग्गा, बावीसइमे छवग्गा, तेवीसइमे पंचवग्गा। वग्गे वग्गे दस उद्देसा। अओ असीइ-सट्ठि पण्णासा उद्देसा कमेण। चउवीसइमे चउवीस १२+१२। पंचवीसइमे बारस ६+६। बंधिसए २६। करिसुगसए २७। कम्मसमज्जिणणसए २८। कम्मपट्ठवणसए २९। समोसरणसए ३०। एएसु पंचसु वि सएसु एक्कारस एक्कारस उद्देसा दुहा ६+५ कज्जति। उववायसए अट्ठावीसं १४+१४, ३१। उव्वट्टणासए अट्ठावीसं १४+१४, ३२। एगिंदियजुम्मसयाणि बारस, तेसु उद्देसा १२४, दुहा ६२+६२, ३३। सेढीसयाणि बारस तेसु वि उद्देसा १२४, दुहा ६२+६२, ३४। एगिंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु उद्देसा १३२, दुहा ६६+६६, ३५। बेइंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु वि उद्देसा १३२, दुहा ६६+६६, ३६। तेइंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु वि उद्देसा १३२, ६६+६६, ३७। चउरिंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु वि उद्देसा १३२, ६६+६६, ३८। असन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयाणि बारस, तेसु वि उद्देसा १३२, दुहा ६६+६६, ३९। सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयाणि इक्कवीसं, तेसु उद्देसगा २३१, दुहा ११६+११५, ४०। रासीजुम्मसए उद्देसा १९६, दुहा ९८+९८, ४१। इत्थ य तेत्तीसइमे सए अवतरसया १२, तत्थ अट्ठसु पत्तेय उद्देसा ११, चउसु ९, सव्वग्गेण १२४। एव चउतीसइमे वि १२४। पणतीसइमाइसु पंचसु[1] सएसु अवतरसया १२, तेसु पत्तेय उद्देसा ११, सव्वग्गेण १३२। चालीसइमे अवतरसया २१, तेसु पत्तेय उद्देसा ११, सव्वग्गेण २३१। एव महाजुम्मसयाणि ८१, एव सव्वग्गेण सया १३८। सव्वग्गेण उद्देसा १९२३।

इत्थ संगहगाहाओ उवरिं जोगविहाणे भण्णिहिंति। **भगवईए जोगविही।**

गणिजोगेसु वूढेसु संघट्टओ थिरो भवइ। नय घिप्पइ नय विसज्जिज्जइ त्ति समायारी। आउत्तवाणय तु घिप्पइ निसज्जिज्जइ य त्ति।

अथ यन्त्रकम्। इद सकल शतकउद्देशादि यन्त्रतोऽवसेयम्।

शत १ उद्देस १०। दिन ५।	शत ४ उद्देश १०। प्र०दि० ८। द्वि०दि० २।	शत ७ उद्देश १०। दिन ५।	शत १० उद्देश ३४। दिन १।
शत २ उद्देस १०। दिन ५।	शत ५ उद्देश १०। दिन ५।	शत ८ उद्देश १०। दिन ५।	शत ११ उद्देश १२। दिन १।
शत ३ उद्देस १०। दिन ७।	शत ६ उद्देश १०। दिन ५।	शत ९ उद्देश ३४। दिन १।	शत १२ उद्देश १०। दिन १।

1 आमि पञ्चसु A।

शत १३
उद्देश १०।
दिन १।

शत १४
उद्देश १०।
दिन १।

गोशालशत १५
उद्देश०
दिन २।

शत १६
उद्देश १४।
दिन १।

शत १७
उद्देश १७।
दिन १।

शत १८
उद्देश १०।
दिन १।

शत १९
उद्देश १०।
दिन १।

शत २०
उद्देश १०।
दिन १।

शत २१
उद्देश ८०।
दिनानि १।

शत २२
उद्देश ६०।
दिन १।

शत २३
उद्देश ५०।
दिन १।

शत २४
उद्देश २४।
दिन १।

शत २५
उद्देश १२।
दिन १।

शत २६
उद्देश ११।
दिन १।

शत २७
उद्देश ११।
दिन १।

शत २८
उद्देश ११।
दिन १।

शत २९
उद्देश ११।
दिन १।

शत ३०
उद्देश ११।
दिन १।

शत ३१
उद्देश २८।
दिन १।

शत ३२
उद्देश २८।
दिन १।

शत ३३
उद्देश १२४।
दिन १।

शत ३४
उद्देश १२४।
दिन १।

शत ३५
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ३६
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ३७
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ३८
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ३९
उद्देश १३२।
दिन १।

शत ४०
उद्देश १३१।
दिन १।

शत ४१
उद्देश १९६।
दिन १।

शत स० ४१
उद्देश सर्वाम
१९३२।

§५४ अणतर कयपचमगजोगविहाणस्स तस्सामग्गिविरहे अन्नहावि अणुण्णवियगुरुयणस्स छट्ठमग **नायाधम्मकहा** नदीए उद्दिसिज्जइ । तम्मि दो सुयक्खधा नायाइ धम्मकहाओ य । तत्थ नायाण एगूणवीसं अज्झयणाणि । एगूणवीसाए दिणेहि वच्चति । तेसिं नामाणि जहा—उक्खित्तनाए १, सघाडनाए २, अडनाए ३, कुम्मनाए ४, सेलयनाए ५, तुबयनाए, ६, रोहिणीनाए ७, मल्लीनाए ८, मायदीनाए ९, चदिमानाए १०, दावद्दवनाए ११, उदगनाए १२, मडुक्कनाए १३, तेतलीनाए १४, नदिफलनाए १५, अवरककानाए १६, आइण्णनाए १७, सुसुमानाए १८, पुडरीयनाए १९। एग दिण सुयक्खधसमुद्देसाणुन्नाए । सव्वे दिणा २०। धम्मकहाण दस वग्गा दसहि दिवसेहि जति । तत्थ नदीए सुयक्खधमुद्दिसिय पढमवग्गो उद्दिसिज्जइ । तम्मि दस अज्झयणा । पच पच आइल्ला अतिल्ल त्ति काउग उद्दिसिज्जति, समुद्दिसिज्जति य । तओ वग्गो समुद्दिसिज्जइ । तओ आइल्ला अतिल्ला वग्गा य अणुण्णविज्जति । एव वग्गो एगकालेण एगदिणेण नवहिं काउस्सग्गेहिं वच्चइ । एव सेसावि नव वग्गा । नवर् अज्झयणेसु नाणत्त । बीए दस अज्झयणा, तइय-चउत्थेसु चउप्पण्ण चउप्पण्ण । पचम-छट्ठेसु बत्तीस बत्तीस । सत्तम-अट्ठमेसु

चत्तारि चत्तारि । नवम दसमेसु अट्ठ अट्ठ अज्झयणा । दुन्ना काऊण सयत्थ आइल्ला अतिल वि वचंति । एव दससु वग्गेसु दिणा १०। सुयक्खधसमुद्देसाणुण्णाए दिण १। अगसमुद्देसे दिण १। अगाणुण्णाए दिण १। एव सव्वे दिणा ३३।—**नायाधम्मकहागविही ।**

§५५ उवासगदसासत्तमग नदीए उद्दिसिज्जइ । तम्मि एगो सुयक्खधो, तस्स दस अज्झयणा, एगसरा दसहि कालेहि दसहि दिणेहिं वचति । तेसिं नामाणि जहा—आणदे १, कामदेवे २, चूलणीपिया ३, सुरादेवे ४, चुल्लसयगे ५, कुडकोलिए ६, सद्दालपुत्ते ७, महासयगे ८, नदिणीपिया ९, लेतियापिया १०। दो दिणा सुयक्खधे, दो अगे, सव्वे दिणा १४।—**उवासगदसगविही ।**

§५६ अतगडदसाअट्ठमगे एगो सुयक्खधो अट्ठवग्गा । तत्थ पढमे वग्गे दस अज्झयणा । बीयवग्गे अट्ठ । तइए तेरस । चउत्थ-पचमेसु दस दस । छट्ठे सोलस । सत्तमे तेरस । अट्ठमवग्गे दस अज्झयणा । आइल्ला अतिल्ला भणिय जहा धम्मकहाए तहा । अट्ठहि कालेहिं अट्ठहि दिणेहिं वचति । इत्थ अज्झयणाणि गोयममाईणि दो दिणा सुयक्खधे, दो अगे, सव्वे बारस १२।—**अतगडदसाअगविही ।**

§५७ अणुत्तरोववाइयदसानवमगे एगो सुयक्खधो, तिन्नि वग्गा, तिहि दिणेहि तिहि कालेहिं वचति । इत्थ अज्झयणाणि जालिमाईणि । तत्थ पढमे वग्गे दस । बीए तेरस । तइए दस अज्झयणा । सेस जहा धम्मकहाए । वग्गेसु दिणा तिन्नि, सुयक्खधे दिणा दोन्नि, दो दिणा अगे, सव्वे दिणा ७, काल ७। —**अणुत्तरोववाइयदसगविही ।**

§५८ पण्हावागरणदसमगे एगो सुयक्खधो, दस अज्झयणा, दसहिं कालेहिं, दसहि दिवसेहिं वचति । तेसिं नामाणि जहा—हिंसादार १, मुसावायदार २, तेणियदार ३, मेहुणदार ४, परिग्गहदार ५, अहिंसादार ६, सच्चदार ७, अतेणियदार ८, बभचेरदार ९, अपरिग्गहदार १०। सुयक्खधसमुद्देसा-णुण्णाए दिणा दो, अगे दिणा दो, सव्वे दिणा चोद्दस १४। आगाढजोगा आउत्तवाणएण जइ भगवईए अवूढाए गुरुमणुण्णविय वहइ तो भगवईए छट्ठजोगाऽलग्गकप्पाकप्पविहीए, अह वूढाए तो छट्ठजोग-लग्गकप्पाकप्पविहीए एगतरायनिलेहि वचति । महासत्तिक्कय त्ति भणति । इत्थ केइ पचहि पचहिं अज्झयणेहिं दो सुयक्खधा इच्छति ।—**पण्हावागरणगविही ।**

§५९ विवागसुयएक्कारसमगे दो सुयक्खधा । तत्थ पढमे दुहविवागसुयक्खधे दस अज्झयणा, दसहिं कालेहिं, दसहिं दिवसेहिं वचति । तेसिं नामाणि जहा—मियापुत्ते १, उज्झियए २, अभग्गसेणे ३, सगडे ४, वहस्सइदत्ते ५, नदिवद्धणे ६, उबरिदत्ते ७, सोरियदत्ते ८, देवदत्ता ९, अजू १०। एग दिण सुयक्खधे, एव सव्वे दिणा ११। एव सुहविवागबीयसुयक्खधे अज्झयणा १०। तेसिं नामाणि जहा—सुबाहु १, भद्दनदी २, सुजाय ३, सुवासव ४, जिणदास ५, धणवइ ६, महब्बल ७, भद्दनदी ८, महचद ९, वरदत्त १०। सुयक्खधे दिण १, अगे दिण २, सव्वे दिणा २४, काला २४।

विवागसुयंगविही ।

दिट्ठिवाओ दुवालसमगं त च वोच्छिन्न ।

§६० इत्थ य विक्खापरियाएण तिवासो आयारपकप्प वहिज्जा वाइज्जा य । एव चउवासो सूयगड । पचवासो दसा-कप्पववहारे । अट्ठवासो ठाण-समवाए । दसवासो भगवई । इक्कारसवासो खुड्डियाविमाणाइ-पचज्झयणे । बारसवासो अरुणोववायाइपचज्झयणे । तेरसवासो उट्ठाणसुयाइचउरज्झयणे । चउदसाइ-अट्ठारसतवासो कमेण आसीविसभावणा दिट्ठिविसभावणा-चारणभावणा-महासुमिणभावणा-तेयनिसग्गे । एगूणवीसवासो दिट्ठिवाय । संपुन्नवीसवासो सव्वसुत्तजोगो त्ति ।

*

§ ६१. **इयाणिं उवंगा**—आयारे उवगं ओवाइयं १, सूयगडे रायपसेणइयं २, ठाणे जीवाभिगमो ३, समवाए पण्णवणा ४, एए चत्तारि उक्कालिया तिहिं तिहिं आयबिलेहिं मंडलीए वहिज्जंति । अहवा आयारे अंगाणुण्णाणंतरं संघट्टयमज्झे चेव उद्देससमुद्देसाणुण्णासु आयंबिलतिगेण **ओवाइयं** गच्छइ । जोगमज्झे चेव निव्वीयदिणे आयंबिलेण अनिलतिगपूरणाओ वच्चइ त्ति अन्ने । एवं सूयगडे **रायपसेणइयं** पि बोढव्वं । एवं चेव **जीवाभिगमो** ठाणंगे । एवं समवाए वूढे दसा-कप्प-ववहारसुयक्खंधे अणुण्णाए य संघट्टयमज्झे अनिलतिगेण, मयंतरेण अंबिलेण, **पण्णवणा** बोढव्वा । एएसु तिन्नि इक्सरा । नवरं जीवाभिगमे दुविहाइ-दसविहंतजीवभणणाओ नव पडिवत्तीओ । पण्णवणाए छत्तीसं पयाइं । तेसिं नामाणि जहा—पण्णवणापयं १, ठाणपयं २, बहुवत्तव्वपयं ३, ठिईपयं ४, विसेसपयं ५, वुक्कंतीपयं ६, उस्सासपयं ७, आहाराइदससण्णापयं ८, जोणिपयं ९, चरमपयं १०, भासापयं ११, सरीरपयं १२, परिणामपयं १३, कसायपयं १४, इंदियपयं १५, पओगपयं १६, लेसापयं १७, कायट्ठिइपयं १८, सम्मत्तपयं १९, अंतकिरियापयं २०, ओगाहणापयं २१, किरियापयं २२, कम्मपयं २३, कम्मबंधगपयं २४, कम्मवेयगपयं २५, वेयगबंधपयं २६, वेयगपयं २७, आहारपयं २८, उवओगपयं २९, पासणापयं ३०, मणोविन्नाणसन्नापयं ३१, संजमपयं ३२, ओहीपयं ३३, पवियारणापयं ३४, वेयणापयं ३५, समुग्घायपयं ति ३६ ।

भगवईए **सूरपण्णत्ती**उवंगं आउत्तवाणएण तिहिं कालेहिं अनिलतिगेण बोढव्वा । अहवा भगवई-अंगाणुण्णाणंतरे एयं संघट्टयमज्झे तिहिं कालेहिं अनिलेहि च वच्चइ । नायाणं **जंबुद्दीवपण्णत्ती**, उवासगदसाणं **चंदपण्णत्ती**, एयाओ दोवि पत्तेयं तिहिं तिहिं कालेहिं, तिहिं तिहिं अनिलेहि वहिज्जंति संघट्टएण । अहवा निय-नियअंगेऽणुण्णाए तस्सघट्टयमज्झे चेव तिहिं तिहिं कालेहिं अनिलेहिं च वच्चंति । सूरपण्णत्तीए चंदपण्णत्तीए य वीसं पाहुडाइं । तत्थ पढमे पाहुडे अट्ठ पाहुड-पाहुडाइं, बिए तिन्नि, दसमे बावीसं, सेसाइं एगसराणि । जंबुद्दीवपण्णत्ती एगसरा । अंतगडदसाइपंचण्हमंगाणं दिट्ठिवायंताणं एगसुवगं **निरयावलियासुयक्खंधो**। तम्मि पंच वग्गा **कप्पियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हिदसाओ** । तत्थ पढम बीय-तईय-चउत्थवग्गेसु दस दस अज्झयणा, पंचमे बारस । तत्थ पढमे वग्गे अज्झयणा कालाई, बीए पउमाई, तईए चंदाई, चउत्थे सिरिमाई, पंचमे निसढाई । सुयक्खंधं नंदीए उद्दिसिय पढमवग्गं च । तओ अज्झयणाणि दुहा काउण आइल्ला अंतिल्ल त्ति भणिय, वग्गे वग्गे नव नव काउस्सग्गा कीरंति । वग्गेसु दिणा ५, सुयक्खंधे दिणा २, सव्वे दिणा ७, काला ७ । केई सत्त अनिले करेंति । अन्ने सुयक्खंध-उद्देस-समुद्देसाणुण्णासु अनिलं करेंति । अन्नदिणेसु निव्वीयं । निरयावलिया-सुयक्खंधो गओ ।

अण्णे पुण चंदपण्णत्तिं सूरपण्णत्तिं च भगवईउवंगे भणंति । तेसिं मएण उवासगदसाईणं पंचण्ह-मंगाणमुवंगं निरयावलियासुयक्खंधो ।

ओ०रा०जी०पण्णवणा सू०जं०चं०नि०क०क०पु०पु०वण्हिदसा ।
आयाराइउवंगा नायव्वा आणुपुव्वीए ॥ —उवंगविही ।

§ ६२. सपय पइण्णगा, नंदी अणुओगदाराइं च इक्किक्केण[1] निव्वीएण मंडलीए वहिज्जंति । केई तिहिं दिणेहिं निव्वीएहिं य उद्देसाइक्कमेण इच्छंति । देविंदत्थयं-तंदुलवेयालियं-मरणसमाहि-महापच्चक्खाण-आउरपच्चक्खाण-संथारय-चंदाविज्झयं-भत्तपरिण्णा-चउसरण-वीरत्थय-गणिविज्जा-दीवसागरपण्ण-

1 A निरइपयं । 2 A इक्किक्कनिव्वीएण ।

त्ति-संगहणी-गच्छायारे–इच्चाइपइण्णगाणि इक्किक्केण निवीएण वच्चंति । जइ पुण भगवईजोगमज्झे केसिंचि पुव्वुत्तविहिए खमासमण-वंदण-काउस्सग्गा कया ते पुढो न वोढव्वा । दीवसागरपण्णत्ती तिहिं कालेहिं तिहिं अंबिलेहिं जाइ । इसिभासियाइं पणयालीसं अज्झयणाइं कालियाइं, तेसु दिण ४५ निव्विएहिं अणागाढजोगो । अण्णे भणंति–उत्तरज्झयणेसु चेव एयाइं अंतब्भवंति । पुव्वा पुण एवमाइ-संति–तिहिं कालेहिं आयंबिलेहिं य उद्देस-समुद्देसाणुण्णाओ एएसिं कीरंति ।–**पइण्णगविही ।**

§ ६३ संपयं **महानिसीहजोगविही**–आउत्तवाणएण गणिजोगविहाणेण निरंतरायंबिलपणयालीसाए भवइ । तत्थ महानिसीहसुयक्खंधं नंदीए उद्दिसिय पढमज्झयणं उद्दिसिज्जइ, समुद्दिसिज्जइ, अणुण्णविज्जइ य । तओ बीयज्झयणं, तत्थ नव उद्देसा दो दो दिणे दिणे जंति । नवमुद्देसो अज्झयणेण सह वच्चइ । एवं तइए उद्देसा १६, चउत्थे १६, पंचमे १२, छट्ठे ४, सत्तमे ६, अट्ठमे २० । जओ आह–

अज्झयण नव सोलस, सोलस बारस चउक्क छं वीसा ।
अट्ठज्झयणुद्देसा ४५, तेसीइ महानिसीहम्मि ॥

इत्थ सत्तट्ठमाइं चूलारूवाइं तेयालीसाए दिणेहिं अज्झयणसमत्ती । एग दिणं सुयक्खंधस्स समुद्देसे, एगमणुण्णाए, सव्वे दिणा ४५, काला ४५ । आगाढजोगा ।–**महानिसीहजोगविही ।**

*

॥ जोगविहाणपयरणं ॥

§ ६४ संपयं भणियत्थसंगहरूवं जोगविहाणं नाम पयरणं भण्णइ–

नमिऊण जिणे पयओ जोगविहाणं समासओ वोच्छं ।
पइअंगसुयक्खंध अज्झयणुद्देसपविभत्तं ॥ १ ॥
जंमि उ अंगंमि भवे दो सुयखंधा तहिं तु कीरंति ।
सुयखंधस्स दिणेणं दोवि समुद्देसणुण्णाओ ॥ २ ॥
अह एगो सुयखंधो अंगे तो दिणदुगेण सुयखंधो ।
अणुण्णवइ अंगं पुण सव्वत्थ वि दोहिं दिवसेहिं ॥ ३ ॥
आवस्सयसुयखंधो तहिय छ च्चेव हुंति अज्झयणा ।
अट्ठहिं दिणेहिं वच्चइ आयामदुगं च अंतम्मि ॥ ४ ॥
दसयालियसुयखंधो दस अज्झयणाइ दो य चूलाओ ।
पिंडेसणअज्झयणे भवंति उद्देसगा दुन्नि ॥ ५ ॥
विणयसमाहीए पुण चउरो त जाइ दोहिं दिवसेहिं ।
इक्केक्कवासरेणं सेसा पक्खेण सुयखंधो ॥ ६ ॥
आवस्सय-दसकालियमोहण्णा ओह-पिंडनिज्जुत्ती ।
एगेण तिहिं च निव्विएहिं णंदि-अणुओगदाराइं ॥ ७ ॥
एगो य सुयक्खंधो छत्तीसं भवंति उत्तरज्झयणा ।
तत्थेक्केकज्झयणं वच्चइ दिवसेण एगेण ॥ ८ ॥
नवरि चउत्थमसंखयमज्झयणं जाइ अंबिलदुगेण ।
अह पढइ तद्दिणि चिय अणुण्णवइ निव्विगइएण ॥ ९ ॥
सव्वोवि य सुयखंधो वच्चइ मासेण नवहि य दिणेहिं ।
केसिं च मएण पुणो अट्ठावीसाइ दिवसेहिं ॥ १० ॥

जा अन्चउत्थ[1] चउद्दस इगेगकालेण जाइ इक्किको ।
दो दो इगेगकालेण जंति पुण सेस बावीसं ॥ ११ ॥
आयारो पढमंगं सुयखंधा तेसु दोण्णि जहसंखं ।
अड-सोलस अज्झयणा इत्तो उद्देसए वोच्छं ॥ १२ ॥
सत्तय[१] छ[२] चउ[३] चउरो[४] छ[५] पंच[६] अट्ठव[७] होंति चउरो य[८] ।
इक्कारस[१] ति[२] तिय[३] दो[४] दो[५] दो[६] दो[७] नव हुंति इक्कसरा ॥ १३ ॥
बीयम्मि सुयक्खधे उग्गहपडिमाणमुवरि सत्तिक्का ।
आउत्तवाणएणं सुयाणुसारेण वहियव्वा ॥ १४ ॥
आयारो य समप्पइ पन्नासदिणेहि तत्थ पढमम्मि ।
सुयखधे चउवीसं बीए छव्वीसई दिवसा ॥ १५ ॥
बीयंगं सूयगडं तत्थवि दो च्चेव होंति सुयखंधा ।
सोलस-सत्तज्झयणा कमेण उद्देसए सुणसु ॥ १६ ॥
चउं[१] तियं[२] चउरो[३] दो[४] दो[५] इक्कारस[६-१६] पढमयंमि इक्कसरा ।
सत्तेव महज्झयणा इक्कसरा बीय सुयखंधे ॥ १७ ॥
सूयगडो य समप्पइ तीसाए वासरेहिं सयलो वि ।
पढमो वीसाए तहिं दिणेहिं बीओ तह दसेहिं ॥ १८ ॥
ठाणंगे सुयखंधो एगो दस च्चेव होंति अज्झयणा ।
पढम एगसरं चउ चउ चउ तिग सेस एगसरा ॥ १९ ॥
समवाओ पुण नियमा सुयखधविवज्जिओ चउत्थंगं ।
तिहि वासरेहि गच्छइ ठाणं अट्ठारसदिणेहिं ॥ २० ॥
होंति दसा-कप्पाईसुयखधे दस दसा उ एगसरा ।
कप्पम्मि छ उद्देसा ववहारे दस विणिद्दिट्ठा ॥ २१ ॥
अज्झयणंमि निसीहे वीस उद्देसगा मुणेयव्वा ।
तीसेहिं दिणेहिं जंति हु सव्वाणि वि छेयसुत्ताणि ॥ २२ ॥
निविएण जीयकप्पो आयामेणं तु जाइ पणकप्पो ।
तिहि अविलेहिं उक्कालियाइं ओवाइयाइं चऊ ॥ २३ ॥
आउत्तवाणएणं विवाहपण्णत्ति पंचम अंगं ।
छम्मासा छद्दिवसा निरंतर होंति वोढव्वा ॥ २४ ॥
इत्थ य नय सुयखंधो नय अज्झयणा जिणेहि परिकहिया ।
इगचत्तालसयाइ ताइं तु कमेण वोच्छामि ॥ २५ ॥
अट्ट दसुद्देसाइ ८, दो चउ तीसाइं १०, बारसहिं एगं ११ ।
तिण्णि दसुद्देसाइ १४, गोसालसयं तु एगसरं १५ ॥ २६ ॥

---

1 'चतुर्थमर्सखयाध्ययन वर्जयित्वा' इति टिप्पणी ।

बीए पढमुदेसो खंदो तइयम्मि चमरओ बीओ।
गोसालो पनरसमो पण पण तिग हुति दत्तीओ ॥ २७ ॥
एया सभत्तपाणा पारणगदुगेण होयणुण्णवणा।
खंदाईण कमेण वोच्छामि विहिं अणुण्णाए ॥ २८ ॥
चमरंमि छट्ठजोगो विगईए विसज्जणत्थमुस्सग्गा।
अट्ठमजोगो लग्गइ गोसालसए अणुण्णाए ॥ २९ ॥
पनरसहिं कालेहिं पनरसदियहेहिं चमरणुण्णाए।
लग्गइ य छट्ठजोगो पणनिव्विय अविल छट्ठ ॥ ३० ॥
अउणावण्णदिणेहिं अउणावण्णाइ वावि कालेहिं।
अट्ठमजोगो लग्गइ अट्ठमदियहे निरुद्ध च ॥ ३१ ॥
चोद्दस १९ सत्तरस १७ तिण्णि उ दस उद्देसाइ २० तह असी २१ सट्ठी २२।
पन्नासा २३ चउवीसा २४ बारस २५ पचसु य इक्कारा ३० ॥ ३२ ॥
अट्ठावीसा दोसुं ३२ चउवीससय च ३४ पणसु बत्तीस ३९।
दोण्णि सया इगतीसा ४० चरिमसए चेव छन्नउय ४१ ॥ ३३ ॥
बंधी २६ करिसुगनामं २७ कम्मसमज्जिणण २८ कम्मपट्ठवणं २९।
ओसरणं समपुव ३० उववा ३१ उवट्टणसय च ३२ ॥ ३४ ॥
एगिंदिय ३३ तह सेढी ३४ एगिंदिय ३५ बेइंदियाण समहाण ३६।
तेइंदिय ३७ चउरिंदिय ३८ असण्णिपणिंदिमह सहिया ३९ ॥ ३५ ॥
एएसिं सत्तण्ह जुम्मसयदुवालसाणि नेयाणि।
आइदुगजुम्मवज्ज सन्निमहाजुम्मि य सयाणि ॥ ३६ ॥
एयाइ इक्कतीस ४० चरम पुण होइ रासिजुम्मसय ४१।
पणवीसइमा आरा अभिहाणाइ वियाणाहिं ॥ ३७ ॥
इत्थ चउत्थम्मि सए अट्ठुदेसा दुहा उ कायव्वा।
अट्ठमसयवोलीणे सव्वो वि हु विसमयाई वि ॥ ३८ ॥
दोमासअद्धमासे विहिणा अंगे इमम्मिऽणुण्णाए।
नामट्ठवण कीरइ पुणरवि तह कालसज्झाय ॥ ३९ ॥
असुहभवक्खयहेऊ अचत अप्पमत्तपियधम्मा।
पूरंति हु परियाय जावसमप्पति कइवि[1] दिणा ॥ ४० ॥
सट्ठाणे वोढव होइ इम तह सुयाणुसारेण।
आयारेऽणुण्णाए केई आलवणाइरया ॥ ४१ ॥
सोहणतिहि रिक्खाइसु विउलेसण-निरुवसग्गि खित्तम्मि।
उक्खिप्पवणमाइजोगाण काहि किच निरवसेसं ॥ ४२ ॥

---

1 'कइय' A टिप्पणी।

नायाधम्मकहाओ छट्ठग तत्थ दो सुयक्खंधा ।
पढमे इक्कसराइं अज्झयणाइं अउणवीसं ॥ ४३ ॥
बीए दसवग्गा तहिं उद्देसा दसं दसेवं चउवन्नां ।
चउपन्नां बत्तीसां बत्तीसां चउं चउं अडंऽट्ठं ॥ ४४ ॥
नायाधम्मकहाओ तेत्तीसाए दिणेहिं वचति ।
पढमे वीस दिवसा सुयखंधे तेरस उ बीए ॥ ४५ ॥
सत्तमयं पुण अग उवासगदस त्ति नाम तत्थेगो ।
सुयखंधो इक्कसरा इत्थऽज्झयणा हवंति दस ॥ ४६ ॥
अतगडदसाओ पुण अट्ठममंगं जिणेहिं पन्नत्तं ।
तत्थेगो सुयखंधो वग्गा पुण अट्ठ विण्णेया ॥ ४७ ॥
अंतगडदसाअगे वग्गे वग्गे कमेण जाणाहि ।
दसं दसं तेरसं दसं दसं सोलसं तेरसं दसुद्देसा ॥ ४८ ॥
अहऽणुत्तरोववाइयदसा उ नामेण नवमय अंगं ।
एगो य सुयक्खंधो तिन्नि उ वग्गा मुणेयव्वा ॥ ४९ ॥
उद्देसगाण सख वग्गे वग्गे य एत्थ वोच्छामि ।
दसं तेरसं दसं चेव य कमसो तीसु पि वग्गेसुं ॥ ५० ॥
चोद्दस उवासगदसा अतगडदसा दुवालसेहि तु ।
सत्तहिं दिणेहि जंति उ अणुत्तरोववाइयदसाओ ॥ ५१ ॥
वग्गस्साइल्लाण उद्देसाणं तहिं तिमिल्लाणं ।
उद्देस-समुद्देसे तहा अणुण्ण करिज्जासु ॥ ५२ ॥
दिवसेण जाइ वग्गो उस्सग्गा तत्थ होंति नव चेव ।
छप्पुव्वण्हे भणिया अवरण्हे नियमओ तिन्नि ॥ ५३ ॥
पण्हावागरणंगं दसम एगो य होइ सुयखंधो ।
तहिय दस अज्झयणा एगसरा जंति पइदिवसं ॥ ५४ ॥
चोदसहिं वासरेहि पण्हावागरणमंगमिह जाइ ।
आउत्तवाणएणं तं वहियव्वं पयत्तेणं ॥ ५५ ॥
एक्कारसमं अगं विवागसुयमित्थ दो सुयक्खंधा ।
दोसु पि य एगसरा अज्झयणा दस दस हवंति ॥ ५६ ॥
कालियचंदपण्णत्ती आउत्ताणेण सूरपण्णत्ती ।
सेसा संघट्टेणं ति-तिआयामेहि चउरो वि ॥ ५७ ॥
निरयावलियभिहाणो सुयखंधो तत्थ पचवग्गाओ ।
इक्किक्कमि य वग्गे उद्देसा दसदसंतिमे दु जुया ॥ ५८ ॥

1 A °समुद्देसा । 2 'जंबू०, चंद०, सूर०, दीव०'–इति B टिप्पणी ।

चउवीसाइ दिणेहिं इक्कारसमं विवागसुयमंग ।
वच्चइ सत्तदिणेहिं निरयावलियासुयक्खंधो ॥ ५९ ॥
ओ°रा°जी°पण्णवणा सू°जं°चं°नि°क°क°पुप्फ°वण्हिदसा ।
आयाराइउवंगा नेयव्वा आणुपुव्वीए ॥ ६० ॥
देविंदत्थयमाई पइण्णगा होंति इगिगनिविएण ।
इसिभासियअज्झयणा आयंबिलकालतिगसज्झा ॥ ६१ ॥
केसिं चि मए अंतब्भवंति एयाइ उत्तरज्झयणे ।
पणयालीस दिणेहिं केसि वि जोगो अणागाढो ॥ ६२ ॥
आउत्तवाणएण गणिजोगविहीइ निसीहं तु ।
अच्छिन्न कालंबिलपणयालीसाइ बोद्धव्व ॥ ६३ ॥
एगसरं नवं सोलसं सोलसं बारसं चउँ छ वीसं तहिं ।
तेसीइ उद्देसा छज्झयणा दोन्नि चूलाओ ॥ ६४ ॥
कालग्गहसज्झाय सघट्टाईविहिं निरवसेस ।
सामायारिं च तहा विसेससुत्ताओ जाणिज्जा ॥ ६५ ॥
नियसंताणवसेण सामायारीओ इत्थ भिन्नाओ ।
पिच्छंता इह सक माहु गमिच्छा सया काल ॥ ६६ ॥
सामायारीकुसलो वायणायरिओ विणीयजोगीण ।
भवभीयाण य कुज्जा सकज्जसिद्धिं न इयराओ ॥ ६७ ॥
ज इत्थ अहं चुक्को मदमइत्तेण किंपि होज्जाहिं ।
तं आगमविहिकुसला सोहिंतु अणुग्गहं काउं ॥ ६८ ॥

*

॥ जोगविहाणपगरणं समत्तं ॥*॥ समत्तो जोगविही ॥ २४ ॥

§६५ जोगा य कप्पतिप्पं विणा न वहिज्जति — 'कयकप्पतिप्पकिरिय'त्ति वयणाओ । अओ संपयं कप्पतिप्पविही भण्णइ — तत्थ वइसाह-कत्तियबहुलपडिवयाणतरं पसत्थदिणे चउवाइयरिक्खे गुरुसोमवारे सुनिमित्तोवलद्धेहिं सदसवत्थवेढियगिहत्थभायणेण कप्पवाणियमाणित्ता, जोईणीओ पिट्ठओ वामओ वा काउं मुह-हत्थ-पाए ओल्ले काऊण अहारायणियाए छम्मासियकप्पो उच्चारिज्जइ । पविसमाणस्सासं दसियाइ कयआउत्तजलेण पढमं चउरो तिप्पाओ मुहे घेप्पंति, तओ पाएसु । इत्थ हत्थविण्णासो सपदाया नेयव्वो । छम्मासियकप्पे परदिण्णाओ चेव तिप्पाओ घेप्पंति । इयरकप्पे दसियापुत्तचलकोप्परेहिं परदिण्णाओ वा । तहा छम्मासियकप्पुच्चारणे उद्धट्ठियस्स उद्धट्ठिओ तिप्पाओ दिज्जा, उवविट्ठस्स उवविट्ठो । सामन्नकप्पे नत्थि नियमो । तओ वसही भंडुवगरणं च नाणोवगरणवज्जं सव्वं पि तिप्पिज्जइ । नवरं मंडलिट्ठाणं गोमयलेवे कए तिप्पिज्जइ । कप्पमज्झे वावरिय पत्त-भंड-मल्लग-उद्धरणी-पमज्जणिया-तलिया-लोहदच्छाइ जलेण कप्पिउं तिप्पिज्जइ । एवं कप्पे उच्चारिए वसहिं सोहित्तु हड्डु-केसाइ परिट्ठविय, इरियं पडिक्कमिय, पढमं

1 A °वेप्प । 2 A जोयिणीओ । 3 A सेविज्जइ ।

गुरुणा सज्झाए उक्खिविए मुहपोत्तिं पडिलेहिय, दुवालसावत्तवंदणं दाउ, खमासमणेण भणति—'सज्झाय उक्खिवामो, बीयखमासमणेण सज्झायउक्खिवणत्थं काउस्सग्गं करेमो'। तओ अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ पढिय, नवकार चउवीसत्थय चिंतिय, मुहेण तं भणिय, काउस्सग्गतियं कुणति। पढमं असज्झाइय-अणाउत्तओहडावणियं, बीयं खुद्दोवद्दवओहडावणियं, तइयं सक्काइवेयावच्चगरआराहणत्थं। तिसु वि चउ उज्जोयचिंतणं, उज्जोयभणणं च। तओ खमासमणदुगेण सज्झायं संदिसावेमि, सज्झायं करेमि त्ति भणिय, जाणुट्ठिएहिं पंचमंगलपुव्वं 'धम्मो मंगलाइ' अज्झयणतियसज्झाओ कीरइ त्ति।

§ ६६. **सज्झायउक्खिवणविही**—जया य चित्तासोयसुद्धपक्खे सज्झाओ निक्खिविज्जइ, तया दुवालसावत्तवंदणं दाउ सज्झायनिक्खिवणत्थं अट्ठुस्सासं काउस्सग्गं काउं पारित्ता, मंगलपाढो कायव्वो त्ति। राओ[1] सन्नाए कयाए वमणे सित्थ-रुहिराइनिस्सरणे य पमाए कप्पो उत्तारिज्जइ। बाहिरभूमीए आगया पिंडियाओ पाए य तिप्पंति। जत्थ पाया भंडोवगरणं वा तिप्पिज्जइ सा भूमी अणाउत्ता होइ। सा य आउत्तजलउल्लियग्गदंडपुंछणेण सिद्धीए तिप्पिज्जइ। तं च दंडपुंछणं अणाउत्तट्ठाणे नेऊण तिप्पिज्जइ। अणाउत्तट्ठाणं नाम नीसरंताणं वामबाहाए दुवारपासे भूमिखंडलं इट्टिगाइपरिहिंजुत्तं अणाउत्तंडं ति रूढं। उच्चारे वोसिरिए वामकरेण तिहिं नावापूरेहिं आयमिय, आउत्तेण दाहिणहत्थेण दवं मत्थए छोढूण कोप्परेण वा दवं घित्तूण अहिट्ठाणलिंगेसु जंघासु कलाइयासु चउरो चउरो तिप्पाओ घेप्पंति। पुरीसपवित्तीए जायाए जइ मुहे अणाउत्तो हत्थो लग्गइ तया कप्पुत्तारणेण सुज्झइ। तहा जइ आयामतस्स तिप्पणय[2] दोरओ वा वामहत्थे पाए वा लग्गइ तया अणाउत्ती हवइ। दवं उज्झित्ता दोरयं मज्झे खिवित्ता तं भायणं तिप्पिज्जइ। बाहिं फट्टयाइमि भग्गे जेण हत्थेण तं उद्धरेइ सो हत्थो तिप्पियव्वो। जइ दंडओ हड्डे लग्गइ तया तिप्पियव्वो। जेण अंगेण उवंगेण वा अणाउत्तं भंडोवगरणं साहु वा छिवइ, जंमि य रुहिरं नीहरइ तं अणाउत्तं होइ। कज्जयं भंडाइसु पाणियं तिप्पणयाइ कंठट्ठियं दोरयं च राओ जइ वीसरइ सव्वमणाउत्तं होइ। जाणंतेण विहाराइकारणे सुनयकंठदिन्न दोरयमणाउत्तं न होइ। गुड-घय-तिल्ल-खीराई मोयणवइरित्तकज्जे आणीयमवस्सं तिप्पित्तु वावरिज्जइ। नालिएराइसु घमणत्थं तिल्लं निक्खित्तं परिवसियं अणाउत्तं होइ, जइ लवणं मज्झे न निक्खिप्पइ। मुत्तूण उट्टिएहिं दसाइणा कप्पवाणियं घेत्तुं पढमं एगं हत्थं मत्थए, एगं च मुहे काउं चउरो तिप्पाओ घेप्पन्ति। जइ पुण कारणजाए मुहसुद्धिमाइ मुहे चिट्ठइ, तया पढमं मत्थयं तिप्पित्ता, तओ मुहं पुट्ठो तिप्पियव्वं। तओ मत्थए आउत्तदवं छोढुं कण्ण-खंध-पगंड[3]-कोप्पर[4]-पउट्ठ[5] हियएसु चत्तारि चत्तारि तिप्पाओ। तओ पिट्ठ-पुट्ठीओ समगं तिप्पित्ता चोलपट्टय-ऊरु-जाणु-पिंडिया-पाएसु चउरो चउरो तिप्पाओ। तओ भायणाइ वइसणं च तिप्पिउं निउत्तो साहू ओमरायणिओ वा मंडलिं गिण्हिय, तक्क-तीमणाइखरडियं च भूमिं जलेण सोहिय, दंडउंछणं पमज्जणिं वा जेण मंडली गहिया तं मंडलीए तिप्पिय, तेणेव आउत्तजलउल्लियग्गेण मंडलीठाणं बाहिं नीसरंतेण तिप्पियदेसं अच्छिवंतेण अविच्छिन्नं तिप्पियव्वं। तं च दरतिप्पियं जइ केणवि अणाउत्तेहिं पाएहिं अकंतं पुणो अणाउत्तं होइ, तओ दंडाउंछणं उद्धरणियाए उवरिं तिप्पित्ता मंडलिं परिट्ठाविय उद्धरणियं अणाउत्तट्ठाणे तिप्पिय खीलए धारित्तु अब्भुक्खणं निक्खिविज्जइ। जो य सेहो गिलाणो सामायारी अकुसलो वा सो दंडाउंछणेण तिप्पिज्जइ। अववाएण राओ विहारत्थं नगराईहिंतो नीसरंताणं जइ पाएसु तलियाओ तो अणाउत्ता न होंति पाया, अन्नहा होंति। दिया वा राओ वा अणाउत्ते हत्थपायाइ अंगे जइ पयलाइ तो कप्पुत्तारणेण सुज्झइ। भुंजतस्स

---

1 'रात्रौ' इति B टिप्पणी। 2 A पाणयं। 3 'कूर्परस्कन्धयोमध्ये प्रगंड'। 4 भुजामध्य कूर्परं। 5 आमणिबन्धात् कूर्परस्याध प्रकोष्ठ कलाचिरा स्यात्।' इति टिप्पणी A आदर्शे।

सित्थ पियतस्स वा दव जइ चोलपट्टयमज्झे गय तो वि कप्पुत्तारणेण सुज्झइ। कारणपरिवासियजलेण तिप्पाओ न सुज्झति। अणुगए य जइ तिप्पाओ गेण्हतो एग दो तिन्नि वा गिण्हेइ अपडते वा दवे गिण्हइ सव्वमणाउत्त होइ। नहा लोयकेसा य वसहीए वीसरिया तइए दिणे अणाउत्ता होंति। खइरकक-समाण पूइत्तारण्ण वा रुहिरमणाउत्त न होइ। रुहीए मज्जार-सुणग-माणुसाइपुरीसे वा ठिके[1] अणाउत्तो होइ। तेप्पणयाइसु दव अणाउत्त जाय अइरित्ते वा मा उज्झियव्व होहिइ त्ति। तओ आकठ जलेण भरित्ता तिप्पिय आउत्त होइ त्ति।

॥ कप्पतिप्पसामायारी समत्ता ॥ २५ ॥

*

§ ६७ एव कप्पतिप्पाइविहिपुरस्सर साहू समाणियसयलजोगविही मूलगथ-नदि-अणुओगदार-उत्तरज्झ-यण-इसिभासिय अग-उवग पइन्नय-छेयग्गथआगमे वाइज्जा। अतो **वायणाविही** भणइ –

तत्थ अणुओगमडलि पमज्जिय गुरुणो निसिज्ज रइत्ता, दाहिणपासे य निसिज्जाए अक्खे ठाइत्ता, गुरूण पाएसु मुहपोत्तियापडिलेहणपुव्व दुवालसावत्तवदण दाउ, पढमे खमासमणे अणुओग आढवेमो त्ति, बीए अणुओगआढवणत्थ काउस्सग्ग करेमो त्ति भणिय, अणुओगआढवणत्थ करेमि काउस्सग्ग अन्नत्थ ऊससिएणमिच्चाइ पढिय, अट्ठुस्सास काउस्सग्ग करिय, पारित्ता पचमगल भणित्ता, पढमे खमासमणे वायण संदिसावेमि, बीए वायण पडिगाहेमि, तइए वइसण संदिसावेमि, चउत्थे बइसण ठामि त्ति भणिऊण, भीयासणत्थो मुहपोत्तियाठइयवयणो उवउत्तो उवियसरेण वाइज्जा। जे के वि अणुओग आढविय उवउत्ता सुणन्ति तेसिं सव्वेसिं वायणा लग्गइ। अणुओगे आढत्ते निद्दा विगहा वत्ता-हास-पच्चक्खाणदाणाइ न कीरइ। जस्स सगासे त सुयमहिज्जिय तमेग मुत्तु अन्नस्स गुरुणो वि न अब्भुट्ठिज्जइ। उद्देसगसम-त्तीए छोभवदण भणति। अज्झयणाइसु वदणगमेव। अणुओगसमत्तीए पढमखमासणे अणुओगपडिक्कमह, बीए अणुओगपडिक्कमणत्थ काउस्सग्गु करह। अणुओगपडिक्कमणत्थ करेमि काउस्सग्गमिच्चाइ पढिय, अट्ठुस्सास उस्सग्ग काउ पारित्ता, पचमगल भणित्ता, गुरुणो वदति त्ति।

॥ वायणाविही समत्तो ॥ २६ ॥

*

§ ६८ एव विहिगहियागम सीसं अणुवत्तणगचाइगुणन्निय नाउ वायणायरियपए उवज्झायपए आयरियपए वा गुरुणो ठावेंति। सिस्सिणि च पवत्तिणीपए महत्तरापए वा। तत्थ **वायणायरियपयठावणा-विही** भणइ–

एगक्खरु निसिज्ज उवरच्छयसहिय रइत्ता पक्खालियग सीसं वामपासे ठाविय दुवालसावत्तवदण दवाविय, खमासमणपुव्व गुरू भणावेइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह वायणायरियपयअणुजाणावणिय वासनि-क्खेव करेह'। गुरू भणइ–'करेमो'। पुणो खमासमणेण सीसो भणइ–'तुब्भे अम्ह वायणायरियपय-अणुजाणावणिय चेइयाइ वदावेह'। तओ गुरू 'वदावेमो'त्ति भणित्ता, तस्स सिरे वासे खिविय वड्ढन्ति-याहिं थुईहिं तेण सहिओ देवे वदइ। जाव पचपरमिट्ठित्थवभणण पणिहाणगाहाओ य। तओ गुरू सीसो य वायणायरियपयअणुजाणावणिय सत्तावीसुस्सास काउस्सग्ग दो वि करित्ता उज्जोयगर भणंति। तओ सूरी उवट्ठिओ नदिकड्ढावणिय काउस्सग्ग अट्ठुस्सास कारवित्ता करित्ता य नवकारतिग भणित्ता

---

1 'पुतिलायव' इति A टिप्पणी। 2 'रूहे' इति A टिप्पणी।

'नाणं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा – आभिणिबोहियनाणं, सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं" पंचमंगलत्थ नंदि कड्ढिय इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च – 'एयस्स साहुस्स वायणायरियपयअणुण्णा नंदी पवत्तइ' त्ति भणिय सिरसि वासे खिवेइ । तओ निसिज्जाए उवविसिय गंधे अक्खए य अभिमंतिय संघस्स देइ । तओ जिणचलणेसु गन्धे खिवेइ । तओ सीसो वंदिउं भणइ – 'तुब्भे अम्हं वायणायरियपयं अणुजाणह' । गुरू भणइ – 'अणुजाणेमो' । सीसो भणइ – 'संदिसह किं भणामो ?' गुरू भणइ – 'वंदित्ता पवेयह' । पुणो वंदिय सीसो भणइ – 'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्ह वायणायरियपयमणुन्नायं' ३ खमासमणाणं, हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभएणं, सम्मं धारणीयं चिरं पालणीयं अन्नेसिं पि पवेयणीयं । सीसो वंदिय भणइ – 'इच्छामो अणुसट्ठिं', पुणो वंदिय सीसो भणइ – 'तुम्हाणं पवेइयं, संदिसह साहूणं पवेएमि' । तओ नमोक्कारमुच्चरंतो सगुरु समवसरणं पयक्खिणी करेइ तिन्नि वाराओ । गुरू संघो य 'नित्थारगपारगो होहि, गुरुगुणेहिं वड्ढाहि' त्ति भणिरो तस्स सिरे वासक्खए खिवेइ । तओ वंदिय सीसो भणइ – 'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह काउस्सग्गं करेमि' त्ति भणित्ता अणुण्णाय 'वायणायरियपयथिरीकरणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूससिएणमिच्चाइ' भणिय काउसग्गे उज्जोयं चिंतिय, पारित्ता चउवीसत्थयं भणित्ता, गुरुं वंदित्ता भणइ – 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं निसिज्जं समप्पेह' । तओ गुरू निसिज्जं अभिमंतिय, उवरिं चंदणसत्थियं काऊण, तस्स देइ । सो य तिसिज्जं मत्थएण वंदित्ता सनिसिज्जो गुरुं तिपयाहिणी करेइ । तओ पत्ताए लग्गवेलाए चंदणचच्चियदाहिणकन्ने तिन्नि वारे गुरू मंतं सुणावेइ – 'अ-उ-म्-न्-अ म्-ओ-भ्-अ-ग्-अ व्-अ-अ-उ-अ-र्-अ-ह्-अ अ-उ म्-अ-ह्-अ-इ म्-अ-ह्-आ-व्-ई-र्-अ-व्-अ-द्ध्-अ-म्-आ ण्-अ स्-आ-म्-इ-स्स्-अ-स्-इ-ज्झ्-अ-उ-म्-ए-भ्-अ-ग्-अ-व्-अ-ई-म्-अ-ह्-अ-इ-म्-अ-ह्-आ-व्-इ-ज्ज्-आ-अ-उ-म्-व् ई र्-ए-च-ई-र्-ए-म्-अ-ह्-आ-व् ई र्-ए-ज्-अ-य्-अ व् ई-र-ए-स् ए ण् अ-व्-ई-र्-ए-व्-अ-द्ध्-अ-म्-आ-ण्-अ-व्-ई-र्-ए-ज्-अ-य् ए-व-इ-ज्-अ-य्-ए-ज्-अ-य्-अ-त्-ए-अ-प्-अ-र्-आ-ज्-इ-ए-अ-ण्-इ-ह्-अ-ए अ-उ-म्-ह्‌ र्-ई-म्-स्-व्-आ-ह्-आ । उवयारो[1] चउत्थेण साहिज्जइ । पव्वज्जोवट्ठावणा-गणिजोग-पइट्ठा-उचिमट्टपडिवत्तिमाइएसु कज्जेसु सत्तवारा जवियाए गंधक्खेवे नित्थारगपारगो होइ, पूयासक्कारारिहो य । तओ वद्धमाणविज्जामंडलपडो तस्स दिज्जइ । तओ नामट्ठवणं करिय, गुरुणा अणुण्णाए ओमरायणिया साहू साहुणीओ य सावया साविआओ य तस्स पाएसु दुवालसावत्तवंदणं दिंति । सो य सयं जिट्ठज्जे वंदइ । तओ तस्स कंबलवत्थखंडरहियस्स पुट्ठिपट्टस्स अणुण्णं दाऊण साहु-साहुणीण अणुवत्तणे गंभीरयाए विणीययाए इंदियजए य अणुसट्ठी दायव्वा । तओ वंदणं दाविऊण पच्चक्खाणं निरुद्धं कारिज्जइ त्ति ।

॥ वायणायरियपयट्ठावणाविही समत्तो ॥ २७ ॥

*

§ ६९. संपयं उवज्झायपयट्ठावणाविही । सो वि एवं चेव – उवज्झायपयाभिलावेण भाणियव्वो । नवरं उवज्झायपयं आसन्नलद्धपइमत्ताइगुणरहियस्स वि समग्गसुत्तत्थगहणधारणवक्खाणगुणवंतस्स सुत्तवायणे अपरिस्संतस्स पसंतस्स आयरियट्ठाणजोग्गस्सेव दिज्जइ । निसिज्जा य दुकंबला, आयरियवज्ज जेट्ठकणिट्ठा सव्वे वंदणं दिंति । मंतो य तस्स सो चेव, नवरं आइए नंदिपयाणि[2] अहिज्जन्ति ।

अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-अ-र्-अ-ह्-अ-म्-त-आ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-स्-इ-द्ध्-आ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-आ-य्-अ-र्-इ-आ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-उ-व्-अ-ज्झ्-आ-य्-आ-ण्-

1 C आदर्शे अत्र – 'उवयारो चउत्थेण तम्मि चेव दिणे सहस्सजावेण–सोभाग्यमुद्रा १, परमेष्ठिमुद्रा २, प्रवचनमुद्रा ३, सुरभिमुद्रा ४, एतं मुद्राचतुष्टयं कृत्वा मंत्रं स्मरणीयं –साहिज्जइ'–एतादृशः पाठो विद्यते । 2 A नास्ति पदमिदम् ।

अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-स्-अ-ब्-अ-स्-आ-ह्-उ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-अ-उ-ह्-इ-म्-इ-ण्-अ-अ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न् अ-म् ओ-प्-अ-र्-अ-म्-ओ-ह्-इ-ज्-इ-ण्-अ-अ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म् ओ-स्-अ-ब्-ओ-ह्-इ-ज्-इ-ण्-अ-अ-ण्-अ-म् । अ-उ-म्-न्-अ-म्-ओ-म्-अ-ण्-अ-म्-त्-ओ-ह्-इ-ज्-इ-ण्-अ-अ-ण्-अ-म् । उवयारो सो चेव । सघपूयाइमहूसवाहिगारो एत्थ सावयाण ति ।

॥ उवज्झायपयट्ठावणाविही समत्तो ॥ २८ ॥

*

§७०. इयाणिं आयरियपयट्ठावणाविही भण्णइ । आयार-सुय-सरीर-वयण-वायणा-मइपओग-मइसंगह-परिण्णारूवअट्ठविहगणिसपओवनत्तस्स देस कुल-जाइ-रूवी-इच्चाइगुणगणालंकियस्स बारसंवरिसे अहिज्जिय सुत्तस्स बारसंवरिसे गहियत्थसारस्स बारसवरिसे लद्धिपरिक्खानिमित्त कयदेसदसणस्स सीसस्स लोय काउ पाभाइयकाल गिण्हिय, पडिक्कमणाणतर वसहीए सुद्धाए कालग्गाहीहिं काले पवेइए अगपक्खालण काउ, दाहि-णकरे कणयकंकणमुद्दाओ पहिराविज्जु, चोक्खनेवत्थ पगुराविज्जइ । पसत्थतिहि-करण-मुहुत्त-नक्खत्त-जोग-लग्गजुत्ते दिवसे अक्ख-गुरुजोगाओ दुन्नि निसिज्जाओ पडिलेहिज्जन्ति । सीसो गुरू य दुन्नि वि सज्झाय पट्ठविंति । पट्ठविए सज्झाए जिणाययणे गन्तूण समवसरणसमीवे दुन्नि वि निसिज्जाओ भूमिं पमज्जित्तु संघट्टियाओ धरिज्जंति । तओ गुरू सूरिमन्तेण चदणघणसारचच्चियअक्खाभिमतणे कए निसिज्जाओ उट्ठित्ता, सूरिपयजोग्ग सीसं वामपासे ठवित्ता, खमासमणपुव्व भणावेइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह दव्व-गुण-पज्जवेहिं अणुओगअणु-जाणावणत्थ वासे खिवेह' । तओ गुरू सीसस्स वासे खिवेइ, मुद्दाओ सरीररक्ख च करेइ । तओ सीसो खमासमण दाउ भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह दव्व-गुण-पज्जवेहिं चउव्विहअणुओगअणुजाणावणत्थ चेइआइ वदावेह' । तओ गुरू सीस वामपासे ठवित्ता वड्ढुतियाहिं थुईहिं संघसहिओ देवे वदइ । संतिनाह-संति-देवयाइ आराहणत्थ काउस्सग करेइ । तेसिं थुईओ देइ । सासणदेवयाकाउस्सग्गे य उज्जोयगरं चउक्क चिन्तइ[1] । तीसे चेव थुइ देइ । तओ उज्जोयगरं भणिय, नवकारतिग कड्ढिय, सक्कत्थय भणित्ता, पचपर-मेट्ठित्थव पणिहाणदडग च भणति । तओ सीसो मुत्तिं पडिलेहित्ता दुवालसावत्तवदण दाउ भणइ—'इच्छा-कारेण तुब्भे अम्ह दव्व-गुण-पज्जवेहिं अणुओगअणुजाणावणत्थ सत्तसइय नदिकड्ढावणत्थ काउस्सग करावेह । तओ दुवे वि काउस्सग करेंति सत्तावीसुस्सास, पारित्ता चउवीसत्थय भणति । तओ सीसो खमासमण दाउ भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह सत्तसइय नदिं सुणावेह । तओ सूरी नमोक्कारतिगपुव्व उद्धट्ठिओ नदि-पुत्थियाए वासे खिवित्ता, सयमेव नदिं अणुकड्ढइ । अन्नो वा सीसो उद्धट्ठिओ मुहपोत्तियाठइयमुहकमलो उवउत्तो नदिं सुणावेइ । सीसो य मुहपोत्तियाए ठइयमुहकमलो जोडियकरसंपुडो एगग्गमणो उद्धट्ठिओ नदिं सुणेइ । नदिसमत्तीए सूरी सूरिमतेण मुद्दापुव्व गधक्खए अभिमतेइ । तओ मूलपडिमासमीव गुरू गतूण पडिमाए वासक्खेव काऊण, सूरिमत उद्धट्ठिओ जवइ । ततो समवसरणसमीवमागम्म नदिपडिमाचउ-क्कस्स वासे खिवेइ । तओ अभिमतिय वासक्खए चउव्विहसिरिसमणसंघस्स देइ । तओ सीसो खमासमण दाउ भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह दव्व-गुण पज्जवेहिं अणुओग अणुजाणेह' । गुरू भणइ—'अह एयस्स दव्व-गुण-पज्जवेहिं खमासमणाण हत्थेण अणुओग अणुजाणामि' । सीसो खमासमण दाउ भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भेहिं अम्ह दव्व-गुण-पज्जवेहिं अणुओगो अणुण्णाओ[2]'—एव सीसेण पण्हे कए गुरू भणइ—'खमासमणाण हत्थेण सुत्तेण अत्थेण तदुभयेण अणुओगो अणुण्णाओ ३ । सम्म धारणीओ, चिरं पालणीओ, अन्नेसिं च पवेयणिओ'—इति भणतो वासे खिवेइ । तओ सीसो खमासमण दाउ भणइ—'तुम्हाण पवेइय, संदिसह

1 A करिस । 2 B लेखिदय । 3 चिंतति ।

साहूण पवेएमि" । गुरू भणइ–'पवेयह' । तओ नमोकारमुच्चरतो चउद्दिसिं सगुरु समवसरण पणमतो पाउछण गहिय, रयहरणेण भूमिं पमज्जितो पयक्खिण देइ । सघो य तस्स सिरे अक्खए खिवइ । एव तिन्नि वाराओ देइ । तओ खमासमण दाउ भणइ–'तुम्हाण पवेइय, सदिसह काउस्सग करेमि" । गुरू भणइ–'करेह' । खमासमण दाउ–दव्व-गुण-पज्जवेहिं अणुओगअणुण्णानिमित्त करेमि काउस्सग–उज्जोय चिंतिय त च्चेव भणइ । तओ गुरू सूरिमतेण निसिज्ज अभिमतेइ । तओ सीसो खमासमण दाउ भणइ– 'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह निसिज्ज समप्पेह' । तओ गुरू वासे मत्थए खिविय तिकबल निसिज्ज समप्पेइ । ततो निसिज्जासहिओ समवसरण गुरु च तिन्नि वाराओ पयक्खिणी करेइ । तओ गुरुस्स दाहिणभुयासन्ने स निसिज्जाए निसीयइ । तओ पत्ताए लग्गवेलाए चदणचच्चियदाहिणकन्नस्स गुरुपरपरागए मतपए कहेइ, तिन्नि वाराओ । एसो य सूरिमतो भगवया वद्धमाणसामिणा सिरिगोयमसामिणो एगवीससयअक्खरप्पमाणो दिन्नो, तेण य बत्तीससिलोगप्पमाणो कओ । कालेण परिहायतो परिहायतो जाव दुप्पसहस्स अद्धुट्ठसिलोग-प्पमाणो भविस्सइ । नय पुत्थए लिहिज्जइ, आणाभगप्पसंगाओ । जित्तियमित्तो य संपय वट्टइ तित्तियस्स सयलस्स वि लग्गवेलाए दाणे इट्ठलग्गसो न पव्वइ । अतो लग्गस्स आरेणावि पीढचउक्क दायव । इट्ठलग्गसे पुण चउपीढसामिणो मतरायस्स पच सत्त वा जहा संपदाय पयाई दायवाइ ति गुरु आएसो । उवयारो एयस्स कोडिअसतवेण साहिज्जइ । तव्विही इमो–

उ०नि०आ०नि०आ०नि०आ०नि०उ०इग पणिग पणेग पणिग इगमेगं।
चिंतण-पढणं विकहाचाओ ऽहोरत्तणुट्ठाणं ॥ १ ॥
उ०नि०आ०नि०आ०नि०उ०इगेग ति चउ इग दुग इंग पुव्वयावारो ।
सविसेसो जिणथव चत्तमंतडसय च उस्सग्गे ॥ २ ॥
उ०नि०आ०नि०आ०नि०उ०इगट्ठ पंच सत्तेग दु इग तइयपए ।
उ०नि०आ०दु इग पणेगिग तुरिए पुव्वो विही दुसुवि ॥ ३ ॥
मोणेण सुरहिदव्वच्चिय गोयमतप्परेण निस्सकं ।
झाणं इत्थियदंसपमंतपए सोलसायामा ॥ ४ ॥

साहणाविही य अम्हच्चिय सूरिमतकप्पे दट्ठवो । जओ च्चेव एस महप्पभावो एत्तोच्चिय एयस्साराहगो सूयगभत्त मयगभत्त रयस्सलाछुत्तभत्त मज्जमसासिभत्त च परिहरइ । अन्नेसि साहूण उच्छिट्ठजलकणेणावि लग्गेण एयस्स न भोयण कप्पइ त्ति । तओ सीसो खमासमण दाउ भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह अक्खे समप्पेह' । तओ गुरू तिन्नि अक्खमुट्ठीओ चद्धतियाओ गधकप्पूरसहियाओ देइ । सीसो वि उवउत्तो करयलसंपुडेण गिण्हइ । जोगपट्टय खडिय च गुरू समप्पेइ त्ति **पालित्तयसूरी** । तओ सीसो खमासमण दाउ भणइ–'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह नामट्ठवण करेह' । तओ गुरू वासे खिवन्तो जहोचिय सूरिसद्दपज्जत नाम तस्स करेइ ।

तओ गुरू निसिज्जाए उट्ठेइ, सीसो तत्थ निसीयइ । तओ नियनिसिज्जानिसन्नस्स सीसस्स मुहपोत्तिं पडिलेहिऊण तुल्लगुणक्खावणत्थ जीय ति काउ गुरू दुवालसावत्तवदण दाउ भणइ–'वक्खाण करेह' । तओ सीसो जहासत्तीए परिसाणुरूव वा नदिमाइय वक्खाण करेइ । कए वक्खाणे साहवो वदण दिंति । ताहे सो निसिज्जाओ उट्ठेइ, गुरू निसिज्जाए उवविसइ । सीसो य जाणू ठिओ सुणेइ ।

1 C इग। 2 पदमिद नास्ति A।

गुरू वि तस्स उववूहण काउं सूरिपयठवियसीसस्स साहुवग्गस्स साहुणीवग्गस्स य अणुसट्ठिं देइ। अणुओगविसज्जावणत्थं काउस्सग्गं दुवे वि करेंति। कालस्स पडिक्कमंति। तओ अविहवसाविगाओ आरत्तियाइअवतारणं कुणंति। तओ संघसहिओ छत्तेण धरिज्जमाणेण महसवेण वसहीए जाइ। अणुण्णायाणुओगो सूरी निरुद्धं उववासं वा करेइ। जहासत्तीए संघदाणं करेइ। इत्थ संघपूया-जिणभवणट्ठाहियाइकरणं च सावयाहियारो। मोयणे पुरओ चउक्कियाइधारणं, आसणे य कंबलवत्थखंडपडिच्छन्नो पुट्टिपट्टो य तस्स अणुण्णाओ।

§ ७१. उववूहणा पुण एवं–

निज्जामओ भवण्णवतारणसद्धम्मजाणवत्तम्मि।
मोक्खपहसत्थवाहो अन्नाणधाण चक्खू य ॥ १ ॥
अत्ताणाणताणं नाहोऽनाहाण भव्वसत्ताण।
तेण तुमं सुपुरिस! गरुयंगच्छभारे निउत्तोऽसि ॥ २ ॥

अह अणुसट्ठी–

छत्तीसगुणधुराधरणधीरधवलेहिं पुरिससीहेहिं।
गोयमपामुक्खेहिं जं अक्खयसोक्खमोक्खकरं ॥ ३ ॥
सव्वोत्तमफलजणयं सव्वोत्तमपयमिमं समुव्वूढं।
तुमए वि तयं दढमसढबुद्धिणा धीर! धरणीयं ॥ ४ ॥
न इओ वि परं परमं पयमत्थि जए वि कालदोसाओ।
वोलीणेसु जिणेसु जमिणं पवयणपयासकरं ॥ ५ ॥

अओ– नाणाविणेयवग्गाणुसारिसिरिजिणवरागमाणुगयं।
अगिलाणीएऽणुवजीवणाए विहिणा पइदिणं पि ॥ ६ ॥
कायव्वं वक्खाणं जेण परत्थोज्जएहिं धीरेहिं।
आरोविय तुममिमं नित्थरसि पयं गणहराणं ॥ ७ ॥
सपरोवयारगरुयं पसत्थतित्थयरनामसंसिम्मवणं।
जिणभणियागमवक्खाणकरणमिव अनणुगुणजणगं ॥ ८ ॥
अगणियपरिस्समो तो परेसिमुवयारकरणदुल्ललिओ।
सुंदर! दरिसिज्ज तुमं सम्मं रम्मं अरिहधम्मं ॥ ९ ॥

तहा– निच्चं पि अप्पमाओ कायव्वो सव्वहा वि धीर! तुमे।
उज्जमपरे पहुम्मि सीसा वि समुज्जमंति जओ ॥ १० ॥
चइंतओ विहारो कायव्वो सव्वहा तहा तुमए।
हे सुंदर! दरिसण नाण-चरणगुणपयरिसनिमित्तं ॥ ११ ॥
सखित्ता वि हु मूले जह वड्ढइ वित्थरेण वच्चंती।
उदहिं तेण वरनई तह सीलगुणेहिं वड्ढाहि ॥ १२ ॥

1 A गुरुं।

सीयावेइ विहार गिद्धो सुहसीलयाइ जो मूढो ।
सो नवरि लिंगधारी संजमसारेण निस्सारो ॥ १३ ॥
वज्जेसु वज्जणिज्ज नियपरपक्खे तहा विरोह च ।
वायं असमाहिकर विसग्गिभूए कसाए य ॥ १४ ॥
नाणंमि दंसणंमि य चरणंमि य तीसु समयसारेसु ।
चोएइ जो ठवेउ गणमप्पाणं गणहरो सो ॥ १५ ॥
एसा गणहरमेरा आयारत्थाण वण्णिया सुत्ते ।
आयारविरहिया जे ते तमवस्स विराहिंति ॥ १६ ॥
अपरिस्सावी सम्म समदंसी होज्ज सव्वकज्जेसु ।
सरक्खसु चक्खुं पिव सबालवुड्ढाउलं गच्छं ॥ १७ ॥
कणगतुला सममज्झे धरिया भरमविसम जहा धरइ ।
तुल्लगुणपुत्तजुगलगमाया वि समं जहा हवइ ॥ १८ ॥
नियनयणं जुयलिय वा अविसेसियमेव जह तुमं वहसि ।
तह होज्ज तुल्लदिट्ठी विचित्तचित्ते वि सीसगणे ॥ १९ ॥
अन्नं च मोक्खफलकंखिभवियसउणाण सेवणिज्जो तं ।
होहिसि लद्धच्छाओ तरु व्व मुणिपत्तजोगेण ॥ २० ॥
ता एए वरमुणिणो मणयं पि हु नावमाणणीया ते ।
उक्खित्तभरुव्वहणे परमसहाया तुह इमे जं ॥ २१ ॥
जहा विंझगिरी आसन्न-दूरवणवत्तिहत्थिजूहाणं ।
आधारभावमविसेसमेव उव्वहइ सव्वाणं ॥ २२ ॥
एवं तुम पि सुंदर ! दूर सयणेयराइसकप्प ।
मुत्तुमिमाण मुणीणं सव्वाण वि हुज्ज आहारो ॥ २३ ॥
सयणाणमसयणाण भूणप्पायाण सयणरहियाण ।
रोगिनिरक्खरकुक्खीण बालजरजज्जराईणं ॥ २४ ॥
पेमहुपिया व पियामहो ऽहवाऽणाहमडवो वावि ।
परमोवट्ठंभकरो सव्वेसि मुणीण होज्ज तुम ॥ २५ ॥
तह इह दुसमागिम्हे साहूणं धम्ममइपिवासाणं ।
परमपयपुरपहाणुगसुविहियचरियापवाइ ठिओ ॥ २६ ॥
सपाडिज्जऽज्जाण वि किच्चजलं देसणापणालीए ।
वज्जियसंसग्गीण वि तुममंतेवासिणीउ त्ति ॥ २७ ॥
तह दुविहो आयरिओ इहलोए तह य होइ परलोए ।
इहलोए असारिणिओ[2] परलोए फुड भणंतो य ॥ २८ ॥
ता भो देवाणुप्पिया परलोए हुज्ज सम्ममायरिओ ।
मा होज्ज[3] स-परनासी होउ इहलोयआयरिओ ॥ २९ ॥

1 BC साहूण वि । 2 B असारणिओ, C सारणिओ । 3 A होइ ।

तह मण-वइ-काएहिं करितु विप्पियसयाइं तुह समणा।
तेसु तुम तु पिय चिय करिज्ज मा विप्पियलव ति ॥ ३० ॥
निग्गहिऊण अणक्खे अकुणतो तह य एगपक्खित्त।
साहम्मिएसु समचित्तयाइ सव्वेसु वट्टिज्जा ॥ ३१ ॥
सव्वजणवधुभावारिह पि इक्कस्स चेव पडिवद्धं।
जो अप्पाण कुणई तओ विमूढो हु को अन्नो ॥ ३२ ॥
एव च कीरमाणे होही तुह भुवणभूसणा कित्ती।
एत्तो चेव य चद पडुच्च केणावि ज भणियं ॥ ३३ ॥
'गयणगणपरिसक्कणखडणदुक्खाइं सहसु अणवरय।
न सुहेण हरिणलछण! कीरइ जयपायडो अप्पा' ॥ ३४ ॥
अविणीए सासितो कारिमकोवे वि मा हु मुचिज्जा।
भद्द! परिणामसुद्धिं रहस्समेसा हि सव्वत्थ ॥ ३५ ॥
उप्पाइयपीडाण वि परिणामवसेण गइविसेसो जं।
जह गोवं खरय-सिद्धत्थयाण वीर समासज्ज ॥ ३६ ॥
अइतिक्खो खेयकरो होहिसि परिभवपय अइमिऊ य।
परिवारमि सुदर! मज्झत्थो तेण होज्ज तुम ॥ ३७ ॥
स-परावायनिमित्त सभवइ जहा असीअ परिवारो।
एव पहू वि ता तयणुवत्तणाए जएज्ज तुमं ॥ ३८ ॥
अणुवत्तणाइ सेहा पाय पावति जोग्गय परम।
रयण पि गुणोक्करिस पावइ परिकम्मणागुणेण ॥ ३९ ॥
इत्थ उ पमायखलिया पुव्वब्भासेण कस्स व न होंति।
जो[2] तेऽवणेइ सम्मं गुरुत्तण तस्स सहल ति ॥ ४० ॥
को नाम सारही ण स होज्ज जो भद्दवाहणो[3] दमए।
दुट्ठे वि हु जो आसे दमेइ त सारहिं बिंति ॥ ४१ ॥
को नाम भणिइकुसलो वि इत्थ अच्चब्भुयप्पभावम्मि।
गणहरपए पइपय सदुवएसे खमो वुत्तु ॥ ४२ ॥
परमित्तिय भणामो जायइ जेणुण्णई पवयणस्स।
तं त विचिंतिऊण तुमए सयमेव कायव्व ॥ ४३ ॥
सीसाणुसासणे वि हु पारद्धे अह इम तुमं पि खणं।
वपिणज्जत जइपहु! पहिट्ठचित्तो निसामेहि ॥ ४४ ॥
वज्जेह अप्पमत्ता अज्जाससग्गिमग्गिविससरिस।
अज्जाणुचरो[5] साहू पावइ वपणिज्जमचिरेण ॥ ४५ ॥

---

1 BC गोवरचरय°। 2 BC जा ते। 3 'भद्रवाजिन-' इति A टिप्पणी। 4 B °ससग्गमग्गि°। 5 A अजाणुवरि, B अमाणुवसे।

थेरस्स तवस्सिस्स वि सुवहुसुयस्स वि पमाणभूयस्स ।
अज्जासंसग्गीए निवडइ वयणिज्जदढवज्जं ॥ ४६ ॥
किं पुण तरुणो अवहुस्सुओ य अविगिट्ठतवपसत्तो य ।
सद्दाइगुणपसत्तो न लहइ जणजंपणं लोए ॥ ४७ ॥
एसो य मए तुम्हं मग्गमजाणाण मग्गदेसयरो ।
चक्खू व अचक्खूणं सुयाहिविहुराण विज्जो व्व ॥ ४८ ॥
असहायाण सहाओ भवगत्तगयाण हत्थदाया य ।
दिन्नो गुरू गुणगुरू अहं च परिमुक्कलो इण्हिं ॥ ४९ ॥
एयम्मि सारणावारणाइदाणे वि नेव कुवियव्वं ।
को हि सकण्णो कोवं करिज्ज हियकारिणि जणम्मि ॥ ५० ॥
एसो तुम्हाण पहू पभूयगुणरयणसायरो धीरो ।
नेया एस महप्पा तुम्ह भवाडविनिवडियाणं ॥ ५१ ॥
ओमो समरायणिओ अप्पयरसुओ हव त्ति धीरमिमं ।
परिभविहिह मा तुब्भे गणि त्ति एण्हिं दढं पुज्जो ॥ ५२ ॥
मोक्खत्थिणो हु तुब्भे नय तदुवाओ गुरुं विणा अन्नो ।
ता गुणनिही इमो चिय सेवेयव्वो हु तुम्हाणं ॥ ५३ ॥
ता कुलवहुनाएणं कज्जे निब्भच्छिएहि वि कहिं पि[1] ।
एयस्स पायमूलं आमरणंत न मोत्तव्वं ॥ ५४ ॥
किं बहुणा भणियव्वे जिमियव्वे सव्वचिट्ठियव्वे य ।
होज्जह अईव निहुया एसो उवएससारो त्ति ॥ ५५ ॥

॥ आयरियपयट्ठावणाविही समत्तो ॥ २९ ॥

*

§ ७२. संपय पवत्तिणीपयट्ठावणा । सा य पवत्तिणीपयाभिलावेण वायणायरियपयट्ठवणातुल्ला, मतो सो चेव, नवरं खधकरणी लग्गवेलाए दिज्जइ । सेसं सव्व निसिज्जाइ तहेव ।

§ ७३. अह महत्तरापयट्ठावणाविही भण्णइ । जहासत्तीए संघपूयापुरस्सरं पसत्थतिहि-करण मुहुत्त-नक्खत्त-जोगलग्गजुत्ते दिवसे महत्तराजोग्गा निसिज्जा कीरइ । तओ सिस्सिणीए कयलोयाए सरीरपक्खालण काउ जिणाययणनिवेसियसमोसरणसमीवे गुरू अहीयसुय सिस्सिणिं वामपासे ठविता—'तुब्भे अम्ह पुव्व-अज्जाचंदणाइनिवेसियमहयर-पवत्तिणीपयस्स अणुजाणावणिय नंदिकड्ढावणिय वासनिक्खेव करेह त्ति—' भणावितो सिस्सिणीए सिरसि वासे खिवइ । वड्ढंतियाहिं थुईहिं चेइआइ वंदइ, जाव अरिहाणादिथुत्त-भणण । तओ 'महत्तरापयअणुजाणावणिय काउस्सग्ग करेह' त्ति भणती सत्तावीसोस्सासं काउस्सग्ग गुरुणा सह करेइ । पारित्ता चउवीसत्थय भणित्ता उद्धट्ठिओ सूरी नमोक्कारतिग भणित्ता, 'नाण पंचविह पन्नत्त तं जहा—आभिणिबोहियनाण, सुयनाण, ओहिनाण, मणपज्जवनाण, केवलनाण' ति मंगलत्थ भणिय, इम पुण पट्ठवण पडुच्च—इमीसे साहुणीए महत्तरापयस्स अणुण्णानंदी पयट्टइ—त्ति सिरसि वासे खिवेइ । तओ उववि-

---

1 A कह पि ।

सिय गंधाभिमंतणं संघवासदाणं जिणचलणेसु गंधक्खेवो । तओ पढमखमासमणे—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह महत्तरापयं अणुजाणह—' त्ति भणिए, गुरू भणइ—'अणुजाणामि' । बीए—'संदिसह किं भणामि ?' गुरू आह—'वंदित्ता पवेयह' । तइए—'तुब्भेहिं अम्ह महत्तरापयमणुण्णायं ?' गुरू आह—'अणुण्णायं' । ३ खमासमणाणं हत्थेणं०, 'इच्छामि अणुसट्ठिं' ति, गुरू भणइ—नित्थारगपारगा होहि, गुरुगुणेहिं वड्ढाहि । ५ चउत्थे—'तुम्हाणं पवेइयं संदिसह साहूणं पवेएमि' । पंचमं खमासमणं देइ । तओ नमोक्कारमुच्चरन्ती सगुरु समवसरणं पयक्खिणी करेइ वारतिगं । छट्ठे—'तुम्हाणं पवेइयं, साहूणं पवेइयं, संदिसह करेमि' त्ति भणित्ता, सत्तमे अणुण्णायमहत्तरापयथिरीकरणत्थं करेमि काउस्सग्गमिति काउस्सग्गो कीरइ । उज्जोयं चिंतणपुव्वयं काउस्सग्गं पारित्ता, चउव्वीसत्थयं भणित्ता, वंदित्ता उवविसइ । तओ पत्ताए लग्गवेलाए खंधकरणीखंधे निसिज्जइ । दुक्खला निसिज्जा य हत्थे दिज्जइ । तदुत्तरं चंदणचच्चियदाहिणकण्णाए १० उवज्झायमंतो दिज्जइ वारतिगं, नामट्ठवणं च कीरइ । तदुवरं अज्जचंदणा मिगावईण परमगुणे साहिंतो महत्तराए वइणीण य गुरू अणुसट्ठिं देइ । जहा—

उत्तममिमं पयं जिणवरेहिं लोगोत्तमेहिं पण्णत्तं ।
उत्तमफलसंजणयं उत्तमजणसेवियं लोए ॥ १ ॥
धण्णाण निवेसिज्जइ धण्णा गच्छन्ति पारमेयस्स ।
१५ गंतुं इमस्स पारं पारं वच्चंति दुक्खाणं ॥ २ ॥
जइ वि तुमं कुसला चिय सव्वत्थ वि तहवि अम्ह अहिगारो ।
सिक्खादाणे तेणं देवाणुपिए! पियं भणिमो ॥ ३ ॥
संपत्ता इय पयविं समत्थगुणसाहणमि गुरुययरिं ।
ता तीए उत्तरोत्तरवुड्ढिकए कीरउ पयत्तो ॥ ४ ॥
२० सुत्तत्थोभयरूवे नाणे नाणोत्तकिच्चवग्गे य ।
सत्तिं अइक्कमित्ता वि उज्जमो किर तुमे किच्चो ॥ ५ ॥
सुचिरं पि तवो तवियं चिन्नं चरणं सुयं च बहुपढियं ।
संवेगरसेण विणा विहलं जं ता तदुवएसो ॥ ६ ॥
तहा—सन्नाणाइगुणेसुं पवत्तणेणं इमाण समणीणं ।
२५ सच्च पवित्तिणि चिय जह होसि तहा जइज्ज तुमं ॥ ७ ॥
नियपयगुणेहिं महग्घ सियवीयाससिकल जह कलाओ ।
कमसो समल्लियंती पयई हिमहारधवलाओ ॥ ८ ॥
तह तुह वि तहाविहनियगुणेहिं अग्घारिहाए लोगम्मि ।
एयाउ समल्लीणा पयइस्सु धवलोज्जलगुणाओ ॥ ९ ॥
३० तम्हा निव्वाणपसाहगाण जोगाण साहणविहीण ।
सम्मं सहायिणीए होयव्वं सइ इमाण तए ॥ १० ॥
तह वज्जसिंखला इव मंजूसा इव सुनिविडवाडी व ।
पायारु व रक्खिज्जसु तुममज्जाण पयत्तेणं ॥ ११ ॥

1 A. मयहरापय° ।

अन्नं च विद्दुमलया मुत्तासुत्तीओं रयणरासीओं ।
अइमणहराउ धारइ न केअलाओं जलहिवेला ॥ १२ ॥
किं तु जह सिप्पिणीओ भेरीओ तह वराडियाओ वि ।
जलजोणि त्ति समत्ता असुंदराओ वि धारेइ ॥ १३ ॥
एवं राईसरसिट्ठिपमुहपुत्तीओं पउंरसयणाओ ।
बहुपढियपडियाओ सवग्ग-सयणीओं जाओ य ॥ १४ ॥
मा ताओ चेव तुमं धारिज्जसु कि तु तदियराओ वि ।
संजमभरवहणगुणेण जेण सव्वाओं तुल्लाओ ॥ १५ ॥
अवि नाम जलहिवेला ताओ धरिउं कयाइ उज्झइ वि ।
निच्चं पि तुमं तु धरिज्ज चेव एयाओ धन्नाओ ॥ १६ ॥
अन्नं च दुत्थियाण दीणाणमणक्खराण विगलाणं ।
ऊणहिययाण निब्बधवाण तह लद्धिरहियाण ॥ १७ ॥
पयइनिरादेयाण विन्नाणविवज्जियाण असुहाण ।
असहायाण जरापरिगयाण निब्बुद्धियाण च ॥ १८ ॥
भग्गविलुग्गगीण वि विसमावत्थगयखडखरडाणं ।
इयरूवाण वि सजमगुणिक्करसियाण समणीण ॥ १९ ॥
गुरुणीव अगपडिचारिग व्व धावीव पियवयंसि व ।
हुज्ज भगिणीव जणणीव अहव पियमाइमाया[2] व ॥ २० ॥
तह दढफलियमहादुमसाह व्व तुमं पि उचियगुणसहला ।
समणिजणसउणिसाहारणा दढ हुज्ज कि बहुणा ॥ २१ ॥
एवमणुसासिऊणं पवत्तिणि, अज्जियाओं अणुसासे ।
जह एसो तुम्ह गुरू बन्धू व पिया व माया व ॥ २२ ॥
एए वि महामुणिणो सहोयरा जेट्ठभायरो व्व सया ।
तुम्हं देवाणुपियाण परमवच्छल्लतल्लिच्छा ॥ २३ ॥
ता गुरुणो मुणिणो वि य मणसा वयसा तहेव काएणं ।
नय पडिकूलेयव्वा अवि य सुबहुमन्नियव्वाओ ॥ २४ ॥
एव पवत्तिणी वि हु अरजलियतव्वयणकरणओ चेव ।
सम्ममणुयत्तणिज्जा न कोवणिज्जा मणागं पि ॥ २५ ॥
कुविया वि कहवि तुम्हं सदोसपडिवत्तिपुव्वमणुवेल ।
खामेयव्वा एसा मिगावई इव्व नियगुरुणी ॥ २६ ॥
एसा सिवपुरगमणे सुपसत्था सत्थवाहिणी ज भे ।
एसा पमायपरचक्कपिल्लणे पड्डयपडिसेणा ॥ २७ ॥

---

1 A पवर° । 2 A C पिइमायमाया व ।

तह निहुयं चंकमण निहुय हसण पयंपियं निहुयं ।
सव्व पि चिट्ठियं निहुयमइव तुब्भेहि कायव्व ॥ २८ ॥
थाहिं उवस्सयाओ पय पि नेगागिणीहिं दायव्व ।
वुड्ढज्झियाजुयाहि य जिण-जइगेहेसु गंतव्व ॥ २९ ॥

तओ अणुण्णायमहत्तरापया वदण दाऊण पच्चक्खाण निरुद्धाइ करेइ । सव्वलोगो वदइ, बीजणो वदणय च देइ तीए । जिणहरे गुरूण समोसरणे य पूया कायव्वा । पवत्तिणीपए महत्तरापए य अणुण्णाए वत्थपत्ताइगहण सय पि तीसे काउ कप्पइ ।

॥ महत्तरापयट्ठावणाविही ॥ ३० ॥

*

§ ७४. एव मूलगुरू सम्मत्तारोवणदिक्खाइकज्जाइ वक्खमाणाइ च पइट्ठाईणि काऊण कयाइ आउपज्जत जाणिय, तस्सेव कयअणुजोगाणुण्णस्स अन्नस्स वा अहियगुणस्स गणाणुण्ण करेइ । जदाह—

सुत्तत्थे निम्माओ पियदढधम्मोऽणुवत्तणाकुसलो ।
जाईकुलसपन्नो गभीरो लद्धिमंतो य ॥ १ ॥
सगहुवग्गहनिरओ कयकरणो पवयणाणुरागी य ।
एव विहो उ भणिओ गणसामी[1] जिणवरिंदेहिं ॥ २ ॥

तहा—गीयत्था कयकरणा कुलजा परिणामिया य गभीरा ।
चिरदिक्खिया य वुड्ढा अज्जा य [2]पवत्तिणी भणिया ॥ ३ ॥
एयगुणविप्पमुक्के जो देइ गण [2]पवत्तिणिपय वा ।
जो वि[3] पडिच्छइ नवर सो पावइ आणमाईणि ॥ ४ ॥

जओ—वूढो गणहरसद्दो गोयममाईहिं धीरपुरिसेहिं ।
जो त ठवइ अपत्ते जाणतो सो महापावो ॥ ५ ॥
एव पवत्तिणिसद्दो वूढो जो अज्जचदणाईहिं ।
जो तं ठवइ अपत्ते जाणतो सो महापावो ॥ ६ ॥
लोगम्मि उड्डाहो जत्थ गुरू एरिसा तहिं सीसा ।
लट्ठपरा अन्नेसिं अणायरो होइ अगुणेसु ॥ ७ ॥
तम्हा तित्थयराण आराहतो जहोइयगुणेसु ।
दिज्ज गण गीयत्थो नाऊण पवित्तिणिपय च ॥ ८ ॥

*

§ ७५. गणाणुण्णाविही य इमो—सुहतिहि-करणाइएसु गुरू खमासमणपुव्व—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह दिगाइअणुजाणावणत्थ वासनिक्खेव करेह'— त्ति सीस भाणिय, काऊण य वासक्खेव, पुणो खमासमण-पुव्व—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह दिगाइअणुजाणावणिय नदिकड्ढावणिय देवे वदावेह'— त्ति भाणिय वाम-पासे त करिय, वड्ढतियाहिं थुईहिं देवे वदइ । तओ सीसो वदित्ता भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह दिगाइअणुजाणावणिय नदिकड्ढावणिय काउस्सग्ग करेह' । तओ दोवि दिगाइअणुजाणणत्थ काउस्सग्ग करिंति । तत्थ चउवीसत्थय चिंतित्ता, नमोक्कारेण पारित्ता, चउवीसत्थय भणित्ता, नमोक्कारतिगपुव्व गुरू

1 A गणिसामी । 2 A पवित्तिणी । 3 A जोव ।

तदणुण्णाओ अन्नो वा तहाविहो अणुण्णत्थ नदिं कड्ढइ । सीसो उवउत्तो भावियप्पा तयत्थपरिभावणापरो सुणेइ । तयते गुरू उववितिय, गधे अभिमतिय, जिणपाए पूइय साहुमाईण देइ । तओ वदित्ता सीसो भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भे अम्ह दिगाइ अणुजाणह' । गुरू आह—'खमासमणाण हत्थेण इमस्स साहुस्स दिगाइ अणुन्नाय ३' । पुणो वदित्ता भणइ—'संदिसह किं भणामो ?' गुरू आह—'वदित्ता पवेयह' । तओ वदित्ता भणइ—'इच्छाकारेण तुब्भेहि अम्ह दिगाइ अणुन्नाय । इच्छामो अणुसट्ठिं' । गुरू आह—'गुरू-गुणेहिं वड्ढाहि' । पुणो वदित्ता भणइ—'तुम्हाण पवेइय, सदिसह साहूण पवेएमि' । गुरू आह—'पवेएहि' । तओ खमासमणपुव्व नमोक्कारमुच्चरतो गुरु पयक्खिणीकरेइ । गुरू सीसे वासे खिवतो—'गुरुगुणेहिं वड्ढाहि'त्ति भणइ । एव तिन्नि वेला । तओ—'तुम्हाण पवेइय, साहूण पवेइय, सदिसह काउस्सग्ग करेमि'—त्ति भणिय दिगाइअणुण्णत्थ करेमि काउस्सग्ग, अन्नत्थूससिएणमिचाइ काउस्सग्ग करिय सूरिसमीवे उवविसइ । सीसाइया तस्स वदण दिंति । तओ मूलगुरू गणहरगच्छाणुसट्ठिं देइ । जहा—

धन्नोऽसि तुमं नायं जिणवयणं जेण सयलदुक्खहरं ।
तो सम्ममिमं भवया पउंजियव्वं सयाकालं ॥ १ ॥
इहरा उ रिण परम असम्मजोगो अजोगओ अवरो ।
तो तह इह जइयव्वं जह इत्तो केवल होइ ॥ २ ॥
परमो य एस हेऊ केवलनाणस्स अन्नपाणीणं ।
मोहावणयणओ तह सवेगाइ सयभावेण ॥ ३ ॥
उत्तममिमं० गाहा ॥ ४ ॥ धण्णाण० गाहा ॥ ५ ॥
संपाविऊण परमे नाणाई दुहियतायणसमत्थे ।
भवभयभीयाण दढं ताण जो कुणइ सो धन्नो ॥ ६ ॥
अन्नाणवाहिगहिया जइवि न सम्मं इहाउरा होंति ।
तहवि पुण भावविज्ञा तेसिं अवणिंति तं वाहिं ॥ ७ ॥
ता तंसि भावविज्जो भवदुक्खनिवीडिया तुहं एए ।
हंदि सरण पवन्ना मोएयव्वा पयत्तेण ॥ ८ ॥
त पुण एरिसओ चिय तहवि हु भणिओसि समयनीईए ।
निययावत्थासरिसं भवया निच्च पि कायव्वं ॥ ९ ॥
तुब्भेहि पि न एसो संसाराडविमहाकुडिल्लम्मि ।
सिद्धिपुरसत्थवाहो जत्तेण खण पि मोत्तव्वो ॥ १० ॥
नय पडिकूलेयव्वं वयण एयस्स णाणरासिस्स ।
एव गिहवासचाओ जं सफल होइ तुम्हाणं ॥ ११ ॥
इहरा परमगुरूणं आणाभंगो निसेविओ होइ ।
विहला य होंति तम्मी नियमा इहलोग-परलोगा ॥ १२ ॥
ता कुलवहुनाएण कज्जे निब्भच्छिएहिं वि कहिंपि ।
एयस्स पायमूलं आमरणन्त न मोत्तव्वं ॥ १३ ॥
नाणस्स होइ भागी थिरयरओ दंसणे चरित्ते य ।
धन्ना आवकहाए गुरुकुलवासं न मुंचंति ॥ १४ ॥

पुव्व वत्थ पत्त-सीसाइया लद्धी गुरुआयत्ता आसि, संपयं तुज्झ वि सव्व अणुण्णायमिति गुरू भणइ। तओ अहिणवसूरी उट्ठित्तु सपरिवारो मूलायरियं तिपयाहिणी काऊण वंदेइ। पवेयणे य जहा सामायारी-आगयं तव कारिज्जइ। तओ सो वि अन्ने सीसे निप्फाएइ त्ति। जस्स गणाणुण्णा तस्संतिओ चेव दिसिबंधो कीरइ। सो चेव गच्छनायगो भणइ। तस्सेव भट्टारगस्स गच्छे आणा पवत्तइ त्ति।

॥ गणाणुण्णाविही समत्तो ॥ ३१ ॥

*

§ ७३ एवं मूलगुरू कयकिच्चो हरिसभरनिब्भरो पज्जताराहणं करेइ, अन्नस्स वा कारेइ। अओ तव्विही भण्णइ—पढमं च विहियपूयाविसेसस्स जिणबिंबस्स दरिसणं गिलाणो कारविज्जइ। चउव्विहसंघ मीलिय गिलाणेण समं संघसहिओ गुरू अहिगयजिणथुईए देवे वंदेइ। तओ सिरिसंतिनाह-संतिदेवया खेत्तदेवया-भवणदेवया-समत्तवेयावच्चगराण काउस्सग्गा थुईओ य। तओ सक्कत्थय-संतित्थयभणणाणंतरं आराहणादेवयाए काउस्सग्गो, उज्जोयचउक्कचिंतणं, पारिय उज्जोयभणणं तीसे वा थुइदाणं। सा य इमा—

यस्याः सान्निध्यतो भव्या वाञ्छितार्थप्रसाधकाः।
श्रीमदाराधनादेवी विघ्नव्रातापहाऽस्तु वः' ॥ १ ॥

तओ सूरि निसिज्जाए उवविसिय गंधे अभिमंतिय 'उत्तमट्ठआराहणत्थं वासनिक्खेवं करेह' त्ति भणिय, आराहयसिरसि वासचंदणक्खए खिवइ। तओ बालकालाओ आरब्भ आलोयणदावणं।

जे मे जाणंति जिणा अवराहे जेसु जेसु ठाणेसु।
तेऽहं आलोएमी उवट्ठिओ सव्वभावेण ॥ १ ॥
छउमत्थो मूढमणो कित्तियमित्तं च संभरइ जीवो।
जं च न सुमरामि अहं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥ २ ॥
जं जं मणेण बद्धं असुहं वायाइ भासियं जं जं।
जं जं काएण कयं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥
हा दुट्ठु कयं हा दुट्ठु कारियं अणुमयं पि हा दुट्ठु।
अंतोअंतो डज्झइ हिययं पच्छाणुतावेण ॥ ४ ॥
जं पि सरीरं इट्ठं कुडुंब-उवगरण रूव-विन्नाणं।
जीवोवघायजणयं संजायं तं पि निंदामि ॥ ५ ॥
गहिऊण य मोक्काइं जमण-मरणेसु जाइं देहाइं।
पावेसु पसत्ताइं वोसिरियाइं मए ताइं ॥ ६ ॥

इइ गाहाओ भाणिज्जइ। तओ संघखामणा—

साहू य साहुणीओ सावय-सावीओ चउव्विहो संघो।
जे मण-वइ-काएहिं आसाईओ तं पि खामेमि ॥ ७ ॥
आयरिय उवज्झाए सीसे साहम्मिए कुलगणे य।
जे मे कया कसाया सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ ८ ॥
खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणइ ॥ ९ ॥

तओ—अरिह देवो गुरुणो सुसाहुणो जिणमय मह पमाणं ।
जिणपन्नत्तं तत्त इय सम्मत्त मए गहियं ॥ १० ॥

इइ सम्मत्तपुरस्सर नमोक्कारतिगपुव्व 'करेमि भते सामाइय' ति वेलातिगमुच्चाराविज्जइ । 'पढमे भते महव्वए' इच्चाइवयाणि य एगेग तिन्नि तिन्नि वेलाओ भणाविज्जइ । जाव इच्चेइयाइ गाहा । 'चत्तारि मगल जाव केवलिपन्नत्त धम्म सरण पवज्जामि'—इति चउसरणगमन दुक्कडगरिहा सुक्कडाणुमोयणा य कारिज्जइ । नमो समणस्स भगवओ महइ महावीरवद्धमाणसामिस्स उत्तमट्ठे ठायमाणो पच्चक्खाइ सव्व पाणाइवाय १, सव्व मुसावाय २, सव्व अदिन्नादाण ३, सव्व मेहुण ४, सव्व परिग्गह ५, सव्व कोह ६, माण ७, माय ८, लोभ ९, पिज्ज १०, दोसं ११, कलह १२, अब्भक्खाण १३, अरइरई १४, पेसुन्न १५, परपरिवाय १६, मायामोसं १७, मिच्छादसणसल्ल १८—इच्चेइयाइ अट्ठारसपावट्ठाणाइ जावजीवाए तिविह तिविहेण वोसिरइ । तहा तद्दिवस सउणसयणाइसमएण वदण दाऊण नमुक्कारपुव्व गिलाणो अणसण समुच्चरइ, भवचरिम पच्चक्खाइ, तिविह पि आहार असण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण ४ वोसिरामि । अणागारे पुण आइमआगारदुगस्स उच्चारण, त जहा—भवचरिम निरागार पच्चक्खामि, सव्व असण सव्व खाइम सव्व साइम अन्नत्थणाभोगेण सहस्सागारेण अईय निंदामि पडुप्पन्न संवरेमि अणागय पच्चक्खामि, अरिहतसक्खिय सिद्धसक्खिय साहुसक्खिय [सम्यग्दृष्टि] देवसक्खिय अप्पसक्खिय वोसिरामि त्ति ।

जइ मे होज्ज पमाओ इमस्स देहस्सिमाइ वेलाए ।
आहारउवहिदेह तिविहं तिविहेण वोसिरियं ॥

तओ संघो संतिनिमित्त नित्थारगपारगा होहि त्ति भणतो अक्खए तस्संमुह खिवइ । 'अट्ठावयमि उसभो' इच्चाइतित्थथुई वत्तव्वा । 'चवण च जम्मभूमी' इच्चाइ 'पचानुत्तरसरणा' इच्चाइ वा थुत्त भाणियव्व । देसणा तदुववूहणा य विहेया । तहा तस्स समीवे निरतर 'जम्मजरामरणजले' इच्चाइ उत्तरज्झयणाणि वा मरणसमाहि-आउरपच्चक्खाण-महापच्चक्खाण-सथारय-चदाविज्झय-भत्तपरिण्णा-चउसरणाइपइण्णगाणि वा इसिभासियाणि सुहज्झवसाणत्थ परावत्तिज्जति ।

इत्थ संगहगाहाओ—

संघजिणपूयवंदणउस्सग्गवयसोहितयणुखमगंधा ।
नवकार-सम्मसमइयवयसरणाणसणतित्थथुई ॥ १ ॥
इय पडिपुन्नसुविहिणा अंते जो कुणइ अणसण धीरो ।
सो कल्लाणकलावं लद्धुं सिद्धिं पि पाउणइ ॥ २ ॥

सावगस्सवि एवमेव । विसेसो उण सम्मत्तगाहाठाणे—अहण्ण भते तुम्हाण समीवे मिच्छत्ताओ पडिक्कमामि—इच्चाइ सम्मत्तदडओ पचाणुव्वयाणि य भाणिज्जति । सत्तखित्तेसु संघ-चेइय-जिणबिंब-पोत्थय-लक्खणेसु दव्वविणिओग च कारिज्जइ । तओ सामग्गीसब्भावे संथारयदिक्ख पडिवज्जइ त्ति ।

॥ अणसणविही समत्तो ॥ ३२ ॥

*

§ ७७ एव विहिविहियपज्जताराहणस्स लोगतरियस्स इद्धीए देहनीहरण कीरइ । अओ अचित्तसंजयपारिट्ठावणियाविही भण्णइ । तत्थ गामे वा नगरे वा अवर-दक्खिणदिसाए दूरमज्झासन्ने थडिलतिग पेहिज्जइ । सेयसुगंधिचोक्खवत्थतिग च धारिज्जइ । तत्थेग पत्थरिज्जइ, एग पगुराविज्जइ, एग उवरिं आच्छायणे

किज्जइ । दिया वा राओ वा परोक्खीभूयस्स मुह मुहपोत्तियाए बज्झइ पाणिपायगुट्ठगुलिमज्झेसु ईसि फालिज्जइ । पायगुट्ठा परोप्पर बज्झंति हत्थगुट्ठा य । मयगदेह ण्हवित्ता अवगचोलपट्ट संथारकिडीए कीरइ, दोरेहिं बज्झइ । मुहपोत्ति चिलिमिलियाओ चिंघट्ठ पासे ठविज्जंति । जया राईए परलोगो हवइ तया अच्छी-निमील्लण निज्जइ, अगोवगा समा धरिज्जति, मुह झड त्ति ढक्किज्जइ होट्ठमीलणेण । नवकारो सुणाविज्जइ । हत्थपायगुट्ठतरेसु छेदो किज्जइ । पचगमवि निब्भयपासाओ कारिविज्जइ । उवउत्तेहिं पहरओ दायव्वो । तत्थ जे सेहा बाला अपरिणया य ते ओसारेयव्वा । जे पुण गीयत्था अभिरू जियनिद्दा उवायकुसला आसुक्का-रिणो महाबल-परक्कमा महासत्ता दुद्धरिसा कयकरणा अपमाइणो य ते जागरंति । काइयमत्तयमपरिट्ठविय पासे ठविंति । जइ उट्ठेइ अट्टहासं वा मुयइ तो मत्ताओ काइय वामहत्थेण गहाय 'मा उट्ठे, बुज्झ बुज्झ गुज्झगा, मा मुज्झ' इइ भणतेहि सिंचेयव्व । तहा कलेवर निज्जमाण जइ वसहीए उट्ठेइ वसही मोत्तव्वा । निवेसणे पलहीए निवेसण, साहीए घरपतीए साही, गाममज्झे गामद्ध, गामदारे गामो, गामस्स उज्जाणस्स य अतरा मडल विसयखड, उज्जाणे कड, महल्लयर विसयखड, उज्जाणनिसीहियतरे देसो, निसीहियाए थडिले रज्ज मोत्तव्व । तत्थ एगपासे मुहुत्त सचिक्खति । तो जइ निसीहियाए उट्ठेइ तत्थेव पडइ य, तो वसही मोत्तव्वा । निसीहियाए उज्जाणस्स य अन्तरा निवेसण, उज्जाणे साही, उज्जाणस्स गामस्स य अन्तरे गामद्ध, गामदारे गामो, गाममज्झे मडल, साहीए कड, निवेसणे देसो, वसहीए पविसिय जइ पडइ रज्ज मोत्तव्व । पुणो निज्जूढो जइ बीयवेल एइ, तो दो रज्जाणि, तइयाए तिन्नि, तेण पर बहुसो वि इतो तिन्नि चेव । तहा पणयालीसमुहुत्तिएसु नक्खत्तेसु मयस्स पडिनिंदी दो दब्भमया, दसियामया वा पोत्तला कायव्वा । एए ते बिइज्जया इति । जइ न कीरति तो अन्ने दो कड्ढेइ । सथारगे करिसगावारो कीरइ । तत्थ उत्तरातिग पुणव्वसु-रोहिणी विसाहा त्ति छ नक्खत्ता पणयालीसमुहुत्ता । पुत्तलगाण च समीवे रओहरण मुहपोत्ती य ठविज्जइ । तहा तीसमुहुत्तिएसु इक्को कायव्वो । एस ते बिइज्ज त्ति । तदकरणे एग कड्ढइ । ताणि य—

अस्सिणि-कित्तिय-मिगसिर-पुस्सा मह-फग्गु-हत्थ-चित्ता य ।
अणुराह-मूलसाढा सवण-धणिट्ठा य भद्दवया ॥
तह रेवइ त्ति एए पन्नरस हवंति तीसइमुहुत्ता[1] ।
तहा पन्नरसमुहुत्तिएसु अभिइम्मि य न कायव्वो ॥
सयभिसया भरणीओ अद्दा-अस्सेस-साइ-जिट्ठा य ।
एए छनक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसजोगा ॥

सचियगत्तउक्कस्स छगणमुद्द-कुमारीसुत्ततूण य उत्तरासंगेण तिरयणेण रक्खाकरण । स च अपया-हिणावत्तेण वामभुयाहिट्ठेण दक्खिणखधस्सोवरिं च कायव्व । दढधरो वाणायरिओ ससारसंपुडे केसराइ गेण्हइ, छगणचुण्ण वा । दोण्ह साहूण कप्पतिप्पत्थमसंसट्ट पाणग गहाय अमुगपएसे आगतव्व ति संके-यदाण । जो उण वसहीए ठाइ तस्स मयगसंतियउच्चारपासवणखेलमत्तविगिंचण-वसहिपमज्जण-तहाविह-पएसोलिंपण निरोवद्दाण, पच्छा सव्व सो करेइ । पडिस्सयाओ नीणतेहिं पुव्व पाया पच्छा सीसं नीणेयव्व । थडिले वि जत्तो गामो तत्तो सीसं कायव्व । तहा उस्सग्गओ दिगतरपरिहारेण अवर-दक्खिणदिसाए ठिय परिट्ठवणथडिल पमज्जिय तत्थ केसरेहिं अव्वोच्छिन्नधाराए विवरिओ क्को (२५)कायव्वो वाणायरिएण । एयस्स अईय अमुगआयरिओ अमुगउवज्झाओ । संजईए उण अमुगा अईया पवत्तिणी त्ति दिसिबध करिय, तिन्नि तिविहेण वोसिरियमेय ति भणइ । परिट्ठवियस्स वि नियत्तेहिं पयाहिणा न कायव्वा ।

1 A. ति.।

सट्टाणाओ चेव नियत्तियव्व । जेणेव पहेण गया तेणेव य न नियत्तियव्व । तहा चिरंतणकाले अवरोप्परम-संबद्धा हत्थचउरंगुलप्पमाणा समच्छेया दब्भकुसा गीयत्थो विकिरइ त्ति आसि । गहियसंकेयट्ठाणे कप्पमुचारित्ता कप्पवाणियभायण दोरय च तत्थेव परिट्ठाविय, पच्छा नमकारतिग भणिऊण दडय ठविय इरियं पडिक्कता सक्कत्थव भणति, उवसग्गहर ति थुत्त । तओ महापारिट्ठावणिया परिट्ठावणिय काउस्सग्ग करेंति । उज्जोयचउक्क नवकार वा चिंतित्ता पारित्ता उज्जोयगर नवकार वा भणति । तिविह तिविहेण वोसिरिओ ३ इति भणति । तओ खुद्दोवद्दवओहडावणिय काउस्सग्ग करिंति । उज्जोयचउक्क चिंतिय पारिय चउवीसत्थय भणति । पच्छा बीय कप्प गामस्स समीवे आगतुमुत्तारिंति, कप्पवाणिय मत्तग च परिट्ठवेंति । तओ पराहुत्त पगुरित्ता अट्टारायणियक्कम परिहरित्ता सम्मुहचेईहरे गतु उम्मत्थगसंकेल्लियरयहरण-मुहपोत्तीहिं गमणागमण-मालोइय इरियं पडिक्कमिय उप्पराहुत्त चेइयवदण काउ सतिनिमित्त अजियसंतित्थय भणति । तओ उम्म-त्थगवेसपरिहारेण पगुरिय, जहाविहि चेइयाइ वदिय, वसहीए आगम्म, खधिया तईय कप्प उत्तारिंति । तओ आयरियसगासे अनिहिपारिट्ठावणियाए ओहडावणिय काउस्सग्ग करेंति, उज्जोयचउक्क नवकार वा चिंतिय पारित्ता उज्जोय नवकार वा भणति । ज तात्थमज्झे निक्खित्त भडोवगरण त अणाउत्त न भवइ, सेस सव्व तिप्पिज्जइ । आयरिय-भत्तपच्चक्खाय खवगाइए बहुजणसमए मए असज्झाओ खमण च कीरइ, न सव्वत्थ । एस सिवविही । असिवे खमण असज्झाओ अविहिविगिंचणकाउस्सग्गो य न कीरइ । तओ गिहत्थेहि आयरणावसाओ अग्गिसक्कारे कए ज तस्स भोयण रोयतग त तस्सेव पत्तियाए छोढु तहिं दिणे तत्थेव धारि-ज्जइ । काग-चडय कवोडाइय खण तत्थेव चिंतिज्जइ । सेयजीवे देवगई, कसिणजीवे कुगई, अन्नेसु मज्झिमगई तुम अम्हकेरपरिग्गहाओ उत्तिण्णो, वड्ढाण परिग्गहे सवुत्तो — इति भाणिऊण अणुजाणाविज्जइ त्ति ।

॥ महापारिट्ठावणियाविही समत्तो ॥ २३ ॥

*

§ ७८. अणसण च पायच्छित्तदाणपुव्व दिज्जइ त्ति संपय पच्छित्तदाणविही भण्णइ । त च दसविह — आलोयणारिह १, पडिक्कमणारिह २, तदुभयारिह ३, विवेगारिह ४, उस्सग्गारिह ५, तवारिह ६, छेदारिह ७, मूलारिह ८, अणवट्ठप्पारिह ९, पारंचियारिह १० ।

तत्थ आहाराइग्गहणे तहा उच्चार-सज्झायभूमि-चेइय-जइवदणत्थ पीढ-फलगपच्चप्पणत्थ कुलगण-संघाइकज्जत्थ वा हत्थसया बाहिं निग्गमे आलोयणा गुरुपुरओ वियडणं तेणेव सुद्धो ॥ १ ॥

पडिक्कमण मिच्छाउक्कडदाण । त च गुत्तिसमिइपमाए, गुरुआसायणाए, विणयभगे, इच्छाकाराइ सामाचारीअकरणे, लहुसमुसावाय-अदिन्नादाण-मुच्छासु, अविहीए खास-खुय-जिंभियवाएसु, कदप्प-हास-वि-कहा-कसाय-विसयाणुसंगेसु, सहसा अणाभोगेण वा दंसणनाणाइकप्पियसेवाए[1] चउनीसविहाए अविराहिय-जीवस्स, तहा आभोएण वि अप्पेसु नेह-भय सोग-वाओसाईसु य कीरइ । तत्थ लहुसमुसावाया पयला उल्ले मरुए इच्चाइ पनरसपया[2], लहुसअदिन्न अणणुन्नविय तण-डगल-छार-लेवाइगहण, लहुसमुच्छा सिज्जायर-कप्पट्ठगाईसु वसहि-संथारयठाणाइसु वा ममत्त ॥ २ ॥

---

1 "दसणनाणचरित्त, तवपवयणसमिइगुत्तिहेउ वा । साहम्मियाण वच्छल्लत्तणेण कुलगणस्सावि ॥ १ ॥
संघस्सायरियस्स य, असहुस्स गिलाणबालवुड्ढस्स । उदयग्गिचोरसावयभयकतारावई वसणे ॥ २ ॥"

2 "पयलाउ हेमकए, पच्चक्खाणे य गमणपरियाए । समुद्देससखडीओ, खुड्डगपरिहारी मुहीओ ॥ १ ॥
अवस्सगमणे दिसासु, एगकुले चेव एगदव्वे य । एए सव्वे वि पया, लहुसमुसा भासणे हुति ॥ २ ॥" इति B आदर्शे टिप्पणी ।

सहसाणाभोगेण वा संभमभयाईहिं वा सव्वस्याइयारेसु उत्तरगुणाइयारेसु वा दुचिंतियाइसु वा कप्पसु मीसं पच्छित्त ॥ ३ ॥

पिंडोग्गहिसेज्जाई गीएण उवउत्तेण गहिय पच्छा असुद्ध ति नाय, अहवा कालद्धाईय अणुगयत्थमियगहिय कारणगहिओव्वरिय वा भत्ताइ विगिंचितो सुद्धो ॥ ४ ॥

काउस्सग्गो नावा-नईसंतार-सावज्जसुमिणाईसु ॥ ५ ॥ तवपच्छित्त तु बहुवत्तव्वय ति पच्छा भणिही ॥ ६ ॥ तवगव्विय-तवअसमत्थ-तवदुद्दमाइसु पचराया‍इ पज्जायच्छेदेण छेदो ॥ ७ ॥

आउट्टियाए पचिंदियवहो दप्पेण मेहुणे अदिण्णमुसापरिग्गहाण उक्कोसा भिक्खसेवणे ओसन्नया विहारे इच्चाइसु मूल, भिक्खुस्स नवमदसमावत्तीए वि मूल चेव दिज्जइ ॥ ८ ॥

सपक्खे परपक्खे वा निरवेक्खपहारे अत्थायाण-हत्थालनदाणाईसु य अणवट्ठप्पो कीरइ। तत्थ अत्थायाण दव्वोवज्जणकारण अट्ठगनिमित्त, तस्स पउनण। हत्थालनदाण पुण पुरोहाइअसिवे तप्पसमणत्थमभिचारमतादिप्पओगो। एय पुण पच्छित्त उवज्झायस्सेव दिज्जइ ॥ ९ ॥

तित्थयराईण बहुसो आसायगो रायवहगो रायग्गमहिसिपडिसेवओ सपक्ख परपक्खकसायविसयप्पदुट्ठो अन्नोन्नकारी थीणद्धीनिद्दावतो य पारचियमावज्जइ। एय च पच्छित्त आयरियस्सेव दिज्जइ। तवअणवट्ठप्पो तवपारचिओ य पढमसंघयणो चउदसपुव्वधरम्मि वोच्छिन्ना। सेसा पुण लिंग-खेत्त-काल-अणवट्ठप्प-पारचिया जाव तित्थ वट्टिहिं ति ॥ १० ॥

§७९ संपय तवारिह पायच्छित्त भण्णइ। तत्थ तवा लहुपणगाओ आरब्भ गुरुछम्मासं जाव बावीसं भवति। सपय पुण सत्त वट्टिंति। ते य इमे — पणग १ मासलहु २, मासगुरु ३, चउलहु ४, चउगुरु ५, छलहु ६, छग्गुरु ७। एएसिं च आवत्तीए संपइकाले जीएण निव्विगइय पुरिमड्ढ-एकासण-आयबिल-चउत्थ-छट्ठट्ठमाइ जहासंख दिज्जति। लिवी पुण इमा — ।५। ।०।०।:ं:।:ं:।:ंः:।:ंः:। पणगाई पचमिलिया कल्लाण। तत्थ चउत्थदुग लब्भइ। ते चेव पचगुणा पचकल्लाण तत्थ दसोववासा लब्भन्ति। इयाणिं नाणाइपचायारनिसय कमेण पच्छित्त भण्णइ — नाणायाराइयारेसु अकालपाढाइसु अट्ठसु उद्देसए पणग, अज्झयणे मासलहु, सुयक्खधे मासगुरु, अगे चउलहु। एव ताव अणागाढे दसवेयालिय-आयारंगाईए, आगाढे पुण उत्तरज्झयण-भगवइमाईए उद्देसगाइसु जहसख लहुमास-मासगुरू, चउलहु चउगुरुगा, अकओवहाण-अपत्तअवत्ताईण उद्देसादिकरणे वायणादाणे य चउगुरू। तत्थ अपत्तो तिंतिणियाई, सुयज्झयणपज्जाय असंपत्तो य। तत्थ आइमो इमो —

तिंतिणिए चलचित्ते गाणंगणिए य दुब्बलचरित्ते।
आयरियपारिभासी वामावट्टे य पिसुणे य ॥

सुयज्झयणपज्जाओ य — तिवरिसपरियायस्स आयारंग, चउवासपरियायस्स सुयगड, पचवासपरियायस्स दसा-कप्प-ववहारा, अट्ठवासपरियायस्स ठाण समवाया, दसवासपरियायस्स भगवई — इच्चाइ, त असंपत्तो — आरओ वत्ती। कालअणुओगाणमपडिक्कमणे पणग, सुत्तत्थभोयणमडलीणमप्पमज्जणे पणग। अणुओगे अक्खाण गुरु-अक्खनिसेज्जाण च अट्ठावणे, वदण काउस्सग्गाकरणे य चउगुरू। आगाढाणागाढजोगाण सव्वभगे छलहु-चउगुरुगा जहसंख। देसभगे चउगुरु चउलहुगा। तत्थ विगइभोगे सव्वभगो। एगभाणे विगइ आयबिलपाउग्ग च गिण्हइ। जोगसमत्तीए गुरु विणा वि सयमेव विगइग्गहणकाउस्सग करेइ। उत्संघट्ट वा भुंजइ त्ति। देसभगो नाणनाणीण पचणीययाए निंदाए पओसे पाढाइअतरायकरणे य मासगुरू। पुत्थय-पट्टिया-टिप्पणगाईण पडणे कक्खाकरणे दुगधहत्थगहणे थुकभरणे थुकाइअक्खरमज्जणे पाय-

लगणे चउलहु। मयतरे जहण्णाए नाणासायणाए मासलहु, मज्झिमाए मासगुरु, उक्कोसाए चउलहु चउगुरु वा। विसेसओ उण सुत्तासायणाए चउलहु, अत्थासायणाए चउगुरु, विणयवजणभंगेसु पणग। गय **नाणाइयारपच्छित्त।**

§ ८० सकादिसु अट्ठसु दसणाइयारेसु देसओ चउगुरु, पुरिसाविक्खाए पुण भिक्खुवसहोवज्झायायरियाण मासलहु-मासगुरु-चउलहु-चउगुरुगा, सव्वओ मूल। गय दसणाइयारपच्छित्तं।

§ ८१ इओ पर आवत्ति मुत्तूण सुहबोहत्थ दाणमेव लिहिज्जइ — पुढविआउतेउवाऊपत्तेयवणस्सईण सघट्टणे नि०, अगाढपरितावणे पु०, गाढपरितावणे ए०, उद्दवणे आ०, विगलिंदियाणतकाइयाण संघट्टणादिसु जहासंख पु०ए०आ०उ०। पचिंदियाण पुण ए०आ०उ०। कल्लाणगाणि—इत्थ संघट्टण तदहजायथिरोलगाईण,[1] दप्पओ पचिदियउद्दवणे पचकल्लाण। दप्पो धावणवग्गणाई। आउट्टियाए मूल। बीयसंघट्टे ससिणिद्धे य नि०। उदयउल्लसघट्टे ए०। सचित्ते मुहपोत्तियाए गहिए पु०। अद्दामलगमित्तसचित्तपुढवीए, अजलिमित्तोदगे सच्चित्ते मीसे य उद्दविए आ०। मयतरे नि०। नाभिप्पमाणउदगप्पवेसे वत्थिमाइणा कोसं जाव नदीगमणे य आ०। दुक्कोसं जाव नावा-उडुवाइणा नदीगमणे आ०। कोसं जाव हरियाण भूदगअगणिवाऊण विगलिंदियाण पचिंदियाण मद्दणे कमेण उ०, आ०, उ०, पचकल्लाणाणि। कोस ओसाए मीसोदगे य गमणे पु०, कोसदुगे ए०, जोयणे आ०। सजीवदगपाणे छट्ठ, जलगामोयणे गाढनइउत्तारणे य आ०। पईवफुसणयसखाए आ०। कबलिपावरण विणा पईवफुसणे उ०, सकबले आ०, उ०, विज्जुफुसणे नि०, अकबले पु०। छप्पईहरनासणे पचकल्लाण। सनाकिमिपाडणे उ०। उदउल्लवत्थसघट्टे पु०। जलणे सघट्टिए ओसक्किए य आ०। किसलयमद्दणे उ०। सखाईयाण बेइंदियाण उद्दवणे दोन्नि पचकल्लाणाइ, उप० २०। सखाईयाण तेइंदियाण उद्दवणे तिन्नि पचकल्लाणाइ, उ० ३०। सखाईयाण चउरिंदियाण उद्दवणे चत्तारि पचकल्लाणाइ, ४०। जहन्न-मज्झिम-उक्कोसेसु मुसावाय अदिन्नादाण-परिग्गहेसु जहासख ए०, आ०, उ०। मेहुणस्स चिंताए आ०। मेहुणपरिणामे उ०। रागे छट्ठ। नपुसगस्स पुरिसस्स वा वयणसेवाए मूल। अन्नोन्न करणे पारचिय। गब्भाहाण-गब्भसाडणेसु मूल। सनाममेहुणसेवणे मूल। करकम्मे अट्ठम। बहुठाणे तम्मि पचकल्लाण। लेवाडदधोवलित्तपत्ताइपरिवासे उ०। सुठिमाइसुक्कसंनिहिभोगे उ०। घयगुलाइअल्लसनिहिभोगे छट्ठ। दिवागहिय-दिवाभुत्ताइ-सेसनिसिभत्ते अट्ठम। सुक्क-अल्लसनिहिधारणे जहासंख पु०, ए०। गय **मूलगुणपायच्छित्त।**

§ ८२ आहाकम्मिए कम्मुद्देसियचरिममेयतिगे मिस्सजायअतिममेयदुगे बायरपाहुडियाए सपच्चवायपरगामाभिहडे लोभपिंडे अणतकाय-अणतरनिक्खित्त पिहिय-साहरिय-उम्मीसापरिणयछड्डिएसु गलतकुट्ठ-पाउयारूढदायगेसु गुरुअचित्तपिहिए सजोयणा-इगालेसु वट्टमाणाणागयनिमित्ते य उ०। कम्मोद्देसियआइमभेए मीसजायपढमभेदे धाईपिंडे दूईपिंडे अईयनिमित्ते आजीवणापिंडे वणीमगपिंडे बादरचिगिच्छाए कोहमाणपिंडेसु संथविसंथवकरणे विज्जामन्तचुण्णजोगपिंडेसु पयासकरणे दुविहे दव्वकीए आयभावकीए लोइय-पामिच्चपरियट्टिए निपच्चवायपरग्गामाभिहडे पिहिओब्भिन्ने कवाडोब्भिन्ने उक्किट्ठमालोहडे अच्छिज्जाणिसिट्ठेसु पुरोकम्म पच्छाकम्मेसु गरहियमक्खिए ससत्तमक्खिए पत्तेयअणतरनिक्खित्तपिहियसाहरियउम्मीसापरिणयछड्डिएसु बालवुड्ढाइदायगदुट्ठे पमाणोलघणे सधूमे अकारणभोयणे य आ०। अब्भवपूरगअतिममेयदुगे कडमेयचउक्के भत्तपाणपूईए मायापिंडे अणतकायपरपरनिक्खित्तपिहियाइसु मीस-अणतअणतरनिक्खित्ताइसु य ए०। ओहोद्देसिए उद्दिट्ठमेयचउक्के उवगरणपूईए चिरट्ठविए पायडकरणे लोगोत्तर-

---

1 B C थिरोल्लिगाईण।

परियट्टियपामिचे परभावकीए सग्गामामिहडे दद्दरोब्भिन्ने जहन्नमालोहडे पढमज्झोयरगे सुहुमतिगिच्छाए गुणसंथवकरणे मीसकद्दमेण स्वणसेडियाइणा य मक्खिए पिहाइमक्खिए फलगलोढगनिरोहगपिंजगदायगेसु पत्तेयपरंपरट्ठवियाइसु मीसाणंतरट्ठवियाइसु य पु० । इयरट्ठनिए सुहुमपाहुडियाए ससिणिद्धे ससरक्खमक्खिए मीसपरंपरठवियाइसु पत्तेयाणंतबीयट्ठनियाइसु य नि० । मूलकम्मे मूल ।

§ ८३ विसेसओ पुण पिंडदोसपायच्छित्त पिंडालोयणाविहाणाओ नेय । तं चेम—

कयपवयणप्पणामो सत्तालीसाइं पिंडदोसाणं ।
वोच्छं पायच्छित्तं कमेण जीयाणुसारेण ॥ १ ॥
पणगं तह मासलहुं मासगुरु चउलहुं च चउगुरुयं ।
सण्णाओ नि॰पु॰ए॰आ॰उ॰ जोगओ जाण कल्लाण ॥ २ ॥
सोलस उग्गमदोसा सोलस उप्पायणाइ दोसाओ ।
दस एसणाइ दोसा संजोयणमाइ पंचेव ॥ ३ ॥
आहाकम्मे चउगुरु दुविह उद्देसियं जिणाणाहि ।
ओहविभागेहिं तहिं मासलहू ओहनिद्देसो ॥ ४ ॥
बारसविह विभागे पढु उद्दिट्ठ कडं च कम्मं च ।
उद्देस-समुद्देसा देससमा देसभेएण ॥ ५ ॥
चउभेए उद्दिट्ठे लहुमासो अह चउव्विहम्मि कडे ।
गुरुमासो चउलहुय कम्मुद्देसे य नायव्व ॥ ६ ॥
कम्मसमुद्देसाइसु तिसु चउगुरुय भणंति समयण्णू ।
दुविहं तु पूइकम्मं उवगरणे भत्तपाणे वा ॥ ७ ॥
उवगरणपूइमासलहु मासगुरु भत्तपाणपूइम्मि ।
जावंतिय-जइ-पासंडि-मीसजाय भवे तिविहं ॥ ८ ॥
जावंतिमीस चउलहु चउगुरु पासंडि-सपरमीसम्मि ।
चिर इत्तरभेएण निद्दिट्ठा ठवणा दुविहा ॥ ९ ॥
चिरठविए लहुमासो इत्तरठवियम्मि देसियं पणगं ।
पाहुडिया विहु दुविहा बायर-सुहुमप्पयारेहिं ॥ १० ॥
बायरपाहुडियाए चउगुरु सुहुमाइ पावए पणगं ।
पागड-पयासकरणं ति विंति पाओयर दुविहं ॥ ११ ॥
मासलहु पयडकरणे पगासकरणे य चउलहु लहइ ।
अप्प-पर-दव्व-भावेहिं चउविहं कीयमाईसु ॥ १२ ॥
अप्पपरदव्वकीए सभावकीए य होइ चउलहुय ।
परभावकीए पुण मासलहु पावए समणो ॥ १३ ॥
अह लोउत्तर लोइयभेएण दुविहमाहु पामिच्चं ।
लोउत्तरि मासलहू चउलहुय लोइए हवइ ॥ १४ ॥
परियट्टियं पि दुविहं लोउत्तर लोइयप्पयारेहिं ।
लोउत्तरि मासलहू चउलहुयं लोइए होइ ॥ १५ ॥

अभिहडमुत्तं दुविहं सगाम-परगामभेयओ तत्थ।
चरमं सपच्चवायं अपच्चवायं च इय दुविहं ॥ १६ ॥
सप्पच्चवायपरगामआहडे चउगुरुं लहइ साहू।
निपच्चवायपरगामआहडे चउलहु जाण ॥ १७ ॥
मासलहू सग्गामाहडंमि[1] तिविहं च होइ उब्भिन्नं।
जउ-छगणाइविलित्तु भिन्नं तह दद्दरुब्भिन्नं[1] ॥ १८ ॥
तह य कवाडुब्भिन्नं लहुमासो तत्थ दद्दरुब्भिन्ने।
चउलहुयं सेसदुगे[1] तिविहं मालोहडं तु भवे ॥ १९ ॥
उक्किट्ठ-मज्झिम-जहण्णभेयओ तत्थ चउलहुक्किट्ठे।
लहुमासो य जहन्ने गुरुमासो मज्झिमे जाण[1] ॥ २० ॥
सामि-प्पहु-तेणकए तिविहे विहु चउलहुं तु अच्छिज्जे[1]।
साहारण-चोल्लग-जड्डभेयओ तिविहमणिसिट्ठं ॥ २१ ॥
तिविहे वि तत्थ चउलहु[1] तत्तो अज्झोयर वियणाहि।
जावंतिय-जइ-पासंडिमीसभेएण तिविकप्प ॥ २२ ॥
मासलहु पढमभेए मासगुरुं जाण चरमभेयदुगे[1]।
इय उग्गमदोसाणं पायच्छित्तं मए वुत्त ॥ २३ ॥–दार।
धाईउ पंचखीराइभेयओ चउलहुं तु तप्पिंडे[1]।
चउलहु दूईपिंडे सगाम-परगामभिन्नंमि[1] ॥ २४ ॥
तिविहं निमित्तपिंडं तिकालभेएण तत्थ तीयंमि।
चउलहु अह चउगुरुयं अणागए वट्टमाणे य[1] ॥ २५ ॥
जाइ-कुल-सिप्प-गण-कम्मभेयओ पंचहा विणिद्दिट्ठो।
आजीवणाइपिंडो पच्छित्तं तत्थ चउलहुया[1] ॥ २६ ॥
चउलहु वणीमगपिंडे[1] तिगिच्छपिंड दुहा भणन्ति जिणा।
बायर-सुहुमं च तहा चउलहु बायरचिगिच्छाए ॥ २७ ॥
सुहुमाए मासलहू[1] चउलहुया कोह[1]-माणपिंडेसु[1]।
मायाए मासगुरू[1] चउगुरु तह लोभपिंडमि[1] ॥ २८ ॥
पुव्विं-पच्छासथवमाहु दुहा पढममित्थ गुणथुणणे।
मासलहु तत्थ वीयं सवधे तत्थ चउलहुयं[1] ॥ २९ ॥
विज्जा[1] मंते[1] चुण्णे[1] जोगे[1] चउसु वि लहेइ चउलहुय।
मूलं च मूलकम्मे उप्पायणदोसपच्छित्तं ॥ ३० ॥–दार।
संकियदोससमाणं आवज्जइ संकियंमि पच्छित्तं[1]।
दुविहं मक्खियमुत्तं सचित्ताचित्तभेएण ॥ ३१ ॥
भूदगवणमक्खियमिह तिविहं सचित्तमक्खियं विंति।
पुढवीमक्खियमित्थं चउविहं बिंति गीयत्था ॥ ३२ ॥

1 'दर्दरो वस्त्रचर्मादिना घनबन्ध।' इति टिप्पणी।

ससरक्खमक्खिय तह सेडिय-ओसाइमक्खिय च्चेव ।
निम्मीस-मीसकद्दममक्खियमिइ पुढविमक्खिय चउहा ॥ ३३ ॥
तत्थ कमेण पणग लहुमासो चउलहु य मासलहू ।
दगमक्खिय पि चउहा पच्छाकम्म पुरोकम्म ॥ ३४ ॥
ससिणिद्ध उदउल्लं चउलहु चउलहु य पणग लहुमासा ।
वणमक्खिय तु दुविहं पत्तेयाणंतभेएण ॥ ३५ ॥
उक्कुट्ठ-पिट्ठ-कुक्कुसभेया पत्तेयमक्खिय तिविहं ।
तिविहे विहु लहुमासो गुरुमासोऽणतमक्खियए ॥ ३६ ॥
गरहियइयरेहिं अचित्तमक्खिय दुविहमाहु साहुवरा ।
गरहियअचित्तमक्खियदोसेण लहइ चउलहुय ॥ ३७ ॥
अगरिहससत्तअचित्तमक्खियमि वि लहेइ चउलहुय[1] ।
निक्खित्त पुढवाइसु अणतर-परपर ति दुहा ॥ ३८ ॥
ठविए सचित्तभू-दग सिहि-पवण-परित्तवणस्सइ-तसेसु ।
चउलहुय मासलहुया अणतर-परपरेसु कमा ॥ ३९ ॥
अइरपरपरठविए मीसेसु य तेसु[1] मासलहु-पणगा ।
अइरपरपरठविए पणग पत्तेयणतबीएसु ॥ ४० ॥
सचित्तणतकाए अणतर-परपरेण निक्खित्ते ।
चउगुरु मासगुरु कमा मीसे गुरुमास पणगाइ ॥ ४१ ॥
तह गुरुअचित्तपिहिय सचित्तपिहिय च मीसपिहिय च ।
पिहिय तिहा अभिहिय चउगुरुयमचित्तगुरुपिहिए ॥ ४२ ॥
पिहिए सचित्तभू-दग-सिहि-पवण-परित्तवणसइ-तसेहिं ।
चउलहुय मासलहुया अणंतर परपरेहिं कमा ॥ ४३ ॥
अइरपरपरपिहिए मीसेहिं य तेहिं मासलहु पणगा ।
अइरपरपरपिहिए पणग पत्तेयणतबीएहिं ॥ ४४ ॥
सचित्तअणतेण अणतरपरपरेण पिहियमि ।
चउगुरु मासगुरु कमा मीसेण मासगुरु पणगा[2] ॥ ४५ ॥
साहरिए* सजियभू-दग-सिहि-पवण-परित्तवणसइ-तसेसु ।
चउलहुय-मासलहुया अणतर परपरपरेण कमा ॥ ४६ ॥
अइरतिरोसाहरिए मीसेसु उ तेसु मासलहु पणगा ।
अइरतिरोसाहरिए पणग पत्तेयणतबीएसु ॥ ४७ ॥
सचित्तअणतेसु अणतर-परपरेण साहरिए ।
चउगुरु मासगुरु कमा मीसेसु मासगुरु पणगा ॥ ४८ ॥

---

* उत्कृष्ट कलिङ्गाम्रवाउम्बयादीनां श्चूर्णीकृतानि सखानि अम्लिकापत्रसमुदायो वा उदूखलखण्डिततत्समक्षित पिष्ट श्रमनतुलभोदादि ।'–इति A B टिप्पणी ।

1 पृथिव्यादिषु । 2 'सहतदोष अतिविस्तसमानयोवय बाम भेदाख्यानम्'–इति B टिप्पणी ।

चउगुरु अचित्तगुरु साहरिए[1] अह दायग त्ति थेराई ।
थेर-पहु-पंड-वेविर-जरियंधव्वत्त-मत्त-उम्मत्ते ॥ ४९ ॥
छिन्नकरचरणगुव्विणिनियलंडुयवद्धबालयच्छाए ।
खंडइ पीसइ भुंजइ जिमइ विरोलइ दलइ सजियं ॥ ५० ॥
ठवइ बलिं ओयत्तइ पिढराइ तिहा सपच्चवाया जा ।
साहारणचोरियगं देइ परक्क परट्ठ वा ॥ ५१ ॥
दिंतेसु एसु चउलहु चउगुरु पगलतपाउयारूढे ।
कत्तइ लोढइ पिंजइ विक्खिणइ[1] पमद्दए य मासलहू ॥ ५२ ॥
छक्कायवग्गहत्था समणट्ठा णिक्खिवित्तु ते चेव ।
घट्टंती गाहंती आरभतीइ[2] सट्ठाण ॥ ५३ ॥
भू-जल-सिहि-पवण-परित्तघट्टणागाढगाढपरियावे ।
उद्दवणे वि य कमसो पणगं लहु-गुरुयमा[3]स-चउलहुया ॥ ५४ ॥
लहुमासाई चउगुरु अतं विगलेसु तह अणतवणे ।
पंचिंदिएसु गुरुमासाइ जाव कल्लाणगं एगं ॥ ५५ ॥
एगाइ दसतेसुं एगाइ दसतयं सपच्छित्तं ।
तेण पर दसगं[4] चिय बहुएसु वि सगल-विगलेसु[5] ॥ ५६ ॥
पुढवाइ जिउम्मीसे[5] चउलहु पणगं च वीयउम्मीसे ।
मिस्सपुढवाइ मीसे मासलहु पावए साहू ॥ ५७ ॥
चउगुरु[6] सचित्तअणंतमीसिए मिस्सणतओम्मीसे ।
मासगुरु दुविह पुण अपरिणयं दव्व-भावेहिं ॥ ५८ ॥
ओहेण दव्वभावापरिणयभेएसु दुसु वि चउ लहुयं ।
दव्वापरिणमिए पुण जं नाणत्त तय सुणह ॥ ५९ ॥
अपरिणयंमि छकाए[7] चउलहु पणगं च वीयअपरिणए ।
मीसछक्कायापरिणयदोसे लहुमासमाहंसु ॥ ६० ॥
सचित्तणंतकाए अपरिणए चउगुरू मुणेयव्वं ।
मीसाणंत[8] अपरिणए गुरुमासो भासिओ गुरुणा ॥ ६१ ॥
चउलहुय लहइ मुणी लित्ते दहिमाइ लित्तकरमत्ते[9] ।
छड्डियमिह[9] पुढवाइसु अणंतर-परपर ति दुहा ॥ ६२ ॥
छड्डियसचित्तभू-दग-सिहि-पवण-परित्तवणसइ तसेसु ।
चउलहुय-मासलहुया अणतर परपरेसु कमा ॥ ६३ ॥
अहर[10]-तिरोछड्डियए मीसेसु य तेसु मासलहु पणगा ।
अहर-तिरोछड्डियए पणग पत्तेयणतवीएसु ॥ ६४ ॥

---

1 A विक्खिणिइ । 2 'स्वस्थानमेवाह । 3 मासशब्द प्रत्येक अभिसम्बध्यते । 4 अनेनोल्लेखेनान्येष्वपि प्रायश्चित्तस्थानेष्वयमेव न्याय । 5 अत्रापि संहृतदोषवत्र भेदाख्यानम् ।' इति B टिप्पणी । 6 A चउगुरु° । 7 वृक्ष्यमाणे । 8 इतसप्तमीक पद । 9 वृक्ष्यमाणे । 10 अचिर इति साक्षात्, निर इति परंपरं ।

सचित्तणतकाए अणतर-परपरेण छड्डियए।
चउगुरु-मासगुरू कमा मीसे गुरुमासपणगाइं[1] ॥ ६५ ॥ —दार।
इय एसणदोसाण पायच्छित्त निरूवियं इत्तो।
सजोयणाइ चउगुरु[1] अइप्पमाणमि चउलहुयं[1] ॥ ६६ ॥
इंगाले चउगुरुया[1] चउलहु धूमे[1] अकारणाहारे[1]।
घासेसणदोसाणं इय पायच्छित्तमक्खाय ॥ ६७ ॥
ज जीयदाणमुत्त एयं पाय पमायसहियस्स।
इत्तोच्चिय ठाणतरमेग वट्टिज्ज दप्पवओ ॥ ६८ ॥
आउट्टियाइ ठाणतर च सट्ठाणमेव वा दिज्जा।
कप्पेण पडिक्कमण तदुभयमिह वा विणिद्दिट्ठं ॥ ६९ ॥
आलोयणकालमि वि सकेस विसोहिभावओ नाउ।
हीण वा अहिय वा तम्मत्तं वावि दिज्जाहि ॥ ७० ॥
पच्छित्तऊण अहियप्पयाणहेउं च इत्थ दयाई।
अलमित्थ वित्थरेण सुत्ताओ चेव जाणिज्जा ॥ ७१ ॥
इय पच्छित्तविहाण जीयाओ पिंडदोससबद्ध।
जिणपहसूरीहि इम उद्धरियं आयसरणत्थ ॥ ७२ ॥
ज किंचि इत्थणुचियं अन्नाणाओ मए समक्खाय।
त मह काऊण दयं गुरुणो सोहिंतु गीयत्था ॥ ७३ ॥

॥ इति पिंडालोयणाविहाण नाम[2] पयरणं समत्तं ॥

*

§ ८४ सेज्जायरपिंडे आ०। मयतरे पु०। पमाएण काल्द्धाणातीए कए नि०, पमायओ तब्भोगे नि०, अन्नहा उ०। उवओगस्स अकरणे अविहिणा वा करणे पु०, अहवा नि०, अहवा सज्झाय १२५। उवओगमकाउण समसपाणविहरणे आ०। गोयरचरियअपडिक्कमणे पु०। काइयभूमीअप्पमज्जणे य नि०। सुत्तपोरिसिं अत्थपोरिसिं वा न करेइ पु०, तदुभय न करेइ उ०। हरियकाय पमद्दइ पु०। झुसिरतण सेवए पु०। निक्कारणदुप्पडिलेहियदूसपचग, अझुसिरतणपचग चम्मपचग पुत्थयपचग अपडिलेहियदूसपचग च सेवए कमेण नि० नि० नि० आ० ए०। गमणियापरिभोगे अचक्खुविसए वा दिणसंधाए पु०। मुत्तोच्चारअसणाइपरिट्ठप्प अविहिणा परिट्ठवइ, गिहिपच्चक्ख अगुत्त भासइ भुजइ य, पडिमानियडे खेलमल्लग धारेइ, गिलाण न पडिजागरइ, अकाले सागारियहत्थेण वा अग मद्दावेइ मक्खाएइ वा, उत्संघट्टसंथारए चडइ, नग्गगाइ झुसिरं परिभुजइ, दारदेसे पवेस निग्गमभूमिं न पमज्जइ, सज्झायमकाऊण भुजइ, अवेलाए उच्चारभूमिं गच्छइ, सागारियस्स पिच्छतस्स काइयसण्णाइ वोसिरइ — सव्वत्थ पु०। अपारिए भत्त भुजइ दव वा पिबइ पु०, अथवा सज्झाय १२५। ठवणकुलेसु अणापुच्छाए पविसइ ए०। इत्थि-रायकहासु उ०, देस भत्तकहासु आं०। कोह-माण मायाकरणे आ०, लोभकरणे उ०। अणणुन्नाए संथारए आरोहइ आ०। मयतरे पु०। सनिहिपरिभोगे आ०। कालवेलाए उदगपाणे पायधोवणे य आ०। अविहिदेववदणे सव्वहाअवदणे या उ०। मयतरे देवगिहे देयावदणे पु०। पुप्फफलनगाइभक्खणे उ०। निसिवमणे सण्णाए च उ०।

1 'इत सयोजनादिदोषाणा प्रायश्चित्तमित्यर्थ ।' इति B टिप्पणी। 2 A. नास्ति 'नाम पयरण'।

दिवासयणे उ० । वियडपाणे उ० । पक्खाइरित्त चाउम्मासाइरित्त वा कोव परिवामेइ उ० । दिणअप्पडिलेहिय-अप्पमज्जियथंडिले वोसिरइ उ० । थंडिल्लअकरणे सज्झाय ५० । गुरुणो अणालोइए भत्तपाणे सज्झायअकरणे गुरुपायसंघट्टणे उ० । पक्खिए विसेसतव अकरिंताण खुड्डुय-थविर-भिक्खु-उवज्झाय-सूरीण जहसंख नि० पु० ए० आ० उ० । चाउम्मासिए पु०, ए० आ० उ० छट्ठाणि । संवच्छरिए ए० आ० उ० छट्ठ-अट्ठमाणि । निद्दापमाएण एगम्मि काउस्सग्गे वंदणए वा, गुरुणो पच्छाकए पुव्व पारिए भग्गे वा, आलस्सेण सव्वहा अकए वा नि०, दोसु पु०, तिसु ए०, सव्वेसु आ० । सव्वावस्सयअकरणे उ० । कत्तियचउमासयपारणए अन्नत्थ अविहरंताण आ० । खुरेण लोय कारेइ पु०, कत्तरीए ए० । दीहद्धाणपडिवन्ने गिलाणकप्पावसाणे वरिसारम विणा सव्वोवहिधोवणे, पमाएण पउणपहरे मत्तगअपडिलेहणे, तहा चउम्मासिय-संवच्छरिएसु सुद्धस्स वि पंचकल्लाण । कओववासस्स पढम पच्छिमपोरिसीसु पत्तगअपडिलेहणे पडिलेहणाकाले य फिडिए अट्ठमयकरणे य एगकल्लाणं । सद्द-रूव-रस-फरिसेसु दोसे आ०, रागे उ० । गंधे राग-दोसेसु पु० । मयंतरे सद्द-रूव रस-गंधेसु रागे आ०, दोसे उ० । फासे राग दोसेसु पु० । अचित्तचंदणाइगंधग्घाणे पु० । अवग्गहाओ अद्धुट्ठहत्थप्पमाणाओ मुहणंतए फिडिए नि० । रयहरणे उ० । नवरमवग्गहो इत्थ हत्थप्पमाणो । मुहणंतए नासिए उ० । रयहरणे छट्ठ । मुहपोत्तिय विणा भासणे नि० । उवही जहण्णाइभेया तिविहो—मुहपोत्ती केसरिया गुच्छओ पायठवण त्ति जहन्नो । पडला रयत्ताण पत्ताबंधो चोलपट्टो मत्तओ रयहरण त्ति मज्झिमो । पत्त तिन्नि कप्पा य त्ति उक्कोसो । एस ओहिओ उवही । ओवग्गहिओ पुण जहन्नो पीढनिसिज्जादडउंछणाई । मज्झिमो वासत्ताणपणग, दडपणग, मत्तगतिग, चम्मतिग, संथारुत्तरपट्टो इच्चाई । उक्कोसो अक्खा पुत्थगपणग इच्चाई । ओहिओवग्गहिए जहन्नओवहिम्मि वि चुयलद्धे अप्पडिलेहिए वा नि० । मज्झिमे पु० । उक्किट्ठे ए० । सव्वोवहिम्मि पुण आ० । जहन्ने उवहिम्मि नासिए, वरिसारम विणा धोविए उ० । गमिऊण गुरुणो अणिवेदिए य ए० । मज्झिमे आ० । उक्किट्ठे उ० । आयरियाईहिं अदिन्न जहन्नमुवहि धारयतस्स भुंजतस्स वा गुरुमणापुच्छिय अन्नेसिं दिंतस्स य ए० । मज्झिमे आ० । उक्किट्ठे उ० । सव्वोवहिम्मि नासियाइगमेसु छट्ठ । ओसन्नपव्वावियस्स ओसन्नया विहारिस्स इत्थी-तिरिच्छीमेहुणसेविणो य मूल । सावज्जसुविणे काउस्सग्गे उज्जोयगरचउक्कचिंतण । माणुस-तिरिक्खजोणीए पडिमाए य पुग्गलनिसग्गाइमेहुणसुविणे पुण उज्जोयचउक्क नमोक्कारो य चिंतिज्जइ । मयंतरेण सागरवरगंभीरा जाव । सुमिणे राइभोयणे उ० । निक्कारण धावणे डेवणे, समसीसियागमणे, जमलियजाणे, चउरग-सारि-जूयाइकीलाए, इदजाल-गोल्याखिल्लणे, समस्सा-पहेलियाईसु उकुट्ठीए गीए सिंठियसद्दे मोरअरहट्टाइ जीवाजीवरुए, सुइमाइल्लोहनासे उ० । उवविट्ठए पडिक्कमणे आ० । दगमट्टियागमणे आ० । वाघारे आ० । तसपायाइभंगे आ० । अपडिलेहियठवणायरियपुरओ अणुट्ठाणकरणे पु० । इत्थीए अवयवफासे आ० । वत्थप्फासे नि० । अगसंघट्टे नि० । वत्थसंघट्टे अनहुवयणे य सज्झाय १०० । आवस्सियानिसीहिया अकरणे दडगअप्पडिलेहणे समिइगुत्तिविराहणे गुणवतनिंदणे नि० । वासावासगहिय पीढफलगाइ न समप्पेइ पु० । वरिसंतसमाणियमत्तादिपरिभोगे आ० । रक्खपरिट्ठावणे पु० । सिणिद्धपरिट्ठावणे उ० । रयहरणस्स अपडिलेहणे पु० । मुहपोत्तीयाए नि० । दोरए पत्तबंधे तेप्पणए मुहणंतए य म्मरडिए उ० । गतीजोयणगमणे गमणियाजोयणपरिभोगे जोयणमचक्खुविसए उ० । आभोगेण जोयणमित्ते गतीगमणे छट्ठ हट्ठाण । गमणागमण न आलोएइ, इरियावहिय न पडिक्कमइ, वियालवेलाए पाणग न पच्चक्खाइ, उच्चारपासवणकालभूमीओ एगरत्त न पडिलेहइ नि० । सीसदुवारिय करेइ पु० । गरुलपक्ख पाउणइ उ० । एगओ दुहओ वा कप्पअंचला खधारोविया गरुलपक्ख । बोडिय-खुड्डयाण व उत्तरासंगे उ० । चोलपट्टयकच्छादाणे उ० । चउप्फल मुक्कल वा कप्प खधे करेइ पु० । दो वि बाहाओ छायतो संजइपा-

चिंततस्स उ० २। गुरूण आणाए विणा पयट्टतस्स समईए समत्तनासो। अणाभोगे उ० ३। वत्थधुवणे उ० ३। गायब्भगे चलणब्भगे सरीरधुवणे उ० ४। पारिट्ठावणिय सपत्ताई कारिंतस्स उ० ४। मग्गमि नइलघणे सामन्नेण उ० २। पच्चक्खाणअकरणे उवओगाकरणे अपमज्जिय वसहीए सज्झायकरणे विकहाकरणे दिवासुयणे परपरिवायकरणे गीयाइकरणे कोउहल्लदसणे समईए कुसत्थसवण करिंते वक्खाणते पढते गुणते उ० ३। एगागिणो गुरूणमाणाए विणा वियरतस्स उ० ४। पत्तभडाइभगे उ० १। उवहिं हारवतस्स उ० १। गुरूण आणाए कारणओ आहाकम्माइ अगिण्हतस्स उ० ४। इदियलोलुयाए सजोयण करिंतस्स उ० ४। छप्पइयासघट्टणे वासासु उवहिअधुवणे उ० ४। अकाले धुवतस्स उ० ४। हासं खिड्ड कुणतस्स उ० २। सुत्त विणा जिणपूयाइकज्जेसु पवाहेण पयट्टतस्स उ० ४। साहम्मियकज्जेसु जहासत्तीए अपयट्टमाणस्स उ० ४। **एव संखेवेणं सवविरई भणिया।**

§ ९०. इयाणिं वसहिदोसपायच्छित्तं। कालाइकताए पणग। उवट्ठाणा अभिक्ता अणभिक्ता ॥ वज्जासु चउल्हु। महावज्जाइसु चउगुरु। अतिविसुद्धिकोडिवसहीसु पट्ठीवसाइचउद्दससु चउगुरु। विसोहिकोडीसु दूसियाइसु चउलहुया। भणिय च–

> **आइएँ पणगं चउसु चउलहू वसहीसु खमणमन्नासु।**
> **अविसुद्धासुं चउगुरु विसोहिकोडीसु चउलहुगा ॥ १ ॥**

§ ९१. अह थंडिल्लदोसपच्छित्तं–

> **आवाए संलोए झुसिरतसेसु हवंति चउलहुया।**
> **चउगुरु आसन्नबिले पुरिमं सेसेसु सवेसु ॥ २ ॥**

§ ९२. संपय वंदणयदोसपच्छित्तं–

> **पडणीय दुट्ठ तज्जिय खमणं आयाम रुट्ठथद्धेसु।**
> **गारव तेणिय हीलिय जुएसु पुरिमं च सेसेसु ॥ ३ ॥**

§ ९३. संपइ पवज्जाणरिहपवावणपच्छित्तं–

> **तेणे कीवे रायावयारिदुट्ठे य जुंगिए दोसे।**
> **सेहे गुविणि मूलं सेसेसु हवंति चउगुरुगा ॥ ४ ॥**

सेहे इति सेहनिप्फेडिया। पवज्जाणरिहा य इमे–

> **याले वुड्ढे नपुसे य कीवे जड्डे य वाहिए।**
> **तेणे रायावगारी य उम्मत्ते य अदंसणे ॥ १ ॥**
> **दासे दुट्ठे य मूढे य अणत्ते जुंगिए इय।**
> **ओबद्धए य भयए सेहनिप्फेडिया इय ॥ २ ॥**
> **इय अट्ठारसभेया पुरिसस्स तहित्थियाइ ते चेव।**
> **गुविणिसबालवच्छा दुन्नि इमे हुंति अन्ने वि ॥ ३ ॥**

संपय साहूण निविगइ-आयबिल-उववास-सज्झाया चेव आलोयणा तवे पडति, पुरिमड्ढो वा। ण उण एगासण। पुरिमड्ढो वि चउविहाहारपरिहारेणेवि त्ति।

*

§ ९४ इओ देसविरइपायच्छित्तसगहो भणणइ–देसओ *संकाइसु अट्ठसु आ०। सवओ उ०। देवस्स वासकुपिया-धूवायण-धुक्कियउस्सासअचलगणे, पडिमापाडणे, सइ नियमे देवगुरुअवदणे पु०।

उरणेण पाउणइ आ० । गिहिलिंग-अन्नतित्थियलिंगकप्पकरणे मूल । ओगुट्टिं चउफलकप्प वा हत्थो-
खित्तदडएण वा सिरे कप्प करेइ पु० । उत्तरासग न करेइ, अचित्त ल्सुण भक्खेइ, तण्णयाइ उम्मोएइ
पु० । गंठिसहिय नासेइ उ० । कप्प न पियइ उ० । सति सामत्थे अट्ठमि-चउद्दसि-नाणपचमीसु
चउत्थ न करेइ उ० । वत्थधोवणियाए पइकप्प नि० । पमाएण पच्चक्खाणअग्गहणे पु० । वाणमतराइ-
५ पडिमाकोऊहलपलोयणे पु० । इत्थियालोयणे ए० । दउरहियगमणे उ० । निसागमणे सोवाणहे कोस-
दुगप्पमाणे आ० । अणुनाणहे नि० ।

सिया एगइओ लद्धु विविह पाणभोयण । भद्दगं भद्दग भुच्चा विवण्णं विरसमाहरे ॥

इच्चेव मडलीवचणे उ० । गय उत्तरगुणाइयारपच्छित्त ॥ * ॥ **समत्त च चारित्ताइयारपच्छित्तं ॥**

§ ८५ उववासभगे आ० २, नि० ३, ए० ४, पु० ५ । सज्झायसहस्सदुग, नवगारसहस्समेग । आय-
१० बिलभगे आ० २, नि० ३, पु० ४ । निव्विगइयभगे पु० २ । एकासणाइभगे तदहियपच्चक्खाण देय ।
गंठिसहियाइभगे दव्वाइअभिग्गहभगे वा संखाए पु० । तव कुणताण निंदाअतरायाइकरणे पु० ।

§ ८६ इयाणिं जोगवाहीण अन्नाणपमायदोसा जहुत्ताणुट्ठाणे अकए पायच्छित्त भण्णइ — उस्सघट्ट भुजइ
उ० । लेवाडयदव्वोवलित्तस्स पत्ताइणो परिवासे उ० । आहाकम्मियपरिभोगे उ० । सन्निहिपरिभोगे उ० ।
अकालसन्नाए उ० । थंडिले न पडिलेहेइ उ० । अपडिलेहियथंडिले उच्चं[1] करेइ उ० । असखड करेइ
१५ उ० । कोह-माण-माया लोभेसु उ० । पचसु वएसु उ० । अब्भक्खाण पेसुन्न-परपरिवाएसु उ० ।
पुत्थय भूमीए पाडेइ, कक्खाए करेइ, दुग्गधहत्थेहिं लेइ, थुक्काहिं भरेइ, एवमाइसु उ० । रयहरणे चोल-
पट्टए य उग्गहाओ फिडिए उ० । उब्भो न पडिक्कमइ, चेइयाइं न वंदेइ उ० । कवाड किडिय वा अप-
मज्जिय उग्घाडेइ पु० । कालस्स न पडिक्कमइ, गोयरचरिय न पडिक्कमइ, आवस्सिय निसीहिय वा न करेइ
नि० । छप्पयाओ संघट्टेइ अणागाढ पु०, गाढासु ए० । ओहिय न पडिलेहेइ उ० । उद्देस-समुद्देस-
२० अणुन्ना-भोयण-पडिक्कमणभूमीओ न पमज्जेइ उ० । **गय तवाइयारपच्छित्तं ।**

§ ८७ तवोणुट्ठाणाइसु विरियगूहणे एगासणदुग । **गय विरियाइयारपच्छित्त ।**

§ ८८ इत्थ य छेयाइं[2] असद्दहओ मिउणो परियायगव्वियस्स गच्छाहिवइणो आयरियस्स कुलगणसंघाहि-
वईण च छेय - मूल - अणवट्टप्प - पारचियमवि आवन्नाण जीयववहारेण तव चिय दिज्जइ ।

§ ८९ भणिय साहुपायच्छित्त । सपय आयरणाए किंचि विसेसो भण्णइ — साहु साहुणीण राईभत्तविर-
२५ इभगे असणे पचवि भेया नि० पु० ए० आ० उ० पचगुणा । खाइमे ते चउग्गुणा । साइमे तिगुणा ।
पाणे दुगुणा । सुक्कसन्निहीए उ० २, अल्लसन्निहीए उ० ४ । सचित्तभोयणे कुरडुयाईए उ० ३ ।
अप्पउलियभक्खणे उ० ४ । दुप्पउलभक्खणे उ० २ । कारणओ आहाकम्मगहणे ते पच वि पचगुणा ।
निक्कारणे तहिं पचवि वीसगुणा । आहाकडकीयगडाइदोसासेवणेसु उ० ३ । अकालचारित्तणे कारणओ
उ० ४ । निक्कारणओ ते वि दुगुणा । अकालसन्नाकरणे उ० २ । थंडिल्लउवहीणमपडिलेहणे उ० ३ ।
३० वसहिअपमज्जणे कज्जगाईण अणुद्धरणे अविहिपरिट्ठवणे उ० ३ । जिण पुरओ-गुरुपमुहाण आसायणाए
उ० ४ । अन्नोन्नपर वायाकलहे ते पच । दडादडीए दस । उद्दवणे मूल । पहारे जणनाए ते पचवी-
सगुणा । सागारियदिट्ठीए आहारनीहार करिंते उ० ४ । निंदियकुलेसु आहाराइगिण्हतस्स उ० ४ ।
सूसगभत्त पढमगब्भसुगमत्त गिण्हतस्स उ० २ । गणभेय करितस्स उ० ४ । निक्कारण गिहिकज्ज

1 प्रस्रवण । 2 आचार्यादयो हि छेदादिके दत्ते अपरिणामकादीनां माऽवज्ञास्पदमभूवन्निति तप एव दीयते' — इति B टिप्पणी ।

चिंततस्स उ० २। गुरूण आणाए विणा पयट्टतस्स समईए समचनासो। अणाभोगे उ० ३। वत्थधुवणे उ० ३। गायब्भगे चलणब्भगे सरीरधुवणे उ० ४। पारिट्ठावणिय सपत्ताई कारिंतस्स उ० ४। मग्गमि नइलंघणे सामन्नेण उ० २। पच्चक्खाणअकरणे उवओगाकरणे अपमज्जिय वसहीए सज्झायकरणे विकहाकरणे दिवासुयणे परपरिवायकरणे गीयाइकरणे कोउहलदंसणे समईए कुसत्थसवण करिंते वक्खाणते पढते गुणते उ० ३। एगागिणो गुरूणमाणाए विणा वियरतस्स उ० ४। पत्तभंडाइभंगे उ० १। उवहि हारवतस्स उ० १। गुरूण आणाए कारणओ आहाकम्माइ अगिण्हतस्स उ० ४। इंदियलोलुयाए संजोयण करिंतस्स उ० ४। छप्पइयासंघट्टणे वासासु उवहिअधुवणे उ० ४। अकाले धुवतस्स उ० ४। हासं खिड्ड कुणतस्स उ० २। सुत्त विणा जिणपूयाइकज्जेसु पवाहेण पयट्टतस्स उ० ४। साहम्मियकज्जेसु जहासत्तीए अपयट्टमाणस्स उ० ४। **एवं संखेवेण सव्वविरई भणिया।**

§ ९०. इयाणिं वसहिदोसपायच्छित्तं। कालाइक्कताए पणग। उवट्ठाणा अभिक्कता अणभिक्कता॥ वज्जासु चउलहु। महावज्जाइसु चउगुरु। अतिविसुद्धिकोडिवसहीसु पट्ठीवसाइचउदसंसु चउगुरु। विसोहिकोडीसु दूसियाइसु चउलहुया। भणियं च–

आइएँ पणगं चउसु चउलहू वसहीसु खमणमन्नासु।
अविसुद्धासुं चउगुरु विसोहिकोडीसु चउलहुगा॥ १॥

§ ९१. अह थंडिल्लदोसपच्छित्तं–

आवाए संलोए झुसिरतसेसुं हवंति चउलहुया।
चउगुरु आसन्नबिले पुरिमं सेसेसु सव्वेसु॥ २॥

§ ९२. संपय वंदणयदोसपच्छित्तं–

पडणीय दुट्ठ तज्जिय खमणं आयाम रुट्ठथद्धेसु।
गारव तेणिय हीलिय जुएसु पुरिमं च सेसेसु॥ ३॥

§ ९३. संपइ पव्वज्जाणरिहपव्वावणपच्छित्त–

तेणे कीवे रायावयारिदुट्ठे य जुंगिए दोसे।
सेहे गुव्विणि मूलं सेसेसु हवंति चउगुरुगा॥ ४॥

सेहे इति सेहनिप्फेडिया। पव्वज्जाणरिहा य इमे–

याले वुड्ढे नपुंसे य कीवे जड्डे य वाहिए।
तेणे रायावगारी य उम्मत्ते य अदंसणे॥ १॥
दासे दुट्ठे य मूढे य अणत्ते जुंगिए इय।
ओबद्धए य भयए सेहनिप्फेडिया इय॥ २॥
इय अट्ठारसभेया पुरिसस्स तहित्थियाइ ते चेव।
गुव्विणिसबालवच्छा दुन्नि इमे हुंति अन्ने वि॥ ३॥

संपय साहूण निव्विगइ-आयंबिल-उववास-सज्झाया चेव आलोयणा तवे पडंति, पुरिमड्ढो वा। ण उण एगासण। पुरिमड्ढो वि चउव्विहाहारपरिहारेणेवि त्ति।

*

§ ९४. इओ देसविरइपायच्छित्तसंगहो भण्णइ–देसओ 'संकाइसु अट्ठसु आ०। सव्वओ उ०। देवस्स वासकुंपिया-धूवायण-धुक्कियउम्मासअचलग्गणे, पडिमापाडणे, सइ नियमे देवगुरुअवंदणे पु०।

अनिहिणा पडिमाउज्झणे ए० । देवदव्वस्स असणाइआहार-दम्म-वत्थाइणो, गुरुदव्वस्स वत्थाइणो माहारणधणस्स य भोगे जावइय दव्व भुत्त तावइय तस्स अन्नस्स वा देवस्स गुरुणो य देय । तवो य-देव-गुरुदव्वे जहन्ने भुत्ते आ० । मज्झिमे उ० । उक्किट्ठे एगकल्लाण । एय दुगमवि देय । गुरुआसणमाइणो पायाइणा घट्टणे नि० । अधयारमाइम्मि गुरुणो हत्थपायाइलग्गणे जहन्न-मज्झिम-उक्किट्ठ पु०, ए०, आ० । अट्टनियम्स ठवणायरियस्स पायप्फसे नि० । ठनियस्स पु० । पाडणे उभय । ठवणायरिय नासणे पवइयाण आसणमुहपोत्तियाइ उवभोगे नि० । पाणासणभोगेसु ए०, आ० । वासकुपियाए पडिमा अप्फालणे १, धोवत्तिन विणा देवच्चणे २, पमाएण भूमिपाडणे ३ । पुत्थय-पट्टिया-टिप्पणमाइणो वयणो प-निट्ठीवणालवप्फसे १, चरणघट्टणनिट्ठीवणपट्टियाअक्खरमज्जणेसु २, भूमिपाडणे ३ । अणुट्ठवियठवणा-यरियस्स चालणे १, भूमिपाडणे २, पणासणे ३ । एव जहन्न-मज्झिम-उक्किट्ठआसायणासु पु०, ए०, आ० । अप्पडिलेहियठवणायरियपुरओ अणुट्ठाणकरणे पु०, सज्झायसय वा । अवयारणगाइवायरमिच्छ-करणे पचकल्लाण उ० १० । जवमालियानासणे ए० । कम्मि वि ठवणायरिए गमिए जवमालियानिग्गमणे य एगकल्लाण, सज्झायपचसहस्स वा । कन्नाइलग्गणे सडाइविवाहे आ० । चिउल्लियाइकरणे पु० ।

पडिमादाहे भगे पलीवणाइसु पमायओ वावि ।
तह पुत्थ-पट्टियाईणहिणवकारावणे सुद्धी ॥

पुत्थयमाईण कक्खाकरणे दुग्गधहत्थगहणे पायलग्गणे आ० । देवहरे निक्कारण सयणे आ० २ । देवजगईए हत्थपायपक्खालणे उ० । ण्हाणे उ० २ । निक्कहाकरणे आ०, पु० । झगडय जुज्झ वा करेइ उ०२, पु० २ । घरलेक्खय पुत्तपुत्तियासबध च करेइ उ० ३, पु० ३ । हत्थरुडि हास चच्छरिं देवहरे परोप्पर पुरिसाण करिंताण उ० ३, पु० ३ । इत्थीहि सह उ० ६, पु० ६ ।

पुढविमाइसु चउरिंदियावसाणेसु साहु व्व पच्छित्त । पचिदिएसु पमाएण पाणाइवाए कल्लाण । सकप्पेण पचकल्लाण । दोण्ह विगलाण वहे उ० २ । तिण्ह उ० ३ । जाव दसण्ह उ० १० । एका रसाइसु बहुसु वि उ० १० । मयतरे बहुएसु विगलेसु पचकल्लाण । पभूयतरबेइदियउद्दवणे उ० २०, पभूयतरतेइदियउद्दवणे उ० ३० । पभूयतरचउरिंदियउद्दवणे उ० ४० । जीववाणिय-कोलियपुड-कीडि-यानगर-उद्देहियाइउद्दवणे पचकल्लाण । अगलियजलस्स एगवार ण्हाणपाणतावणाइसु एगकल्लाण । अग-लियजलेण वत्थसमूहधुयणे पचकल्लाण । जित्तियवार अगलियजल वावरेइ तित्तिया कल्लाणगा । पच्चावे-क्खाए उ० १ । जलोयामोयणे आ० । जीववाणियसखारगउज्झणे एगकल्लाण उ० २ । थोवे थोवत रमनि । अणतकाइयकीडियानगरझुसिरवाडियाइसु ण्हाणजल-उण्हअवसावणाइवहणे सखारगसोसे अग-लियजलवावारे गलिज्जतस्स वा निच्चियस्स नि उज्झणे अमोहियइधणस्स अग्गिमि निक्खेवे केसविर-लीकरणे सिरकड्डयणे कीलाए सरलेट्ठुमाइक्खेवे पुरिमड्ढाईणि ।

मुसावाय-अदिन्नादाण-परिग्गहेसु जहन्नाइसु ए०, आ०, उ० । दप्पेण तिसु वि पचकल्लाण । अहवा मुसावाए जहण्णे पु०, मज्झिमे आ०, उक्किट्ठे पचकल्लाण । दप्पेण जहन्न-मज्झिमेसु वि त चेव । दव्वाइचउव्विहे अदिन्नादाणे जहन्ने पु०, मज्झिमे सघरे अनाए ए०, नाए आ० । अहवा उ० । उक्किट्ठे अनाए पचकल्लाण, नाए रायपज्जतकरहसपन्ने त चेव, सज्झायलक्ख च ।

सदारे चउत्थवयभगे अट्ठम एगकल्लाण च । अनाए परदारे हीणजणरूवे पचकल्लाण, नाए सज्झा-यलक्ख । उत्तमपरदारे अनाए मज्झायलक्ख, असीइसहस्साहिय । नाए मूल । उत्तमपरक्खत्ते वि । पु-रुसगम्म अद्धनपच्छायाविस्स कल्लाण, पचकल्लाण वा । मयतरे पमाएण असुमरतस्स सदारे वयभगे उ० १,

जाणतस्स पचकल्लाण। जइ इत्थी बलाकार करेइ तया तीसे पचकल्लाण। इत्तरकालपरिग्गहियाए वि वयभगे कल्लाण, अहवा उ० १। वेसाए वयभगे पमाएण असभरतस्स उ० २, अहवा उ० १। कुलवहूए वयभगे मूल। मिउणो पचकल्लाण। अहवा दप्पेण परदारे पचकल्लाण। अइपसिद्धिपत्तस्स उत्तमकुलस्सवि वयभगेण मूलमवि आवन्नस्स पच कल्लाण। सकलवे वयभगे पचविसोनया पार। वेसाए दस। कुलटाए पन्नरस। कुलगणाए वीस। दप्पेण परिग्गहपमाणभगे पचकल्लाण। उक्किट्ठे सज्झायलक्खमसीइसहस्साहिय। दिसिपरिमाणवयभगे उ०। भोगोवभोगमाणभगे छट्ठ। अणाभोगेण मज्ज-मस-महु-मक्खणभोगे उ०, आउट्टीए पचकल्लाण, अट्ठम वा। अणतकायभोगोवद्दवणेसु उ०। अकारण राईभोत्ते उ०। सचित्त-वज्जिणो सचित्तअनगाढपत्तेयभोगे आ०। पनरसकम्मादाणनियमभगे आ०, अहवा उ०, अहवा छट्ठ, एगकल्लाणमिति भावो। दव्वसचित्तअसण-पाण-खाइम-साइम-विलेवण-पुप्फाइपरिमाणभगे पु०। अहियवि-गइभोगे नि०। ण्हाणनियमभगे आ०, अहवा उ०। पचुवराइफलभक्खणवयभगे, पच्चक्खाणवय-भगे अट्ठम। पच्चक्खाणनियमभगे अट्ठम। पच्चक्खाणनियमे सइ निक्कारण तदकरणे उ०। अकारण-सुयणे उ०। नमोक्कारसहिय-पोरिसि-सड्ढपोरिसि-पुरमड्ढ दोक्कासण एक्कासण-विगइ-निव्विगइय-आयबिल-उव-वासाण भगे तदहियपच्चक्खाण देय। उववासभगे उ० २। वमिवसेण पच्चक्खाणभगे पु०, अहवा ए०। मयतरे नवकारसहिय-पोरिसि-गठिसहियाईण भगे सखाए नवकार १०८, अहवा ए०। मयतरे गठिसहियभगे सज्झाय २००। गठिसहियनासे उ०। चरिमपच्चक्खाणअगहणे रत्तीए य सवरणे अकरणे पु०। अणत्थदडे चउविहे उ०। मयतरे आ०। पेसुन्न-अब्भक्खाणदाण-परपरिवाय असब्भराडिकरणेसु आ०, अहवा उ०। नियमे सइ सामाइय पोसह-अतिहिसविभागअकरणे उ०। देसावगासिए भगे आ०। वायणतरेण सामाइय-पोसहेसु वि आ०। चाउम्मासिय-सवच्छरिएसु निरइयारस्सावि पचकल्लाण। कारणे पासत्थाईण किइकम्मअकरणे आ०। अभिग्गहभगे आ०। इरियावहियमपडिक्कमिय सज्झायाइ करेइ पु०। इत्थीए नालयमउलणे एगकल्लाण ति पुव्वाण आएसो, न पुण कहि पि दिट्ठ। बाल वुड्ढ असमत्थ नाऊण तइओ भागो पाडिज्जइ। आलोयणाए गहियाए अणतर जावति वरिसा अतरे जति तावति कल्लाणाणि दिज्जति त्ति गुरूवएसो। महल्लयरे वि अवराहे छम्मासोववासपज्जतमेव तव दायव्व। जओ वीर-जिणतित्थे इत्तियमेव च उक्कोसओ तव वट्टइ। एगाइ नव जाव अवराहणट्ठाणसखाए पायच्छित्त दायव्व। दसाइसु सखाईएसु वि दसगुणमेव देय ति।

§ ९९ इयाणिं पोसहियस्स पायच्छित्तं भण्णइ – तत्थ पोसहिओ आवस्सिय निसीहिय वा न करेइ, उच्चार-पासवणाइभूमीओ न पडिलेहइ, अप्पमज्जिऊण कट्ठासणगाइ गिण्हइ मुचइ वा, कवाड अविहिणा उग्घा-डेइ पिहेइ वा, कायमपमज्जिय कडुयइ, कुड्डमप्पमज्जिय अवट्ठभ करेइ, इरियावहिय न पडिक्कमइ, गमणा-गमण न आलोयइ, वसहि न पमज्जइ, उवहि न पडिलेहइ, सज्झाय न करेइ, नि०। पाडिय मुहपत्तिय लहइ नि०। न लहइ उ०। पुरिसस्स इत्थियाए य इत्थी-पुरिसवत्थसघट्टे नि०। गायसघट्टे पु०। कवलिपावरणे, आउकाय-विज्जुजोइफुसणे नि०। कवलिविणा पु०, अहवा आ०। कवलिपावरण विणा पईवफुसणे उ०। अपाराविऊण भोयणे पाणे पुजयअणुद्धरणे पु०। अमज्झ त्ति अभणणे पु०। वमणे निसि सण्णाए भुत्तूण वदणयसवरणअकरणे अणिमित्तदिवासुवणे विगहासावज्जभासासु सथारयअसदिसावणे सथारयगाहाओ अणुच्चारिऊण सयणे उववविट्ठपडिक्कमणे चाघारे दगमट्टियागमणे य आ०। पुरिसस्स थीफासे आ०। इत्थीए पुरिसफासे उ०। सतरफासे पु०। अचलफासे मज्जारीमाइतिरियफासे य नि०। तरूण पण्णतोडणे आ०। अप्पडिलेहियथडिले पासवणाइवोसिरणे आ०। वदणकाउस्सग्गाण गुरुणो पच्छा करणाइसु पुढवाइसंघट्टणाइसु य साहुणो व पच्छित्त देय। एव सामाइयत्थस्स वि जहासंभव चिंतणीय।

§ ९६. संपय पत्ताविक्खाए सामायारीविसेसेण सावयपायच्छित्त भण्णइ — देवजगईए मज्झे भोयणे उ० १, पाणे आ० १। अईण भोयणे कए उ० ५, पाणे २। तेसिं नियडे निद्दाकरणे आ० २, उ० ३। देसओ पच्छा अद्ध, अप्प ओधिज्जइ। देसओ ए० २, उ०। सव्वओ नि० ३। उस्सुत्तअणुमोयणे देसओ उ०, आ०, सव्वओ उ० ५, आ० ३, नि० ३, ए० ५। देवदव्वउवभोगे कए थोवे उ० ५, आं० ५, नि० ५, ए० ५, पु० ५। पउरे जणनाए एय चउग्गुण, अन्नाए दुगुण। सव्वओ नाए पत्ताविं वीसगुणा। अन्नाए दसगुणा। उवेक्खणे पण्णाहीणे अन्नाए पत्ताविं सव्वओ तिगुणा, नाए चउग्गुणा। एव साहम्मियधणोव-भोगे नाए चउग्गुणा, अन्नाए दुगुणा। साहम्मिएण सह कलहे अन्नाए थोवे उ०, आ०, नि०, पु०, ए०। पउरे नाए तिगुणा। साहम्मियअवमाणे थोवे अन्नाए उ०, आ०, नि०, पु०, ए०। पउरे नाए बिउणा। गिलाणअपालणे देसओ पत्ताविं दुगुणा। साहम्मियगिलाणअपालणे देसओ पचगुणा, सव्वओ छग्गुणा। सामन्नओ विसेसओ गिलाणअपालणे सव्वओ पचवीसगुणा। देसओ सम्मत्ताइयारेसु अट्ठसु पत्ताविं एगगु-णाई जाव अट्ठगुणा, सव्वओ दुगुणाई जाव नवगुणा। — सम्मत्तपच्छित्तं गय।

§ ९७ पाणाइवाए सुहुमे बायरे वा देसओ कए कप्पे ते पच, पमाए बिउणा, दप्पे तिगुणा, आउट्टियाए चउग्गुणा। पुढवि-आउ-तेउ वाउ-वणस्सईण संघट्टणे पु०, परियावणे ए०, उद्दवणे उ०। तसकायसंघट्टणे आ०, परिआवणे आ० २, उद्दवणे पच०। कप्पमि उद्दवणे पच-दुगुणाणि, पमाएण तिगुणाणि, आउट्टि-याए पचगुणाणि। एव देसओ। सव्वओ पुढविकायाईण अट्ठण्ह संघट्टणे कमेण पु० २, नि० ३, ए० ४, आ० २, उ० २, उ० ३, उ० ४, उ० ५। नवमे पचविह एय पचगुण। परियावणे एएसु एय दुगुण। उद्दवणे पचगुण। कप्पे संघट्टणपरियावणुद्दवणेसु सव्वओ आ० १, आ० २, आ० ३। पमाए उ० १, उ० २, उ० ३। दप्पे उ० २, उ० ३, उ० ४। आउट्टियाए संघट्टणाइसु उ० २, उ० ३, उ० ४। — भणिओ पाणाइवाओ।

सुहुमे मुसावाए देसओ जयणा। कयपोसहसामाइओ जइ भासइ सुहुम मुसावाय तो उ० २। बायर भासइ उ० ४। अकयसामाइओ बायरमुसावाय भासइ उ० ३। सव्वओ सुहुमे मुसावाए पचविह पि दुगुण। बायरे पचविह पि पचगुण। — मुसावाओ गओ।

अदत्तगहणे सुहुमे देसओ जयणा। कयपोसहसामाइओ अदत्त गेण्हइ सुहुम तो पच बिउणा। बायर गेण्हइ पच वि अट्ठगुणा। सव्वओ सुहुमे पचगुणा बायरे दसगुणा। — गय अदत्तादाणं।

मेहुणपच्छित्त पुव्व व। विसेसो पुण इमो — देवहरे वेसाए सह पसंगे जाए उ० १०, आ० १०, नि० १०, ए० १०, सज्झायसहस्सतीसं ३०। सावियाहिं सद्धिं त चेव तिगुणं देय अन्नाए, नाए पचगुण। सावग-अज्जियाण पसंगे जाए नाए य वीसगुण, अन्नाए तेरसगुण। संजय सावियाण अन्नाए पन्नरसगुण, नाए तीसगुण। संजय अज्जियाण अन्नाए सट्ठिगुण, नाए सयगुण। देवहर विणा पुव्वोसेहिं वेसाईहिं सह पसंगे जाए नाए उ० ३०, आ० ३०, नि० १००, पु० ५००, ए० १०००, सज्झायस्स ३०, अन्नाए एयद्ध। — गय मेहुण।

देसओ धणधन्नाइनवविहे परिग्गहप्पमाणाइक्कमे एगगुणाई पच वि भेया जाव नवगुणा। सव्वओ उण कयपच्चक्खाणस्स परिग्गहे नवविहे वि विहिए चउगुणाई जाव बारसगुणा। — गओ परिग्गहो।

देसओ दिसिमोगाइसु सत्तसु जाए अइयारे जहक्कम पच वि भेया इक्कगुणाई जाव सत्तगुणा। देस-विरइयस्स असणाईनिसिभत्ते कप्पे उ० ३, पचगुणा* जाव अट्ठगुणा। दुहाहारपच्चक्खाणभगे उ०

---

* 'कप्पे पंचगुणा', प्रमादे षड्गुणा', दर्पे सप्तगुणा, आकुट्यामष्टगुणा।'—इति A टिप्पणी।

१। तिविहाहारपच्चक्खाणभंगे उ० २। चउव्विहाहारपच्चक्खाणभगे उ० ४। दुक्कासणभगे उ० २। इक्कासणभगे उ० ३। अहिगविगइगहणे आ०। अहिगदव्वमच्चित्तगहणे उ० १। रसलोलओ उक्किट्ठदव्वभोगे आ०। अहवा नि०। सकेयपच्चक्खाणभगे उ० १। निव्वियभगे उ० २। आयबिलभगे उ० ३, पुरिमड्ढ २। —संखेवेण देसविरई भणिया।

*

कयसुयगुरुपयपूओ पियधम्माइगुणसंजुओ सण्णी।
इरियं पडिकमिय करे दुवालसावत्तकीकम्मं ॥ १ ॥
सुगुरुस्स पायमूले लहुवदण-संदिसाविय विसोही।
मंगलपाढं काउं ओणयकाओ भणइ गाहं ॥ २ ॥
जे मे जाणंति जिणा अवराहे नाणदसणचरित्ते।
तेहं आलोएउं उवट्ठिओ सव्वभावेण ॥ ३ ॥
तो दाओं खमासमणं जाणुठिओ पुत्तिठइयमुहकमलो।
सणियं आलोइज्जा चउवीसं सयमईयारे ॥ ४ ॥
पण सलेहण पनरस कम्म नाणाइ अट्ठ पत्तेयं।
बारस तव विरिय तियं पण सम्मवयाइं पत्तेयं ॥ ५ ॥
मुत्तुं दड्ढतिहीओ अमावसं अट्ठमिं च नवमिं च।
छट्ठिं च चउत्थि वा बारसिं च आलोयणं दिज्जा ॥ ६ ॥
चित्ताणुराह रेवइ मियसिर कर उत्तरातिय पुस्सो।
रोहिणि साइ अभीई पुणवसु अस्सिणि धणिट्ठा य ॥ ७ ॥
सवणो सयतार तह इमेसु रिक्खेसु सुंदरे खित्ते।
सणि-भोमवज्जिएसु वारेसु य दिज्ज त विहिणा ॥ ८ ॥
इत्थ पुण चउभगो अरिहो अरिहंमि दलयइ कमेण।
आसेवणाहणा खलु मदं दवाइ सुद्धीए ॥ ९ ॥
कस्सालोयण १ आलोयओ य २ आलोइयव्वयं चेव ३।
आलोयणविहि ४ मुवरिं तद्दोसगुणे य ६ वोच्छामि ॥ १० ॥
अक्खंडियचारित्तो वयगहणाओ य जो भवे निचं।
तस्स सगासे दसण-वयगहण सोहिगहण च ॥ ११ ॥
*आयारवमाहार ववहारोऽवीलए पकुव्वे य।
अपरिस्सावी निज्जव अवायदसी गुरू भणिओ ॥ १२ ॥
आगमं सुयं आणां धारणां य जीयं च होइ ववहारो।
केवलिमणोहि-चउदस-दस-नवपुव्वाइ पढमोत्थ ॥ १३ ॥
कहेहि सव्व जो वुत्तो जाणमाणो विगूहइ।
न तस्स दिंति पच्छित्त विंति अन्नत्थ सोहय ॥ १४ ॥

* "आचारवान् पचविधाचारवान्। आधारवान् आलोचितापराधानामवधारक । व्यवहारो वक्ष्यमाणपचविधव्यवहारवान्। अपव्रीडको लज्जयाऽतीचारान् गोपयत विचित्रैर्वचनैर्विलज्जीकृत्य सम्यगालोचनाकारयिता। प्रकुर्वक आलोचितापराधेषु सम्यक् प्रायश्चित्तदानतो विशुद्धिं कारयितु समथ । अपरिश्रावी आलोचकोक्तदोषाणामन्यस्मै अकथक । निर्यापकोऽसमर्थस्य तदुचितदानान्निर्वाहक । अपायदर्शी अनालोचयत पारलौकिकापायदर्शक ।" इति A B आदर्शगता टिप्पणी।

न सभरइ जो दोसे सब्भावा न य मायया।
पच्चक्खी साहए ते उ माइणो उ न साहई ॥ १५ ॥
आयारपगप्पाई सेस सव्व सुय विणिद्दिट्ठ।
देसतरट्टियाण गूढपयालोयणा आणा ॥ १६ ॥
गीयत्थेण दिन्न सुद्धि अवहारिऊण[1] तह चेव।
दितस्स धारणा सा उद्धियपयधरणरूवा वा ॥ १७ ॥
दव्वाइ चिंतिऊण सघयणाईण हाणिमासज्ज।
पायच्छित्त जीय रूढं वा ज जहि गच्छे ॥ १८ ॥
अग्गीओ नवि जाणइ सोहि चरणस्स देइ ऊणहियं।
तो अप्पाण आलोयग च पाडेइ ससारे ॥ १९ ॥
तम्हा उक्कोसेण खित्तम्मि उ सत्तजोयणसयाइ।
काले बारसवरिसा गीयत्थगवेसण कुज्जा ॥ २० ॥
आलोयणापरिणओ सम्म सपट्ठिओ गुरुसगासे।
जइ अतरा वि काल करिज्ज आराहओ तह वि ॥ २१ ॥ —दार १।
जाइ-कुल-विणय-उवसम-इदियजय-नाण-दसणसमग्गो।
अणणुतावी[2] अमाई चरणजुया लोयगा भणिया ॥ २२ ॥ —दार २।
मूलुत्तरगुणविसय निसेविय जमिह रागदोसेहिं।
दप्पेण पमाएण व विहिणाऽलोएज्ज त सव्व ॥ २३ ॥
पढम काले विणए बहुमाणुवहाण तह अणिण्हवणे।
वजण-अत्थ-तदुभये अट्ठविहो नाणमायारो य २४ ॥
नाणपडणीय निण्हव अच्चासायण तदन्तराय च।
कुणमाणस्सइयारो पडियपुत्थाइपडणीय ॥ २५ ॥
निस्सकिय निक्कखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य।
उववूह थिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥ २६ ॥
चेइयसाहू सावय विण उववूह उचियकरणिज्ज।
ज न कय त निंदे मिच्छत्त ज कय त च ॥ २७ ॥
बेइंदिया य जलुया सिमिया किमिया य हुति पुअरया।
तेइदिय मकोडा जूवा मकुणग उद्देही ॥ २८ ॥
चउरिंदिय मच्छिय विच्छियया य मसया तहेव तिड्डाय।
पचिंदिय मडुक्का पक्खी मूसा य सप्पा य ॥ २९ ॥
अलिये अब्भक्खाण दिट्ठीवचणमदत्तदाणमि।
मेहुणसुमिणासेवण कीडा अगस्स सफासे ॥ ३० ॥
भत्तारअन्नपुरिसे केली गुज्झगफासणा चेव ॥
इत्थी पुरिसाण पुण वीवाहण पीडकरणाई ॥ ३१ ॥

---

1 'अवराहिऊण' इति B पाठ। 2 किमिद मयाऽऽलोचितमिति।

तह य परिग्गहमाणे सित्ताईणं तु भंगमालोए ।
दिसिमाणे आणायण अन्नस्स य पेसणं जं वा ॥ ३२ ॥
सचित्तगं तु दवं पक्कासण-ण्हाण-पिवण-तबोलं ।
राईभोयणवंभं पाणस्स य सवर वियडे ॥ ३३ ॥
वियडे अणत्थविसय तिल्लाईणं पमाणकरणं तु ।
पाओवएस च तहा कंदप्पाई अवज्झाणं ॥ ३४ ॥
सामाइयफुसणाई दुप्पणिहाणाइ छिन्नणाईयं ।
दंडगचालणमविहाणकरणं सवं च आलोए ॥ ३५ ॥
देसावगासियमी पुढविकायाइ सवर न करे ।
जयणाइ चीरधुवणे वितहायरणे य अइयारो ॥ ३६ ॥
पोसहकरणे थंडिल्ल वितहकरणं च अविहिसुयणं च ।
वंभे य भत्तविसए देसे सवे य पत्थणाया ॥ ३७ ॥
अतिहिविभागो य कओ असुद्धभत्तेण साहुवग्गम्मि ।
सद्दहण चिय न कयं सद्दहण-परूवणावि तहा ॥ ३८ ॥
साहू साहुणिवग्गो गिलाणओसहनिरूवणं न कयं ।
तित्थयराण भवणे अपमज्जणमाइ ज च कयं ॥ ३९ ॥
तवसंजमजुत्ताणं किंचं उववूहणाइ जं न कयं ।
दोसुब्भावण मच्छर तं पिय सव समालोए ॥ ४० ॥
तह अन्नधम्मियाणं तेसिं देवाण धम्मवुद्धीए ।
आरंभे य अजयणा धम्मस्स य दूसणा जाओ ॥ ४१ ॥
पायच्छित्तस्स ठाणाइ संखाइयाई गोयमा ।
अणालोयंतो हु इक्कि ससल्लं मरण मरे ॥ ४२ ॥
आलोयण अदाउं सइ अन्नमि य तहप्पणो दाउं ।
जे वि य करिंति सोहिं ते वि ससल्ला मुणेयवा ॥ ४३ ॥
चाउम्मासिय वरिसे दायवालोयणा व चउकन्ना । —दार ३ ।
सवेगभाविण्णं सवं विहिणा कहेयव ॥ ४४ ॥
जह वालो जपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ ।
तं तह आलोइज्जा मायामयविप्पमुक्को उ ॥ ४५ ॥
छत्तीसगुणसमन्नागएण तेणवि अवस्स कायवा ।
परसक्खिया विसोही सुट्ठु विवहारकुसलेण ॥ ४६ ॥
जह सुकुसलो वि विज्जो अन्नस्स कहेइ अत्तणो वाहिं ।
एव जाणंतस्स वि सल्लुद्धरण परसगासे ॥ ४७ ॥
आयरियाइ सगच्छे संभोइय-इयरगीय-पासत्थे ।
पच्छाकडसारूवी-देवयपडिमा-अरिहसिद्धे ॥ ४८ ॥ —दारं ४ ।
अप्प पि भावसल्लं अणुद्धियं राय-वणियतणएहिं ।
जायं कडुयविवाग किं पुण वहुयाइ पावाइ ॥ ४९ ॥

न संभरइ जो दोसे सब्भावा न य मायया।
पच्चक्खी साहए ते उ माइणो उ न साहई ॥ १५ ॥
आयारपगप्पाई सेस सव्व सुयं विणिद्दिट्ठं।
देसंतरट्ठियाण गूढपयालोयणा आणा ॥ १६ ॥
गीयत्थेणं दिन्नं सुद्धिं अवहारिऊण तह चेव।
दिंतस्स धारणा सा उद्धियपयधरणरूवा वा ॥ १७ ॥
दव्वाइ चिंतिऊण संघयणाईण हाणिमासज्ज।
पायच्छित्तं जीयं रूढं वा जं जहिं गच्छे ॥ १८ ॥
अग्गीओ नवि जाणइ सोहिं चरणस्स देइ ऊणहियं।
तो अप्पाणं आलोयगं च पाडेइ संसारे ॥ १९ ॥
तम्हा उक्कोसेणं खित्तम्मि उ सत्तजोयणसयाइं।
काले बारसवरिसा गीयत्थगवेसणं कुज्जा ॥ २० ॥
आलोयणापरिणओ सम्मं संपट्ठिओ गुरुसगासे।
जइ अंतरा वि कालं करिज्ज आराहओ तह वि ॥ २१ ॥ –दार १।
जाइ-कुल-विणय-उवसम-इंदियजय-नाण-दंसणसमग्गो।
अणणुतावी अमाई चरणजुया लोयगा भणिया ॥ २२ ॥ –दार २।
मूलुत्तरगुणविसयं निसेवियं जमिह रागदोसेहिं।
दप्पेण पमाएण व विहिणालोएज्ज तं सव्वं ॥ २३ ॥
पढमं काले विणए बहुमाणुवहाण तह अणिण्हवणे।
वंजण-अत्थ तदुभये अट्ठविहो नाणमायारो य २४ ॥
नाणपडणीय निण्हव अच्चासायण तहन्तराय च।
कुणमाणस्सइयारो पट्टियपुत्थाइपडणीय ॥ २५ ॥
निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य।
उववूह थिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥ २६ ॥
चेइयसाहू सावय विणउववूह उचियकरणिज्जं।
जं न कयं तं निंदे मिच्छत्तं जं कयं तं च ॥ २७ ॥
बेइंदिया य जलुया सिमिया किमिया य हुंति पुअरया।
तेइंदिय मंकोडा जूवा मक्कुणग उद्देही ॥ २८ ॥
चउरिंदिय मच्छिय विच्छिया य ममया तहेव तिड्डाय।
पचिंदिय मंडुक्का पक्खी मूसा य सप्पा य ॥ २९ ॥
अलिये अब्भक्खाणं दिट्ठीवचणमदत्तदाणंमि।
मेहुणसुमिणासेवण कीडा अगस्स संफासे ॥ ३० ॥
भत्तारअन्नपुरिसे केली गरुफासणा चेव ॥
इत्थी पुरिसाणं पुण वी[illegible] ॥ ३१ ॥

§ ९८ जत्थ य गुरुणो दूरदेसे तत्थ ठवणायरियं ठवित्तु इरियं पडिक्कमिय दुवालसावत्तवंदणं दाउं सोहिं संदिसाविय गाहं भणिय, तद्दिणाओ आरब्भ आलोयणातवं कुणइ। पच्छा गुरूण समागमे आलोयणं गिण्हइ। सावएण आलोयणातवे पारद्धे फासुयाहारो सच्चित्तवज्जणं बंभं अविभूसा कम्मादाणच्चाओ विकहोवहास-कलह-भोगाइरेग परपरीवाय-दिवासुयणवज्जणं, तिकालं जत्तओ वि चीवंदणं जिणसाहुपूयणं, रद्दट्टज्झाणपरिहारो तिविहाहारपच्चक्खाणं पुरिमड्ढे चउव्विहाहारपरिच्चाओ निवीए उस्सग्गेण उक्कोसदव्वापरीभोगो, निसाए चउव्विहाहारपच्चक्खाणं कायव्वं। तहा पुण्णनईए कयं चित्तासोयसियसत्तमट्ठमीनवमीकयं च आलोयणातवे पडइ।

> इक्कासणाइ पंचसु तिहीसु जस्सत्थि सो तवं गुरुयं।
> कुणइ इह निव्वियाई पविसइ आलोयणाइतवे ॥ १ ॥
> जइ त तिहिभणियतवं अन्नत्थदिणे करिज्ज विहिसज्जो।
> अह न कुणइ जो सो गुरुतवो वि ज तिहितवे पडइ ॥ २ ॥
> पइदिवस सज्झाए अभिग्गहो जस्स सयसहस्साई।
> सो कम्मक्खयहेऊ अहिगो आलोयणाइतवे ॥ ३ ॥

सज्झाओ य इरियं पडिक्कमिय कालवेलाचउक्कं चित्तासोयसियसत्तमट्ठमीनवमीओ य वज्जिय, मुहे मुहणंतयं वत्थंचलं वा दाउं कायव्वो। न उण पुत्थिओवरि। नवकाराण च मोणगुणियाण सहस्सेण दोण्णि सहस्सा सज्झाओ पविसइ त्ति सामायारी ॥

॥ आलोयणविही समत्तो ॥ ३४ ॥

॥ प्रतिष्ठाविधिः ॥

§ ९९. मूलगुरम्मि पुरंदरपुराभरणीभूए सो अहिणवसूरी पइट्ठापमुहकज्जाइं सयं चिय करेइ। अओ संपयं पइट्ठाविही भण्णइ। सो य सक्कयभासानिबद्धमतबहुलो त्ति सक्कयभासाए चेव लिहिज्जइ।

प्रतिष्ठास्थाने जघन्यतोऽपि हस्तशतप्रमाणक्षेत्रे शोधिते विचित्रवस्त्रोल्लोचे पूर्वोत्तरदिगभिमुखस्य नन्द्यनिम्बस्य स्थापना। तदनन्तरं श्रीखण्डरसद्रवेण ललाटे 'ॐ ह्रीं' हृदये 'ॐ ह्रूँ' इति बीजानि न्यसनीयानि। गन्धोदकपुष्पादिभिर्भूमिसत्कारः, अमारिघोषणम्, राजप्रच्छनम्, वैज्ञानिकसन्माननम्, संघाह्वानम्, महोत्सवेन पवित्रस्थानाज्जलानयनम्, वेदिकारचना, दिक्पालस्थापनम्, स्नपनकाराश्च समुद्राः सकङ्कणा अक्षताङ्गा दक्षा अक्षतेन्द्रिया कृतकवचरक्षा अखण्डितोज्ज्वलवेषा उपोषिता धर्मबहुमानिनः कुलजाश्चत्वारः करणीयाः। तत्रैव मङ्गलाचारपूर्वकम्, अविधवाभिश्च तु प्रभृतिभिर्जीवत्पितृमातृश्वश्रूश्वशुरादिभिः प्रधानोज्ज्वलनेपथ्याभरणाभिर्विशुद्धशीलाभिः सकङ्कणहस्ताभिर्नारीभिः पञ्चरत्नकषायमृत्तिका-माङ्गल्यमूलिका-अष्टवर्गसर्वौषध्यादीनां वर्तनं कारणीयं क्रमेण। ततो भूतबलिपूर्वकं[1] विधिना पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमास्नानं क्रियते। ततः सूरिः प्रत्यग्रवस्त्रपरिधानः स्नानकारयुक्तः शुचिरुपोषितो भूत्वा पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमाग्रतश्चतुर्विधश्रीश्रमणसंघसहितो अधिकृतजिनस्तुत्या देववन्दनं करोति। ततः श्रीशान्तिनाथ-श्रुतदेवी-शासनदेवी-अम्बिका-अच्छुप्ता-समस्तवैयावृत्त्यकराणां कायोत्सर्गकरणम्। ततः सूरिः कङ्कणमुद्रिकाहस्तः सदशवस्त्रपरिधानः आत्मनः सकलीकरणं शुचिविद्यारोपयति। तच्चेदम्—'ॐ नमो अरहंताणं हृदये, ॐ नमो सिद्धाणं शिरसि, ॐ नमो आयरियाणं शिखायाम्, ॐ नमो उवज्झायाणं कवचम्, ॐ नमो सव्वसाहूणं अस्त्रम्।

[1] 'ॐ नमो अरहंताणं इत्यादिमन्त्राभिमन्त्रितं' – इति टिप्पणी।

इति सकलीकरण । तत –'ओँ नमो अरिहंताण, ओँ नमो सिद्धाण, ओँ नमो आयरियाण, ओँ नमो उवज्झायाण, ओँ नमो सव्वसाहूण, ओँ नमो आगासगामीण, ओँ ह क्ष नम '–इति शुचिविद्या। अनया त्रि-पञ्च-सप्तवारान् आत्मान परिजपेत् । तत स्नपनकारान् अभिमन्त्र्य अभिमन्त्रितदिशाबलिप्रक्षेपण धूपसहित सोदक क्रियते । 'ओँ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रव बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा–इत्यनेन बल्यभिमन्त्रणम् । तत कुसुमाजलिक्षेप । नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ।

अभिनवसुगन्धिविकसितपुष्पौघभृता सुधूपगन्धाढ्या ।
बिम्बोपरि निपतन्ती सुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥ १ ॥

तदनन्तर आचार्येण मध्याङ्गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन बिम्बस्य तर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया । तदनन्तरं वामकरे जल गृहीत्वा आचार्येण प्रतिमा आच्छोटनीया । ततश्चन्दनतिलक पुष्पै पूजन च प्रतिमाया । ततो मुद्गरमुद्रादर्शनम्, अक्षतभृतस्थालदानम्, वज्रगरुडादिमुद्राभिर्बिम्बस्य चक्षूरक्षामन्त्रेण 'ओँ ह्रीं क्ष्वीं०' इत्यादिना कवच करणीयम्, दिग्बन्धश्च अनेनैव । तत श्रावका सप्तधान्य मण-राजमाष-कुलत्थ-यव कंगु-उडद-सर्षपरूप प्रतिमोपरि क्षिपन्ति । ततो जिनमुद्रया कलशाभिमन्त्रणम् । जलाद्यभिमन्त्रणमन्त्राश्चैते– ओँ नमो य सर्वे शरीरावस्थिते महाभूते आ ३ आप ४ ज ४ जल गृह्ण गृह्ण स्वाहा । **जलाभिमन्त्रणमन्त्रः** । ओँ नमो य शरीरावस्थिते पृथु पृथु गन्धान् गृह्ण गृह्ण स्वाहा । **गन्धाधिवासनमन्त्रः** । सर्वौषधिचन्दनसमालभनमन्त्रश्च –ओँ नमो य सर्वतो मे मेदिनि पुष्पवति पुष्प गृह्ण गृह्ण स्वाहा । **पुष्पाभिमन्त्रणमन्त्रः** । ओँ नमो य सर्वतो बलिं दह दह महाभूते तेजाधिपति धुधु धूप गृह्ण गृह्ण स्वाहा । **धूपाभिमन्त्रणमन्त्र'** । तत पञ्चरत्नकषायमन्थिर्बिम्बस्य दक्षिणकराङ्गुल्या बध्यते ।

तत सूत्रधारेणैककलशेन प्रतिमाया स्नापिताया पञ्चमङ्गलपूर्वक मुद्रामन्त्राधिवासितैर्जलादिद्रव्यैर्गीततूर्यपूर्वक सकुशलस्थानकौरे स्नात्रकरणमारभ्यते । तद्यथा, सहिरण्यकलशचतुष्टयस्नानम् १ –

सुपवित्रतीर्थनीरेण सयुत गन्धपुष्पसन्मिश्रम् ।
पततु जल बिम्बोपरि सहिरण्य मन्त्रपरिपूतम् ॥ २ ॥

सर्वस्नात्रेष्वन्तरा शिरसि पुष्पारोपण चन्दनटिक्क धूपोत्पाटन च कर्तव्यम् ।

तत प्रवालमौक्तिकसुवर्णरजतताम्रगर्भ पञ्चरत्नजलस्नानम् २ –

नानारत्नौघयुत सुगन्धिपुष्पाधिवासित नीरम् ।
पतताद् विचित्रवर्ण मन्त्राढ्य स्थापनाबिम्बे ॥ ३ ॥

तत प्लक्षअश्वत्थउदुम्बरशिरीषवटानरच्छल्लीकषायस्नानम् ३ –

प्लक्षाश्वत्थोदुम्बरशिरीषछल्ल्यादिकल्कसन्मृष्टे ।
बिम्बे कषायनीर पतताद्धिवासित जैने ॥ ४ ॥

ततो गजवृषभविषाणोद्धृतपर्वतवल्मीकमहाराजद्वारनदीसङ्गमोभयतटपद्मतडागोद्भवमृत्तिकास्नानम् ४ –

पर्वतसरोनदीसगमादिमृद्भिश्च मन्त्रपूताभिः ।
उद्धृत्य जैनबिम्ब स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥ ५ ॥

ततः गोमूत्रगोमयघृतदधिदुग्धदर्भरूपगवागदर्भोदकेन पञ्चगव्यस्नानम् ५ –

जिनबिम्बोपरि निपततु घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतम् ।
दर्भोदकसन्मिश्र पञ्चगव हरतु दुरितानि ॥ ६ ॥

सहदेवी-बला शतमूली-शतावरी-कुमारी-गुहा सिंही-व्याघ्रीसदौषधिस्नानम् ६ –

सहदेव्यादिसदौषधिवर्गेणोद्वर्त्तितस्य बिम्बस्य।
तन्मिश्रं बिम्बोपरि पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥ ७ ॥

मयूरशिखा-विरहक-अंकोल-लक्ष्मणा-शंखपुष्पी-शरपुंखा-विष्णुक्रान्ता-चक्राका सर्पाक्षी-महानीलीमूलिकास्नानम् ७—

सुपवित्रमूलिकावर्गमर्दिते तदुदकस्य शुभधारा।
बिम्बेऽधिवाससमये यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥ ८ ॥

कुष्ट प्रियगु वचा रोध्र उशीर देवदारु दूर्वा मधुयष्टिका ऋद्धिवृद्धिप्रथमाष्टवर्गस्नानम् ८—

नानाकुष्टाद्यौषधिसन्मृष्टे तद्युत पतन्नीरम्।
बिम्बे कृतसन्मन्त्र कर्मौघं हन्तु भव्यानाम् ॥ ९ ॥

मेद-महामेद-ककोल-क्षीरककोल-जीवक-ऋषभक-नखी-महानखी-द्वितीयाष्टकवर्गस्नानम् ९—

मेदाद्यौषधिभेदोऽपरोऽष्टवर्गः सुमन्त्रपरिपूतः।
निपतन् बिम्बस्योपरि सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥ १० ॥

तत सूरिरुत्थाय गरुडमुद्रया मुक्ताशुक्तिमुद्रया वा परमेष्ठिमुद्रया वा प्रतिष्ठाप्य देवताह्वानन तदग्रनो भूत्वा ऊर्ध्वं सन् करोति। ओं नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिग्विभागकुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा—इत्यनेन अपरदिक्पालाश्चाहूयन्ते। ओं इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय इह जिनेन्द्रस्थापने आगच्छ आगच्छ स्वाहा। १। ओं अग्नये सायुधायेत्यादि आगच्छ आगच्छ स्वाहा। २। ओं यमाय सायुधायेत्यादि। ३। ओं नैऋतये सायुधायेत्यादि। ४। ओं वरुणाय सायुधायेत्यादि। ५। ओं वायवे सायुधायेत्यादि। ६। ओं कुबेराय सायुधायेत्यादि। ७। ओं ईशानाय सायुधाय सवाहनायेत्यादि। ८। ओं नागाय सायुधायेत्यादि। ९। ओं ब्रह्मणे सायुधायेत्यादि। १०। तत पुष्पाञ्जलिक्षेप।

ततो हरिद्रा-वचा शोफ वालक-मोथ-ग्रन्थिपर्णक-प्रियंगु-सुरवास-कर्चूरक-कुष्ट-एला तज तमालपत्र-नागकेसर-लवग-ककोल-जातीफल-जातिपत्रिका नख-चन्दन-सिल्हक-प्रभृतिसर्वौषधिस्नानम् १०—

सकलौषधिसंयुक्त्या सुगंधया घर्षितं सुगतिहेतोः।
स्नपयामि जैनबिम्बं मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥ ११ ॥

अत्र दीपदर्शनमित्येके। तत. 'सिद्धा जिनादि'मन्त्र सूरिणा दृष्टिदोषघाताय दक्षिणहस्तामर्षेण तत्काले बिम्बे न्यसनीय। स चायम्—'इहागच्छन्तु जिना. सिद्धा भगवन्त स्वसमयेनेहानुग्रहाय भव्याना भ स्वाहा'। 'हु क्षा ह्रीं क्ष्वीं ओं भ स्वाहा'—इत्यय वा। ततो लोहेनास्पृष्टश्वेतसिद्धार्थरक्षापोट्टलिका करे बन्धनीया तदभिमन्त्रेण। मन्त्रोऽयम्—'ओं ह्रा ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा' इत्ययम्। ततश्च दनटिक्कम्। ततो जिनपुरतोऽञ्जलिं बद्ध्वा विज्ञप्तिकावचन कार्यम्। तच्चेदम्—'स्वागता जिना सिद्धा प्रसाददा सन्तु प्रसाद धिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्याना स्वागतमनुस्वागतम्'।

ततोऽञ्जलिमुद्रया स्वर्णभाजनस्थार्घं मन्त्रपूर्वक निवेदयेत्। स च—ओं भ अर्घं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु जिनेन्द्रा' स्वाहा। सिद्धार्थदध्यक्षतघृतदर्भरूपश्चार्घ उच्यते। तत—

1 दर्भेण अञ्जन।

इन्द्रमग्निं यमं चैव नैर्ऋतं वरुणं तथा ।
वायुं कुबेरमीशानं नागान् ब्रह्माणमेव च ॥ १२ ॥

'ॐ इन्द्राय आगच्छ आगच्छ अर्घं प्रतीच्छ प्रतीच्छ पूजां गृह्ण गृह्ण स्वाहा' – एवमेव शेषाणामपि त्वाना आह्वानपूर्वकं अर्घनिवेदनं च । ततः कुसुमस्नानम् ११ –

अधिवासितं सुमन्त्रैः सुमनः किंजल्कराजितं तोयम् ।
तीर्थजलादिसुपृक्तं कलशोन्मुक्तं पततु बिम्बे ॥ १३ ॥

ततः सिल्हक-कुष्ठ-मुरमांसि-नदा-अगरु-कर्पूरादियुक्तगन्धस्नानिकास्नानम् १२ –

गन्धाङ्गस्नानिकया सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः ।
स्नपयामि जैनबिम्बं कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥ १४ ॥

गन्धा एव शुक्लवर्णा वासा उच्यन्ते, त एव मनाक् कृष्णा गन्धा इति । ततो वासस्नानम् १३–

हृद्यैराल्हादकरैः स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनम् ।
स्नपयामि सुगतिहेतोर्बिम्बं अधिवासितं वासैः ॥ १५ ॥

ततश्च चन्दनस्नानम् १४ –

शीतलसरससुगन्धिर्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः ।
चन्दनकल्कः सजलो मन्त्रयुतः पततु जिनबिम्बे ॥ १६ ॥

ततः कुङ्कुमस्नानम् १५ –

काश्मीरजसुविलिप्तं बिम्बं तन्नीरधारयाऽभिनवम् ।
सन्मन्त्रयुक्तया शुचि जैनं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥ १७ ॥

ततः आदर्शकदर्शनं शलदशनं च बिम्बस्य । ततस्तीर्थोदकस्नानम् १६ –

जलधिनदीहृदकुण्डेषु यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि ।
तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह बिम्बं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥ १८ ॥

ततः कर्पूरस्नानम् १७ –

शशिकरतुषारधवला उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा ।
कर्पूरोदकधारा सुमन्त्रपूता पततु बिम्बे ॥ १९ ॥

ततः पुष्पाञ्जलिक्षेपः १८ –

नानासुगन्धपुष्पौघरञ्जिता चञ्चरीककृतनादा ।
धूपामोदविमिश्रा पततात् पुष्पाञ्जलिर्बिम्बे ॥ २० ॥

ततः शुद्धजलकलश १०८ स्नानम् १९–

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-
र्नृत्यन्तीभिः सुरीभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः ।
कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै-
र्जैनं बिम्बं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥ १९ ॥

ततः आचार्यमन्त्रेणाधिवासनामन्त्रेण वाऽभिमन्त्रितचन्दनेन सूरिर्वामकरधृतदक्षिणकरेण प्रतिमां सर्वाङ्गमालेपयति, कुसुमारोपणं धूपोत्पाटनं वासनिक्षेपः सुरभिमुद्रादर्शनम् । पद्ममुद्रा ऊर्ध्वा दर्श्यते, अञ्जलिमुद्रा-

दर्शन च। तत प्रियंगुकर्पूरगोरोचनाहस्तलेपो हस्ते दीयते। अधिवासनामन्त्रेण करे पार्श्वत ऋद्धिवृद्धिसमेत-विद्धमदनफलाख्यककणनन्धनम्। स चायम्—'ॐ नमो खीरासवलद्धीण, ॐ नमो महुयासवलद्धीण, ॐ नमो सभिन्नसोईण, ॐ नमो पयाणुसारीण, ॐ नमो कुट्ठबुद्धीण, जमिय विज्ज पउजामि सा मे विज्जा पसिज्झउ, ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु ॐ वग्गु वग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महुमहुरे कविल ॐ कक्ष स्वाहा'—अधिवासनामन्त्र। यद्वा—'ॐ नम शान्तये हू क्ष्रू हू स'—कङ्कणमन्त्र। अधिवासना-मन्त्रेणैव—'ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा'—इति स्थिरीकरणमन्त्रेण वा मुक्ताशुक्त्या बिम्बे पञ्चागस्पर्श। मस्तक १ स्कन्ध २ जानु २ वारसप्त सप्त चक्रमुद्रया वा। धूपश्च निरतर दातव्य। परमेष्ठिमुद्रा सूरि' करोति। पुनरपि जिनाह्वानम्। ततो निषद्यायामुपविश्यासनमुद्रया मध्यात्प्रभृति नन्द्यावर्त्तमामकर्पूरेण पूजयेत्। वक्ष्यमाणक्रमेण सदशाव्यगवस्त्रेण तमाच्छादयेत्। तदुपरि नालिकेरप्रदानम्। तदुपरि संकल्प-मात्रेण प्रतिष्ठाप्य बिम्बस्थापन चलप्रतिष्ठाख्यापनाय। तत प्रधानफलैर्नन्द्यावर्त्तस्य पूजन चतुर्विंशत्या पत्रै पूगैश्च पूजनीय। ततो विचित्रबलिविधानम्। यथा—जम्बीर-बीजपूरक-पनसाम्र-दाडिमेक्षुवृक्ष—इत्यादिफल-ढौकनम्। ततश्चतु कोणकेषु वेदिकाया पूर्वं न्यस्तायाश्चतुस्तन्तुवेष्टनम्, चतुर्दिश श्वेतवारकोपरि गोधूम-व्रीहि-यवाना यववारका स्थाप्या। ततो द्राक्षा-खर्जूर-चर्पोलक उत्तती-अक्षोटक-वायम्ब-इत्यादिढौकनम्। ततो बाटु-खीरि-करखुउ-कीसरि-कूर-सींधवडि-पूयली-सराउ ७ दीयन्ते। काकरिया मुगसत्का ५, यवसत्क ५ गोहू ५ चिणा ५ तिलसत्क ५ सुहाली खाजा लाडू माडी मुरकी इत्यादि प्रचूरबलिढौकनम्। पुन सूत्र-सहितसहिरण्यचदनचर्चितकलशाश्चत्वार प्रतिमानिकटे स्थाप्यन्ते। घृतगुडसमेतमगलप्रदीप ४ स्वस्तिक-पट्टस्य चतसृष्वपि दिक्षु सकपर्दक-सहिरण्य-सजल-सधान्य-चतुर्वारकस्थापनम्। तेषु च सुकुमालिकाककणानि करणीयानि, यववाराश्च स्थाप्या। पूर्णकौसुम्भरक्तवस्त्रसूत्रेण चतुर्गुण वेष्टन वारकाणाम्। तत' शक्रस्तवेन चैत्यवन्दन कृत्वा अधिवासनालग्नसमये कण्ठे कुसुम्भसूत्रेण पुष्पमालासमेतऋद्धिवृद्धियुतमदनफलारोपणपूर्वक चन्दनयुक्तेन पुष्पवासधूपप्रत्यग्राधिवासितेन वस्त्रेण सदशेन वदनाच्छादन माइसाडी चारोप्यते। तदुपरि चन्दनच्छटा सूरिणा सूरिमन्त्रेणाधिवासन च वारत्रय कार्यम्। ततो गन्धपुष्पयुक्तसप्तधान्यस्नपनमञ्जलिभि। तच्चेदम्—शालि-यव-गोधूम-मुद्ग-वल्ल-चणक-चवला इति। तत पुष्पारोपण धूपोत्पाटनम्। ततस्तीभिर-विधवाभिश्चतसृभिरधिकाभिर्वा प्रोक्षणकम्, यथाशक्ति हिरण्यदान च। ताभिरेव पुन मधुरल्डुकादिबलि-करणम्। तत पुढिका ३६० दीयन्ते। साम्प्रत क्रयाणकानि ३६० संमील्य एकैव पुढिका शरावे कृत्वा प्रतिमाग्रे दीयते, इति दृश्यते। तत श्राद्धा आरत्रिकावतारण मगलप्रदीप च कुर्वन्ति। चैत्यवन्दन कायो-त्सर्गोऽधिवासनादेव्याश्चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनम्। तस्या एव स्तुति —

विश्वाशेषेषु वस्तुषु मन्त्रैर्याऽजस्रमधिवसति वसतौ।
सेमामवतरतु श्रीजिनतनुमधिवासनादेवी॥ १॥
यद्वा—**पातालमन्तरिक्षं भवनं वा या समाश्रिता नित्यम्।**
साऽत्रावतरतु जैनी प्रतिमामधिवासनादेवी॥ २॥

तत श्रुतदेवी १ शान्ति २ अम्बा ३ क्षेत्र ४ शासनदेवी ५ समस्तवैयावृत्त्य ६ कायोत्सर्ग।

या पाति शासनं जैनं सद्यः प्रत्यूहनाशिनी।
साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं भूयाच्छासनदेवता॥ १॥

पुनरपि धारणोपविश्य कार्या सूरिणा—'स्वागता जिना ...' इत्यादिनेति। अधिवासनाविधिरयम्।

1 'तिलतदुलमापा समराद्धा।' 2 'चूरिमानी'

§ १००. अधिवासना रात्रौ दिवा प्रतिष्ठा प्रायश कार्या । इतरथापि निश्चितकाल सित्वा विभिन्ने प्रतिष्ठालग्ने प्रतिष्ठा विधेया । तत्र प्रथम शान्तिदेवतामन्त्रेणाभिमन्त्र्य शान्तिबलि । शान्तिदेवतामन्त्रश्चायम्—'ॐ नमो भगवते अर्हते शान्तिनाथस्वामिने सकलातिशेषमहासम्पत्समन्विताय त्रैलोक्यपूजिताय नमो नम शान्तिदेवाय सर्वामरसमूहस्वामिसंपूजिताय भुवनजनपालनोद्यताय सर्वदुरितविनाशनाय सर्वाशिवप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहभूत पिशाचमारिशाकिनीप्रमथनाय नमो भगवति जये विजये अजिते अपराजिते जयन्ति जयावहे सर्वसंघस्य भद्रकल्याणमगलप्रदे साधूना श्रीशान्तितुष्टिपुष्टिदे च स्वस्तिदे च भव्याना सिद्धिवृद्धिनिर्वृतिनिर्वाणजननि सत्त्वानामभयप्रदानरते भक्ताना शुभावहे सम्यग्दृष्टीना धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते जिनशासनरताना श्रीसम्पत्कीर्तियशोवर्द्धनि रोगजलज्वलनविषविषधरदुष्टज्वरव्यन्तरराक्षसरिपुमारिचौरइतिश्वापदोपसर्गादिभयेभ्यो रक्ष रक्ष शिव कुरु कुरु शान्ति कुरु कुरु तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि कुरु कुरु ॐ नमो नम हू हू य क्ष ह्रीं फुट स्वाहा' । ततश्चैत्यवन्दनम् । प्रतिष्ठादेवताया कायोत्सर्ग, चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनम् । तत स्तुतिदानम्—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति ।
श्रीजिनबिम्बं सा विशतु देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥ १ ॥

शासनदेवी—क्षेत्रदेवी—समस्तवैयावृत्त्य० धूपमुत्क्षिप्याच्छादनमपनयेत् लग्नसमये । ततो घृतभाजनमग्रे कृत्वा सौवीरक घृतमधुशर्करागजमदकर्पूरकस्तूरिकामृतरूपवर्त्तिकाया[1] सुवर्णशलाकया 'अर्हं अर्हं' इति वा बीजेन नेत्रोन्मीलन वर्णन्यासपूर्वकम्, यथा—ह्रा ललाटे, श्रीं नयनयो, ह्रीं हृदये, रैं सर्वसन्धिषु, क्ष्रौं प्राकार । कुम्भकेन न्यास । शिरस्यभिमन्त्रितवासदानम्, दक्षिणकर्णे श्रीखण्डादिचर्चिते आचार्यमन्त्रन्यास । प्रतिष्ठामन्त्रेण त्रि ३ पञ्च ५ सप्त वारान् सर्वाङ्ग प्रतिमा स्पृशेत् चक्रमुद्रया । सामान्ययतिं प्रति मन्त्रो यथा—'वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिए ॐ ह्रीं स्वाहा' अय प्रतिष्ठामन्त्र । ततो दधिभाण्डदर्शनम्, आदर्शकदर्शनम्, शङ्खदर्शनम्, दृष्टेश्चक्षूरक्षणाय सौभाग्याय स्थैर्याय च समुद्रा मन्त्रा न्यसनीया । 'ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु वग्गु' इत्यादिका । तत सौभाग्यमुद्रादर्शन १, सुरभिमुद्रा २, प्रवचनमुद्रा ३, कृताञ्जलि ४, गरुडा पर्यन्ते । पुनरप्यधिवासन[2] सीमि । इह च स्थिरप्रतिमाऽधो घृतवर्त्तिका श्रीखण्ड तन्दुलयुतपञ्चधातुक कुम्भकारचक्रमृत्तिकासहित पूर्वमेव बिम्बनिवेशसमये न्यसेत् । तत—'ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा'—इति स्थिरीकरणमन्त्रो ऽधमिनर्नोर्ध्वं न्यसनीय । चलप्रतिष्ठाया तु नैष । नवरं चलप्रतिमाऽध सशिरस्कदर्भो वालिका[3] च प्रथमत एव वामाङ्गे[4] न्यसनीया । तत्र च—'ॐ जये श्रीं ह्रीं सुभद्रे नम'—इति मन्त्रश्च प्रतिष्ठानन्तरं न्यस्य । तत पद्ममुद्रया रत्नासनस्थापन कार्यमिद वदता, यथा—इद रत्नमयमासनमलङ्कुर्वन्तु, इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु, हृष्टदृष्टा जिना स्वाहा । ॐ ह्रये[5] गन्धान् प्रतीच्छन्तु स्वाहा । ॐ ह्रये पुष्पाणि गृह्णन्तु स्वाहा । ॐ ह्रये धूप भजतु स्वाहा । ॐ ह्रये भूतबलिं जुषन्तु स्वाहा । ॐ ह्रये सकलसत्त्वालोककर अवलोकय भगवन् अवलोकय स्वाहा—इति पठित्वा पुष्पाञ्जलित्रय क्षिपेत् । ततो वस्त्रालङ्कारादिभि समस्तपूजा, माहसाडी कङ्कणिकारोपश्च, पुष्पारोपण वस्त्रादिश्च । मोरिंडा-सुहालीप्रभृतिका दीयते । ततो लवणावतारणम्, आरत्रिकावतारणम्, मंगलप्रदीप कार्य । अत्रापि भूतबलिप्रक्षेप इत्येके । भूतबल्यभिमन्त्रणमन्त्रस्त्वयम्—'ॐ नमो अरिहंताण, ॐ नमो सिद्धाण, ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्झायाण, ॐ नमो लोए सव्वसाहूण, ॐ नमो आगासगामीण, ॐ नमो चारणाइलद्धीण, जे इमे नरकिंनरकिंपुरिसमहोरगगुरुलसिद्धगन्धव्वजक्खरक्खसपिसायभूयपेयडाइणिपभियओ

---

1 वर्त्ती । 2 प्रोक्षण । 3 वेलु । 4 न्यस्यैव बिम्ब निवेश्यम् । 5 क्वचिदिद कूट सानुस्वारं द्विमात्र (ह्रयं) दृश्यते । इति B टिप्पणी ।

जिणघरनिवासिणो नियनिलयट्ठिया पवियारिणो सन्निहिया असन्निहिया य ते सव्वे विलेवणधूवपुप्फफलसणाह वलिं पडिच्छंता तुट्ठिकरा भवन्तु पुट्ठिकरा भवन्तु सिवकरा संतिकरा भवन्तु, सत्थयणं कुव्वन्तु, सव्वजिणाण सन्निहाणपभावओ पसन्नभावत्तणेण सव्वत्थ रक्खं कुणंतु, सव्वत्थ दुरियाणि नासिंतु, सव्वासिवमुवसमन्तु, संतितुट्ठिपुट्ठिसिवसत्थयणकारिणो भवन्तु स्वाहा' । ततः संघसहितः सूरिश्चैत्यवन्दनं करोति । कायोत्सर्गो श्रुतदेव्यादीनां पर्यन्ते प्रतिष्ठादेव्याश्च । 'यदधिष्ठिता' प्रतिष्ठास्तुतिश्च दातव्या । शक्रस्तवपाठः, शान्तिस्तवभणनम् । ततोऽखण्डाक्षताञ्जलिभृतलोकसमेतेन मङ्गलगाथापाठः कार्यः । नमोऽर्हत्सिद्धेत्यादिपूर्वकम्, यथा—

जह सिद्धाण पइट्ठा तिलोयचूडामणिम्मि सिद्धिपए ।
आचंदसूरियं तह होउ इमा सुप्पइट्ठ त्ति ॥ १ ॥
जह सग्गस्स पइट्ठा समत्थलोयस्स मज्झियारम्मि । आचंद० ॥ २ ॥
जह मेरुस्स पइट्ठा दीवसमुद्दाण मज्झियारम्मि । आचंद० ॥ ३ ॥
जह जम्बुस्स पइट्ठा जंबुदीवस्स मज्झियारम्मि । आचंद० ॥ ४ ॥
जह लवणस्स पइट्ठा समत्थउदहीण मज्झियारम्मि । आचंद० ॥ ५ ॥

इति पठित्वा अक्षतान् निक्षिपेत् पुष्पाञ्जलींश्च क्षिपेत् । ततः प्रवचनमुद्रया सूरिणा धर्मदेशना कार्या । ततः संघाय दानं मुखोद्घाटनं दिनत्रयं पूजा अष्टाह्निका पूजा वा । तत्रापि प्रशस्तदिने तृतीये पञ्चमे सप्तमे वा स्नात्रं कृत्वा जिनबलिं विधाय भूतबलिं प्रक्षिप्य चैत्यवन्दनं विधाय कङ्कणमोचनार्थं कायोत्सर्गः, नमस्कारस्य चिन्तनं भणनं च । प्रतिष्ठादेवताविसर्जनकायोत्सर्गः । चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं तस्यैव पठनं श्रुतदेवता १, शान्ति० २,—

उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।
संपादितहितसम्पन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥

क्षेत्रदेवतासमस्तवैयावृत्त्यकरकायोत्सर्गौ । ततः सौभाग्यमन्त्रन्यासपूर्वकं मदनफलोच्चारणम् । स च— 'ॐ अवतर अवतर सोमे'—इत्यादि । ततो नन्द्यावर्त्तपूजनं विसर्जनं च । 'ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा' —नन्द्यावर्त्तविसर्जनमन्त्रः । 'ॐ विसर विसर प्रतिष्ठादेवते स्वाहा' —इति प्रतिष्ठादेवताविसर्जनमन्त्रः । ततो घृतदुग्धदध्यादिभिः स्नानं विधाय अष्टोत्तरशतेन वारकाणां स्नानम् । प्रतिष्ठावृत्तौ द्वादशमासिकस्नपनानि कृत्वा पूर्णे वत्सरेऽष्टाह्निकां विशेषपूजां च विधाय आयुर्ग्रन्थिं निबन्धयेत् । उत्तरोत्तरपूजा च यथा स्यात्तथा विधेयम् ।

लिप्पाइमए वि विही बिंबे एसेव किंतु सविसेसं ।
कायव्वं ण्हवणाई दप्पणसक्रतपडिबिंबे ॥ १ ॥

'ॐ क्षिं नमः' अनिकादीनामधिवासनामन्त्रः । 'ॐ ह्रीं क्ष्रूं नमो वीराय स्वाहा'—तेषामेव प्रतिष्ठामन्त्रः । यद्वा 'ॐ ह्रीं क्ष्मीं स्वाहा' प्रतिष्ठामन्त्रः । अञ्जल्याकारहस्तोपरि हस्तः आसनमुद्रा, चप्पुटिका प्रवचनमुद्रा ।

थुइदाणमंतनासो आहवणं तह जिणाण दिसिबंधो ।
नेतुम्मीलणदेसण गुरु अहिगारा इह कप्पो ॥ १ ॥
राया बलेण वड्ढइ जसेण धवलेइ सयलदिसिभाए ।
पुण्णं वड्ढइ विउलं सुपइट्ठा जस्स देसम्मि ॥ २ ॥
उवहणइ रोगमारी दुब्भिक्खं हणइ कुणइ सुहभावे ।
भावेण कीरमाणा सुपइट्ठा सयललोयस्स ॥ ३ ॥

जिणबिंबपइट्ठं जे करिंति तह कारविंति भत्तीए ।
अणुमन्नइ पइदियहं सव्वे सुहभायण हुंति ॥ ४ ॥
दव्व तमेव मन्नइ जिणबिंबपइट्ठणाइकज्जेसु ।
ज लग्गइ त सहलं दुग्गइजणणं हवइ सेसं ॥ ५ ॥
एव नाऊण मया जिणवरबिंबस्स कुणह सुपइट्ठ ।
पावेह जेण जरमरणवज्जियं सासय ठाण ॥ ६ ॥ — इत्येते प्रतिष्ठागुणा ।

कमलवने पाताले क्षीरोदे सस्थिता यदि स्वर्गे ।
भगवति कुरु सानिध्य बिम्बे श्रीश्रमणसघे च ॥ १ ॥

प्रतिष्ठानन्तरमिमा गाथा पठता वासा अक्षताश्च देवशिरसि दीयन्ते । 'ॐ विद्युत्स्फुलिङ्गे महाविद्ये सर्वकल्मष दह दह स्वाहा' — कल्मषदहनमत्र । 'ॐ हु क्षू फुट् किरीटि किरीटि घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रा छिन्द छिन्द, परमत्रान् भिन्द भिन्द क्ष फुट् स्वाहा' — सिद्धार्थानभिमन्त्र्य सर्वदिक्षु प्रक्षिपेत् । विघ्नशान्ति प्रतिष्ठाकाले । ॐ हा ललाटे, ॐ ह्रीं वामकर्णे, ॐ हु दक्षिणकर्णे, ॐ हु शिर पश्चिमभागे, ॐ हु मस्तकोपरि, ॐ क्ष्मा नेत्रयो , ॐ क्ष्मीं मुखे, ॐ क्ष्मीं कण्ठे, ॐ क्ष्मीं हृदये, ॐ क्ष्म बाह्वो , ॐ क्ष्रौं उदरे, ॐ ह्रीं कटौ, ॐ ह्र जघयो , ॐ क्ष्मू पादयो , ॐ क्ष हस्तयोरिति कुकुमश्रीखडकर्पूरादिना चक्षु प्रतिस्फोटनिवारणाय प्रतिमाया लिखेत् ।

अथोक्तप्रतिष्ठाविधिसंग्रहगाथा. सक्षेपार्थं लिख्यन्ते —

पुव्व पडिमण्हवणं चिइ उस्सग्ग थुइ अप्पण्हवणयारेसु ।
रक्खा कुसुमाणंजलि तज्जणिपूयं च तिलय वा ॥ १ ॥
मोग्गरमक्खयथाल वज्ज गुरुडो बली [ॐ ह्रीं क्ष्वी] समंतेण ।
कवय दिसिबधो चिय पक्खिवण सत्तधन्नस्स ॥ २ ॥
कलसहिमतणसव्वोसहिचदणचच्चिबिंबमंतेण ।
पचरयणस्स गंठी परमेट्ठीपचग ण्हवण ॥ ३ ॥
पढम हिरण्णसह'-पचरयणे-सकसायमट्टियाण्हवणं ।
दब्भोदयमीस पंचगव्वण्हवण च पचमय ॥ ४ ॥
सहदेवाईसव्वोसहीण 'वग्गो य मूलियावग्गो' ।
पढमट्ठवग्ग' बीयट्ठवग्ग' ण्हवण तहा नवम ॥ ५ ॥
जिणदिसपालाहवणं कुसुमजलिसव्वओसहीण्हवणं'' ।
दाहिणकरमरिसेण जिणमतो सरिसवोट्टलिया ॥ ६ ॥
तिलयजलिमुद्दाए विन्नत्ती हेमभायणत्थग्घो ।
पुण दिसपालाह्वण परमेट्ठी-गरुडमुद्दाए ॥ ७ ॥
कुसुमजल गधण्हाणिय वासेहिं'' चंदणेण'' घुसिणेण'' ।
पनरसण्हाणेसु कएसु दप्पणदसण पुरओ ॥ ८ ॥
तित्थोदएण ण्हाण'' कप्पूरेण'' च पुप्फअजलिया ।
अट्ठारसम ण्हाण सुद्धयडट्ठुत्तरसएण ॥ ९ ॥

सव्वविलेवणसूरी पुप्फाइं धूववासमयणफलं ।
सुरही पउमा पउमा अजलिमुद्दाओ हत्थलेवो य ॥ १० ॥
अहिवासणमंतेण कंकण तेणेव चक्कमुद्दाए ।
पंचंगफास पुण जिणआह्वणं नदपूया य ॥ ११ ॥
सत्त सरावा चदणचच्चियकलसा सतंतुणो चउरो ।
घयगुलदीवा चउरो चउकलसा नदवत्तस्स ॥ १२ ॥
सक्कत्थयअहिवासणसमए छाएहि माइसाडीए ।
सूरिमताहिवासण-ण्हवणंजलि सत्तधन्नस्स ॥ १३ ॥
पुंखणयकणयदाणं वलिलड्डुयमाइ पुडिय आरतियं ।
चिइअहिवासण देवयथुइधारण सागयाईहिं ॥ १४ ॥

॥ अधिवासनाधिकारः समाप्तः ॥

*

अथ प्रतिष्ठाधिकारः–

संतिबलि चिइपइट्ठा उस्सग्गो थी य भायणं नित्ते ।
वन्नसिरि वास कन्ने मंतो सव्वंगफास चक्कंणं ॥ १५ ॥
दहिभंड मंत मुद्दा पुंखण पुप्फंजलीउ मंतेणं ।
भूयबलि लवणरत्तिय चिइ अक्खय धम्मकह महिमा ॥ १६ ॥
तइय पण सत्तमदिणे जिणबलि भूयबलि वंदिउं देवे ।
कंकणमोयणहेउं पइट्ठ उस्सग्ग मंत नसे ॥ १७ ॥
काउं पूयविसग्गो नंदावत्तस्स कंकणच्छोडे ।
पंचपरमेट्ठिपुव्वं मगलगाहाओं पढमाणो ॥ १८ ॥

*

§ १०१ अथ नन्द्यावर्त्तस्थापना लिख्यते–कर्पूरसन्मिश्रेण प्रधानश्रीखण्डेन लोहेनास्पृष्टैकखण्डश्रीपर्ण्यादिपट्टके सप्तलेपा क्रमेण दीयन्ते उपर्यधश्च । कर्पूर-कस्तूरिका-गोरोचना-कुकुम-केसररसेन जातिलेखिन्या प्रथम नन्द्यावर्तो लिख्यते प्रदक्षिणया नवकोण । ततस्तन्मध्ये प्रतिष्ठाप्यजिनप्रतिमा, तत्पार्श्वे एकत्र शक्र, अन्यत्रेशान, अध श्रुतदेवता । ततो नन्द्यावर्त्तस्योपरिवलके गृहाष्टकरचिते 'नमोऽर्हद्भ्य, नम सिद्धेभ्य, नम आचार्येभ्य, नम उपाध्यायेभ्य, नम सर्वसाधुभ्य, नमो ज्ञानाय, नमो दर्शनाय, नमश्चारित्राय' । तत पूर्वादिषु चतुर्द्वारेषु तुबरप्रतीहार, तथा सोम, यम, वरुण, कुबेर, तथा धनु-दण्ड-पाश-गदाचिह्नानि । इति प्रथमवलक । तस्योपरि द्वितीयवलके पूर्वादिप्रतोल्यन्तरेषु आग्नेयादिषु गृहषट्क-षट्कविरचितेषु क्रमेण प्रतिगृह मरुदेव्यादिजिनमातरो लिख्यन्ते–मरुदेवि १, विजया २, सेना ३, सिद्धत्था ४, मगला ५, सुसीमा ६, पुहवी ७, लक्खणा ८, रामा ९, नदा १०, विण्हू ११, जया १२, सामा १३, सुजसा १४, सुव्वया १५, अइरा १६, सिरी १७, देवी १८, पभावई १९, पउमा २०, वप्पा २१, सिवा २२, वम्मा २३, तिसला २४ ।–इति द्वितीय । तृतीयवल्के पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहचतुष्टय-चतुष्टयविरचितेषु षोडशविद्यादेव्यो लिख्यन्ते–रोहिणी १, पन्नत्ती २, वज्जसिंखला ३, वज्जंकुसी ४, अपडिचक्का ५, पुरिसदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गोरी ९, गाधारी १०, सव्वत्थमहाजाला ११, माणवी १२, वइरोट्टा १३,

अच्छुत्ता १४, माणसी १५, महामाणसी १६ ।—इति तृतीयवल्कः । तत उपरि चतुर्थवल्के पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहपट्क-पट्कविरचितेषु सारस्वतादयो लिख्यन्ते—सारस्वत १, आदित्य, २, वह्नि ३, अरुण ४, गर्दतोय ५, तुषित, ६, अव्याबाध ७, अरिष्ट ८, अग्न्याभ ९, सूर्याभ १०, चन्द्राभ ११, सत्याभ १२, श्रेयस्कर १३, क्षेमकर १४, वृषभ १५, कामचार १६, निर्माण १७, दिशान्तरक्षित १८, आत्मरक्षित १९, सर्वरक्षित २०, मरुत् २१, वसु २२, अश्व २३, विश्व २४—इति चतुर्थवल्क । तदुपरि पंचमवल्के पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहद्वय-द्वयविरचितेऽमी लिख्यन्ते—ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्य स्वाहा १, तद्देवीभ्य स्वाहा २, ॐ चमरादीन्द्रादिभ्य. स्वाहा ३, तद्देवीभ्य स्वाहा ४, ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्य स्वाहा ५, तद्देवीभ्य स्वाहा ६, ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्य स्वाहा ७, तद्देवीभ्य' स्वाहा ८—इति पंचमवल्कः । तदुपरि षष्ठवल्के पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहद्वय-द्वयविरचिते दिक्पाला लिख्यन्ते—ॐ इन्द्राय स्वाहा १, ॐ अग्नये स्वाहा २, ॐ यमाय स्वाहा ३, ॐ नैर्ऋतये स्वाहा ४, ॐ वरुणाय स्वाहा ५, ॐ वायवे स्वाहा ६, ॐ कुबेराय स्वाहा ७, ॐ ईशानाय स्वाहा ८ । अध —ॐ नागेभ्य स्वाहा ९ । उपरि—ॐ ब्रह्मणे स्वाहा १० ।

इति नन्द्यावर्त्तलेखनविधिः ।

§ १०२ प्रतिष्ठादिनात् पूर्वमेवेत्थं लिखित्वा प्रधानवस्त्रेण वेष्टयित्वा एकान्ते नन्द्यावर्त्तपट्टो धारणीय.। ततो देवाधिवासनानन्तरं पूर्वं वा कर्पूरवासप्रधानश्वेतकुसुमैराचार्येण नामोच्चारणमन्त्रपूर्वकं नन्द्यावर्त्त पूजनीय क्रमेण । तद्यथा, प्रथमवल्के—ॐ नमोऽर्हद्भ्य स्वाहा, ॐ नम सिद्धेभ्य स्वाहा, ॐ नम आचार्येभ्य स्वाहा, ॐ नम उपाध्यायेभ्य स्वाहा, ॐ नम सर्वसाधुभ्य स्वाहा, ॐ नमो ज्ञानाय स्वाहा, ॐ नमो दर्शनाय स्वाहा, ॐ नमश्चारित्राय स्वाहा ॥ ततो द्वितीयवल्के—ॐ मरुदेव्यै स्वाहा १, ॐ विजयादेव्यै स्वाहा २, ॐ सेनादेव्यै स्वाहा ३, ॐ सिद्धार्थादेव्यै स्वाहा ४, ॐ मंगलादेव्यै स्वाहा ५, ॐ सुसीमादेव्यै स्वाहा ६, ॐ पृथ्वीदेव्यै स्वाहा ७, ॐ लक्ष्मणादेव्यै स्वाहा ८, ॐ रामादेव्यै स्वाहा ९, ॐ नन्दादेव्यै स्वाहा १०, ॐ विष्णुदेव्यै स्वाहा ११, ॐ जयादेव्यै स्वाहा १२, ॐ श्यामादेव्यै स्वाहा १३, ॐ सुयशादेव्यै स्वाहा १४, ॐ सुव्रतादेव्यै स्वाहा १५, ॐ अचिरादेव्यै स्वाहा १६, ॐ श्रीदेव्यै स्वाहा १७, ॐ देवीदेव्यै स्वाहा १८, ॐ प्रभावतीदेव्यै स्वाहा १९, ॐ पद्मादेव्यै स्वाहा २०, ॐ वप्रादेव्यै स्वाहा २१, ॐ शिवादेव्यै स्वाहा २२, ॐ वामादेव्यै स्वाहा २३, ॐ त्रिशलादेव्यै स्वाहा २४ ॥ तृतीयवल्के—ॐ रोहिणीदेव्यै स्वाहा १, ॐ प्रज्ञप्तीदेव्यै स्वाहा २, ॐ वज्रशृङ्खलादेव्यै स्वाहा ३, ॐ वज्रांकुशीदेव्यै स्वाहा ४, ॐ अप्रतिचक्रादेव्यै स्वाहा ५, ॐ पुरुषदत्तादेव्यै स्वाहा ६, ॐ कालीदेव्यै स्वाहा ७, ॐ महाकालीदेव्यै स्वाहा ८, ॐ गौरीदेव्यै स्वाहा ९, ॐ गान्धारीदेव्यै स्वाहा १०, ॐ महाज्वालादेव्यै स्वाहा ११, ॐ मानवीदेव्यै स्वाहा १२, ॐ वैरोट्यादेव्यै स्वाहा १३, ॐ अच्छुप्तादेव्यै स्वाहा १४, ॐ मानसीदेव्यै स्वाहा १५, ॐ महामानसीदेव्यै स्वाहा १६ । मतान्तरे तु—ॐ रोहिणीए स्वात्य स्वाहा १ । ॐ पन्नत्तीए रों क्षों २ । ॐ वज्जसिंखलाए श्रा ह्रूँ ३ । ॐ वज्जकुसाए क्ष्मा वा ४ । ॐ अप्पडिचक्काए ह्रू ५ । ॐ पुरिसदत्ताए क्ष्मां ६ । ॐ कालीए सा ह्रूँ ७ । ॐ महाकालीए ॐ क्षीं ८ । ॐ गोरीए यू ह्रू ९ । ॐ गंधारीए रों क्ष्मां १० । ॐ सव्वयमहाजालाए ल भां ११ । ॐ माणवीए यू क्ष्मां १२ । ॐ अच्छुत्ताए पू मां १३ । ॐ वइरुट्टाए सू मा १४ । ॐ माणसीए सू मां १५ । ॐ महामाणसीए ह्रू सू १६ । सर्वे स्वाहान्ता वाच्या ॥ चतुर्थवल्के—ॐ सारस्वतेभ्य स्वाहा १ । ॐ आदित्येभ्य स्वाहा २ । ॐ वह्निभ्य स्वाहा ३ । ॐ वरुणेभ्य स्वाहा ४ । ॐ गर्दतोयेभ्य स्वाहा ५ । ॐ तुषितेभ्य स्वाहा ६ । ॐ अव्याबाधेभ्य स्वाहा ७ । ॐ रिष्टेभ्य स्वाहा ८ । ॐ आग्न्याभेभ्य स्वाहा ९ । ॐ सूर्याभेभ्य स्वाहा १० । ॐ चन्द्राभेभ्य स्वाहा ११ । ॐ सत्याभेभ्य स्वाहा १२ । ॐ श्रेयस्करेभ्य स्वाहा १३ । ॐ क्षेमकरेभ्य स्वाहा १४ ।

ॐ वृषमेभ्य स्वाहा १५ । ॐ कामचारेभ्य स्वाहा १६ । ॐ निर्माणेभ्य स्वाहा १७ । ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा १८ । ॐ आत्मरक्षितेभ्य स्वाहा १९ । ॐ सर्वरक्षितेभ्य स्वाहा २० । ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा २१ । ॐ वसुभ्य स्वाहा २२ । ॐ अश्वेभ्य स्वाहा २३ । ॐ विश्वेभ्य स्वाहा २४ ॥ पञ्चमवलके – ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्य स्वाहा १ । तद्देवीभ्य स्वाहा २ । ॐ चमरादीन्द्रादीभ्य. स्वाहा ३ । तद्देवीभ्य स्वाहा ४ । ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्य स्वाहा ५ । तद्देवीभ्य. स्वाहा ६ । ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्य स्वाहा ७ । तद्देवीभ्य. स्वाहा ८ ॥ षष्ठवलके – ॐ इन्द्राय स्वाहा १ । ॐ अग्नये स्वाहा २ । ॐ यमाय स्वाहा ३ । ॐ नैर्ऋतये स्वाहा ४ । ॐ वरुणाय स्वाहा ५ । ॐ वायवे स्वाहा ६ । ॐ कुबेराय स्वाहा ७ । ॐ ईशानाय स्वाहा ८ इति ॥ एके त्वाहु – ॐ नागाय स्वाहा १ । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा २ । इति नागब्रह्माणौ पुनरप्यग्नीशानदलयो पूजयेत् । पुन प्रथमवलके ग्रहपूजा – ॐ आदित्याय स्वाहा १ । ॐ सोमाय स्वाहा २ । ॐ भूमिपुत्राय स्वाहा ३ । ॐ बुधाय स्वाहा ४ । ॐ बृहस्पतये स्वाहा ५ । ॐ शुक्राय स्वाहा ६ । ॐ शनैश्चराय स्वाहा ७ । ॐ राहवे स्वाहा ८ । ॐ केतवे स्वाहा ९ । इति नन्द्यावर्त्तलिखितोच्चारणेन पूजा कार्या । तत सदशान्यगवस्त्रेणेत्यादिक्रम प्रागुक्त एव । नन्द्यावर्त्त च बहुषु प्रतिष्ठाचार्येषु मुख्य एव प्रतिष्ठाचार्य पूजयति ।

§ १०३ अथ जलानयनविधिः – महामहोत्सवेन जलाशयतीरमुपगम्य पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमास्नात्र विधाय दिक्पालेभ्यो बलिं प्रदाय दिक्षु प्रक्षेपबलि प्रक्षिप्यते । ततश्चैत्यवन्दन श्रुत-शान्ति-देवतासमस्तवैयावृत्त्यकरकायोत्सर्गा स्तुतयश्च । ततो वरुणदेवताकायोत्सर्ग स्तुतिश्च ।

मकरासनमासीनः शिवाशयेभ्यो ददाति पाशधरः ।
आशामाशापालः किरतु च दुरितानि वरुणो नः ॥ १ ॥

ततो जलाशये पूजार्थं पुष्पफलादिक्षेप. । ततो वस्त्रपूतेन जलेन कुम्भा' पूर्यन्ते । पुनर्महोत्सवेन देवगृहे आगमनम् । जलानयनविधिः ।

अपरे त्वित्थमाहुः – धूपवेलापूर्वं पार्श्वे बलिं विकीर्य सदशवस्त्रकङ्कणमुद्रिका परिधाय देवस्याग्रे धृत्वा रिक्तकलशाश्चतुरोऽधिवासयेत् । तान् शिरस्यधिरोप्याविधवा' कलशधरस्त्रिय. साध.प्रतिम छत्र सातोद्यनाद गृहीतवति स्नात्रकारे जलाशय गच्छन्ति । तत्र च पार्श्वे बलिं क्षिप्त्वा फलेन धूपादिना च जलाशय पूजयित्वा तज्जलमानीय तेनापूर्य कलशान् छत्राधोधृतप्रतिमामतो न्यसेत् । तत. प्रतिमा परिधाप्य देवान् वन्देत, श्रुतदेव्यादिकायोत्सर्गान् कुर्यात्, स्फीत्या चैत्यमागच्छेदिति ।

*

§ १०४ अथातः कलशारोपणविधिः – तत्र भूमिशुद्धि गन्धोदकपुष्पादिसत्कार., आदित एव कलशाधःपञ्चरत्नक सुवर्ण-रूप्य-मुक्ता-प्रवाल-लोहकुम्भकारमृत्तिकारहित न्यसनीयम् । पवित्रस्थानाज्जलानयन प्रतिमास्नात्र शान्तिबलिः सोदकसर्वौषधिवर्त्तन स्त्रीभि ४ स्नात्रकाराभिमन्त्रण सकलीकरण शुचिविद्यारोपण चैत्यवन्दन शान्तिनाथादिकायोत्सर्ग.। श्रुत १ शान्ति २ शासन ३ क्षेत्र ४ समस्तवै० ५ । कलशे कुसुमाञ्जलिक्षेपः । तदनन्तरमाचार्येण मध्याङ्गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन तर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया । तदनु वामकरे जल गृहीत्वा कलश आच्छोटनीय । तिलक पूजन च । मुद्गरमुद्रादर्शनम् । ओँ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रव रक्ष रक्ष स्वाहा । चक्षूरक्षा कलशस्य सप्तधान्यकप्रक्षेपः हिरण्यकलशचतुष्टयस्नान सर्वौषधिस्नान मूलिकास्नात ग० वा० च० कु० कर्पूरकुसुमजलकलशस्नान पञ्चरत्नसिद्धार्थकसमेतग्रन्थिबन्धः। वामधृतदक्षिणकरेण चन्दनेन सर्वाङ्गमालिप्य पुष्पसमेतमदनफलऋद्धिवृद्धियुतारोपणम् । करशपचाङ्गस्पर्श , धूपदान, कङ्कणबध , स्त्रीभि प्रोंक्षण, सुर-

अच्छुत्ता १४, माणसी १५, महामाणसी १६।—इति तृतीयवलकः। तत उपरि चतुर्थवलके पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहपट्क-पट्कविरचितेषु सारस्वतादयो लिख्यन्ते—सारस्वत १, आदित्य, २, वह्नि ३, अरुण ४, गर्दतोय ५, तुषित, ६, अव्याबाध ७, अरिष्ट ८, अग्न्याभ ९, सूर्याभ १०, चन्द्राभ ११, सत्याभ १२, श्रेयस्कर १३, क्षेमकर १४, वृषभ १५, कामचार १६, निर्माण १७, दिशान्तरक्षित १८, आत्मरक्षित १९, सर्वरक्षित २०, मरुत् २१, वसु २२, अश्व २३, विश्व २४—इति चतुर्थवलक। तदुपरि पञ्चमवलके पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहद्वय-द्वयविरचितेऽमी लिख्यन्ते—ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्य स्वाहा १, तद्देवीभ्य स्वाहा २, ॐ चमरादीन्द्रादिभ्य स्वाहा ३, तद्देवीभ्य स्वाहा ४, ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्य स्वाहा ५, तद्देवीभ्य स्वाहा ६, ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्य स्वाहा ७, तद्देवीभ्य स्वाहा ८—इति पञ्चमवलक। तदुपरि षष्ठवलके पूर्वाद्यन्तरालेषु गृहद्वय-द्वयविरचिते दिक्पाला लिख्यन्ते—ॐ इन्द्राय स्वाहा १, ॐ अग्नये स्वाहा २, ॐ यमाय स्वाहा ३, ॐ नैर्ऋतये स्वाहा ४, ॐ वरुणाय स्वाहा ५, ॐ वायवे स्वाहा ६, ॐ कुबेराय स्वाहा ७, ॐ ईशानाय स्वाहा ८। अध —ॐ नागेभ्य स्वाहा ९। उपरि—ॐ ब्रह्मणे स्वाहा १०।

इति नन्द्यावर्त्तलेखनविधिः।

§ १०२ प्रतिष्ठादिनात् पूर्वमेवेत्थ लिखित्वा प्रधानवस्त्रेण वेष्टयित्वा एकान्ते नन्द्यावर्त्तपट्टो धारणीय। ततो देवाधिवासनानन्तर पूर्वं वा कर्पूरवासप्रधानश्वेतकुसुमैराचार्येण नामोच्चारणमन्त्रपूर्वक नन्द्यावर्त्त पूजनीय क्रमेण। तद्यथा, प्रथमवलके—ॐ नमोऽर्हद्भ्य स्वाहा, ॐ नम सिद्धेभ्य स्वाहा, ॐ नम आचार्येभ्य स्वाहा, ॐ नम उपाध्यायेभ्य स्वाहा, ॐ नम सर्वसाधुभ्य स्वाहा, ॐ नमो ज्ञानाय स्वाहा, ॐ नमो दर्शनाय स्वाहा, ॐ नमश्चारित्राय स्वाहा॥ ततो द्वितीयवलके—ॐ मरुदेव्यै स्वाहा १, ॐ विजयादेव्यै स्वाहा २, ॐ सेनादेव्यै स्वाहा ३, ॐ सिद्धार्थादेव्यै स्वाहा ४, ॐ मगलादेव्यै स्वाहा ५, ॐ सुसीमादेव्यै स्वाहा ६, ॐ पृथ्वीदेव्यै स्वाहा ७, ॐ लक्ष्मणादेव्यै स्वाहा ८, ॐ रामादेव्यै स्वाहा ९, ॐ नन्दादेव्यै स्वाहा १०, ॐ विष्णुदेव्यै स्वाहा ११, ॐ जयादेव्यै स्वाहा १२, ॐ श्यामादेव्यै स्वाहा १३, ॐ सुयशादेव्यै स्वाहा १४, ॐ सुव्रतादेव्यै स्वाहा १५, ॐ अचिरादेव्यै स्वाहा १६, ॐ श्रीदेव्यै स्वाहा १७, ॐ देवीदेव्यै स्वाहा १८, ॐ प्रभावतीदेव्यै स्वाहा १९, ॐ पद्मादेव्यै स्वाहा २०, ॐ वप्रादेव्यै स्वाहा २१, ॐ शिवादेव्यै स्वाहा २२, ॐ वामादेव्यै स्वाहा २३, ॐ त्रिशलादेव्यै स्वाहा २४॥ तृतीयवलके—ॐ रोहिणीदेव्यै स्वाहा १, ॐ प्रज्ञप्तीदेव्यै स्वाहा २, ॐ वज्रशृङ्खलादेव्यै स्वाहा ३, ॐ वज्राङ्कुशीदेव्यै स्वाहा ४, ॐ अप्रतिचक्रादेव्यै स्वाहा ५, ॐ पुरुषदत्तादेव्यै स्वाहा ६, ॐ कालीदेव्यै स्वाहा ७, ॐ महाकालीदेव्यै स्वाहा ८, ॐ गौरीदेव्यै स्वाहा ९, ॐ गान्धारीदेव्यै स्वाहा १०, ॐ महाज्वालादेव्यै स्वाहा ११, ॐ मानवीदेव्यै स्वाहा १२, ॐ वैरोट्यादेव्यै स्वाहा १३, ॐ अच्छुप्तादेव्यै स्वाहा १४, ॐ मानसीदेव्यै स्वाहा १५, ॐ महामानसीदेव्यै स्वाहा १६। मतान्तरे तु—ॐ रोहिणीए स्वात्य स्वाहा १। ॐ पन्नत्तीए हीं क्षीं २। ॐ वज्जसिंखलाए हीं हैं ३। ॐ वज्जकुसाए क्ष्मा वा ४। ॐ अप्पडिचक्काए ह्र ५। ॐ पुरिसदत्ताए क्ष्मां ६। ॐ कालीए सां हैं ७। ॐ महाकालीए ॐ क्षीं ८। ॐ गोरीए यू ह ९। ॐ गंधारीए रा क्ष्मां १०। ॐ सव्वत्थमहाजालाए व भां ११। ॐ माणवीए यू क्ष्मां १२। ॐ अच्छुत्ताए यू भां १३। ॐ वइरुट्टाए मू मां १४। ॐ माणसीए मू मा १५। ॐ महामाणसीए ह्र सू १६। सर्वे स्वाहान्ता वाच्या॥ चतुर्थवलके—ॐ सारस्वतेभ्य स्वाहा १। ॐ आदित्येभ्य स्वाहा २। ॐ वह्निभ्य स्वाहा ३। ॐ वरुणेभ्य स्वाहा ४। ॐ गर्दतोयेभ्य स्वाहा ५। ॐ तुषितेभ्य स्वाहा ६। ॐ अव्याबाधेभ्य स्वाहा ७। ॐ रिष्टेभ्य स्वाहा ८। ॐ अग्न्याभेभ्य स्वाहा ९। ॐ सूर्याभेभ्य स्वाहा १०। ॐ चन्द्राभेभ्य स्वाहा ११। ॐ सत्याभेभ्य स्वाहा १२। ॐ श्रेयस्करेभ्य स्वाहा १३। ॐ क्षेमकरेभ्य स्वाहा १४।

जिणमुद्द-कलसं-परमेट्ठि-अंग-अंजलिं-तहासणं-चक्कं ।
सुरभी-पवयण-गरुडा-सोहग्गं-कयंजली चेव ॥ १ ॥
जिणमुद्दाए चउकलसठावणं तह करेइ थिरकरणं ।
अहिवासमंतनसणं आसणमुद्दाइ अन्ने उ ॥ २ ॥
कलसाए कलसन्हवणं परमेट्ठीए उ आह्वणमंतं ।
अंगाइ समालभणं अंजलिणा पुप्फरुहणाई ॥ ३ ॥
आसणयाए पट्टस्स पूयणं अंगफुसण चक्काए ।
सुरभीइ अमयमुत्ती पवयणमुद्दाइ पडिवूहो ॥ ४ ॥
गरुडाइ दुट्ठरक्खा सोहग्गाए य मंतसोहग्गं ।
तह अंजलीइ देसण मुद्दाहिं कुणह कज्जाइं ॥ ५ ॥

*

§ १०६. अथ प्रतिष्ठोपकरणसंग्रहः—स्नपनकार ४। मूलशतवर्तनकारिका ४ अधिका वा । तासां गुड-सुतसुहाली ४। दान पर्वणिदान च । दिशाबलि । अक्षतपात्रम् । सण १ लाज २ कुलत्थ ३ यव ४ कगु ५ माप ६ सर्षप ७ इति सप्तधान्यम् । गध १, धूप पुष्प वास सुवर्ण रूप्य रावट प्रवाल मौक्तिक पच रत्न ८, हिरण्य चूर्णादिस्नान १८, कौसुम ककण २०, श्वेतसर्षप रखोटली ८, सिद्धार्थ दधि अक्षत घृत दर्भरूपोऽर्घ । आदर्श शख ऋद्धिवृद्धिसमेत मदनफल ८, ककण ३, वेदि ४ मडपकोणचतुष्टये एकैका । जवारा १०, माटीवारा १०, माटीकलश १३२, रूपावाट्टुली १, सुवर्णशलाका १, नन्द्यावर्त्तपट्ट १, आच्छादनपाट ६, वेदीयोग्य ४, नन्द्यावर्त्तयोग्य १, प्रतिमायोग्य १, माइसाडी २, अधिवासना प्रतिष्ठा-समययोग्य काकरिया द्वितीयनाम मोरिंडा २५, कथ मुद्ग ५ यव ५ गोधूम ५ चिणा ५ तिल ५, मोदक-सरावु १, वाटसरावु १, खीरिसरावु १, करबासराव १, कीसरिसराव १, कूरसरावु १, चूरिमापूयडीसरावु १, एव ७, नालिकेर फोफल उन्नती खर्जूर द्राक्षा वरसोला फलोहलि दाडिम जबीरी नारंग बीजपूरक आम्र इक्षु रक्तसूत्र तर्कु काकणी ५, अवमिननाय पउखणहारी ४। तासा काचुलीदेया । मडासरावु १, सात धनउ सण बीज कुलत्थ मसूर वल्ल चणा व्रीहि चवला । मगलदीप ४। गुडधनसमेतक्रियाणा २६०। पुडी १। प्रियगु-कर्पूर-गोरोचनाहस्तलेप । घृतमाजनम् । सौवीराञ्जनघृतमधुशर्करारूपनेत्रा-ञ्जनम्—इत्यादि ।

अभ्यङ्गामञ्जलिं दत्त्वा कारयेदधिवासनम् ।
द्वितीयां भक्तितो दत्त्वा प्रतिष्ठा च विधापयेत् ॥ १ ॥
गुरुपरिधापनापूर्वमन्यसाधुजनाय सः ।
दद्यात् प्रवरवस्त्राणि पूजयेच्छ्रावकांस्ततः ॥ २ ॥

*

§१०७. अथ कूर्मप्रतिष्ठाविधिः—कूर्मस्थापनाप्रदेशे पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमायात्र पूजन च । आरात्रिक मगल-प्रदीप च कृत्वा चैत्यवदन शान्तिस्तवभणन च कार्यम् । ततो यत्र कूर्मस्थितिर्भविष्यति तत्र कूर्मगृहमाने चतुरस्रे क्षेत्रे चतुर्षु कोणेषु चत्वारि इष्टकासपुटानि अथवा पाषाणसपुटानि कार्याणि । गर्भे पञ्चम कार्यम्, [illegible] स्थाप्यते । नदा भद्रा जया विजया पूर्णा इति पचानामपि नामानि भवन्ति । ततोऽप्यस्तनगर्चा [illegible]रत्नानि सप्तधान्यमहितचारकमध्ये निक्षेप्तव्यानि । मध्यपुटे सुवर्णमय १ कूर्मोऽधो-

भ्यादिमुद्रादर्शन, सूरिमन्त्रेण वारत्रयमधिवासनम् । ओं स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा – वस्त्रेणाच्छादन, जवारादि-फलोहलिबलेर्निक्षेप । तदुपरि सप्तधान्यकस्य च आरत्रिकावतारण चैत्यवन्दनम् । अधिवासनादेव्या कायोत्सर्गं । चतुर्विंशतिस्तवचिन्ता । तस्या स्तुति –

पातालमन्तरिक्षं भुवनं वा या समाश्रिता नित्यम् ।
साऽत्रावतरतु जैने कलशे अधिवासनादेवी ॥–इति पाठ ।

शां० १ अ० २ समस्तवै० । तदनु शान्तिबलिं क्षिप्त्वा शक्रस्तवेन चैत्यवन्दन शान्तिभणन प्रतिष्ठा देवताकायोत्सर्ग । चतुर्विंश० । यदधिष्ठिता० प्रतिष्ठास्तुतिदान । अक्षताञ्जलिभृतलोकसमेतेन मगलगाथा-पाठ कार्य । नमोऽर्हत्सिद्धा० ।

जह सिद्धाण पइट्ठा० ॥ जह सग्गस्स पइट्ठा० ॥ जह मेरुस्स पइट्ठा० ॥ जह लवणस्स पइट्ठा समत्थ उदहीण मज्झयारम्मि० ॥ जह जंबुस्स पइट्ठा, जंबुदीवस्स मज्झयारम्मि ॥ आचंद० ॥

पुष्पाञ्जलिक्षेप । धर्मदेशना ।–**कलशप्रतिष्ठाविधिः ।**

*

§ १०५ **अथ ध्वजारोपणविधिरुच्यते**–भूमिशुद्धि, गन्धोदकपुष्पादिसत्कार । अमारिघोषणम् । संघाह्वाननम् । दिक्पालस्थापनम् । वेदिकाविरचनम् । नन्द्यावर्तलेखनम् । तत सूरि कंकणमुद्रिकाहस्त सदश-वस्त्रपरिधान सकलीकरण शुचिविद्या चारोपयति । स्नपनकारानभिमन्त्रयेत् । अभिमन्त्रितदिशाबलिप्रक्षेपण धूपसहित सोदक क्रियते । ओँ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रव रक्ष रक्ष स्वाहा – इति बल्यभिमन्त्रणम् । दिक्पाला-ह्वाननम् – ओँ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय ध्वजारोपणे आगच्छ आगच्छ स्वाहा । एव – ओँ अग्नये–ओँ यमाय–ओँ नैर्ऋतये–ओँ वरुणाय–ओँ वायवे–ओँ कुबेराय–ओँ ईशानाय–ओँ नागाय–ओँ ब्रह्मणे आगच्छ आगच्छ स्वाहा । शान्तिबलिपूर्वक विधिना मूलप्रतिमास्नानम् । तदनु चैत्यवन्दन संघसहितेन गुरुणा कार्यम् । वंशे कुसुमाञ्जलिक्षेप, तिलक पूजन च । हिरण्यकलशादिस्नानानि पूर्ववत् । कनक[1] पंचरत्न[2] कषाय[3] मृत्तिका[4] मूलिका[5] अष्टवर्ग[6] सर्वौषधि[7] गन्ध[8] वास[9] चन्दन[10] कुंकुम[11] तीर्थोदक[12] कर्पूर[13] तत इक्षु-रस[14] घृत-दुग्ध-दधि-स्नानम्[15] । वंशस्य चर्चनम् । पुष्पारोपणम् । लग्नसमये सदशवस्त्रेणाच्छादनम् । मुद्रान्यास । चतु स्त्रीमोंखणकम् । ध्वजाधिवासन वासधूपादिप्रदानत । 'ॐ श्रीं कण्ठ' – ध्वजावंशस्याभिमन्त्रणम् । इत्यधि-वासना । जवारक-फलोहलि-बलिढौकनम् । आरत्रिकावतारणम् । अधिकृतजिनस्तुत्या चैत्यवन्दनम् । शान्ति-नाथकायोत्सर्ग । श्रुतदे० १ शान्तिदे० २ शासनदे० ३ अम्बिकादे० ४ क्षेत्रदे० ५ अधिवासना ६ कायोत्सर्गा । चतुर्विंशतिस्तवचिन्तन तस्या एव स्तुति –'**पातालमन्तरिक्षं भवन वा०**' । १ । समस्त-वैयावृत्त्यकरकायोत्सर्ग । स्तुतिदानम् । उपविश्य शक्रस्तवपाठ । शान्तिस्तवादिभणनम् । बलिसप्तधान्य-फलोहलिवासपुष्पधूपाधिवासनम् । ध्वजस्य चैत्यपार्श्वेण प्रदक्षिणाकरणम् । शिखरे पुष्पाञ्जलि । कलश-स्नानम् । ध्वजागृहे मर्कटिकारूपे पंचरत्ननिक्षेप । इष्टांशे ध्वजानिक्षेप । 'ॐ श्रीं ठ' – अनेन सूरिमन्त्रेण वासक्षेप । इति प्रतिष्ठा । फलोहलि-सप्तधान्यबलि-मोरिंडकमोदकादिवस्तूना प्रभूताना प्रक्षेपणम् । महा-ध्वजस्य ऋजुगत्या प्रतिमाया दक्षिणकरे बन्धनम् । प्रवचनमुद्रया सूरिणा धर्मदेशना कार्या । संघदानम् । अष्टाह्निकापूजा विषमदिने ३,५,७, जिनबलिं प्रक्षिप्य चैत्यवन्दन विधाय शान्तिनाथादिकायोत्सर्गान् कृत्वा महाध्वजस्य छोटनम् । संघादिपूजाकरण यथाशक्त्या ।–**इति ध्वजारोपणविधिः समाप्तः ।**

*

जिणमुद्द-कलस-परमेट्ठि-अंग-अंजलि-तहासणा-चक्का ।
सुरभी-पवयण-गरुडा-सोहग्ग-कयंजली चेव ॥ १ ॥
जिणमुद्दाए चउकलसठावणं तह करेइ थिरकरणं ।
अहिवासमंतनसणं आसणमुद्दाइ अन्ने उ ॥ २ ॥
कलसाए कलसन्हवणं परमेट्ठीए उ आहवणमंतं ।
अंगाइ समालभणं अंजलिणा पुप्फरुहणाई ॥ ३ ॥
आसणयाए पट्टस्स पूयणं अंगफुसण चक्काए ।
सुरभीइ अमयमुत्ती पवयणमुद्दाइ पडिवूहो ॥ ४ ॥
गरुडाइ दुट्ठरक्खा सोहग्गाए य मंतसोहग्गं ।
तह अंजलीइ देसण मुद्दाहिं कुणह कज्जाइं ॥ ५ ॥

*

§ १०६. अथ प्रतिष्ठोपकरणसंग्रहः – स्नपनकार ४। मूलशतवर्त्तनकारिका ४ अधिका वा । तासां गुडयुतसुहाली ४। दान पर्वणिदान च। दिशाबलि । अक्षतपात्रम् । सण १ लाज २ कुलत्थ ३ यव ४ कगु ५ माष ६ सर्षप ७ इति सप्तधान्यम् । गध १, धूप पुष्प वास सुवर्ण रूप्य रावट प्रवाल मौक्तिक पच रत्न ८, हिरण्य चूर्णादिस्नान १८, कौसुम ककण २०, श्वेतसर्षप रखोटली ८, सिद्धार्थ दधि अक्षत घृत दर्भरूपोऽर्घ । आदर्श शस्त्र ऋद्धिवृद्धिसमेत मदनफल ८, ककण ३, वेदि ४ मडपकोणचतुष्टये एकैका । जवारा १०, माटीवारा १०, माटीकलश १३२, रूपावाटुली १, सुवर्णशलाका १, नन्द्यावर्त्तपट्ट १, आच्छादनपाट ६, वेदीयोग्य ४, नन्द्यावर्त्तयोग्य १, प्रतिमायोग्य १, माइसाडी २, अधिवासना प्रतिष्ठासमययोग्य काकरिया द्वितीयनाम मोरिंडा २५, कथ मुद्ग ५ यव ५ गोधूम ५ चिणा ५ तिल ५, मोदकसराउ १, वाटसरावु १, खीरिसरावु १, करवासराव १, कीसरिसराव १, कूरसरावु १, चूरिमापूयडीसरावु १, एवं ७, नालिकेर फोफल उत्तती खर्जूर द्राक्षा वरसोला फलोहलि दाडिम जवीरी नारंग बीजपूरक आम्र इक्षु रक्तसूत्र तर्कु काकणी ५, अजमिननाथ पउखणहारी ४। तासा काचुलीदेया । मडासरावु १, सात धनउ सण बीज कुलत्थ मसूर वल चणा व्रीहि चवला । मगलदीप ४। गुडघनसमेतक्रियाणा ३६०। पुडी १। प्रियगु-कर्पूर-गोरोचनाहस्तलेप । घृतभाजनम् । सौवीराञ्जनघृतमधुशर्करारूपनेत्राञ्जनम्–इत्यादि ।

अभ्यङ्गामञ्जलिं दत्त्वा कारयेदधिवासनम् ।
द्वितीयां भक्तितो दत्त्वा प्रतिष्ठां च विधापयेत् ॥ १ ॥
गुरुपरिधापनापूर्वमन्यसाधुजनाय सः ।
दद्यात् प्रवरवस्त्राणि पूजयेच्छ्रावकांस्ततः ॥ २ ॥

*

§१०७. अथ कूर्मप्रतिष्ठाविधिः – कूर्मस्थापनाप्रदेशे पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमास्नात्र पूजन च । आरात्रिकं मगलप्रदीप च दत्त्वा चैत्यवदन शान्तिस्तवभणन च कार्यम् । ततो यत्र कूर्मस्थितिर्भविष्यति तत्र कूर्मगृहमाने चतुरस्रे क्षेत्रे चतुर्षु कोणेषु चत्वारि इष्टकासंपुटानि अथवा पाषाणसंपुटानि कार्याणि । गर्भे पञ्चम कार्यम्, यत्र बिम्ब सम्पने । नदा भद्रा जया विजया पूर्णा इति पचानामपि नामानि भवन्ति । ततोऽस्तनगर्चा सुगर्ता कृत्वा पचरत्नानि सप्तधान्यसहितचारकमध्ये निक्षेप्तव्यानि । मध्यपुटे सुवर्णमयः १ कूर्मोऽधो-

मुख स्थापनीय प्रधानमिरैसकपर्दकसहित । प्रधानपरिधापनिका चोपरि कर्तव्या । बल्यादिसमस्त विधेयम् । सपुटकेषु मुद्रितकलशे, स्नान कार्यम्—भृगारैरित्यर्थ । लग्नसमये च वासक्षेप कृत्वा संपुटानि निवेश्यन्ते । अथवा लग्नसमये छडिका उत्सार्यते दर्भमेखला या अध. क्षिप्ताऽऽसीत् । मन्त्रश्चायम्—'ॐ ह्रा श्रीं कूर्म्म तिष्ठ तिष्ठ रथशाला देवगृह वा धारय धारय स्वाहा' । ततो मुद्रान्यास सर्वत्र कार्य । पश्चा-

5 चैत्यवदन कृत्वा मगलस्तुर्ति भणित्वाऽक्षताजलिनिक्षेप कार्य संघसमेतै । मगलस्तुतयश्च प्रतिष्ठाकल्पे 'जह सिद्धाण पइट्ठा' इत्यादिका पठित्वा, कूर्म्मोपरि अक्षता निक्षेप्या. । पुष्पाञ्जलिं श्रावका क्षिपन्ति । इति कूर्म्मप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ।

*

अथ शास्त्रोदितस्थाने पीठं शास्त्रोक्तलक्षणम् ।
सस्थाप्य निश्चल तत्र समीपं प्रतिमां नयेत् ॥ १ ॥

10 सौवर्णं राजतं ताम्रं शैलं वा चतुरस्रकम् ।
रम्य पत्र विनिर्माप्य सदल मसृण तथा ॥ २ ॥
एवं विलिख्य संस्नाप्य पत्रं क्षीरेण चाम्बुना ।
सुगन्धिद्रव्यमिश्रेण चन्दनेनानुलेपयेत् ॥ ३ ॥
सत्पुष्पाक्षतनैवेद्यधूपदीपफलैर्जपेत् ।

15 सुगन्धप्रसवैस्तत्र जाप्यमष्टोत्तर शतम् ॥ ४ ॥
सस्थाप्य मातृकावर्ण मालामन्त्रेण तत्त्वतः ।
ॐ अर्हं अ आ इ ई इत्यादि शषसहान् यावत्—ओं ह्रीं क्ष्मीं क्लीं स्वाहा ।
पद्ममध्ये च यत्पद्मं पीठे गन्धेन तल्लिखेत् ।
कर्पूरकुङ्कुमं गन्ध पारद रत्नपञ्चकम् ॥ ५ ॥

20 क्षिप्त्वा च पत्रमारोप्य प्रतिमा स्थापयेत्ततः ।
पृथ्वीतत्त्व च धातव्यमित्याम्नाय इति ध्रुवम् ॥ ६ ॥

स्थिरप्रतिमाऽधो यन्त्रम्—ओं ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा । जातीपुष्प १०००० जाप उपोषितेन कार्य । इद यत्र ताम्रपात्रे उत्कीर्य देवगृहे मूलनायकबिम्बस्याधो निधापयेत् । बिम्बस्य सकलीकरण, शान्ति पुष्टि च करोति । यस्याधस्तनविभागे मूलनायकस्य क्षिप्यते तस्य नाम मध्ये दीयते । मूल-

25 नायकस्य यक्ष-यक्षिण्यौ चालिख्येते । अत्र तु श्री पार्श्वनाथ-तद्यक्षयक्षिणीनां नामन्यासो निदर्शनमात्रमिति ॥

*

भूताना बलिदानमग्रिमजिनस्नान तदग्रे स्वयं
चैत्यानामथ वन्दन स्तुतिगणः स्तोत्र करे मुद्रिका ।
स्वस्य स्नात्रकृतां च शुद्धसकली सम्यक् शुचिप्रक्रिया
धूपाम्भःसहितोऽभिमन्त्रितबलिः पश्चाच्च पुष्पाञ्जलिः ॥ १ ॥

30 मुद्रा मध्याङ्गुलीभ्यामतिकुपितदृशा वामहस्ताम्भसोच्चै-
र्बिम्बस्याच्छोटन सत्सतिलककुसुम मुद्गरश्चाक्षपात्रम् ।
मुद्राभिर्बद्धताक्ष्यादिभिरथ कवच जैनबिम्बस्य सम्यग्
दिग्बन्धः सप्तधान्यं जिनवपुरुपरि क्षिप्यते तत्क्षण च ॥ २ ॥

कुम्भानामभिमन्त्रणं जिनपतेः सन्मुद्रया मन्त्र्यते
नीरं गन्धमहौषधी मलयजं पुष्पाणि धूपस्ततः ।
अङ्गुल्यामथ पञ्चरत्नरचना स्नानं ततः काञ्चनं
पुष्पारोपणधूपदानमसकृत् स्नात्रेषु तेष्वन्तरा ॥ ३ ॥
रत्नस्नानकषायमज्जनविधिर्मृत्पञ्चगव्ये ततः
सिद्धौषध्यथ मूलिका तदनु च स्पष्टाष्टवर्गद्वयम् ।
मुक्ताशुक्तिसुमुद्रया गुरुरथोत्थाय प्रतिष्ठोचितं
मन्त्रैर्दैवतमाह्वयेद् दशदिशामीशांश्च पुष्पाञ्जलिः ॥ ४ ॥
सर्वौषध्यथ सूरिहस्तकलनाद् दृग्दोषरक्षोन्मृजा
रक्षापुट्टलिका ततश्च तिलकं विज्ञप्तिकाथाञ्जलिः ।
अर्घोऽर्घ्यस्थ दिग्धवेषु कुसुमस्नानं ततः स्नापनिका
वासश्चन्दनकुङ्कुमे मुकुरदृङ् तीर्थाम्बु कर्पूरवत् ॥ ५ ॥
निक्षेप्यः कुसुमाञ्जलिर्जलघटस्नानं शतं साष्टकं
मन्त्रावासितचन्दनेन वपुषो जैनस्य चालेपनम् ।
वामस्पृष्टकरेण वाससुमनो धूपः सुरभ्यम्बुजा-
ञ्जल्यसात्करलेपकङ्कणमथो पञ्चाङ्गसस्पर्शनम् ॥ ६ ॥
धूपश्च परमेष्ठी च जिनाह्वानं पुनस्ततः ।
उपविश्य निषद्यायां नन्द्यावर्त्तस्य पूजनम् ॥ ७ ॥

॥ श्रीचन्द्रसूरिकृतप्रतिष्ठासंग्रहकाव्यानि ॥

*

घोषाविज्ज अमारिं रण्णो संघस्स तह य वाहरणं ।
विण्णाणियसंमाणं कुज्जा खित्तस्स सुद्धिं च ॥ १ ॥
तह य दिसिपालठवण तक्किरियंगाण संनिहाणं च ।
दुविहसुई पोसहिओ वेईए ठविज्ज जिणबिंबं ॥ २ ॥
नयर सुमुहुत्तंमी पुवुत्तरदिसिमुहं सउणपुव्वं ।
वज्जंतेसु चउविहमंगलतूरेसु पउरेसु ॥ ३ ॥
तो सबसंघसहिओ ठवणायरियं ठवित्तु पडिमपुरो ।
देवे वंदइ सूरी परिहियनिरुवाहिसुइवत्थो ॥ ४ ॥
संतिसुयदेवयाणं करेइ उस्सग्गं थुइपयाणं च ।
सहिरण्णदाहिणकरो सयलीकरणं तओ कुज्जा ॥ ५ ॥
तो सुद्धोभयपक्खा दक्खा खेयन्नुया विहियरक्खा ।
ण्हवणगराओ खिवंती दिसासु मग्घासु सिद्धवलिं ॥ ६ ॥
तयणतर च सुहिय कलसचउक्केण ते ण्हवंति जिणं ।
पंचरयणोदगेणं कसायसलिलेण तत्तो य ॥ ७ ॥

धूवक्खेव मुद्दानास चउसुंदरीहिं ओमिणणं।
अहिवासणं च सम्म महद्धयस्सिंदुधवलस्स ॥ ४४ ॥
चाउद्दिसिं जवारय फलोहलीढोयणं च वंसपुरो।
आरत्तियावयारणमह विहिणा देववंदणय ॥ ४५ ॥
बलिसत्तधन्नफलवासकुसुमसकसायवत्थुनिवहेण।
अहिवासण च तत्तो सिहरे तिपयाहिणीकरणं[1] ॥ ४६ ॥
कुसुमजलिपाडणपुरस्सर च ण्हवण च मूलकलसस्स।
खेसदसद्धामलरयणधयहरा इट्ठसमयंमि ॥ ४७ ॥
सुपइट्ठपइट्ठाणतखित्तवासस्स लयणु वसस्स।
ठवणं खिवणं च तओ फलोहलीभूरिभक्खाण ॥ ४८ ॥
तत्तो उक्सुगईए धयस्स परिमोयण सजयसद्द।
पडिमाइ दाहिणकरे महद्धयस्सावि बधणय ॥ ४९ ॥
विसमदिणे उस्सयण' जहसत्तीए य संघदाणं च।
इय सुत्तत्थविहीए कुणह धयारोवण धन्ना ॥ ५० ॥
॥ इति ध्वजारोपणविधिः 'कथारत्नकोशात्' ॥

*

॥ इति प्रसङ्गानुप्रसङ्गसहितः प्रतिष्ठाविधिः समाप्त. ॥ ३५ ॥

---

§ १०८ अथ स्थापनाचार्यप्रतिष्ठा–

चोक्खसुयकरचलणो आरोवियसयलिकरणसुइविज्जो।
गरुडाइदलियविग्घो मलयजघुसिणेहिं लिंपित्ता ॥ १ ॥
अक्खं फलिहमणिं वा सुहकट्ठमय च ठावणायरिय।
काऊण पंचपरमिट्ठिठिक्कए चदणरसेण ॥ २ ॥
मतेण गणहराण अहवा वि हु वद्धमाणविज्जाए।
काऊण सत्तखुत्तो वासक्खेव पइट्ठिज्जा ॥ ३ ॥

॥ ठवणायरियपइट्ठाविही समत्तो ॥ ३६ ॥

*

§ १०९ अथ मुद्राविधिः–तत्र दक्षिणाङ्गुष्ठेन तर्जनीमध्यमे समाक्रम्य पुनर्मध्यमामोक्षणेन नाराचमुद्रा १ किंचिदाकुञ्चिताङ्गुलीकस्य वामहस्तस्योपरि शिथिलमुष्टिदक्षिणकरस्थापनेन कुम्भमुद्रा २ –शुचिमुद्राद्वयम्। बद्धमुष्ट्योः करयोः संलग्नसंमुखाङ्गुष्ठयोर्हृदयमुद्रा १ तावेव मुष्टी समीकृतौ ऊर्ध्वाङ्गुष्ठौ शिरसि विन्यसेदिति शिरोमुद्रा २ पूर्ववन्मुष्टी बद्ध्वा तर्जन्यौ प्रसारयेदिति शिखामुद्रा ३ पुनर्मुष्टिं च विधाय कनीयस्यङ्गुष्ठौ प्रसारयेदिति कवचमुद्रा ४ कनिष्ठिकामङ्गुष्ठेन संपीड्य शेषाङ्गुली प्रसारयेदिति क्षुरमुद्रा ५–नेत्रत्रयस्य न्यासोऽयम्। दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीमध्यमे प्रसारयेदिति अस्त्रमुद्रा। हृदयादीनां विन्यसनमुद्रा।

---

1 A पयक्खिणीकरण। 2 B रसयण।

प्रसारिताधोमुखाभ्यां हस्ताभ्यां पादाङ्गुलीतलामस्तकस्पर्शान्महामुद्रा १ अन्योऽन्यग्रथिताङ्गुलीषु कनिष्ठिकानामिकयोर्मध्यमातर्जन्योश्च संयोजनेन गोस्तनाकारा धेनुमुद्रा २ दक्षिणहस्तस्य तर्जनीं वामहस्तस्य मध्यमया संदधीत, मध्यमा च तर्जन्याऽनामिका कनिष्ठिकया कनिष्ठिका चानामिकया, एतच्चाधोमुखं कुर्यात्। एषा धेनुमुद्रेत्यन्ये विशिषन्ति। हस्ताभ्यामञ्जलिं कृत्वा प्राकामामूलपर्वाङ्गुष्ठसंयोजनेनावाहनी ३ इयमेवाधोमुखा स्थापनी ४ सलग्नमुष्ट्युच्छ्रिताङ्गुष्ठौ करौ संनिधानी ५ तावेव गर्भगाङ्गुष्ठौ निष्ठुरा ६ उभयकनिष्ठिकामूलसंयुक्ताङ्गुष्ठाग्रद्वयमुत्तानितं सहितं पाणियुगमावाहनमुद्रा ७ तदेव तर्जनीमूलसंयुक्ताङ्गुष्ठद्वयावाङ्मुखं स्थापनमुद्रा ८ मुष्टिप्रसृतया तर्जन्या देवतामभितः परिभ्रमणं निरोधमुद्रा ९ शिरोदेशमारभ्याप्रपदं पार्श्वाभ्यां तर्जन्योर्भ्रमणमवगुण्ठनमुद्रेत्येके। **एता आवाहनादिमुद्राः ९।**

बद्धमुष्टेर्दक्षिणहस्तस्य मध्यमातर्जन्योर्विस्फारितप्रसारणेन गोवृषमुद्रा १। बद्धमुष्टेर्दक्षिणहस्तस्य प्रसारिततर्जन्या वामहस्ततलताडनेन त्रासनीमुद्रा १। नेत्रास्त्रयोः पूजामुद्रे। अङ्गुष्ठे तर्जनीं संयोज्य शेषाङ्गुलिप्रसारणेन पाशमुद्रा १ बद्धमुष्टेर्वामहस्तस्य तर्जनीं प्रसार्य किंचिदाकुञ्चयेदित्यङ्कुशमुद्रा २ संहतोर्ध्वाङ्गुलिवामहस्तमूले चाङ्गुष्ठं तिर्यग् विधाय तर्जनीचालनेन ध्वजमुद्रा ३ दक्षिणहस्तमुत्तानं विधायाधः करशाखा प्रसारयेदिति वरदमुद्रा ४। **एता जयादिदेवताना पूजामुद्राः।**

वामहस्तेन मुष्टिं बद्ध्वा कनिष्ठिकां प्रसार्य शेषाङ्गुलीरङ्गुष्ठेन पीडयेदिति शङ्खमुद्रा १ परस्पराभिमुखहस्ताभ्यां वेणीबन्धं विधाय मध्यमे प्रसार्य संयोज्य च शेषाङ्गुलीभिर्मुष्टिं बन्धयेत्—इति शक्तिमुद्रा २ हस्तद्वयेनाङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां वलके विधाय परस्परान्तः प्रवेशनेन शृङ्खलामुद्रा ३ वामहस्तस्योपरि दक्षिणकरं कृत्वा कनिष्ठिकाङ्गुष्ठाभ्यां मणिबन्धं संवेष्ट्य शेषाङ्गुलीनां विस्फारितप्रसारणेन वज्रमुद्रा ४ वामहस्ततले दक्षिणहस्तमूलं संनिवेश्य करशाखाविरलीकृत्य प्रसारयेदिति चक्रमुद्रा ५ पद्माकारौ करौ कृत्वा मध्येऽङ्गुष्ठौ कर्णिकाकारौ विन्यसेदिति पद्ममुद्रा ६ वामहस्तमुष्टेरुपरि दक्षिणमुष्टिं कृत्वा गोत्रेण सह किंचिदुन्नामयेदिति गदामुद्रा ७ अधोमुखवामहस्ताङ्गुलीर्घण्टाकाराः प्रसार्य दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीमूर्ध्वां कृत्वा वामहस्ततले नियोज्य घण्टावचालनेन घण्टामुद्रा ८ उन्नतपृष्ठहस्ताभ्यां संपुटं कृत्वा कनिष्ठिके निष्कास्य योजयेदिति कमण्डलुमुद्रा ९ पताकावत् हस्तं प्रसार्य अङ्गुष्ठसंयोजनेन परशुमुद्रा १० यद्वा पताकाकारं दक्षिणकरं सहताङ्गुलिं कृत्वा तर्जन्यङ्गुष्ठाक्रमणेन परशुमुद्रा द्वितीया ११ ऊर्ध्वदण्डौ करौ कृत्वा पद्मवत् करशाखाः प्रसारयेदिति वृक्षमुद्रा १२ दक्षिणहस्तं सहताङ्गुलिमुन्नमय्य सर्पफणावत् किंचिदाकुञ्चयेदिति सर्पमुद्रा १३ दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीमध्यमे प्रसारयेदिति खड्गमुद्रा १४ हस्ताभ्यां संपुटं विधायाङ्गुली पद्मवद्विकास्य मध्यमे परस्परं संयोज्य तन्मूललग्नाङ्गुष्ठौ कारयेदिति ज्वलनमुद्रा १५ बद्धमुष्टेर्दक्षिणकरस्य मध्यमाङ्गुष्ठतर्जन्यौ मूलात् क्रमेण प्रसारयेदिति श्रीमणिमुद्रा १६। **एताः षोडशविद्यादेवीनां मुद्राः।**

दक्षिणहस्तेन मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीं प्रसारयेदिति दण्डमुद्रा १ परस्परोन्मुखौ मणिबन्धाभिमुखकरशाखौ करौ कृत्वा ततो दक्षिणाङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां वाममध्यमानामिके तर्जनीं च तथा वामाङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यामितरस्य मध्यमानामिके तर्जनीं समाक्रामयेदिति पाशमुद्रा २ परस्पराभिमुखमूर्ध्वाङ्गुलीकौ करौ कृत्वा तर्जनीमध्यमानामिका विरलीकृत्य परस्परं संयोज्य कनिष्ठाङ्गुष्ठौ पातयेदिति शूलमुद्रा ३ यद्वा पताकाकारं करं कृत्वा कनिष्ठिकामङ्गुष्ठेनाक्रम्य शेषाङ्गुली प्रसारयेदिति शूलमुद्रा द्वितीया। एता पूर्वोक्ताभिः सह **दिक्पालाना मुद्राः।**

ग्राह्यस्योपरि हस्तं प्रसार्य कनिष्ठिकादि-तर्जन्यन्तानामङ्गुलीनां क्रमसंकोचनेनाङ्गुष्ठमूलानयनात् संहारमुद्रा। **विसर्जनमुद्रेयम्।** उत्तानहस्तद्वयेन वेणीबन्धं विधायाङ्गुष्ठाभ्यां कनिष्ठिके तर्जनीभ्यां च मध्यमे

संगृह्यानामिके समीकुर्यात्—इति परमेष्ठिमुद्रा १ यद्वा वामकराङ्गुलीरूर्ध्वीकृत्य मध्यमां मध्ये कुर्यादिति द्वितीया २ पराङ्मुखहस्ताभ्यां वेणीबन्ध विधायाभिमुखीकृत्य तर्जन्यौ संश्लेष्य शेषाङ्गुलिमध्येऽङ्गुष्ठद्वय विन्यसेदिति पार्श्वमुद्रा । एता देवदर्शनमुद्राः ।

इदानीं प्रतिष्ठाद्युपयोगिमुद्राः—उत्तानौ किंचिदाकुञ्चितकरशाखौ पाणी विधारयेदिति अंजलिमुद्रा १ अभयाकारौ समश्रेणिस्थिताङ्गुलीकौ करौ विधायाङ्गुष्ठयो परस्परग्रथनेन कपाटमुद्रा २ चतुरंगुलमग्रतः पादयोरन्तर किंचिन्यून च पृष्ठत कृत्वा समपाद कायोत्सर्गेण जिनमुद्रा ३. परस्पराभिमुखौ ग्रथिताङ्गुलीकौ करौ कृत्वा तर्जनीभ्यामनामिके गृहीत्वा मध्यमे प्रसार्य तन्मध्येऽङ्गुष्ठद्वय निक्षिपेदिति सौभाग्यमुद्रा ४ अत्रैवाङ्गुष्ठद्वयमधः कनिष्ठिका तदाक्रान्ततृतीयपर्विका न्यसेदिति सबीजसौभाग्यमुद्रा ५. वामहस्ताङ्गुलितर्जन्या कनिष्ठिकामाक्रम्य तर्जन्यग्र मध्यमया कनिष्ठिकाग्र पुनरनामिकया आकुञ्च्य मध्येऽङ्गुष्ठ निक्षिपेदिति योनिमुद्रा ६ ग्रथितानामङ्गुलीना तर्जनीभ्यामनामिके संगृह्य मध्यपर्वस्थाङ्गुष्ठयोर्मध्यमयो सन्धानकरण योनिमुद्रेत्यन्ये । आत्मनोऽभिमुखदक्षिणहस्तकनिष्ठिकया वामकनिष्ठिका संगृह्याध परावर्तितहस्ताभ्या गरुडमुद्रा ७ संलग्नौ दक्षिणाङ्गुष्ठाक्रान्तवामाङ्गुष्ठौ पाणी नमस्कृतिमुद्रा ८. किंचिद्गर्भितौ हस्तौ समौ विधाय ललाटदेशयोजनेन मुक्ताशुक्तिमुद्रा ९ जानुहस्तोत्तमाङ्गादिसंप्रणिपातेन प्रणिपातमुद्रा १०. संमुखहस्ताभ्यां वेणीबन्ध विधाय मध्यमाङ्गुष्ठकनिष्ठिकाना परस्परयोजनेन त्रिशिखामुद्रा[1] ११ पराङ्मुखहस्ताभ्यामङ्गुली विदर्भ्य मुष्टिं बद्ध्वा तर्जन्यौ समीकृत्य प्रसारयेदिति भृंगारमुद्रा[2] १२ वामहस्तमणिबन्धोपरि पराङ्मुख दक्षिणकर कृत्वा करशाखा विदर्भ्य किंचिद्वामचलनेनाधोमुखाङ्गुष्ठाभ्या मुष्टिं बद्ध्वा समुत्क्षिपेदिति योगिनीमुद्रा १३. ऊर्ध्वशाख वामपाणिं कृत्वाऽङ्गुष्ठेन कनिष्ठिकामाक्रमयेदिति क्षेत्रपालमुद्रा १४ दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा कनिष्ठिकाङ्गुष्ठौ प्रसार्य डमरुकवच्चालयेदिति डमरुकमुद्रा १५ दक्षिणहस्तेनोर्ध्वाङ्गुलिना पताकाकरणादभयमुद्रा १६ तेनैवाधोमुखेन वरदमुद्रा १७ वामहस्तस्य मध्यमाङ्गुष्ठयोजनेन अक्षसूत्रमुद्रा १८ पद्ममुद्रैव प्रसारिताङ्गुष्ठसंलग्नमध्यमाङ्गुल्यग्रा बिंबमुद्रा १९। एता सामान्यमुद्राः ।

दक्षिणाङ्गुष्ठेन तर्जनीं संयोज्य शेषाङ्गुलीप्रसारणेन प्रवचनमुद्रा २० हस्ताभ्यां संपुट कृत्वा अङ्गुली पत्रवद्विकास्य मध्यमे परस्परं संयोज्य तन्मूललग्नावङ्गुष्ठौ कारयेदिति मगरमुद्रा २१ ध्वजस्याकारहस्तस्योपरिहस्त आसनमुद्रा २२ वामकरधृतदक्षिणकरसमालम्बने अंगमुद्रा २३. अन्योऽन्यान्तरिताङ्गुलिकोशाकारहस्ताभ्या कुक्ष्युपरि कूर्परस्थाभ्यां योगमुद्रा २४ उभयो करयोरनामिकामध्यमे परस्परानभिमुखे ऊर्ध्वीकृत्य मील्येच्छेषाङ्गुली पातयेदिति पर्वतमुद्रा २५ करस्य परावर्तेन विस्मयमुद्रा २६ अंगुष्ठस्थेतराङ्गुल्यग्रायास्तर्जन्या ऊर्ध्वीकारो नादमुद्रा २७ अनामिकयाङ्गुष्ठाग्रस्पर्शेन बिन्दुमुद्रा २८ ।

॥ इति मुद्राविधिः ॥ ३७ ॥

§११०. वाराही १ वामनी २ गरुडी ३ इन्द्राणी ४ आग्नेयी ५ याम्या ६ नैर्ऋती ७ वारुणी ८ वायव्या ९ सौम्या १० ईशानी ११ ब्राह्मी १२ वैष्णवी १३ माहेश्वरी १४ विनायकी १५ शिवा १६ शिवदूती १७ चामुण्डा १८ जया १९ विजया २० अजिता २१ अपराजिता २२ हरसिद्धि २३ कालिका २४ भद्रा २५ सुभद्रा २६ कनकनन्दा २७ सुनन्दा २८ उमा २९ घंटा ३० सुघंटा ३१ मांसप्रिया ३२ आशापुरा ३३ लोहिता ३४ अंबा ३५ अस्थिभक्षी ३६ नारायणी ३७ नारसिंही ३८ कौमारी ३९ वामरता ४० अंगा ४१ वंगा ४२ दीर्घदंष्ट्रा ४३ महादंष्ट्रा ४४ प्रभा ४५ सुप्रभा ४६ लम्बा ४७

---

1 A त्रिशिखिमुद्रा । 2 B भृंगमुद्रा ।

लम्बोष्ठी ४८ भद्रा ४९ सुभद्रा ५० काली ५१ रौद्री ५२ रौद्रमुखी ५३ कराली ५४ विकराली ५५ साक्षी ५६ विकटाक्षी ५७ तारा ५८ सुतारा ५९ रजनीकरा ६० रजनी ६१ श्वेता ६२ भद्रकाली ६३ क्षमाकरी ६४ ।

चतुःषष्टिः समाख्याता योगिन्यः कामरूपिकाः ।
पूजिताः प्रतिपूज्यन्ते भवेयुर्वरदाः सदा ॥ ५

अमुं श्लोकं पठित्वा योगिनीभिरधिष्ठिते क्षेत्रे पट्टकादिषु नामानि टिक्कानि वा विन्यस्य नामोच्चारणपूर्वं गन्धाद्यैः पूजयित्वा नन्दिप्रतिष्ठादिकार्याण्याचार्यः कुर्यात् ।

॥ चउसट्ठिजोगिणीउवसमप्पयारो ॥ ३८ ॥

*

§१११. सो य अहिणवसूरी तित्थजत्ताए सुविहियविहारेण कयाइ गच्छइ, अववायओ संघेणावि सम वच्चइ । सो य संघो सघवइप्पहाणो त्ति तस्स किंच भण्णइ । तत्थ जाइकम्माइअदूसिओ उचियण्णू राय- १० सम्मओ नाओवज्जियदविणो जणमाणणिज्जो पुज्जपूयापरो जम्म-जीविय-विहाण फलं गिण्हिउकामो सोहणतिहीए गुरुपायमूले गतूण अप्पणो जत्तामणोरह विन्नवेज्जा । गुरुणा वि तस्स उववूहणं काउ तित्थजत्ताए गुणा दसेयव्वा । ते य इमे —

अन्नोन्नसाहु-सावयसामायारीइ दंसणं होइ ।
सम्मत्त सुविसुद्धं हवइ हु तीए य दिट्ठाए ॥ १ ॥ १५
तित्थयराण भयवओ पवयण-पावयणि-अइसइड्ढीणं ।
अभिगमण-नमण-दरिसण-कित्तण-संपूयण थुणण ॥ २ ॥
सम्मत्तं सुविसुद्धं तु तित्थजत्ताइ होइ भव्वाणं ।
ता विहिणा कायव्वा भवेहिं भवविरत्तेहिं ॥ ३ ॥

तित्थं च तित्थयरजम्मभूमिमाइ । जओ भणियं आयारनिज्जुत्तीए — २०

जम्माभिसेय-निक्खमण-चरण-नाणुप्पया य निव्वाणे ।
तियलोय-भवण-वंतर-नंदीसर-भोमनगरेसु ॥ ४ ॥
अट्ठावय-उज्जिंते गयग्गपयए य धम्मचक्के य ।
पासरहावत्तनगं चमरुप्पायं च वंदामि ॥ ५ ॥

एवं गुरुणा वड्ढिउच्छाहो पत्थाणदिणनिन्नयं काऊण बहुमाणपुव्वं साहम्मियाण जत्ताए आह्वणत्थं २५ लेहे पट्ठविज्जा । तओ वाहण-गुलइणी-कोस-पाइक्क-जुगजुत्ताइ-सगडग-सिप्पिवग्ग-जलोवगरण-छत्त-दीवियाधारि-सूवार-धन्न-भेसज्ज-विज्जाइसंगहं चेइयसघपूयत्थं चदण-अगरु-कप्पूर कुकुम-कत्थूरी-वत्थाइसंगहं च काउ, सुमुहुत्ते जिणिंदस्स ण्हवणं पूयं च काऊण, तप्पुरओ निसन्नस्स तस्स सुपुरिसस्स गुरुणा संघाहिवइदिक्खा दायव्वा । तओ दिसिपालाण मतपुव्वं बलिं दाउं मंतमुद्दापुव्वं पुप्फवासाइपूइए रहे महूसवेण देवं सयमेव आरोविज्जा । तओ गुरुं पुरो काउं सघसहिओ चेइआइं वंदिय कवडिजक्ख-अंबाइ- ३० सम्मदिट्ठिदेवयाण काउस्सग्गो कुज्जा । खुद्दोवद्दवनिवारणमतज्झाणपरेण गुरुणा तस्स अब्भितरं कवयं आउहाणि य कायव्वाणि । तओ जयजयसद्दधवलमंगलज्झुणिमीसेहिं तूरनिग्घोसेहिं अंबरं बहिरेंतो दाणसम्माणपूरियपणयजणमणोरहो पुरपरिसरे पत्थाणमंगलं कुज्जा । तओ णाणाठाणागए साहम्मिए सक्कारिय

संगृह्यानामिके समीकुर्यात्—इति परमेष्ठिमुद्रा १. यद्वा वामकरांगुलीरूर्ध्वीकृत्य मध्यमां मध्ये कुर्यादिति द्वितीया २ पराङ्मुखहस्ताभ्यां वेणीबन्धं विधायाभिमुखीकृत्य तर्जन्यौ संश्लेष्य शेषांगुलिमध्येऽङ्गुष्ठद्वयं विन्यसेदिति पार्श्वमुद्रा। एता देवदर्शनमुद्राः।

इदानीं प्रतिष्ठाद्युपयोगिमुद्राः—उत्तानौ किंचिदाकुंचितकरशाखौ पाणी विधारयेदिति अंजलिमुद्रा १ अभयाकारौ समश्रेणिस्थितांगुलीकौ करौ विधायाङ्गुष्ठयो परस्परमथनेन कपाटमुद्रा २ चतुरंगुलमग्रतः पादयोरन्तरं किंचिन्न्यून च पृष्ठत कृत्वा समपाद कायोत्सर्गेण जिनमुद्रा ३ परस्पराभिमुखौ ग्रथितांगुलीकौ करौ कृत्वा तर्जनीभ्यामनामिके गृहीत्वा मध्यमे प्रसार्य तन्मध्येऽङ्गुष्ठद्वयं निक्षिपेदिति सौभाग्यमुद्रा ४ अत्रैवांगुष्ठद्वयस्याधः कनिष्ठिका तदाक्रान्ततृतीयपर्विका न्यसेदिति सबीजसौभाग्यमुद्रा ५. वामहस्तांगुलितर्जन्या कनिष्ठिकामाक्रम्य तर्जन्यग्रं मध्यमया कनिष्ठिकाग्रं पुनरनामिकया आकुच्य मध्येऽङ्गुष्ठं निक्षिपेदिति योनिमुद्रा ६ ग्रथितानामंगुलीनां तर्जनीभ्यामनामिके संगृह्य मध्यपर्वस्थांगुष्ठयोर्मध्यमयो सन्धानकरणं योनिमुद्रेत्यन्ये। आत्मनोऽभिमुखदक्षिणहस्तकनिष्ठिकया वामकनिष्ठिकां संगृह्याधः परावर्तितहस्ताभ्यां गरुडमुद्रा ७ संलग्नौ दक्षिणांगुष्ठाक्रान्तवामांगुष्ठौ पाणी नमस्कृतिमुद्रा ८ किंचिद्गर्भितौ हस्तौ समौ विधाय ललाटदेशयोजनेन मुक्ताशुक्तिमुद्रा ९ जानुहस्तोत्तमांगादिसंप्रणिपातेन प्रणिपातमुद्रा १०. संमुखहस्ताभ्यां वेणीबन्धं विधाय मध्यमांगुष्ठकनिष्ठिकानां परस्परयोजनेन त्रिशिखामुद्रा[1] ११ पराङ्मुखहस्ताभ्यामंगुलीः विदर्भ्य मुष्टिं बद्ध्वा तर्जन्यौ समीकृत्य प्रसारयेदिति भृंगारमुद्रा[2] १२ वामहस्तमणिबन्धोपरि पराङ्मुखं दक्षिणकरं कृत्वा करशाखा विदर्भ्य किंचिद्भ्रमचलनेनाधोमुखांगुष्ठाभ्यां मुष्टिं बद्ध्वा समुत्क्षिपेदिति योगिनीमुद्रा १३ ऊर्ध्वशाखं वामपाणिं कृत्वाऽङ्गुष्ठेन कनिष्ठिकामाक्रमयेदिति क्षेत्रपालमुद्रा १४. दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा कनिष्ठिकांगुष्ठौ प्रसार्य डमरुकवच्चालयेदिति डमरुकमुद्रा १५ दक्षिणहस्तेनोर्ध्वांगुलिना पताकाकरणादभयमुद्रा १६ तेनैवाधोमुखेन वरदमुद्रा १७ वामहस्तस्य मध्यमांगुष्ठयोजनेन अक्षसूत्रमुद्रा १८ पद्ममुद्रैव प्रसारितांगुष्ठसंलग्नमध्यमांगुल्यग्रा बिम्बमुद्रा १९। एता सामान्यमुद्राः।

दक्षिणांगुष्ठेन तर्जनीं संयोज्य शेषाङ्गुलीप्रसारणेन प्रवचनमुद्रा २० हस्ताभ्यां संपुटं कृत्वा अंगुली पद्मवत्विकास्य मध्यमे परस्परं संयोज्य तन्मूललग्नावंगुष्ठौ कारयेदिति मंगलमुद्रा २१ अजस्याकारहस्तस्योपरिहस्तं आसनमुद्रा २२. वामकरधृतदक्षिणकरसमालम्भने अंगमुद्रा २३ अन्योऽन्यान्तरिताङ्गुलिकोशाकारहस्ताभ्यां कुक्ष्युपरि कूर्परस्थाभ्यां योगमुद्रा २४ उभयो करयोरनामिकामध्यमे परस्परानभिमुखे ऊर्ध्वीकृत्य मीलयेच्छेषांगुली पातयेदिति पर्वतमुद्रा २५ करस्य परावर्तनं विस्मयमुद्रा २६ अंगुष्ठस्पृष्टेतरांगुल्यग्रायास्तर्जन्या ऊर्ध्वीकारो नादमुद्रा २७ अनामिकयांगुष्ठाग्रस्पर्शनं बिन्दुमुद्रा २८।

॥ इति मुद्राविधिः ॥ ३७ ॥

§११० वाराही १ वामनी २ गरुडी ३ इन्द्राणी ४ आग्नेयी ५ याम्या ६ नैर्ऋती ७ वारुणी ८ वायव्या ९ सौम्या १० ईशानी ११ ब्राह्मी १२ वैष्णवी १३ माहेश्वरी १४ विनायकी १५ शिवा १६ शिवदूती १७ चामुंडा १८ जया १९ विजया २० अजिता २१ अपराजिता २२ हरसिद्धि २३ कालिका २४ चंडा २५ सुचंडा २६ कनकनंदा २७ सुनंदा २८ उमा २९ घंटा ३० सुघंटा ३१ मांसप्रिया ३२ आशापुरा ३३ लोहिता ३४ अंबा ३५ अस्थिभक्षी ३६ नारायणी ३७ नारसिंही ३८ कौमारी ३९ वामरता ४० अंगा ४१ वंगा ४२ दीर्घदंष्ट्रा ४३ महादंष्ट्रा ४४ प्रभा ४५ सुप्रभा ४६ लंबा ४७

---

1 A त्रिशिखिमुद्रा। 2 B भृगमुद्रा।

लम्बोष्ठी ४८ भद्रा ४९ सुभद्रा ५० काली ५१ रौद्री ५२ रौद्रमुखी ५३ कराली ५४ विकराली ५५ साक्षी ५६ विकटाक्षी ५७ तारा ५८ सुतारा ५९ रजनीकरा ६० रजनी ६१ श्वेता ६२ भद्रकाली ६३ क्षमाकरी ६४ ।

चतुःषष्टि समाख्याता योगिन्यः कामरूपिकाः ।
पूजिताः प्रतिपूज्यन्ते भवेयुर्वरदाः सदा ॥

अमु श्लोकं पठित्वा योगिनीभिरधिष्ठिते क्षेत्रे पट्टकादिषु नामानि टिक्कानि वा विन्यस्य नामोच्चारण-पूर्वं गन्धाद्यैः पूजयित्वा नन्दिप्रतिष्ठादिकार्याण्याचार्य कुर्यात् ।

॥ चउसट्ठिजोगिणीउवसमप्पयारो ॥ ३८ ॥

*

§ १११. सो य अहिणवसूरी तित्थजत्ताए सुविहियविहारेण कयाइ गच्छइ, अववायओ संघेणावि सम वच्चइ । सो य संघो सघवइप्पहाणो त्ति तस्स किंच भण्णइ । तत्थ जाइकम्माइअदूसिओ उचियण्णू राय-सम्मओ नाओवज्जियदविणो जणमाणणिज्जो पुज्जपूयापरो जम्म-जीविय-वित्ताण फल गिण्हिउकामो सोहणतिहीए गुरुपायमूले गतूण अप्पणो जत्तामणोरह विन्नवेज्जा । गुरुणा वि तस्स उववूहण काउ तित्थ-जत्ताए गुणा दसेयव्वा । ते य इमे —

अन्नोन्नसाहु-सावयसामायारीइ दंसणं होइ ।
सम्मत्तं सुविसुद्धं हवइ हु तीए य दिट्ठाए ॥ १ ॥
तित्थयराण भयवओ पवयण-पावयणि-अइसइड्ढीणं ।
अभिगमण-नमण-दरिसण-कित्तण-संपूयण थुणण ॥ २ ॥
सम्मत्तं सुविसुद्धं तु तित्थजत्ताइ होइ भव्वाणं ।
ता विहिणा कायव्वा भवेहिं भवविरत्तेहिं ॥ ३ ॥

तित्थ च तित्थयरजम्मभूमिमाइ । जओ भणियं आयारनिज्जुत्तीए —

जम्माभिसेय-निक्खमण-चरण-नाणुप्पया य निव्वाणे ।
तियलोय-भवण-वतर-नंदीसर-भोमनगरेसु ॥ ४ ॥
अट्ठावय-उज्जिंते गयग्गपयए य धम्मचक्के य ।
पासरहावत्तनगं चमरुप्पाय च वंदामि ॥ ५ ॥

एव गुरुणा वड्ढिउच्छाहो पत्थाणदिणनिच्छय काऊण बहुमाणपुव्व साहम्मियाण जत्ताए आहवणत्थ लेहे पट्ठविज्जा । तओ वाहण-गुलहणी-कोस-पाइक्क-जुगजुत्ताइ-सगडग-सिप्पिवग्ग-जलोवगरण-छत्त-दीवियाधारि-सूवार-धन्न-भेसज्ज-विज्जाइसंगह चेइयसंघपूयत्थ चदण-अगरु-कप्पूर कुकुम-कत्थूरी-वत्थाइसंगह च काउ, सुमुहुत्ते जिणिंदस्स ण्हवण पूय च काऊण, तप्पुरओ निसन्नस्स तस्स सुपुरिसस्स गुरुणा संघाहिवचदिक्खा दायव्वा । तओ दिसिपालाण मतपुव्वं बलि दाउ मतमुद्दापुव्व पुप्फवासाइपूइए रहे मह-सवेण देव सयमेव आरोविज्जा । तओ गुरु पुरो काउ सघसहिओ चेइआइ वदिय कवडिजक्ख-अनाइ-सम्मदिट्ठिदेवयाण काउस्सग्गे कुज्जा । खुद्दोवद्दवनिवारणमतज्झाणपरेण गुरुणा तस्स अब्भितरं कवय आउहाणि य कायव्वाणि । तओ जयजयसद्दयवरमगलज्झुणिमीसेहिं तूरनिग्घोसेहिं अवर बहिरेंतो दाण-सम्माणपूरियपणयजणमणोरहो पुरपरिसरे पत्थाणमगल कुज्जा । तओ णाणाठाणागए साहम्मिए सक्कारिय

तेसिं पूय पडिच्छियं सहजत्तिए धणेहिं धणत्थिणो वाहणेहिं वाहणत्थिणो सहाएहिं असहाए पीणतो, पदि-
गायणाई असण वसण-दविणेहि तोसंतो, मग्गे चेइयाइ पूयतो भग्गाणि य उद्धरंतो, तक्कम्मकारिसु वच्छल्ल
कुणतो, तक्कज्जाइ चिंततो, दुत्थियधम्मिए सक्कारतो, दाणेण दीणे पमोयतो, भीयाणमभय देंतो, बधणट्ठिए
मोयतो, पक्कमग्ग भग्ग च सगडाइय सिप्पीहिं उद्धारेंतो, छुहिय-तिसिय-वाहिय-खिन्ने अन्न-जल-भेसज्ज-वाह-
णेहिं सुत्थी कुणतो, धम्मियजणाण खुद्दोवद्दवे निवारेंतो, जिणपवयण पभावेंतो, बमचेरतवजुत्तो तित्थाइ
पाविऊण सत्तीए उववासं काउ ण्हाओ कयबलिकम्मो परिहियसुद्धनेवत्थो पुप्फवासकुकुमाइमीसेण तित्थो-
दगेण कलसे भरित्ता, संघ गधवियवग्ग च कुकुमचदणाईहिं चच्चित्ता, अब्भुयदसविमाणाइविभूईए
मूलनायगस्स ण्हवण काउ, जगई जिणबिंबाइ वेयावचगरे य ण्हविता, तओ पचामयण्हवण काउं चदण-
कत्थूरीकप्पूराईहिं विलेवण सुवण्णाभरणमल्लवत्थाईहिं अचण कप्पूरागरुपभिईहि धूवण पिक्खणय महद्ध-
यारोवण चलिरचमरभिंगारनलधाराकुकुमवुट्ठिविसिट्ठ कप्पूरारत्तियं च काउ, देवे वदिज्जा । तओ देवसेवए
सक्कारिय अट्ठाहिय अवारियसत्त वहाविज्जा । तओ मुहोग्घाडणे मालाउग्घडणे अक्खयनिहिकरेवे भूमिम-
ज्झाइनिक्कए य देवस्स कोसं सवड्ढिय दीणाई अणुकपिय तिलोयनाह पूइय सगग्गरगिरं आपुच्छिय पुणो
दसण मग्गिय पणमिय सहजत्तिए सक्कारिय तित्थे अणुज्झायतो पडिनियत्तिज्जा । कमेण सनगर पत्तो
महया ऊसवेण रहसालाए देवालय पवेसिय पडिम गेहमाणिज्जा । तओ साहम्मिय-मित्त-नाइ-नागराई भोयणा-
ईहि सम्माणिय सघ पूइज्जा । तओ गुरुणा देसणा कायव्वा । जहा—

त अत्थ तं च सामत्थ तं विन्नाणं सुउत्तम ।
साहम्मियाण कज्जम्मि ज विचति सुसावया ॥ १ ॥
अन्नन्नदेसाण समागयाणं अन्नन्नजाईइ समुब्भवाण ।
साहम्मियाण गुणसुट्ठियाण तित्थकराण वयणे ठियाण ॥ २ ॥
वत्थन्नपाणासणखाइमेहिं पुप्फेहिं पत्तेहिं य पुप्फलेहिं ।
सुसावयाण करणिज्जमेयं कय तु जम्हा भरहाहिवेण ॥ ३ ॥
राया देसो नगर त भवण गिहवई य सो धन्नो ।
विहरन्ति जत्थ साहू अणुग्गहं मन्नमाणाण ॥ ४ ॥
इणमेव महादाण एय चिय सपयाण मूल ति ।
एसेव भावजन्नो ज पूया समणसघस्स ॥ ५ ॥

तओ सो सघवई सिद्धताइपुत्थलेहणत्थ नाणकोसं साहारणसंवलय च संवद्धारिज्ज त्ति ॥

॥ तित्थजत्ताविही समत्तो ॥ ३९ ॥

§ ११२ **सपय तिहिविही**—पक्खिय-चाउम्मासिय-अट्ठमि-पचमी-कल्लाणयाइतिहीसु तवपूयाईए उदइ-
यतिही अप्पयरभुत्तावि घेतव्वा न बहुतरभुत्ता वि इयरा । जया य पक्खियाइपव्वतिही पडइ तया पुव्वतिही
चेव तब्भुत्तिबहुला पच्चक्खाणपूयाइसु घिप्पइ न उत्तरा । तब्भोगे गधस्स वि अभावाओ । पव्वतिहिवुड्ढीए
पुण पढमा चेव पमाण संपुण्ण त्ति काउ । नवर चाउम्मासिए चउद्दसीहासे पुण्णिमा जुज्जइ । तेरसीगहणे
आगमआयरणाण अन्नयर पि नाराहिय होज्जा । संवच्छरिय पुण आसाढचाउम्मासियाओ नियमा पण्णासइमे
दिणे कायव्व, न इक्कपचासइमे । जया वि लोइयटिप्पणयाणुसारेण दो सावणा दो भद्दवया भवति,-

तया वि पण्णासइमे दिणे, न उण कालचूलाविक्खाए असीइमे । 'सवीसइराए मासे वइक्कते पज्जोसवेंति'त्ति वयणाओ । जं च 'अभिवड्ढियंमि वीसं'त्ति वुत्तं तं 'जुगमज्झे दो पोसा जुगअंते दोन्नि आसाढ'त्ति सिद्धंतटिप्पणयाणुरोहेण चेव घडइ । ते य संपयं न वट्टंति त्ति जहुत्तमेव पज्जुसणादिणं ति सामायारी ।

॥ इति तिहिविही ॥ ४० ॥

§ ११३. संपयं अंगविज्जासिद्धिविही जहासंपदायं भण्णइ । भगवइए अंगविज्जाए सट्ठिअज्झायमईए महापुरिसदिण्णाए भूमिकम्मविज्जा किण्हचउद्दसीए चउत्थं काऊण गहियव्वा । तीए उवयारो उवरुक्खच्छायाए उवविसिय मासाइकालं जाव अट्ठमभत्तेण खीरन्नपारणेण उडिदिलाइ आहारेण वा कायव्वो ॥ १ ॥ तओ अन्ना विज्जा छट्ठेण गहिया अहयवत्थेण कुससत्थरोवविट्ठेण छट्ठभत्तं काउं अट्ठसयजावेण साहियव्वा ॥ २ ॥ अवरा य छट्ठेण गहिया अट्ठमभत्तेण अट्ठसयं जावेण साहियव्वा ॥ ३ ॥ एवं साहिओ दंडपरीहारविज्जं पउंजिउं चउव्विहाहारनिसेहं काउं एगंते पवित्तदेसे इत्थीणं अदंसणट्ठाणे तिकालं आमकप्पूरेण पुत्थयं पूइय अगरुधूवमुग्गाहिय मण-वयण-कायसुद्धबंभचेरपरायणो पवित्तदेहवत्थो इत्थीणं मुहं मणवलोइंतो तासिं सद्दं च असुणिंतो तइयअज्झायउवक्खायगुणगणालंकिओ गुरुसमीवे सयं वा अविच्छिन्नं मुहपोत्तियाठइयमुहकमलो वाइज्जा । एवं सिद्धा सती भगवई अंगविज्जा एगूणसोलसआएसे अवितहे करिज्ज त्ति । अविहिवायणे उम्मायाई दोसा परमपुरिसाण च आसायणाकया होइ त्ति ।

विहिणा पुण आराहिय एयं सिज्झंत अवितहाएसो ।
छउमत्थो वि हु जायइ भुवणेसु जिणप्पभायरिओ[1] ॥

अंगविज्जाराहणाविही सिद्धंतियसिरिविणयचंदसूरिउवएसाओ लिहिओ ।

॥ अंगविज्जासिद्धिविही ॥ ४१ ॥

*

सम्म[1]-गिहिवय[2]-समइयारोवण[3]-तग्गहण[4]-पारणविही य[5] ।
उवहाण[6]-मालरोवणविहि[7]-उवहाणप्पइट्ठा य[8] ॥ १ ॥
पोसह[9]-पडिकमण[10]-तवाइ[11]-नंदिरयणाविही[12] सखुड्डुत्तो ।
पव्वज्जा[13] लोयविही[14] उवओगा[15]-इल्लअडणविही[16] ॥ २ ॥
मंडलितव[17]-उवठावण[18]-जोगविही[19]-कप्पतिप्प[20]-वायणया[21] ।
कमसो वाणायरिओ[22]-वज्झाया[23]-यरियपयठवणा[24] ॥ ३ ॥
महयर[25]-पवत्तिणिपयट्ठवण[26]-गणाणुन्न[27]-अणसणविही य[28] ।
महपारिट्ठावणिया[29] पच्छित्तं[30] साहु-सड्ढाण ॥ ४ ॥
जिणबिंबपइट्ठाविहि[31]-कलस[32]-धयारोवणं[33] च सपसंगं ।
कुम्मपइट्ठा[34] जंतं[35] ठवणायरियप्पइट्ठाओ[36] ॥ ५ ॥
मुद्दाविही[37] य चउसट्ठिजोगिणीउवसमप्पयारो य[38] ।
जत्ताविहि[39]-तिहिविहि[40]-अंगविज्जसिद्धि[41] त्ति इह दारा ॥ ६ ॥

*

1 'जिनप्रभाइत' इति टिप्पणी ।

अथ ग्रन्थप्रशस्तिः।

बहुविहसामायारीओ दट्ठु मा मोहमिंतु सीस त्ति।
एसा सामायारी लिहिया नियगच्छपडिबद्धा ॥ ७ ॥
आगमआयरणाहिं ज किंचि विरुद्धमित्थ मे लिहियं।
त सोहिंतु सुयधरा अमच्छरा मइ किव काउं ॥ ८ ॥
जिणदत्तसूरिसंताणतिलयजिणसिंहसूरिसीसेण।
गुत्ति-रस[3]-किरियैठाणप्पमिए[13] विक्कमनिवइवरिसे ॥ ९ ॥
विजयदसमीइ एसा सिरिजिणपहसूरिणा समायारी।
सपरोवयारहेउं समाणिया कोसलानयरे ॥ १० ॥
सिरिजिणवल्लह-जिणदत्तसूरि-जिणचंद-जिणवइमुणिंदा।
सुगुरुजिणेसर-जिणसिंहसूरिणो मह पसीयतु ॥ ११ ॥
वाइयमयलसुएण वाणायरिएण अम्ह सीसेण।
उदयाकरेण गणिणा पढमायरिसे कया एसा ॥ १२ ॥
जीए पसायाओ नरा 'सुकई सरसत्थवल्लहा' हुंति।
सा सरसई य पउमावई य मे दितु सुयरिद्धिं[1] ॥ १३ ॥
ससि-सूरपईया जाव भुवणभवणोदर पभासेंति।
एसा सामायारी सफलिज्जउ ताव सूरीहिं ॥ १४ ॥
पच्चक्खरगणणाए पाएण कय पमाणमेईए।
चउरुत्तरी समहिया पणतीससया सिलोयाणं ॥ १५ ॥
विहिमग्गपवा नामं सामायारी इमा चिरं जयइ।
पल्हायती हियय सिद्धिपुरीपंथियजणाण ॥ १६ ॥

॥ अङ्कतोऽपि ग्रन्थाग्रं ३५७४ ॥

*

॥ इति विधिमार्गप्रपा सामाचारी संपूर्णा ॥

---

1 सुकवय सरसार्थवल्लभा, पक्षे प्रकृतिन इक्षुरसार्थं वल्लभा। 2 श्रुत सुताश्च शिष्याः।

परिशिष्टम् ।

श्रीजिनप्रभसूरिकृतो

दे व पू जा वि धिः ।

सपय जहासपदाय देवपूयाविही भण्णइ—तत्थ सावओ बंभमुहुत्ते पंचनमोक्कारं सुमरंतो सिज्जं मुत्तूण अप्पणो कुलधम्मवयाइ समरिय, सरीरचिंताइ काऊण, फासुएण अफासुएण वा गलियजलेण देसओ 5 सव्वओ वा ण्हाणं काऊण, कडिल्लवत्थं चइय परिहियधोयवत्थजुयलो निसीहियातिगपुव्वं घरदेवालए पविसेज्जा । तत्थ मुह-कर-चरणपक्खालणं देसण्हाणं, सिरमाइसव्वंगपक्खालणं सव्वण्हाणं । तओ भगवओ आलोयमित्तो चेव भालयले अंजलिमउलियग्गहत्थो 'नमो जिणाणं' ति पणामं काउं जय जय सद्दं भणिय मुहकोसं काऊण, गिहपडिमाओ निम्मल्लमवणित्तु उवउत्तो लोमहत्थयाइणा निमज्जिय, जलेण पक्खालिय सरससुरहिचंदणेण देवस्स दाहिणजाणु–दाहिणखंध–निलाड–वामखंध–वामजाणुलक्खणेसु पंचसु, 10 हियएण सह छसु वा अंगेसु पूयं काऊण पच्चग्गकुसुमेहिं च पूइय, तओ वामहत्थेण घंटं वाइयंतो दाहिणकरगहियधूवकडुच्छुओ कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-मलयजमीससुगंधधूवं देवस्स पुरोभागाढारब्भ 'असुरिंदसुरिंदाणं' इच्चाइधूमावलीगाहाजो पढंतो सिट्ठीए दसदिसं उग्गाहिय पुरो धारेइ । तओ चंदणवासक्खयाहिं वासिय कुसुमंजलिं करयलसंपुडेण गिण्हित्ता 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' इति भणिय, 'ओमरणे जिणपुरओ' इच्चाइवित्तेण देवस्स उवरिं खिवेइ । तओ 'लोणत्त'इच्चाइवित्त 15 *पढतो सिट्ठीए ओयारिय दाहिणपासधरियपडिग्गहियाठियजलम्मि खिवेइ । एवं अन्ने वि दो वारे निव्वुणेइ ।* तओ धाराघडियाओ जलं घेत्तूण 'उवणयपयपंकयस्स' इच्चाइवित्ततिगेण तेणेव कमेण भगवओ ओयारिय तहेव जलम्मि खिवेइ । तओ थालयस्स उवरिं पंच-सत्ताइविसमवट्टिजोहियदीवमीढावमालियमारत्तियं दोहिं हत्थेहिं गहिय 'गीयत्थगणाइण्ण' इच्चाइवित्ततिगं भणिय वारे तिण्णि आरत्तियमुत्तारेइ । एगो य दाहिणपासट्ठिओ आरत्तियंमि उत्तरंते तिण्णिवारे जलधाराओ पडिग्गहियाठियजलम्मि देइ । अन्ना- 20 भावे आरत्तियउत्तारणाणंतरं सयमेव वा धाराओ देइ । उत्तरंते आरत्तिए उभओ पासेसु सावयनियचेलंचलेहिं चामरेहिं वा भगवओ चामरुक्खेवं कुणंति । एयं च लवणाइउत्तारणं पालित्तयसूरिमाइपुव्वपुरिसेहिं सहारेण अणुण्णायं नि संपयं सिट्ठीए कारिज्जइ । निम्ममो खु गद्धुरियापवाहो । तओ पडिग्गहियाठियखारजलाइं बाहिं उज्झिय थालियं पक्खालिय, तत्थ चंदणेण सत्थियं नंदावत्तं वा काउं तस्सुवरिं पुप्फक्खयवासे खिविय ओसग्गओ अविहवनारीजोहियं तदभावे सयं वा पजोहियं रत्तवट्टि-मंगलदीवियं 25 ठाविय चंदणपुप्फवासाईहिं पूइय मंगलछप्पयाइं पढणाणंतरं 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो०' इच्चाइ भणिय, 'जेणेगो जिणनाहो' इच्चाइवित्ततिगं पढित्ता मंगलदीवं उज्जालिय, सव्वेसु तदुवरिं कुसुमाइ खिवंतेसु पंचसद्दे वज्जंते अभिमंतो भगवओ पुरो धारेइ । तओ सक्कत्थयं भणित्ता वासक्खेवं काउं मंगलदीवयमुज्जालिय एगदेसे मुंचइ, न उण आरत्तियं व झिवेइ त्ति—घरपडिमापूया[विही]समत्तो ॥ १ ॥

*

पुणो नियविहविच्छेय रक्खतो ण्हाओ सविसेसं वत्थाभरणाइ सिंगार काऊण परियणपरियरिओ सुरहिधूवअक्खयकुसुमचंदणफलाइपूयादव्वो महिड्ढीए जिणिंदभवणे गच्छइ । तस्स सीहदुवारदेसे का-चरण-मुहसोय काउ सच्चित्तदव्वाईणि पुप्फ-तंबोल-हय गयमाईणि अच्चित्तदव्वाणि य मउड-छुरिया-खग्ग-छत्तो-वाणह-चामर-जपाणाईणि मुत्तूण एगसाडिय उत्तरासंग काउ अग्गदुवारमज्झदेसेसु कमेण उदारसद्द तिन्नि निसीहीओ उच्चरतो जगगुरुणो आलोए चेव भालयलमिलियकरकमलमउलजुयलो 'नमो जिणाण'ति भणिय जयसद्दमुहलो जिणभवण पविसइ । एगसाडिय नाम असीवियमखडिय च, एव च एग हिट्ठिल्लवत्थ एग च उवरिमवत्थ ति वत्थजुयलेण धोवत्तिया कीरइ । न उण पुव्वदेसिच्चयाण पिव अइ(द्ध')उवय ति रूढ एगमेव वत्थ उवरिं हिट्ठा य जिणभवणे हुज्ज त्ति । न य कचुय विणा मणुयपाउयगा वा साविया जिण-गुरुभवणेसु वच्चइ त्ति, अल पसगेण । तओ देवस्स दाहिणबाहाओ आरब्भ तिन्नि पयाहिणाओ देइ । पयाहिण च दिंतो जया देवस्स अग्गे उवणमइ तया पणाम करेइ । एव तिण्हि पणामे करेइ । तओ नाण-दसण-चारित्तपूयाहेउ अक्खयमुट्ठितिग सेढीए देवस्स पुरओ अक्खयपट्टाइसु फलसहिय मुचइ । तओ कयमुहकोसो पुव्वुत्तनिम्मल्लावणयणनिमज्जणाइविहिणा एगग्गमणो मगलदीवपज्जत पूय करेइ । नवर जहासभव सव्वजिणबिंबाण सम्मदिट्ठिदेवयाण च करेइ । तओ उक्कोसेण देवाओ सट्ठिहत्थमित्ते जहण्णेण नवहत्थमित्ते मज्झिमओ अतराले उचियअवग्गहे ठाऊण तिक्खुत्तो वत्थाइ पमज्जिय भूमिभागे छउमत्थ-समोसरणत्थ मुक्खत्थ रूवावत्थातिग भावितो जिणबिंबे निवेसियनयणमाणसो पए पए सुत्तत्थसुद्धिपरायणो जहाजोग मुद्दातिय पउजतो उक्कोस-मज्झिम-जहण्णाहि चीवदणाहि जहासंपत्ति देवे वदइ । तासिं च विभागो इमो—

नवकारेण जहण्णा दडथुइजुयलमज्झिमा नेया ।
उक्कोसा चीवदण सक्कत्थयपचनिम्माया ॥ १ ॥

तत्थ नवकारो सीसनमणमेत्त पचगपणिवाओ वा । अहिगयजिणस्स गुणथुइरूव-सिलोगाइरूवो वा नमोकारो तेण जहण्णा चीवदणा होइ । तहा दडगो सक्कत्थयरूवो, थुई य थुइसरूवा एएण जुगलेण मज्झिमा चीवदणा । अहवा—दडगो 'अरिहतचेइआण करेमि काउस्सग्ग' इच्चाइ । तओ काउस्सग्ग अट्ठोस्सास काउ पारिय एगा थुई दिज्जइ । पणिहाणगाहाओ य मुत्तासुत्तीए पढिज्जति । इत्थमवि मज्झिमा हवइ । अहवा—इरियावहिय पडिक्कमिय वत्थतेण भूमिं पमज्जिय तत्थ वामजाणु अचिय दाहिणजाणु धरणितले साहट्टु जोगमुद्दाए सिलोगाइरूव नमोक्कार पढिय, 'नमोत्थुण' इच्चाइ पणिवायदडग भणिय, पच्छा पमज्जिय उट्ठिय जिणमुद्द विरइय 'अरहतचेइआण'ति ठवणारिहतत्थयदडग पढिय, अट्ठोस्सास काउस्सग्ग करिय, अरिहतनमोक्कारेण पारिय, अहिगयजिणथुइ दाउ 'लोगस्सुज्जोयगरे' इच्चाइ नमोरिहतत्थयदडग पढित्ता 'सव्वलोए अरहतचेइआण'ति दडग भणिय तहेव उस्सग्गे कए, पारिय सव्वजिणथुई दिज्जइ । तओ 'पुक्खरवरदीवड्ढे' इच्चाइ सुयत्थव पढित्ता 'सुयस्सभगवओ करेमि काउस्सग्ग वदणवत्तीयाए' इच्चाइ भणिय, तहेव उस्सग्गे कए पारिए य सिद्धत्थुई दिज्जइ । 'तओ सिद्धाण बुद्धाण' इच्चाइ सिद्धत्थव पढिऊण 'वेयावच्चगराण' इच्चाइ भणित्तु तहेव उस्सग्गे कए पारिए य सरस्सई-कोहडिमाइवेयावच्चगराण थुई दिज्जइ । इत्थ पम्म-चउ थयथुइओ 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इच्चाइ भणिऊण दिज्जति, इत्थीओ य एय न भणति । तओ जाणूर्हि ठाउ जोडियहत्थो सक्कत्थय दडग भणित्तु, पचगपणिवाए कए 'जावति चेइआइ' इच्चाइ गाह पढित्ता, खमासमण दाउ 'जावत के वि साहू' इच्चाइ गाह भणिय, 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इच्चाइ पढिय, जोग-मुद्दाए मदाकविविरइय गभीरत्थ अट्ठमरस्सलक्खणोवरत्तसरीरपरीसहोवसग्गसहणाइकिरियाइगुणवण्णणा-

कलिय पावय निवेयणगब्भ पणिहाणसार विचित्तसद्दत्थ पवरथोत्त भणित्ता, मुत्तासुत्तिमुद्दाए 'जयवीयराय' इच्चाइ पणिहाणगाहादुग पढइ । तओ आयरियाइ वंदिज्ज त्ति । इत्थ पक्खे दंडगा पंच, थुईओ चत्तारि एएण जुयलेण मज्झिम त्ति नेय ।

चत्तारि अंगुलाइ पुरओ ऊणाइं जत्थ पच्छिमओ ।
पायाणमंतरालं एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १ ॥
अन्नोन्नंतरि अंगुलि कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं ।
पिट्टोवरि कुप्परसंठिएहिं तह जोगमुद्द त्ति ॥ २ ॥
मुत्तासुत्तिमुद्दा समा जहिं दो वि गब्भिया हत्था ।
ते पुण निलाडदेसे लग्गा अन्ने अलग्ग त्ति ॥ ३ ॥

एसा वि मज्झिमा चीवंदणा । उक्कोसा पुण सक्कत्थयपणगेण । सा चेव—पढम सिलोगाइरूवे नमोक्कारे भणित्ता, सक्कत्थय भणिय उट्ठिय इरियावहिय पडिक्कमिय, पुन्न य नमोक्कारे सक्कत्थय च भणिय उट्ठिय, 'अरहंतचेइआण' इच्चाइदंडगेहिं पुणरवि चउरो थुई दाउ पुणो सक्कत्थय पढिय 'जावंति चेइआइ' इच्चाइ गाहादुगं भणित्ता 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इच्चाइभणणपुव्व, थोत्त भणिय पुणो सक्कत्थय पढिय पणिहाणगाहादुग तहेव भणइ त्ति चीवंदणाविही ।

एवमन्नयराए चीवंदणाए देवे वंदिय तओ आयरियाईण खमासमणे, देवस्स पुरओ गीयनाइयनट्टाइभावपूय काऊण दट्ठूण वा चेइयवंदणत्थमागएसु विहिए वंदिय, सइ पत्थावे तेसिं समीवे धम्मोवएस सुणिय, जिणभवणकज्जाणि देवदव्वस्स य तत्ति काऊण, धोवत्तिय मुत्तूण, सुकयत्थमप्पाण मन्नतो पूयासु कयमणुमोइतो जहोचिय दीणदाण दितो नियघरमागच्छिज्जा । तओ वाणिज्जाइववहार काउ, भोयणकाले तहेव घरपडिमाओ पूइय, तासिं पुरो निवेज्ज ढोइय, तओ वसहिं गंतु फासुयएसणिज्जेण भत्तपाणओसहभेसज्जवत्थपत्ताइणा अणुग्गहो कायव्वो त्ति खमासमण दाउ आगम्म सुनिहियाण संविभाग काउ, अब्भिंतरबाहिरं परिवार गवाइय च संभालिय, तेसिं अन्नपाणाइचिंत्त काउ सय भुंजिज्जा । तओ घरवाणिज्जाइवावार काउं, दिणट्ठमभागे वियाले पुणरवि भुंजिय, पुणरवि घरे वा जिणहरे वा पूय पुव्वभणियनीईए करेइ । नवर तत्थ चंदणपूय न करेज्ज त्ति ।

जो उण निवाणकलियाए पूयाविही दीसइ सो तारिसं नाणविन्नाणकुलसंपहाणपुरिसमविक्खं दट्ठव्वो, न उण सव्वसामन्नो त्ति न इत्थ भण्णइ ।

पूया य दुविहा निच्चा नेमित्तिया य । तत्थ निच्चा पइदिणकरणिज्जा सा य भणिया । नेमित्तिया पुण अट्ठमि-चउद्दसि-कल्लाणतिहि-अट्ठाहिया-संवच्छरियाइपव्वभाविणी । सा य ण्हवणपहाणा, अओ सपय ण्हवणविही दंसिज्जइ । सा य सक्कयभासाबद्धगीइक्ख-अज्जयाबद्धवित्तबहुल त्ति सक्कयभासाए चेव लिहिज्जइ—

तत्र प्रथमं पूर्वोक्तस्नात्रादिक्रमेण देवगृह प्रविश्य धौतपोतिका परिधाय, देवस्य धूपवेला धूमावलीपुष्पाञ्जलिलवणजलारात्रिकावतारणमङ्गलदीपोद्भावनारूपां कृत्वा शक्रस्तव भणित्वा, साधूनभिवन्द्य, स्नपनपीठ प्रक्षाल्य, चन्दनेन तत्र स्वस्तिक निधाय, पुष्पवासादिमिश्र सपूज्य, प्रतिमाया अग्रतः स्थित्वा, सविशेषकृतमुखकोशो 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य' इति भणनपूर्वं 'श्रीमत्पुण्य पवित्र'-मित्यादिवृत्तपञ्चक पठित्वा, स्नपनपीठस्योपरि कुसुमाञ्जलिं स्नपनकार क्षिपेत् । स्नपनकाराश्च वृषादयो द्वात्रिंश-

पुणो नियविचिच्छेय रक्खतो ण्हाओ सविसेसं वत्थाभरणाइ सिंगारं काऊण परियणाइसमण्णिओ सुरहिधूवअक्खयवरसयकुसुमचंदणफलाइपूयादव्वो महिड्ढीए जिणिंदभवणं गच्छइ । तस्स सीहदुवारदेसे का-
चरण-मुहसोयं काउं सचित्तदव्वाईणि पुप्फ-तंबोल-हय गयमाईणि अचित्तदव्वाणि य मउड-छुरिया-खग्ग-छत्तो-
वाणह-चामर-जपाणाईणि मुत्तूण एगसाडियं उत्तरासंगं काउं अग्गदुवारमज्झदेसेणं कमेण उत्तरसद्द तिन्नि
निसीहीओ उच्चरंतो जगगुरुणो आलोए चेव भालयलमिलियकरकमलमउलजुयलो 'नमो जिणाणं'ति
भणिय जयमङ्गमुहलो जिणभवणं पविसइ । एगसाडियं नाम असीवियमसाडियं च, एवं च एगं हिट्ठि-
वत्थं एगं च उवरिमवत्थं ति वत्थजुयलेण धोवत्तिया कीरइ । न उण पुव्वदेसिच्चयाण विव अद्ध(द्दं)ड्ढ-
यं ति रूढं एगमेव वत्थं उवरिं हिट्ठा य जिणभवणे जुज्जं ति । न य कंचुयं विणा मणुस्सयपुज्जगी वा
साविया जिण-गुरुभवणेसु वच्चइ त्ति, अलं पसंगेण । तओ देवस्स दाहिणबाहाओ आरब्भ तिण्णि पया-
हिणाओ देइ । पयाहिणं च दिंतो जया देवस्स अग्गे उवणमइ तया पणामं करेइ । एवं तिण्हि पणामे
करेइ । तओ नाण-दंसण-चारित्तपूयाहेउं अक्खयपुंजतिगं सेढीए देवस्स पुरओ अक्खयपट्टाइसु फलसहियं
मुंचइ । तओ कयमुहकोसो पुव्वुत्तनिम्मलण्हाणयणनिमज्जणाइविहिणा एगग्गमणो मगलदीवयपज्जंतं पूयं
करेइ । नवरं जहासंभवं सव्वजिणबिंबाणं सम्मद्दिट्ठिदेवयाण च करेइ । तओ उक्कोसेण देवाओ सट्ठि-
हत्थमित्ते जहण्णेण नवहत्थमित्ते मज्झिमओ अंतराले उचियअवग्गहे ठाऊण तिक्खुत्तो वत्थाइ पमज्जिय
भूमिभागे छउमत्थ-समोसरणत्थ मुक्खत्थ रूवावत्थातिगं भावितो जिणबिंबे निवेसियनयणमाणसो पए पए
सुत्तत्थसुद्धिपरायणो जहाजोगं मुद्दातियं पउंजतो उक्कोस-मज्झिम-जहण्णाहिं चीइवंदणाहिं जहासंपत्ति देवं
वंदइ । तासिं च विभागो इमो—

नवकारेण जहण्णा दंडथुइजुयलमज्झिमा नेया ।
उक्कोसा चीइवंदण सक्कत्थयपंचनिम्माया ॥ १ ॥

तत्थ नवकारो सीसनमणमेत्तं पंचंगपणिवाओ वा । अहिगयजिणस्स गुणथुइरूव-सिलोगाइरूवो
वा नमोक्कारो तेण जहण्णा चीइवंदणा होइ । तहा दंडगो सक्कत्थयरूवो, थुई य थुत्तसरूवा एएण जुयलेण
मज्झिमा चीइवंदणा । अहवा—दंडगो 'अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं' इच्चाइ । तओ काउस्सग्गं
अट्ठोस्सासं काउं पारिय एगा थुई दिज्जइ । पणिहाणगाहाओ य मुत्तासुत्तीए पढिज्जंति । इत्थमवि मज्झिमा
हवइ । अहवा—इरियावहियं पडिक्कमिय वत्थतेण भूमिं पमज्जिय तत्थ वामजाणुं अंचिय दाहिणजाणुं
धरणियले साहट्टु जोगमुद्दाए सिलोगाइरूवं नमोक्कारं पढिय, 'नमोत्थुणं' इच्चाइ पणिवायदंडगं भणिय, पच्छा
पमज्जिय उट्ठिय जिणमुद्दं विरइय 'अरहंतचेइआणं'ति ठवणारिहंतत्थयदंडगं पढिय, अट्ठोस्सासं काउस्सग्गं
करिय, अरिहंतनमोक्कारेण पारिय, अहिगयजिणथुइं दाउं 'लोगस्सुज्जोयगरे' इच्चाइ नमोरिहंतत्थयदंडगं
पढित्ता 'सव्वलोए अरहंतचेइआणं'ति दंडगं भणिय तहेव उस्सग्गे कए, पारिय सव्वजिणथुई दिज्जइ ।
तओ 'पुक्खरवरदीवड्ढे' इच्चाइ सुयत्थवं पढित्ता 'सुयस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तीयाए' इच्चाइ
भणिय, तहेव उस्सग्गे कए पारिए य सिद्धंतथुई दिज्जइ । 'तओ सिद्धाणं बुद्धाणं' इच्चाइ सिद्धत्थवं पढिऊण
'वेयावच्चगराणं' इच्चाइ भणितु तहेव उस्सग्गे कए पारिए य सरस्सई-कोहंडिमाइवेयावच्चगराण थुई
दिज्जइ । इत्थ पढम चउत्थथुइओ 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इच्चाइ भणिऊण दिज्जंति, इत्थीओ य एयं न भणंति ।
तओ जाणूहिं ठाउं जोडियहत्थो सक्कत्थयं दंडगं भणित्तु, पंचंगपणिवाए कए 'जावंति चेइआइं' इच्चाइ गाहं
पढित्ता, खमासमणं दाउं 'जावंत के वि साहू' इच्चाइ गाहं भणिय, 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इच्चाइ पढिय, जोग-
मुद्दाए महाकविविरइयं गंभीरत्थं अट्ठमहस्सलक्खणोववन्नसरीरपरीसहोवसग्गसहणाइकिरियाइगुणवण्णणा-

फलिय पावय निवेयणगब्भ पणिहाणसार निचित्तसद्दत्थ पवरथोत्त भणित्ता, मुत्तासुत्तिमुद्दाए 'जयवीयराय' इच्चाइ पणिहाणगाहादुग पढइ । तओ आयरियाइ वंदिज्ज त्ति । इत्थ पक्खे दंडगा पंच, थुईओ चत्तारि एएण जुयलेण मज्झिम त्ति नेय ।

चत्तारि अंगुलाइं पुरओ ऊणाइं जत्थ पच्छिमओ ।
पायाणमंतरालं एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १ ॥
अन्नोन्नंतरि अंगुलि कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं ।
पिट्टोवरि कुप्परसंठिएहिं तह जोगमुद्द त्ति ॥ २ ॥
मुत्तासुत्तिमुद्दा समा जहिं दो वि गब्भिया हत्था ।
ते पुण निलाडदेसे लग्गा अन्ने अलग्ग त्ति ॥ ३ ॥

एसा वि मज्झिमा चीवंदणा । उक्कोसा पुण सक्कत्थयपणगेण । सा चेव — पढम सिलोगाइरूवे नमोक्कारे भणित्ता, सक्कत्थय भणिय उट्ठिय इरियावहिय पडिक्कमिय, पुव्व य नमोक्कारे सक्कत्थय च भणिय उट्ठिय, 'अरहंतचेइआण' इच्चाइदंडगेहिं पुणरवि चउरो थुई दाउ पुणो सक्कत्थय पढिय 'जावंति चेइआइ' इच्चाइ गाहादुग भणित्ता 'नमोऽर्हत्सिद्धा॰' इच्चाइभणणपुव्व, थोत्त भणिय पुणो सक्कत्थय पढिय पणिहाणगाहादुग तहेव भणइ त्ति चीवंदणाविही ।

एवमन्नयराए चीवंदणाए देवे वंदिय तओ आयरियाईण खमासमणे, देवस्स पुरओ गीयवाइयनट्टाइभावपूय काऊण दट्ठूण वा चेइयवंदणत्थमागएसु विहिए वंदिय, सइ पत्थावे तेसिं समीवे धम्मोवएस सुणिय, जिणभवणकज्जाणि देवदव्वस्स य तत्तिं काऊण, घोनचिय मुत्तूण, सुकयत्थमप्पाण मन्नतो पूयासु कयमणुमोइंतो जहोचिय दीणदाण दिंतो नियघरमागच्छिज्जा । तओ वाणिज्जाइववहार काउ, भोयणकाले तहेव घरपडिमाओ पूइय, तासिं पुरो निवेज्ज ढोइय, तओ वसहिं गंतु फासुयएसणिज्जेण भत्तपाणओसहभेसज्जवत्थपत्ताइणा अणुग्गहो कायव्वो त्ति खमासमण दाउ आगम्म सुविहियाण संविभाग काउ, अब्भितरबाहिरं परिवार गवाइय च संभालिय, तेसिं अन्नपाणाइचिंत काउ सयं भुंजिज्जा । तओ घरवाणिज्जाइवावार काउ, दिणट्ठमभागे वियाले पुणरवि भुंजिय, पुणरवि घरे वा जिणहरे वा पूय पुव्वभणियनीईए करेइ । नवर तत्थ चंदणपूयं न करेज्ज त्ति ।

जो उण निव्वाणकलियाए पूयाविही दीसइ सो तारिसं नाणनिव्वाणकुलसंपहाणपुरिसमविक्ख वट्टव्वो, न उण सव्वसामन्नो त्ति न इत्थ भण्णइ ।

पूया य दुविहा निच्चा नेमित्तिया य । तत्थ निच्चा पइदिणकरणिज्जा सा य भणिया । नेमित्तिया पुण अट्ठमि-चउद्दसि-कल्लाणतिहि-अट्ठाहिया-संवच्छरियाइपव्वभाविणी । सा य ण्हवणपहाणा, अओ संपयं ण्हवणविही दंसिज्जइ । सा य सक्कयभासानिबद्धगीइकव्व-अज्झयानिबद्धविचित्तबहुल त्ति सक्कयभासाए चेव लिहिज्जइ —

तत्र प्रथमं पूर्वोक्तस्नानादिक्रमेण देवगृहं प्रविश्य धौतपोतिका परिधाय, देवस्य धूपवेलां धूमारलीपुष्पाञ्जलिलवणजलारात्रिकावतारणमङ्गलदीपोद्भावनारूपां कृत्वा शक्रस्तवं भणित्वा, साधूनभिवन्द्य, स्नपनपीठं प्रक्षाल्य, चन्दनेन तत्र स्वस्तिकं विधाय, पुष्पवासादिभिश्च संपूज्य, प्रतिमाया अग्रतः स्थित्वा, सविशेषकृतमुखकोशो 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' इति भणनपूर्वं 'श्रीमत्पुण्यं पवित्र'-मित्यादिवृत्तपञ्चकं पठित्वा, स्नपनपीठस्योपरि कुसुमाञ्जलिं स्नपनकाराः क्षिपेत् । स्नपनकाराश्च द्व्यादयो द्वात्रिंश-

दत्त्वा अधिरा स्तु । ततश्चलप्रतिमा स्नपनपीठे स्थापयेत् सम्या च प्रतिमाया जलधारा भ्रामयेच्चन्दनेन च पूजयेत् । तत शक्रस्तवभणन-साधुवन्दने कुर्यात् । स्थिरप्रतिमाना तु स्थानस्थितानामेव कुसुमाजल्यादिमर्च कर्तव्यम् । तत कुसुमाञ्जलिं गृहीत्वा **'ग्रोद्भूतभक्तिभर'**त्यादिवृत्तपञ्चक भणित्वा प्रतिमायास्त क्षिपेत् । ततो निर्माल्यमपनीय प्रतिमा प्रक्षाल्य पूजयेत् । तत **'सद्देया भद्रपीठे'** इत्यादिवृत्तद्वयेन कुसुमाञ्जलिं क्षिपेत् । तत सर्वौषधिं गृहीत्वा **'मुक्तालङ्कारे'**त्यार्यया पुष्पालङ्कारावतारणे कृते सर्वौषधिस्नान कारयेत् । ततः प्रक्षाल्य सपूज्य च प्रतिमाया **'भव्याना भवसागरे'** इतिवृत्तेन धूपमुत्क्षिपेत् । तत एकं पुष्प समादाय **'किं लोकनाथ'**ेति वृत्त भणित्वा उष्णीषदेशे पुष्पमारोपयेत् । तत कलशद्वय कलशचतुष्टयादि वा प्रक्षाल्य धूपपुष्पचन्दनवासाद्यैरधिवास्य कुङ्कुमकर्पूरश्रीखण्डादिसपृक्तसुरभिजलेन भृत्वा पिहितमुख पङ्क्ते चन्द्रनन्दनस्वस्तिके सस्थापयेत् । तत कुसुमाञ्जलिपञ्चक क्रमेण **'बहलपरिमले'**त्यादि मात्रावृत्तपञ्चक पठित्वा क्षिपेत् । नवरमाद्यान्त्यवृत्तयोर्नमोऽर्हत्सिद्धेत्यादि भणेत् । वृत्तान्ते तु शङ्खभेरीझल्लर्यादिठणत्कार मन्द्र दधु शाङ्खिकाद्या कलशान् भृत्वा कुसुमाञ्जलिपञ्चक क्षिपेत्, क्षिप्त्वा वा कलशान् भरेदुभयथाऽप्यदोष । तत इन्द्रहस्तान् प्रक्षाल्य हस्तयोर्मूले च चन्दनतिलकान् कृत्वा, स्नपनक्रियद्रव्यनिक्षिप्ते सजलसधातुमत्या कलशानुत्थाप्य, नमोऽर्हत्सिद्धेत्यधीत्य **'जम्ममज्जणि जिणहजीररसे'**त्यादि कलशवृत्तेषु जन्माभिषेककलशवृत्तान्तरेषु वाऽन्ये पठितेषु सदमाने स्वय वा भणितेषु, कुम्भपिधानान्यपनीय, पञ्चशब्दे वाद्यमाने श्राविकासु जिनजन्माभिषेकगीतानि गायन्तीषूभयतोऽप्यसण्डधार स्नपन कुर्वन्ति, द्रष्टारश्च जिनमज्जनप्रतिबद्धहृद्यपद्यानि पठन्ति, मुहुर्मुहुर्मूर्धान नमयन्ति । यच्च स्नात्रे जल मूर्धाचक्षुषु केचित्क्षिपन्ति तद् गतानुगतिक मन्यन्ते गीतार्था । श्रीपादलिप्ताचार्यैर्निषेधात् । तथा च तद्वच –'निर्माल्यभेदा कथ्यन्ते– देवस्व देवद्रव्य नैवेद्य निर्माल्य चेति । देवसन्निधिग्रामादि देवस्वम्, अलङ्कारादि देवद्रव्यम्, देवार्थमुपकल्पित नैवेद्यम् । तद्देवोत्सृष्ट निवेदित बहि निक्षिप्त निर्माल्य पञ्चविधमपि निर्माल्य न जिघ्रेन्न च लङ्घयेन्न च दद्यान्न च विक्रीणीत । दत्त्वा न्यादो भवति, भुक्त्वा मातग, लङ्घने सिद्धिहानि, आघ्राणे कुष्ठ, स्पर्शने स्त्रीत्वम्, विक्रये शबर । पूजाया दीपालोकनधूपोमात्रादिगन्धे न दोष । नदीप्रवाहनिर्माल्ये चे'ति कृत प्रसगेन । तत शुद्धोदकेन प्रक्षाल कृत्वा धूपितवस्त्रसण्डेन प्रतिमा रूक्षयित्वा चन्दनेन समभ्यर्च्य समालभ्य वा पुष्पपूजा विधाय **'मीनकुरगमदे'**ति वृत्तेन धूपमुद्ग्राहयेत् । तत आहारस्थाल दद्यात् । तत परिधापनिका प्रतिलिख्य करयोरुपरि निवेद्यैकस्मिन् धूपमुद्ग्राहयति सति पुष्पचन्दनवासैरधिवास्य 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्ये'त्यादि भणित्वा, **'शक्रो यथा जिनपते'**रिति वृत्तद्वयमधीत्य सोत्सव देवस्योपरिष्टादुभयतो लम्बमाना निवेशयेत् । तत कुसुमाञ्जलिर्वर्ण लवणजलारात्रिकावतारण मङ्गलदीपान् प्राग्वत् कुर्यात् । नवर लवणाद्यवतारणेषु तथैव प्रतिवृत्त वादित्रमग्रध्वान कुर्यात् । ततो यथासभव गुरुदेशना श्रुत्वा स्वगृहमेत्य स्नपनकारादिसाधर्मिकान् भोजयेदित्योघत **स्नपनविधिः** ।

यस्य पुनर्विशेषपर्वापेक्षया छत्रभ्रमण प्रति भावना भवति, स प्राग्वत् स्नपनमारभ्य यावत् **'ग्रोद्भूतभक्ती'**त्यादिवृत्तै कुसुमाञ्जलिं प्रक्षिप्य निर्माल्यमपनीय पूजा च कृत्वा, स्नपनपीठस्थाया एकस्या प्रतिमाया पुरत **'सरसमुपघ'** इति वृत्तेन कुसुमाञ्जलिं क्षिपेत् । ततस्तस्या प्रतिमाया **'हियथाइ पडत'**मिति गाथया स्नान कुर्यात् । तदनन्तर स्थाले चन्दनेन स्वस्तिक कृत्वा, तत्र पाठात् ता प्रतिमा धारयेत् । ततश्च पुरत स्थाल एवाक्षतपुञ्जितत्रय न्यसेत् । अनन्तर जलधारादानपूर्वमातोद्यवादनापूर्व च छत्रतले प्रतिमा नयेत् । ततो देवसामभागादारभ्य प्रथममग्र(?) वृत्ते गृहलिकेति रूढे गोमयगोमुराचतुष्टये प्रथमगृहलिकायामक्षतपुञ्जित्रय पूरिकाश्च दद्यात् । तत पुष्पाञ्जलिमुपादाय क्रमेणोत्साहत्रय पठित्वा, एकैक कुसुमाञ्जलिं प्रक्षिपेत् । उत्साह-

स्यादिभिर्नवभिर्वृत्तैर्नवस्वपि दिक्षु तं क्षिपेत् । नवरमाद्यान्त्यवृत्तयोर्नमोऽर्हत्सिद्धेत्यादि भणेत् । ततो प्रशस्या-न्यायसंगृहीतदेवतातोषणार्थं शेषबलिभाजनमधोमुखी कुर्यात् । अत एव केचिद्देहलीदेशे प्रशान्त्यादीनपि स्थापयन्ति । ततश्च दिक्पालयोग्य प्रक्षालित पट्टक देवस्य दक्षिणबाहौ स्थापयित्वा 'भो भो सुरे'ति वृत्तद्वयेन दिक्पालपट्टकोपरि कुसुमाञ्जलिं क्षिपेत् । तद् 'इन्द्रमग्नियम चैवे'ति वृत्तेन क्रमेण दिक्पालान् कुङ्कुमचन्दनादिबिन्दुषु स्थापयेत । स्थापना चेयम् । तेषु दशपूपिका धूपसुरभिता दधिदूर्वाक्षतपुष्पयुक्ता 'प्राचीदिग्धूनरे'त्यादिवृत्तदशक पठित्वा क्रमेण दद्यात् । एकैका पूपिकामेकेकेन वृत्तेन एकैक-सिटिकके दध्यात् । अत्राप्याद्या न्त्यवृत्तयोर्नमोऽर्हत्सिद्धाचार्ये इति भणेत् । 'तदिति' – 'दिग-धिपे'ति वृत्तेन दिक्पालानामुपरि पुष्पाञ्जलिं प्रक्षिपेत् । तदनन्तर चैत्यवन्दन साधुवन्दन च कुर्यात् । अनन्तर 'मुक्तालङ्कारविकारे'त्यादिविधि प्रागुक्त एव । यावन्मङ्गलप्रदीपे कृते शक्रस्तवानन्तर मङ्गलदीपमनुज्ञाप्य ततो धूपमुत्क्षिपेत् । नमोऽर्हत्सिद्धेति गृणन् 'चोलोत्क्षेपै'रिति वृत्तद्वयेन दिक्पालान् विसर्जयेत् । दिक्पालपट्टिकायामीशानदिक्पूपिका मुक्त्वाऽन्यो नवदिक्पूपिका उत्तारयेत् । अचल यावता स्येत् । एव 'शक्राद्या लोकपाल' इति वृत्तेन गृहपट्टिकादेवतान् विसृज्याचलावतारण कुर्यात् । केचित् प्रथममेतान् विसृज्य पश्चाद्दिक्पालान् विसृजन्ति ।

ई०	अ०	व०
कु०	ई०	०य
ना०	ब० ना०	०नै

अष्टाह्निकासु प्रथमदिनादारभ्य शान्तिपर्वदिन यावन्मूलप्रतिमा दिक्पालपट्टिकां च न चालयेत्, ग्रहपट्टिकां तूत्पाट्यैकदेशे मुञ्चेत् । अष्टाह्निकाप्रारम्भश्च यद्यपि चैत्राश्विनयो शुक्लाष्टमीत आरभ्य सर्वत्र रूढ-स्तथापि पूज्यश्रीजिनदत्तसूरीणामाम्नाये संघस्य चन्द्रबलाद्यपेक्षया तथा कर्त्तव्यो यथा सप्तम्यष्टमीनवम्य क्षुद्र देवतादिनतया रौद्रा अष्टाह्निकामध्ये आयान्तीति गुरव' । अष्टाह्निकाद्यदेवपूजा देवद्रव्योत्पत्तिसाधर्मिक-भोजनगीतनृत्यवादित्रादिप्रभावनाभिर्यथोत्तरमारोहत्प्रकर्षा कर्त्तव्या ।

एवमष्टाह्निकासु सम्पूर्णासु नवमदिने संघस्य चन्द्रबलाद्यभावे विरुद्धदिनसद्भावेन(?) दिनांतरे वा शान्ति-पर्वं कुर्यात् । तस्य चायं विधिः — चन्द्रबलाद्युपेतशुभवेलायां जीवन्मातापितृश्वश्रूश्वशुरभर्तृका निःशल्या नायिका साधर्मिकस्त्रीजन सवेशमन्याहूय तस्यै ताम्बुलाद्युपचारं यथाशक्ति कृत्वा, शुभमापाकोत्तीर्णं त ...... पूगफलहिरण्यगर्भं कण्ठाबद्धसुगन्धिकुसुममाल्य चतुर्दिग्न्यस्तनागवल्लीदल पिधानस्थगितानन कलशं मूर्द्धानमारोप्य नितताद्यमाने चारुश्लोके पञ्चशब्दे वाद्यमाने गायन्तीषु शुभवनितासु शाङ्खिकमार्दङ्गिक-पाणविकादिभ्यो दान ददाना, पेशलनेपथ्यप्रधाना, वैरगृहसिंहद्वारं प्राप्य तद्द्वारभित्तौ चन्दनपिष्टकादि-पञ्चाङ्गुलितलानि दत्त्वा विधिना देवगृह प्रविश्य गूहलिकाया सुस्थितायुपरि कलश स्थापयेत् । एतावता कलशस्य स्थापना जाता । ततः सा साध्वी गृहमागत्य स्नपनेप्सितामयमाहारस्थाल प्रक्षेपबलि पूपिकाश्च सज्जीकुर्यात् । तत शान्तिघोषका इन्द्रा कलशस्योपर्याकाशे वंशादियष्टिं कौसुमचीरिकावेष्टिता तिर्यक् कृत्य, तत्र पुष्पमालां लम्बमानां कुम्भमुखं यावद्धारयेयु । ततः संघमाहूय प्रागुक्तरीत्या देवस्य धूपवेला मङ्गलदीपान्त कृत्वा ततः प्राग्वद् दिक्पालग्रहपट्टिके स्थापयित्वा प्रक्षेपबलिपूपिकादिविधिं च तथैव विधाय, तत कलशपार्श्वतो बलिं विकीर्य शान्त्युदकग्रहणाय निकयम्, आदित कलशग्राहिणीतस्तदनु संघाद् गृहीत्व कलशाग्रे स्नपनेप्सिताहारस्थालं दत्त्वा कलशस्य परिधापनिकां 'शक्रो यथा जिनपते'रिति वृत्तद्वयेन कुर्यु । वंशयष्टेरुपरि परिधापनिकां कुम्भसमीप यावल्लम्बयेयु । तत कुङ्कुमद्रवेण कलशोदक मिश्रयेयु । ततः कुसुमाञ्जलिलवणोदकारात्रिकावतारणानि मङ्गलप्रदीप च कलशस्यैवाग्रे कुर्यु । मङ्गलप्रदीपश्च तादृक्कर्त्तव्यो यादृक् चैत्यवन्दन शान्तिघोषणा च यावद् दीप्यते, मान्तरालेऽपि निर्वाति । इत्थं हि संघस्य श्रेय इति । ततः ऐर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य जानुभ्यां प्राग्वद् स्थित्वा नमस्कारान् शक्रस्तव च भणित्वा, उत्थाय स्थापनार्हत्स्तव-

दण्डकभणनादिविधिपूर्वं चतस्रो वर्द्धमानाक्षरस्वरा. स्तुतीर्दत्त्वा, तत श्रीशान्तिनाथाराधनार्थं कायोत्सर्गमष्टोच्छ्वास कृत्वा, पारयित्वा श्रीशान्तिनाथस्य स्तुतिमेको दद्यात्, शेषा कायोत्सर्गस्था शृणुयु । तत क्रमेण श्रीशान्तिदेवता-श्रुतदेवता-भवनदेवता-क्षेत्रदेवता-ऽम्बिका-पद्मावती-चक्रेश्वरी-अछुप्ता-कुबेरा-ब्रह्मशान्ति गोत्रदेवता-शक्रादिसमस्तवैयावृत्त्यकराणा कायोत्सर्गान्ते प्रागवत् सामाचारीदर्शिता. स्तुतीस्तेषामेव दद्यादन्या वा प्राकृतभाषानिबद्धा । तत शासनदेवताकायोत्सर्गे उद्योतकरचतुष्टय चिन्तयित्वा तस्या स्तुतिं दत्त्वा श्रुत्वा वा, चतुर्विंशतिस्तव भणित्वा, पचमङ्गल त्रि पठित्वा, ततो जानुभ्या स्थित्वा, शक्रस्तव भणित्वा, 'जावंति चेइआइ' इत्यादिगाथाद्वयमधीत्य, परमेष्ठिस्तव शान्तिस्तव वा भणित्वा प्रणिपत्य, ततो मुक्ताशुक्त्या प्रणिधानगाथाद्वय भणेयु । **इति चैत्यवन्दना समाप्ता ।**

ततो द्वौ धौतपोतिकौ श्रावकेन्द्रौ कलशोदकेन भृङ्गारद्वय भृत्वोभयतस्तिष्ठेताम् । एक. स्थालके कृत्वा पुष्पचदनवासान् गृह्णीयादपरश्च धूपायन पाणिप्रणयीकुर्यात् । ततस्त एव श्रावका सप्तनमस्कारान् पठित्वा सप्तधारा कलशे निक्षिप्य 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इत्युच्चार्य आदौ – **'अजियं जियसव्वभय'** इति स्तवेनायैं स्वय वा पठितेन शान्ति घोषयेयु । सर्वपद्यानां मान्ते एकैका धारा कलशे भृङ्गारग्राहिणौ समकाल दद्याताम् । एकश्च पुष्पादीन् क्षिपेदपरश्च धूप दद्यात् । स्तवसमाप्तौ पुनर्भृङ्गारौ भृत्वा **'उल्लासिक्कम'**-स्तोत्रेण शान्ति घोषयेयु । तथैव पुनर्भयहरस्तवेन, तत – **'त जयउ जये तित्थं'** तदनु **'मयरहिय'**मिति स्तवेन तदनन्तर **'सिग्घमवहरउ विग्घ'**मिति स्तवेन, शान्ति घोषयेयु । सर्वत्र पद्यसमाप्तौ कलशे धारादानपुष्पादिक्षेपा. प्रागवत् । नवर सर्वस्तवानामन्त्यवृत्त त्रिर्भणेयु । ततश्च सप्तकृत्व उपसर्गहरस्तोत्र भणित्वा धारादानपुष्पादिक्षेपविधिना शान्ति घोषयेयु । शान्तौ च घोष्यमाणाया साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका उपयुक्तास्तुमुल निवार्य शान्ति शृणुयु । इति शान्तिघोषण कृत्वा मङ्गलदीपमनुज्ञाप्य प्रागवद्दिक्पालग्रहादीन् विसृज्य, प्रक्षाल्य, तत प्रथम कलशग्राहिण्यै शान्त्युदक पूगफलादि च समर्प्य, क्रमात् सकलसंघाय समर्प्पयेयु । तच्च सर्वेपु उत्तमाङ्गाद्यङ्गेषु लगयेयुर्गृहादि च तेनाभिषिंचेयु । **इति शान्तिपर्वविधिः ।**

देवाहिदेवपूजाविही इमो भवियणुग्गहट्ठाए ।
उपदर्शितो श्रीजिनप्रभसूरिभिराम्नायतः सुगुरोः ॥

॥ ग्रन्थाग्र० २६९ ॥

॥ इति देवपूजाविधिः समाप्तः ॥

स्यादिभिर्नैरमिर्वृत्तैर्नन्तरमपि दिक्षु तं क्षिपेत् । नन्तरमाचान्त्यवृत्तयोर्नमोऽर्हत्सिद्धेत्यादि भणेत् । ततो ब्रह्मशान्त्याद्यसंगृहीतदेवतातोषणार्थं शेषबलिभाजनमधोमुखी कुर्यात् । अत एव केचिद्देहलीदेशे ब्रह्मशान्त्यादीनपि स्थापयन्ति । ततश्च दिक्पालयोग्य प्रक्षालित पट्टकं देवस्य दक्षिणबाहौ स्थापयित्वा 'भो भो सुरे'ति वृत्तद्वयेन दिक्पालपट्टकोपरि कुसुमांजलिं क्षिपेत् । ततः 'इन्द्रमग्नियम धैर्ये'ति वृत्तेन क्रमेण दिक्पालान् कुङ्कुमचन्दनटिक्केषु स्थापयेत् । स्थापना चेयम् । तेषु दशपूपिका धूपसुरभिता दधिदूर्वाक्षतपुष्पयुक्ता 'प्राचीदिग्नपूर्वे'त्यादिवृत्तदशकं पठित्वा क्रमेण दद्यात् । एकैका पूपिकामेकैकेन वृत्तेन एकैकस्मिटिक्के दद्यात् । अत्राप्याद्यान्त्यवृत्तयोर्नमोऽर्हत्सिद्धाचार्य इति भणेत् । 'तदिति' – 'दिगधिपे'ति वृत्तेन दिक्पालानामुपरि पुष्पाञ्जलिं प्रक्षिपेत् । तदनन्तर चैत्यवन्दनं साधुवन्दनं च कुर्यात् । अनन्तर 'मुक्तालङ्कारनिकारे'त्यादिविधि प्रागुक्त एव । याव मङ्गलप्रदीपे कृते शक्रस्तवानन्तरं मङ्गलप्रदीपमनुज्ञाप्य ततो धूपमुत्क्षिपेत् । नमोऽर्हत्सिद्धेति गृणन् 'घोलोरक्षेपै'रिति वृत्तद्वयेन दिक्पालान् विसर्जयेत् । दिक्पालपट्टिकायामीशानदिक्पूपिका मुक्त्वाऽन्यो नवदिक्पूपिका उत्तारयेत् । अचल वावतारयेत् । एव 'शक्राद्या लोकपाल' इति वृत्तेन गृहपट्टिकादेवतान् विसृज्याचलावतारणं कुर्यात् । केचित् प्रथममेतान् निसृज्य पश्चाद्दिक्पालान् निसृजन्ति ।

इ० अ० ०ज
कु० ई० ०प
ब्र०
ना० ना० ०

अष्टाह्निकासु प्रथमदिनादारभ्य शान्तिपर्वदिनं यावन्मूलप्रतिमा दिक्पालपट्टिकां च न चालयेत्; ग्रहपट्टिकां तूपार्श्वेऽन्यदेशे मुञ्चेत् । अष्टाह्निकारम्भश्च यद्यपि चैत्राश्विनयोः शुक्लाष्टमीत आरभ्य सर्वत्र रूढस्तथापि पूज्यश्रीजिनदत्तसूरीणामाम्नाये संघस्य चन्द्रबलाद्यपेक्षया तथा कर्त्तव्यो यथा सप्तम्यष्टमीनवम्य क्षुद्रदेवतादिनतया रौद्रा अष्टाह्निकामध्ये आयान्तीति गुरव । अष्टाह्निकायां देवपूजा देवद्रव्योत्पत्तिसाधर्मिकभोजनगीतनृत्यवादित्रादिप्रभावनाभिर्यथोत्तरमारोहत्प्रकर्षा कर्त्तव्या ।

एवमष्टाह्निकासु सम्पूर्णासु नवमदिने संघस्य चन्द्रबलाद्यभावे निरुद्धदिनसद्भावेन(?) दिनान्तरे वा शान्तिपर्व कुर्यात् । तस्य चायं विधि — चन्द्रबलाद्युपेतशुभवेलायां जीवन्मातापितृश्वश्रूश्वशुरभर्तृका निःशल्या नायिका साधर्मिकस्त्रीजन स्वगेहमभ्याहूय तस्यै ताम्बूलाद्युपचारं यथाशक्ति कृत्वा, शुभमापक्रोत्तीर्णं स … …

पूगफलहिरण्यगर्भं कण्ठावनद्धसुगन्धिकुसुममाल्य चतुर्दिग्न्यस्त नागवल्लीदल पिधानस्थगिताननं कलशं मूर्द्धानमारोप्य वितन्यमाने चारुलोचे पञ्चशब्दे वाद्यमाने गायन्तीषु शुभवनितासु शाङ्खिकमार्दङ्गिकपाणविकादिभ्यो दानं ददाना पेशलनेपथ्यप्रधाना, चैत्यगृहसिंहद्वारं प्राप्य तद्द्वारभित्तौ चन्दनपिष्टकादिपञ्चाङ्गुलितलानि दत्त्वा विधिना देवगृहं प्रविश्य गूहुलिकाया सुस्थितायुपरि कलशं स्थापयेत् । एतावता लग्नस्य साधना जाता । तत सा साध्वी गृहमागत्य स्नपनेप्सितामयमाहारस्थालं प्रक्षेपबलिं पूपिकाश्च सज्जीकुर्यात् । ततः शान्तिघोषका इभ्या कलशस्योपर्याकाशे वंशाद्यियष्टिं कौसुमजीरिकावेष्टिता तिर्यक् कृत्वा, तत्र पुष्पमाला लम्बमाना कुम्भमुखं यावद्धारयेयु । ततः संघमाहूय प्रागुक्तरीत्या देवस्य धूपवेला मङ्गलदीपान्त कृत्वा ततः प्राग्वत् दिक्पालग्रहपट्टिके स्थापयित्वा प्रक्षेपबलिपूपिकादिविधिं च तथैव विधाय, तत कलशपार्श्वतो बलिं विकीर्य शान्त्युदकग्रहणाय क्रियम्, आदित कलशग्राहिणीतस्तदनु संघाद् गृहीत्व कलशाग्र स्नपनेप्सिताहारस्थालं दत्त्वा कलशस्य परिधापनिकां 'शक्रो यथा जिनपते'रिति वृत्तद्वयेन कुर्यु । वंशयष्टेरुपरि परिधापनिकां कुम्भसमीप यावल्लम्बयेयु । तत कुङ्कुमद्रवेण कलशोदकं मिश्रयेयु । तत कुसुमाञ्जलिलवणोदकारात्रिकावतारणानि मङ्गलप्रदीपं च कलशस्यैवाग्रे कुर्यु । मङ्गलप्रदीपश्च तादृक्कर्त्तव्यो य एव चैत्यवन्दना शान्तिघोषणा च यावद् दीप्यते, नान्तरालेऽपि निर्वाति । इत्थं हि संघस्य श्रेय इति । तत ऐर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य जानुभ्यां प्राग्वत् स्थित्वा नमस्कारान् शक्रस्तवं च भणित्वा, उत्थाय स्थापनार्हत्स्तव-

दण्डकभणनादिविधिपूर्वं चतस्रो वर्द्धमानाक्षरस्वरा स्तुतीर्दत्त्वा, तत श्रीशान्तिनाथाराधनार्थं कायोत्सर्गमष्टोच्छ्वासं कृत्वा, पारयित्वा श्रीशान्तिनाथस्य स्तुतिमेको दद्यात्, शेषा कायोत्सर्गस्था शृणुयु । तत क्रमेण श्रीशान्तिदेवता-श्रुतदेवता-भवनदेवता-क्षेत्रदेवता-ऽम्बिका-पद्मावती-चक्रेश्वरी-अच्छुप्ता-कुबेरा-ब्रह्मशान्ति गोत्रदेवता-शक्रादिसमस्तवैयावृत्त्यकराणा कायोत्सर्गान्ते प्रागवत् सामाचारीदर्शिता स्तुतीस्तेषामेव दद्यादन्या वा प्राकृतभाषानिबद्धा । तत शासनदेवताकायोत्सर्गे उद्योतकरचतुष्टय चिन्तयित्वा तस्या स्तुतिं दत्त्वा श्रुत्वा वा, चतुर्विंशतिस्तव भणित्वा, पचमङ्गल त्रि पठित्वा, ततो जानुभ्या स्थित्वा, शक्रस्तव भणित्वा, 'जावंति चेइआइ' इत्यादिगाथाद्वयमधीत्य, परमेष्ठिस्तव शान्तिस्तव वा भणित्वा प्रणिपत्य, ततो मुक्ताशुक्त्या प्रणिधानगाथाद्वय भणेयु । इति चैत्यवन्दना समाप्ता ।

ततो द्वौ धौतपोतिकौ श्रावकेन्द्रौ कलशोदकेन भृङ्गारद्वय भृत्वोभयतस्तिष्ठेताम् । एक स्थालके कृत्वा पुष्पचदनवासान् गृह्णीयादपरश्च धूपायन पाणिप्रणयीकुर्यात् । ततस्त एव श्रावका सप्तनमस्कारान् पठित्वा सप्तधारा कलशे निक्षिप्य 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' इत्युच्चार्य आदौ – 'अजिय जियसव्वभय' इति स्तवेनाये स्वय वा पठितेन शान्तिं घोषयेयु । सर्वपद्याना प्रान्ते एकैका धारा कलशे भृङ्गारग्राहिणौ समकाल दद्याताम् । एकश्च पुष्पादीन् क्षिपेदपरश्च धूप दद्यात् । स्तवसमाप्तौ पुनर्भृङ्गारौ भृत्वा 'उल्लासिक्कम'-स्तोत्रेण शान्तिं घोषयेयु । तथैव पुनर्भयहरस्तवेन, तत – 'त जयउ जये तित्थ' तदनु 'मयगहिय'मिति स्तवेन तदनन्तर 'सिग्घमवहरउ विग्घ'मिति स्तवेन, शान्तिं घोषयेयु । सर्वत्र पद्यसमाप्तौ कलशे धारादानपुष्पादिक्षेपा. प्राग्वत् । नवर सर्वस्तवानामन्त्यवृत्त त्रिर्भणेयु । ततश्च सप्तकृत्व उपसर्गहरस्तोत्र भणित्वा धारादानपुष्पादिक्षेपविधिना शान्तिं घोषयेयु । शान्तौ च घोष्यमाणाया साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका उपयुक्तास्तुमुल निवार्य शान्तिं शृणुयु । इति शान्तिघोषण कृत्वा मङ्गलदीपमनुज्ञाप्य प्राग्वद्दिक्पालग्रहादीन् विसृज्य, प्रक्षाल्य, तत प्रथम कलशग्राहिण्यै शान्त्युदक पूगफलादि च समर्प्य, क्रमात् सकलसघाय समर्पयेयु । तच्च सर्वेषु उत्तमाङ्गाद्यङ्गेषु लगयेयुर्गृहादि च तेनाभिषिंचेयु । इति शान्तिपर्वविधि । ।

देवाहिदेवपूजाविही इमो भवियणुग्गहट्ठाए ।
उपदर्शितो श्रीजिनप्रभसूरिभिराम्नायतः सुगुरोः ॥

॥ ग्रन्थाग्र० २६९ ॥

॥ इति देवपूजाविधिः समाप्तः ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृता प्राभातिकनामावली।

*

सौभाग्यभाजनमभङ्गुरभाग्यभङ्गीमङ्गीतधामनिजधाम निराकृतार्कम्।
अर्चामि कामितफलं प्रतिकल्पवृक्ष श्रीमन्तमस्तवृजिन जिनसिंहसूरिम्॥ १॥

केवलज्ञानी १ निर्वाणी २ [इत्यादि] २४ अतीतजिननामानि।
5 ऋषभ १ अजित २ [इत्यादि] २४ वर्तमानजिननामानि।
पद्मनाभ १ सूरदेव २ [इत्यादि] २४ भविष्यज्जिननामानि।
सीमंधर स्वामी १ युगधर स्वामी २ [इत्यादि] २० विहरमानजिननामानि।
ॐ नमो अरिहंताण, नमो सिद्धाण [इत्यादि] पंचनमस्कारा।
इन्द्रभूति १ अग्निभूति २ [इत्यादि] ११ गणधरनामानि।
10 रोहिणी १ प्रज्ञप्ति २ [इत्यादि] १६ विद्यादेवीनामानि।
अप्रतिचक्रा १ अजितबला २ [इत्यादि] २४ जिनयक्षिणीनामानि।
गोमुख १ महायक्ष २ [इत्यादि] २४ जिनयक्षनामानि।
नाभि १ जितशत्रु २ [इत्यादि] २४ जिनपितृनामानि।
मरुदेवा १ विजया २ [इत्यादि] २४ जिनमातृनामानि।
15 भरत १ सगर २ [इत्यादि] १२ चक्रवर्तिनामानि।
त्रिपृष्ठ १ द्विपृष्ठ २ [इत्यादि] ९ अर्द्धचक्रिनामानि।
अचल १ विजय २ [इत्यादि] ९ बलदेवनामानि।
अश्वग्रीव १ तारक २ [इत्यादि] ९ प्रतिवासुदेवनामानि।
समुद्रविजय १ अक्षोभ २ [इत्यादि] १० दशार्हनामानि।
20 युधिष्ठिर १ भीम २ [इत्यादि] ५ पाण्डवनामानि।

ब्राह्मी। सुन्दरी। रोहिणी। दवदती। सीता। अजना। राजीमती [इत्यादि] सतीनामानि।

बाहुबली। सुग्रीव। विभीषण। हनूमत। दशार्णभद्र। प्रसन्नचन्द्र [इत्यादि] सत्पुरुषनामानि।

सिद्धार्थ। जम्बूस्वामि। प्रभव। शय्यंभव। यशोभद्र। संभूतविजय। भद्रबाहु। स्थूलभद्र। आर्यसुहस्ति। सिंहगिरि। धनगिरि। आर्यसमित। वैरस्वामि। आर्यरक्षित। दुर्बलिकापुष्यमित्र। घृतपुष्यमित्र। वस्त्र-
25 पुष्यमित्र। वज्रसेन। नागेन्द्र। चन्द्र। निर्वृति। उद्देहित। कोट्याचार्य। जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण। सिद्ध-सेन दिवाकर। उमास्वाति वाचक। आर्यश्याम वाचक। गोविंद वाचक। रेवती। नागार्जुन। आर्यखपट। यशोभद्रसूरि। मल्लवादी। वृद्धवादी। जप्पहट्टि। कालकसूरि। शीलाङ्कसूरि। हरिभद्रसूरि। सिद्धर्षि। पादलिप्तसूरि। देवसूरि। नेमिचन्द्रसूरि। उद्योतनसूरि। वर्द्धमानसूरि। जिनेश्वरसूरि। जिनचन्द्रसूरि। जिनभद्रसूरि (?) अभयदेवसूरि। जिनवल्लभसूरि। जिनदत्तसूरि। जिनचन्द्रसूरि। जिनपतिसूरि। जिनेश्वर-
30 सूरि। श्रीजिनसिंहसूरि। श्रीजिनप्रभसूरि। श्रीजिनदेवसूरि।

॥ इति प्राभातिकनामावली समाप्ता। विरचितेयं श्रीमज्जिनप्रभसूरिभट्टारकमिश्रैः ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृताः स्तुतित्रोटकाः ।

—[१]—

ते धन्नपुन्नसुकयत्थनरा, जे पणमहि सामिउं भत्तिभरा ।
फलवद्धिपुरट्ठियपासजिणं, अससेणह नंदण भयहरणं ॥ १ ॥
वामाइविराणीउयरसरे, उप्पन्नउ सामिउ हंसपरे ।
तुम्हि वदहु भवियहु भाउधरे, जिम दुत्तरु भउ संसार तरे ॥ २ ॥
इहि दूसम समइ महच्छरिय, फलवद्धिपासु जं अवयरियं ।
भवियणह मणिच्छिय देउ सुह, सो इक्क जीह वंनियइ कह ॥ ३ ॥
झणझणण झणकहिं घग्घरियं, तद्धुनकटि नाकट्टि तिविल झणियं ।
लक्कटारस नचहि इक्कमणी, भवियण आणंदिहि जिणभवणी ॥ ४ ॥

—[२]—

नियजंमु सफलु रावणह सुय, दिवराय जु तित्थह जत्त किय ।
निचलव(म?)णि वेचिउ नियधणं, विमलग्गिरि वंदिउ आदिजिणं ॥ १ ॥
दिवराय सरिसु नहु अनु कली, जिणि दूसमसमडहिं माणु मली ।
सुपवित्त सुचित्तिहि वरिउ धण, उज्जिलगिरि पणमिउ नेमिजिण ॥ २ ॥
महिमंडलि हुय सधनड घणा, दिवराय सरिस नहु अनु जणा ।
जिणि ढिल्लियनयरह मज्झि सय, देवालउ कड्डिउ जत्त कियं ॥ ३ ॥
फालिहमणिससिहरकरविमले, जसकलसु चडाविउ जेण कुले ।
मग्गण जण तोसिय धणवरिसे, अवयरिउ कंनु दिवरायमिसे ॥ ४ ॥
सिरिधम्मरिजिणप्पहभत्तिभरे, सुताणिहि मनिउ विविह परे ।
पउमावइ सानिधि सयल जए, चिरु नंदउ देल्हिगु संघवए ॥ ५ ॥

॥ त्रोटकाः समाप्ताः ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृतं तीर्थयात्रास्तोत्रम् ।

सिरिसत्तुंजयतित्थे रिसहजिणं पणिवयामि भत्तीए ।
उज्जिंतसेलसिहरे जायवकुलमडल (ण) नेमिं ॥ १ ॥
सेरीसयपुरतिलय पासजिणमणेयर्निवपरियरिय ।
फलवद्धी-सखेसर-थमणयपुरेसु तह वंदे ॥ २ ॥
पाडलनयरे नेमिं नमिमो तारणगिरिंमि अजियजिणं ।
भरुयच्छे मुणिसुव्वयजिणेसर सवलियविहारे ॥ ३ ॥
जीवतसामिपडिम वायडनयरमि सुव्वयजिणस्स ।
चदप्पहसामिं तह हरपट्टणभूसण थुणिमो ॥ ४ ॥
अहिपुर-जालउरेसु पल्हणपुर-भीमपल्लि सिरिमाले ।
अणहिलपुर-सिरिरिखिञ्जे आसावल्ली य धवलक्के ॥ ५ ॥
धधुक्कय-खभाइत्त जिंन (जिन्न) दुग्गाइसु च ठानेसु ।
सव्वेसु जिणवराण पडिमाओ पणिवयामि सया ॥ ६ ॥
तेरहसय छावत्तर विक्कमसवच्छरमि जिट्ठस्स ।
बहुलाइ तेरसीए नमिओ सित्तुजतित्थपहू ॥ ७ ॥
जिट्ठस्स पुनिमाए, नमसिओ रेवयंमि जिणे ।
सिरिदेवरा[य] सघाहिवस्स सघेण विहिपुव्व ॥ ८ ॥
सिरिजिणपहुसूरीहि रइयमिण जे पढंति सथवण ।
पावंति तित्थजत्ताकरणफल ते विमलपुन्ना ॥ ९ ॥

॥ इति तीर्थयात्रास्तोत्रं समाप्तं ॥ छ ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृतं मथुरायात्रास्तोत्रम् ।

सुराचलश्रीजिति देवनिर्मिते स्तूपेऽभिरूपे वरदो(दि) कृतास्पदौ ।
सुवर्णनीलोपलकोमलच्छवी सुपार्श्व पार्श्वौ मुदित[ः] स्तवीमि वाम् ॥ १ ॥
पृथ्वीसुतोऽपि त्रिजगज्जनाना क्षेमंकरस्त्वं भगवान् सुपार्श्व ! ।
अपि प्रतिष्ठाङ्गरुहस्तमीश कथं च लोके जनितप्रतिष्ठः ॥ २ ॥
पार्श्वप्रभो येऽत्र मनोभिरामत्वन्नाममन्त्रस्मरणैकतानाः ।
उच्चञ्चलच्चञ्चलतागुणाया भवन्ति ते मन्दिरमिन्दिरायाः ॥ ३ ॥
महीतलास्फालनघृष्टभालः सुपार्श्व ! सर्पत्पुलकैर्विशालः ।
कदा त्वदंह्रि प्रणिपातकर्मप्रमोदमेदस्विमना [नमा]मि ॥ ४ ॥
यात्रोत्सवेषु प्रभुपार्श्व ! तेऽत्रागतस्य सघस्य चतुर्विधस्य ।
उत्क्षिप्यमाणागुरुधूपधूमव्याजेन निर्यान्ति तमःसमूहाः ॥ ५ ॥
समुच्चरद्धूमशिखप्रदीपच्छलेन वा सेवितुमागता अमी ।
शिरश्चकाशन्मणयः फणाभृतो निजं कृतार्थाः प्रतियान्ति मन्दिरम् ॥ ६ ॥
रुजा भुजङ्गार्णवदावदन्तिनो मृगाधिपस्तेन नरेन्द्रसयुगाः ।
पिशाचशाकिन्यरयश्च तत्वतो भियं न तस्य स्मरतीह यो युवाम् ॥ ७ ॥
पादारविन्द सुरवृन्दवन्द्यं वन्दारजो ये युवयोरनिन्द्यम् ।
देवी कुबेरा विपदस्तदीया समूलकाषं कषति प्रसन्ना ॥ ८ ॥
यौष्माकवीक्षारसमग्ननेत्रप्रसारिहर्षाश्रुभिराम्भसीकाः ।
ज्वलन्तमन्तर्निचिताघवह्निं निर्वापयन्ते जगतीह धन्याः ॥ ९ ॥
इति स्तुतिं श्रीमथुरापुरीस्थयोः पठन्ति ये वां शठता विनाकृताः ।
सुपार्श्वतीर्थेश्वर पार्श्वनाथ वा जिनप्रभद्रं पदमाप्नुवन्ति ते ॥ १० ॥

॥ इति श्रीमथुरायात्रास्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्रीजिनप्रभसूरिकृता मथुरास्तूपस्तुतयः ।

श्रीदेवनिर्मितस्तूपशृङ्गारतिलकश्रियौ । सुपार्श्व-पार्श्वतीर्थेशौ क्लेशं नाशयतां सताम् ॥ १ ॥
प्रमोदसंमद पादपीठी लुठदधीश्वराः । कर्मालिनलिनीचन्द्राः संभवंतु वः ॥ २ ॥
मिथ्यात्वविषविक्षेपदक्ष सुमनसां प्रियम् । जिनास्यजलदे जीयात् प्रवचनामृतम् ॥३॥
विघ्नौघघातने निघ्ना मधूपाभशिरस्थिता । कुबेरा नरमारूढा मूढभावं भिनत्तु नः ॥ ४ ॥

॥ श्रीदेवनिर्मित [स्तूप] स्तुतयः ॥

विधिप्रपाग्रन्थान्तर्गत-अवतरणात्मक-पद्यानामकारादिक्रमेण सूचिः ।

विधिप्रपाग्रन्थान्तर्गतानां विशेषनाम्नां अकारादिक्रमेण सूचिः ।